रजिस्ट्री सं० डी० (डी०)-73 REGISTERED No. D.(D)-73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 51] नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 22, 1979/पौष 1, 1901
No. 51] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 22, 1979/PAUSA 1, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों को छोड़ कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किये गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं

Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories)

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 16 नवम्बर, 1979

आय-कर

का० आ० 4042.—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उप-खण्ड (iii) के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा भारत सरकार के राजस्व विभाग की दिनांक 20 सितम्बर, 1979 की अधिसूचना संख्या 3002 [फा० सं० 404/147 (क० ब० अ० नागपुर)/76-आ० क० सं० क०] में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् उक्त अधिसूचना में श्री के० टी० वी० चारयुलु और श्री एच० एल० भगत को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी हैं, कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए शब्दों और अक्षरों के स्थान पर 'श्री के० टी० वी० चारयुलु को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी है, कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए' शब्द और अक्षर प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० 3072/फा०सं० 404/147/(क०ब० अ०नागपुर)/79 आ०क०स०क०]

एच० वेंकटरामन, उप सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 16th November, 1979

INCOME-TAX

S.O. 4042.—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax, Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Department of Revenue No. 3002 [F. No. 404/147(TRO-Nagpur)/79-ITCC] dated the 20th September, 1979 namely; In the said Notification for the words and letter "Sarvshri K. T. V. Charyulu and H. L. Bhagat being gazetted officers of the Central Government, to exercise the powers of Tax Recovery Officers" the words and letter "Shri K. T. V. Charyulu being a gazetted officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer" shall be substituted.

[No. 3072/F. No. 404/147/(TRO-Nagpur)/79-ITCC]

H. VENKATARAMAN, Dy. Secy.

(आर्थिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 29 नवम्बर, 1979

का० आ० 4043.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम 1976 (1976 का 21) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा भारत सरकार, वित्त मंत्रालय आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की 23 जून, 1979 की अधिसूचना संख्या एफ० 2-7/79 आर० आर० बी०(3) में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात :—

उक्त अधिसूचना में "गुडगांव और महेन्द्रगढ़ जिले" शब्दों के स्थान पर "फरीदाबाद, गुडगांव और महेन्द्रगढ़ जिले" शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 10-14/79-आर० आर० बी०]

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

New Delhi, the 29th November, 1979

S.O. 4043.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 3 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance, Department of Economic Affairs (Banking Division) No. F. 2-7/79-RRB(3) dated the 23rd June, 1979 namely :—

In the said notification for the words "districts of Gurgaon and Mehendragarh" the words "districts of Faridabad, Gurgaon and Mehendragarh" shall be substituted.

[No. F. 10-14/79-RRB]

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 1979

का० आ० 4044.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, और जम्मू ग्रामीण बैंक के अध्यक्ष की नियुक्ति विषयक इस विभाग की दिनांक 25-6-79 की समसंख्यक सूचना को आंशिक रूप से संशोधित करते हुए केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा श्री एस० आर० कोतवाल को जम्मू ग्रामीण बैंक का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 1 जुलाई, 1979 से प्रारम्भ होकर 6 दिसम्बर, 1979 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिसके दौरान श्री एस० आर० कोतवाल अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे।

[संख्या 3-1/79 आर० आर० बी०]

New Delhi, the 30th November, 1979

S.O. 4044.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), and in partial modification of this Department's notification of even number dated 25-6-1979 relating to the appointment of Chairman Jammu Rural Bank, the Central Government hereby appoints Shri S. R. Kotwal as the Chairman of the Jammu Rural Bank and specifies the period commencing on the 1st July, 1979 and ending with the 6th December, 1979 as the period for which the said Shri S. R. Kotwal shall hold office as such Chairman.

[No. F. 3-1/79-RRB]

का० आ० 4045.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976, का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा श्री राम प्रकाश गुप्ता को जम्मू ग्रामीण बैंक, जम्मू का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 7 दिसम्बर, 1979 से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर, 1981 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिसके दौरान श्री राम प्रकाश गुप्ता अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे।

[सं० 3-1/79-आर०आर०बी०(क)]

S.O. 4045.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri Ram Prakash Gupta as the Chairman of the Jammu Rural Bank, Jammu and specifies the period commencing on the 7th December, 1979 and ending with the 31st December, 1981 as the period for which the said Shri Ram Prakash Gupta shall hold office as such Chairman.

[No. F. 3-1/79-RRB(a)]

नई दिल्ली, 12 दिसम्बर, 1979

का० आ० 4046.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा श्री ए० के० मजूमदार को बस्तर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक जगदलपुर, का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 15 दिसम्बर, 1979 से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर, 1982 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिसके दौरान श्री ए० के० मजूमदार अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे।

[संख्या एफ० 1-8/79-आर०आर०बी०]

दिनेश चन्द्र, निदेशक

New Delhi, the 12th December, 1979

S.O. 1046.— In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri A.K. Majumdar as the Chairman of the Bastar Kshetriya Gramin Bank, Jagdalpur and specifies the period commencing on the 15th December, 1979 and ending with the 31st December, 1982 as the period for which the said Shri A.K. Majumdar shall hold office as such Chairman.

[No. F. 1-8/79-RRB]

DINESH CHANDRA, Director

नई दिल्ली, 6 दिसम्बर, 1979

का० आ० 4047.—भारतीय औद्योगिक विकास बैंक अधिनियम, 1964 (1964 का 18) की धारा 6 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) के उपखण्ड (ii) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार श्री बी० बी० सिंह को श्री बलदेव पसरीचा के स्थान पर भारतीय औद्योगिक विकास बैंक का निदेशक तत्काल प्रभावी रूप से नामित करती है।

[सं० एफ० 10 (107) आई०एफ०-1/79]

बी० सी० पटनायक, निदेशक

New Delhi, the 6th December, 1979

S.O. 4047.—In pursuance of sub-clause (ii) of clause (c) of sub-section (1) of Section 6 of the Industrial Development Bank of India Act, 1964 (18 of 1964), the Central Government hereby nominates Shri B. B. Singh, Chairman, Industrial Finance Corporation of India, as the director of the Industrial Development Bank of India with immediate effect vice Shri Baldev Pasricha.

[F. No. 10(107)-IF-I/79]

B. C. PATNAIK, Director

(व्यय विभाग)

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1979

का०आ० 4048.—राष्ट्रपति, केन्द्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण और अपील) नियम, 1965 के नियम 12 के उपनियम (2) के खण्ड (ख) तथा नियम 24 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का

प्रयोग करते हुए भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) की अधिसूचना सं० का०आ० 3390, तारीख 7 नवम्बर, 1974 में निम्नलिखित संशोधन करते है, अर्थात :—

उक्त अधिसूचना में, अनुसूची के स्थान पर निम्नलिखित अनुसूची रखी जाएगी, अर्थात :—

"अनुसूची

1. महालेखाकार, पश्चिमी बंगाल	1 (i) महालेखाकार I, पश्चिमी बंगाल (ii) महालेखाकार II, पश्चिमी बंगाल (iii) निदेशक, लेखा परीक्षा, केन्द्रीय
2. महालेखाकार, महाराष्ट्र	2. (i) महालेखाकार I, महाराष्ट्र (ii) महालेखाकार II, महाराष्ट्र (iii) निदेशक, लेखा परीक्षा, केन्द्रीय (iv) निदेशक, लेखा परीक्षा (वैज्ञानिक और वाणिज्यिक विभाग)
3 महालेखाकार, उत्तर प्रदेश	3. (i) महालेखाकार I, उत्तर प्रदेश (ii) महालेखाकार II, उत्तर प्रदेश (iii) महालेखाकार III, उत्तर प्रदेश
4. महालेखाकार, आंध्र प्रदेश	4 (i) महालेखाकार I, आंध्र प्रदेश (ii) महालेखाकार II, आंध्र प्रदेश
5 महालेखाकार, तमिलनाडु	5 (i) महालेखाकार I, तमिलनाडु (ii) महालेखाकार II, तमिलनाडु
6. महालेखाकार, मध्य प्रदेश	6 (i) महालेखाकार I, मध्य प्रदेश (ii) महालेखाकार II, मध्य प्रदेश
7. महालेखाकार, बिहार	7 (i) महालेखाकार I, बिहार (ii) महालेखाकार II, बिहार
8. निदेशक, लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं	8 (i) निदेशक, लेखा परीक्षा, रक्षा सेवाएं (ii) निदेशक, लेखा परीक्षा, (आयुध कारखाने)
9 (i) मुख्य लेखा परीक्षक, पूर्व रेल (ii) मुख्य लेखा परीक्षक, दक्षिण रेल	9 (i) निदेशक, लेखा परीक्षक, पूर्वी रेलवे (ii) निदेशक, लेखा परीक्षा, दक्षिण रेलवे (iii) निदेशक, लेखा परीक्षा, उत्पादन एकक
10. महा लेखाकार असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम	10 (i) महालेखाकार, असम, मेघालय, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश (ii) महा लेखाकार, नागालैण्ड (iii) महालेखाकार, त्रिपुरा (iv) महा लेखाकार, मणिपुर"

[फा०सं० सी-11021/1/79-ई०जी०आई०]

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 10th December, 1979

S.O. 4048.—In exercise of the powers conferred by clause (b) of sub-rule (2) of rule 12 and sub-rule (1) of rule 24 of the Central Civil Services (Classification, Control and Appeal) Rules, 1965, the President hereby makes the following amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Expenditure) No. S. O. 3390 dated the 7th November, 1974, namely:—

In the said notification, for the Schedule, the following Schedule shall be substituted, namely:—

"SCHEDULE

1. A.G. West Bengal	1 (i) A.G. I, West Bengal. (ii) A.G. II, West Bengal. (iii) Director of Audit, Central.
2. A.G. Maharashtra	2 (i) A.G. I, Maharashtra. (ii) A.G. II, Maharashtra. (iii) Director of Audit, Central. (iv) Director of Audit (Scientific and Commercial Departments).
3. A.G. Uttar Pradesh	3 (i) A.G. I, Uttar Pradesh. (ii) A.G. II, Uttar Pradesh. (iii) A.G. III, Uttar Pradesh.
4. A.G. Andhra Pradesh	4 (i) A. G. I, Andhra Pradesh. (ii) A.G. II, Andhra Pradesh.
5. A.G. Tamil Nadu	5 (i) A.G. I, Tamil Nadu. (ii) A.G. II, Tamil Nadu.
6. A.G. Madhya Pradesh	6 (i) A.G. I, Madhya Pradesh. (ii) A.G. II, Madhya Pradesh.
7. A.G. Bihar	7 (i) A. G. I, Bihar. (ii) A.G. II, Bihar.
8. Director of Audit Defence Services	8 (i) Director of Audit, Defence Services. (ii) Director of Audit, (Ordnance Factories).
9. (i) Chief Auditor, Eastern Railway (ii) Chief Auditor, Southern Railway	9 (i) Director of Audit, Eastern Railway. (ii) Director of Audit, Southern Railway. (iii) Director of Audit, Railway Production Units.
10. A.G. Assam, Meghalaya, Nagaland, Manipur, Tripura, Arunachal Pradesh and Mizoram	10 (i) Accountant General, Assam, Meghalaya, Mizoram and Arunachal Pradesh. (ii) Accountant General, Nagaland. (iii) Accountant General, Tripura. (iv) Accountant General, Manipur."

[F. No. C-11021/1/79-EGI]

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1979

का०आ० 4049.—राष्ट्रपति, केन्द्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण और अपील) नियम, 1965 के नियम 9 के उपनियम (2), नियम 12 के उपनियम (2) के खंड (ख) और नियम 34 के साथ पठित नियम 24 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) की अधिसूचना सं० का० नि० आ० 639, तारीख 28 फरवरी, 1957 में निम्नलिखित और संशोधन करते हैं, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में अनुसूची के स्थान पर निम्नलिखित अनुसूची रखी जाए, अर्थात् :—

"अनुसूची

भाग 1 साधारण—केन्द्रीय सेवा समूह 'क'

पद का वर्णन	नियुक्ति प्राधिकारी	शास्तियां अधिरोपित करने वाला सक्षम प्राधिकारी और वे शास्तियां जो वह (नियम II में विनिर्दिष्ट शास्तियों की मद संख्याओं के प्रति निर्देश करते हुए) अधिरोपित कर सकता है।		अपील प्राधिकारी (नियम II में विनिर्दिष्ट शास्ति की मद संख्या के प्रति निर्देश करते हुए।)
		प्राधिकारी	शास्तियां	
1	2	3	4	5
भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग भारत का नियंत्रक और महालेखापरीक्षक				
प्रशासन अधिकारी, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का सहायक सचिव नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का सहायक निजी सचिव, उप नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का निजी सचिव, अपर नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का ज्येष्ठ वैयक्तिक सहायक नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के अधीनस्थ सभी लेखा परीक्षक कार्यालय	उप-नियंत्रक और महालेखापरीक्षक	उप नियंत्रक और महालेखापरीक्षक	सभी (v) से (ix) तक	(i) से (iv) तक के लिए नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के लिए राष्ट्रपति
लेखा अधिकारी, लेखा परीक्षा अधिकारी भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा कर्मचारी महाविद्यालय	अपर उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (वाणिज्य), निदेशक, लेखा परीक्षक अपर निदेशक, लेखा परीक्षा, महालेखाकार, अपर महालेखाकार	अपर उप नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक (वाणिज्य) निदेशक, लेखापरीक्षा, अपर निदेशक, लेखा परीक्षा, महालेखाकार, अपर महालेखाकार	सभी	(i) से (iv) तक के लिए नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (v) से (ix) तक के लिए राष्ट्रपति
प्रशासन अधिकारी, लेखा अधिकारी	निदेशक	निदेशक	सभी	

भाग 2—साधारण केन्द्रीय सेवा समूह 'ग'

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक का कार्यालय				
अधीनस्थ लेखा सेवा, अधीनस्थ रेल लेखा परीक्षा सेवा (अवर, अनुभाग अधिकारी) सभी अन्य पद।	उप नियंत्रक और महालेखापरीक्षक	उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)	सभी (i) से (iv) तक	नियंत्रक और महालेखापरीक्षक उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
	संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)	संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक) प्रशासन अधिकारी (कार्यालय स्थापन और प्रशासन)	सभी	उपनियंत्रक और महा लेखा परीक्षक (1) संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)
नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के अधीनस्थ सभी लेखा और लेखा परीक्षक कार्यालय	अपर उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (वाणिज्य)	अपर उप नियंत्रक और महा लेखापरीक्षक (वाणिज्य)	सभी	उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
अधीनस्थ लेखा सेवा, अधीनस्थ रेल लेखा परीक्षा सेवा (अवर, अनुभाग अधिकारी)	निदेशक, लेखा परीक्षा अपर निदेशक, लेखा परीक्षा महालेखाकार अपर महालेखाकार	लेखा परीक्षा के अपर निदेशक, लेखा परीक्षा के अपर निदेशक महा लेखाकार, अपरमहालेखाकार लेखा परीक्षा के संयुक्त निदेशक लेखापरीक्षा के उप निदेशक, ज्येष्ठ उप महालेखाकार, उप महालेखाकार	(i) से (iv) तक	अपर उप नियंत्रक और महा लेखापरीक्षक (वाणिज्य) लेखा परीक्षा के निदेशक लेखा परीक्षा के अपर निदेशक, महालेखाकार, अपरमहालेखाकार

1	2	3	4	5
सभी अन्य पद	संयुक्त निदेशक, लेखा-परीक्षा, उप निदेशक, लेखापरीक्षा; ज्येष्ठ उप महा लेखाकार, उप महालेखाकार परीक्षक, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग	संयुक्त निदेशक, लेखा परीक्षा; उप निदेशक, लेखापरीक्षा, ज्येष्ठ उप महा लेखाकार, उप महालेखाकार परीक्षक, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग	सभी	अपर उप नियंत्रक महालेखा परीक्षक (वाणिज्य) निदेशक, लेखा परीक्षा अपर निदेश, लेखा परीक्षा महा लेखा-कार, अपर महालेखाकार,
		सहायक निदेशक, लेखापरीक्षा; सहायक महालेखाकार, लेखा अधिकारी, लेखापरीक्षा अधिकारी	(1)	संयुक्त निदेशक, लेखापरीक्षा, उप निदेशक लेखापरिक्षक, ज्येष्ठ उप महालेखाकार, उप महालेखाकार
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा सेवा कर्मचारी महाविद्यालय				
सभी पद	निदेशक	निदेशक	सभी	उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक	भाग-3 साधारण केन्द्रीय सेवा समूह 'च'			
सभी पद	संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)	संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)	सभी	उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
		प्रशासन अधिकारी (कार्यालय स्थापन और प्रशासन)	(i) से (iv) तक	संयुक्त निदेशक (कार्मिक) उप निदेशक (कार्मिक)
नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के अधीनस्थ सभी लेखा और लेखा परीक्षक कार्यालय (इसमें मुख्य कार्यालय और शाखा कार्यालय भी सम्मिलित हैं।)				
सभी पद	लेखा परीक्षा के संयुक्त निदेशक लेखा परीक्षा के उप निदेशक ज्येष्ठ उप महालेखाकार उप महा-लेखाकार, परीक्षक, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग लेखा परीक्षा के सहायक निदेशक/लेखा परीक्षा अधिकारी/लेखा अधिकारी (कार्यालय के प्रधान)	संयुक्त निदेशक, लेखा परीक्षा, उप निदेशक, लेखा परीक्षा ज्येष्ठ उप महालेखाकार उप महालेखाकार परीक्षक, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग	सभी	निदेशक, लेखा परीक्षा अपर निदेशक, लेखा परीक्षक महा लेखापाल अपर महालेखापाल
		लेखा परीक्षा के सहायक निदेशक लेखा परीक्षा अधिकारी/लेखा अधि-कारी (कार्यालय का प्रधान)		
		सहायक निदेशक, लेखा परीक्षा, सहायक महालेखाकार	(i) से (iv) तक	संयुक्त निदेशक, लेखापरीक्षा
		सहायक परीक्षक, स्थानीय लेखापरीक्षा विभाग		उपनिदेशक, लेखा परीक्षा ज्येष्ठ उप महालेखाकार
		लेखा अधिकारी		उप महालेखाकार
		लेखा परीक्षा अधिकारी		परीक्षक, स्थानीय लेखा परीक्षा विभाग
भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा कर्मचारी महाविद्यालय।				
सभी पद	निदेशक	निदेशक प्रशासन अधिकारी लेखा अधिकारी	सभी (i) से (iv) तक	उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक निदेशक"

[फा० सं० सी० 11021/1/79/ई०जी०आई]

एस० के० दास, अवर सचिव

New Delhi, the 10th December, 1979

S.O. 4049.—In exercise of the powers conferred by Sub-rule (2) of rule 9, clause (b) of sub-rule (2) of rule 12 and sub-rule (1) of rule 24 read with rule 34 of the Central Civil Services (Classification, Control and Appeal) Rules, 1965, the President hereby makes the following

further amendments in the notification of the Ministry of Finance (Department of Expenditure) No. S R.O. 639 dated the 28th February, 1957, namely :—

In the said notification, for the Schedule, the follwing Schedule shall be substituted, namely:—

"SCHEDULE

Part I—General Central Service—Group 'B'

Description of post	Appointing Authority	Authority competent to impose penalties and penalties which it may impose (with reference to item numbers of penalties specified in rule 11).		Appellate authority (with reference to item numbers of penalties specified in rule 11).
		Authority	Penalties	
1	2	3	4	5
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT				
Office of the Comptroller and Auditor General of India.				
Administrative Officer, Assistant Secretary to the Comptroller and Auditor-General, Assistant Private Secretary to the Comptroller and Auditor General, Private Secretary to the Deputy Comptroller and Auditor General, Senior Personal Assistants to the Additional Deputy Comptroller and Auditor General.	Deputy Comptroller and Auditor General.	Deputy Comptroller and Auditor General.	All	For (i) to (iv) Comptroller and Auditor General. For (v) to (ix) President.
ALL ACCOUNTS AND AUDIT OFFICES SUBORDINATE TO THE COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL.				
Accounts Officer Audit Officer.	Additional Deputy Comptroller and Auditor General (Commercial), Directors of Audit, Additional Directors of Audit, Accountants General, Additional Accountants General.	Additional Deputy Comptroller and Auditor General (Commercial) Directors of Audit Additional Directors of Audit Accountants General Additional Accountants General.	All	For (i) to (iv) Comptroller and Auditor General. For (v) to (ix) President.
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS SERVICE STAFF COLLEGE				
Administrative Officer Accounts Officer.	Director.	Director	All	

Part-II-General Central Service—Group 'C'

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT :				
Office of the Comptroller and Auditor General of India				
Subordinate Accounts Servcie Subordinate Railway Audit Service (i.e. Section Officers)	Deputy Comptroller and Auditor General.	Deputy Comptroller and Auditor General	All	Comptroller and Auditor General.
		Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel).	(i) to (iv)	Deputy Comptroller and Auditor General.
All other posts.	Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel).	Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel.)	All	Deputy Comptroller and Auditor General.
		Administrative Officer (Office Establishment and Administration).	(i)	Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel)
ALL ACCOUNTS AND AUDIT OFFICES SUBORDINATE TO THE COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL.				
Subordinate Accounts Service Subordinate Railway.	Additional Deputy Comptroller and Auditor General. (Commercial).	Additional Deputy Comptroller and Auditor General (Commrcial).	All	Deputy Comptroller and Auditor General.

1	2	3	4	5
Audit Service (i.e. Section Officers).	Director of Audit Additional Directors of Audit Accountants General Addtional Accountants General	Directors of Audit Additional Directors of Audit Accountants General Additional Accountants General.		
		Joint Directors of Audit.	(i) to (iv)	Additional Deputy Comptroller and Auditor General (Commercial).
		Deputy Directors of Audit.		Directors of Audit.
		Senior Deputy Accountants General.		Additional Direciors of Audit.
		Deputy Accountants General.		Accountatns General.
				Additional Accountants General.
All other posts.	Joint Directors of Audit. Deputy Directors of Audit. Senior Deputy Accountants General. Deputy Accountants General. Examiners, Local Audit Department.	Joint Directors of Audit. Deputy Directors of Audit. Senior Deputy Accountants General. Deputy Accountants General. Examiners, Local Audit Department.	All	Additional Deputy Comptroller and Auditor General. (Commercial). Director of Audit. Additional Directors of Audit. Accountants General. Additional Accountants General.
		Assistant Directors of Audit.	(i)	Joint Directors of Audit Deputy Directors of Audit.
		Assistant Accountants General.		Senior Deputy Accountants General.
		Accounts Officers.		Deputy Accountants General.
		Audit Officers		
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS SERVICE STAFF COLLEGE:				
All posts	Director	Director	All	Deputy Comptroller and Auditor General.

Part-III-General Central Service Group 'D'

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT :				
Office of the Comptroller and Auditor General of India.				
All posts.	Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel)	Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel) Administrative Officer (Office Establishment and Administration).	All (i) to (iv)	Deputy Comptroller and Auditor General. Joint Director (Personnel) Deputy Director (Personnel).
All Accounts and Audit Offices Subordinate to the Comptroller and Auditor General (including Head Offices and Branch Offices)				
All posts.	Joint Directors of Audit. Deputy Directors of Audit. Senior Deputy Accountants General.	Joint Directors of Audit. Deputy Director of Audit. Senior Deputy Accountants General.	All	Director of Audit. Additional Director of Audit. Accountants General.

1	2	3	4	5
	Deputy Accountants General.	Deputy Accountants General.		Additional Accountants General.
	Examiners, Local Audit Department, Assittant Directors of Audit/Audit Officers/Accounts Officers (Heads of Office)	Examiners, Local Audit Department, Assistant Directors of Audit/Audit Officers/Accounts Officers (Heads of Office)		
		Assistant Director of Audit Assistant Accountant General. Assistant Examiner, Local Audit Department. Accounts Officer Audit Officer.	(i) to (iv)	Joint Director of Audit. Deputy Director of Audit. Senior Deputy Accountant General. Deputy Accountant G ral. Examiner, Local Audit Department.
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS SERVICE STAFF COLLEGE:				
All posts.	Director.	Director.	All	Deputy Comptroller and Auditor General.
		Administrative Officer. Accounts Officer.	(i) to (iv)	Director".

[F. No. C-11021/1/79-EGI]

S.K. DAS, Under Secy.

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

नई दिल्ली, 28 जुलाई, 1979

आय कर

का०आ० 4050.—सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यह अधिसूचित किया जाता है कि केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने निम्नलिखित संस्थान को, आय कर अधिनियम, 1961 की धारा 350 की उपधारा (2) के खण्ड (क) के प्रयोजन के लिए प्रौद्योगिक, इंजीनियरी और प्रबन्ध परामर्श के क्षेत्र में अनुमोदित कर दिया है।

संस्था

डेवलपमेंट कंसलटेंटस लिमिटेड, कलकत्ता

यह अनुमोदन 9 सितम्बर 1976 से प्रभावी है।

[सं० 2951/फा०सं० 203/133/76 आई टी ए II]

जे०पी० शर्मा, निदेशक

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

New Delhi, the 28th July, 1979

INCOME TAX

S. O. 4050.—It is hereby notified for general information that the concern mentioned below has been approved by the Central Board of Direct Taxes for the purpose of clause (a) of sub-section (2) of Section 35D of the Income-tax Act, 1961, in the field of Technological, Engineering and Management consultancy.

INSTITUTION

DEVELOPMENT CONSULTANTS LIMITED CALCUTTA

The approval is effective from 9th September, 1976.

[No. 2951/F. No. 203/133/76—ITAII]

J. P. SHARMA Director

शुद्धि-पत्र

नई दिल्ली, 29 अक्तूबर 1979

आयकर

का० आ० 4051.—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड की, आयुक्त (अपील) नई दिल्ली की अधिकारिता संबंधी अधिसूचना सं० 2984, तारीख 31-8-1979 में "आय कर आयुक्त (अपील) X, नई दिल्ली" प्रविष्टि के सामने अनुसूची के स्तम्भ 2 के नीचे "जिला VIII के सभी वार्ड/सर्किल" के स्थान पर "आ० अ० आ० रेंज IV—3, नई दिल्ली की अधिकारिता में के वार्डों/सर्किलों को छोड़कर जिला VIII के सभी वार्ड/सर्किल" रखें।

[सं० 3056/फा०सं० 261/18/79—आ०का०जे०)]

CORRIGENDUM

New Delhi, the 29th October, 1979

INCOME-TAX

S.O. 4051.—In the notification of the Central Board of Direct Taxes No. 2984 dated 31-8-79 for the jurisdiction of the Commissioner (Appeals) at New Delhi.

Under columns 2 of the Schedule against Entry "Commissioner of Income-tax (Appeals) X, New Delhi

Substitute

"All Wards/Circles of District VIII except Wards/Circles in the jurisdiction of IAC Range-IV-E, New Delhi

for

All Wards/Circles in Distt. VIII."

[No. 3056/F. No. 261/18/79-ITJ]

का० आ० 4052.—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121-क की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इसके पूर्व जारी की गई अधिसूचना में आंशिक उपान्तरण करते हुए, यह निदेश देता है कि नीचे अनुसूची के स्तंभ सं०

1 में विनिर्दिष्ट भारसाधन के आयकर आयुक्त (अपील), उन आयकर बोर्डों, सर्किलों और रेंजों में जो इस अनुसूची के स्तंभ (2) में तत्स्थानी प्रविष्टियों में विनिर्दिष्ट है, आय-कर या अतिकर या ब्याज कर के लिए निर्धारित ऐसे व्यक्तियों की बाबत, जो आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उपधारा (2) के खण्ड (क) से (ज) तक में, कम्पनी (लाभ) अतिकर अधिनियम, 1964 (1964 का 7) की धारा II की उपधारा (1) में और ब्याज-कर अधिनियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 15 की उपधारा (1) में वर्णित आदेशों में से किसी आदेश से व्यथित है, और ऐसे व्यक्तियों या ऐसे वर्गों के व्यक्तियों के बारे में भी जिनकी बाबत बोर्ड ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उपधारा (2) के खण्ड (1) के उपबंधों के अनुसार निदेश दिया है या भविष्य में निदेश करें, अपने कृत्यों का पालन करेंगे।

अनुसूची

मुख्यालय सहित आय कर भारसाधन	वार्ड/सर्किल आ० अ० आ० निर्धारिण रेंज
1	2
आयुक्त (अपील)-I, नई दिल्ली	1. कम्पनी सर्किल II, VII, XV, XVI और XX 2. विशेष सर्किल–XV 3. वेतन सर्किल 4. प्राइवेट वेतन सर्किल 5. टी० डी० एस० (धारा 206) सर्किल 6. आ० अ० आ० निर्धारण रेंज I-ङ०, नई दिल्ली
आयुक्त (अपील)-II नई दिल्ली	1. कम्पनी सर्किल I, IV और XVII 2. आ०अ०आ० निर्धारिण रेंजII-क
आयुक्त (अपील)-XI नई दिल्ली	1. कम्पनी सर्किल–V, X और XIV 2. विशेष सर्किल–IV, नई दिल्ली

जहां कोई आयकर सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग इस अधिसूचना द्वारा एक रेंज से किसी अन्य रेंज को अन्तरित हो जाता है, वहां उस आय-कर सर्किल, वार्ड या जिले या उसके भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और उस रेंज के, जिससे वह आय-कर सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, भारसाधन के आय-कर आयुक्त के समक्ष इस अधिसूचना की तारीख के ठीक पूर्व लंबित अपीलें उस तारीख से जिस तारीख को यह अधिसूचना प्रभावी होती है, उस रेंज के, जिसको उक्त सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, भारसाधन के आय-कर आयुक्त को अन्तरित की जाएगी और उसके द्वारा उन पर कार्यवाही की जाएगी।

यह अधिसूचना 1-11-1979 से प्रभावी होगी।

[सं० 3057/फा०स० 261/18/79 आ० क० जे०]

S.O. 4052.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 121-A of the Income-tax Act 1961 (43 of 1961) and in partial modification of the notification issued earlier, the Central Board of Direct Taxes hereby direct that the Commissioner of Income-tax (Appeals) of the charge specified in Col. No. (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of such persons assessed to Income-tax or surtax or Interest-tax in the Income-tax Ward, Circles, Districts and Ranges specified in the corresponding entries in column (2), thereof as are aggrieved by any of the orders mentioned in clause (a) to (h) of sub-section (2) of Section (2) of Section 246 of the Income-tax Act, 1961 in sub-section (1) of Section II of Companies (Profits) sur-tax Act, 1964 (7 of 1964) and in sub-section (1) of Section 15 of the Interest Tax Act, 1974 (45 of 1974) and also in respect of such persons or classes of persons as the Board has directed or may direct in future in accordance with the provisions of clause (i) of sub-section (2) of Section 246 of the Income-tax Act, 1961.

SCHEDULE

Charges with Headquarters	Income-tax Wards/Circles I.A.C. Assessment Ranges
1	2
Commissioner (Appeals)-I, New Delhi.	1. Company Circles-II, VII, XV, XVI & XX 2. Special Circle-XV. 3. Salary Circles. 4. Private Salary Circle. 5. TDS (Section 206) Circles. 6. IAC Assessment Range-I-E, New Delhi.
Commissioner (Appeals)-II New Delhi.	1. Company Circle-I, IV and XVII. 2. I.A.C. Assessment Range-II-A.
Commissioner (Appeals)-XI New Delhi.	1. Company Circle-V, X & XIV. 2. Special Circle-IV, New Delhi.

Whereas the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this notification from one charge to another charge, appeals arising out of assessments made in that Income-tax Circle, Ward or District or part thereof and pending immediately before the date of this Notification before the Commissioner of Income-tax of the Charge from whom the Income-tax Circle, Ward, or District or part thereof is transferred shall, from the date of this Notification takes effect be, transferred to and dealt with by the Commissioner of Income-tax of the Charge to whom the said Circle, Ward or District or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1-11-1979.

[No. 3057/F.No. 261/18/79-ITJ]

का०आ० 4053.—केन्द्रीय प्रत्यक्ष-कर बोर्ड, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 122 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इस संबंध में सभी पूर्ववर्ती अधिसूचनाओं को अधिक्रांत करते हुए, यह निदेश देता है कि नीचे अनुसूची के स्तंभ (1) में विनिर्दिष्ट रेंजों के सहायक आय-कर आयुक्त (अपील) उन सभी व्यक्तियों और आय की बाबत जिनकी बाबत उसके स्तम्भ (2) में की तत्स्थानी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट आय-कर सर्किलों, वार्डों और जिलों में आयकर का निर्धारण हुआ है और जिसके अन्तर्गत आय-कर के लिए निर्धारित वे सभी व्यक्ति और आय नहीं हैं, जिन पर आय-कर आयुक्त (अपील) की अधिकारिता निहित है, अपने कृत्यों का पालन करेंगे।

अनुसूची

रेंज	आय कर सर्किल, बोर्ड और जिले
(1)	(2)
सा० आ० आ० पु० रें, पुणे	1. क-वार्ड, पुणे 2. ख-वार्ड, पुणे 3. ग-वार्ड, पुणे 4. घ-वार्ड, पुणे 5. ङ-वार्ड, पुणे 6. च-वार्ड, पुणे 7. छ-वार्ड, पुणे 8. ज-वार्ड, पुणे 9. ञ-वार्ड, पुणे

1	2
	10. ट-वार्ड, पुणे
	11. केन्द्रीय सर्किल,-II, पुणे
	12. ठ-वार्ड, पुणे
	13. ड-वार्ड, पुणे
	14. ढ-वार्ड, पुणे
	15. त-वार्ड, पुणे
	16. थ-वार्ड, पुणे
	17. द-वार्ड, पुणे
	18. ध-वार्ड, पुणे
	19. केन्द्रीय सर्किल-III पुणे
	20. न-वार्ड, पुणे
	21. प-वार्ड, पुणे
	22. ब-वार्ड, पुणे
	23. भ-वार्ड, पुणे
	24. म-वार्ड, पुणे
	25. य-वार्ड, पुणे
	26. कम्पनी सर्किल-I, पुणे
	27. कम्पनी सर्किल-II, पुणे
	28. केन्द्रीय सर्किल-I, पुणे
	29. एम० एस०सी० I-पुणे
	30. एस०एस०सी० II-पुणे
	31. एस० एंड० आर० सर्किल -I, पुणे
	32. एस० एंड०आर० सर्किल-II, पुणे
	33. एस०एंड०आर० सर्किस-III, पुणे
	34. एस० एंड आर० सर्किल IV, पुणे
	35. सा० मुख्यालय I, पुणे
	36. सा० मुख्यालय II, पुणे
	37. सा० मुख्यालय III, पुणे
	38. अतिरिक्त ञ वार्ड, पुणे
	39. विदेश अनुभाग, पुणे
	40. अतिरिक्त ग-वार्ड, पुणे
	41. अतिरिक्त छ-वार्ड, पुणे
	42. क-वार्ड, सतारा
	43. ख-वार्ड, सतारा
	44. ग-वार्ड, सतारा
	45. घ-वार्ड, सतारा
	46. एडी०आई० (इंट); पुणे
	47. केन्द्रीय सर्किल-IV, पुणे
	48. सर्किल-I, पुणे
	49. सर्किल-II, पुणे
	50. सर्किल-III, पुणे
स०आ०अ० था०रें० थाने	1. क-वार्ड, थाने
	2. ख-वार्ड, थाने
	3. ग-वार्ड, थाने
	4. घ-वार्ड, थाने
	5. ज-वार्ड, थाने
	6. ट-वार्ड, थाने
	7. ड-वार्ड, थाने
	8. ढ-वार्ड, थाने
	9. आयकर अधिकारी, पालघर
	10. ड-वार्ड, थाने
	11. च-वार्ड, थाने
	12. छ-वार्ड, थाने
	13. ञ-वार्ड, थाने
	14. ठ-वार्ड, थाने
	15 त-वार्ड, थाने
	16 थ-वार्ड, थाने
	17 एस०एस०सी०, थाने
	18. क-वार्ड, पनवेल
	19. ख-वार्ड, पनवेल
	20. ग-वार्ड, पनवेल
	21. क-वार्ड, शोलापुर
	22. ख-वार्ड, शोलापुर
	23. ग-वार्ड, शोलापुर
	24. घ-वार्ड, शोलापुर
	25. ड-वार्ड, शोलापुर
	26. च-वार्ड, शोलापुर
	27. एस० एस० सी० शोलापुर
	28. आय कर अधिकारी, बारंती
	29. क-वार्ड, अहमद नगर
	30. ख-वार्ड, अहमद नगर
	31. ग-वार्ड, अहमद नगर
	32. घ-वार्ड, अहमद नगर
	33. ड-वार्ड, अहमद नगर
स०आ०आ० को० रे०, कोल्हापुर	1. क-वार्ड, कोल्हापुर
	2. ख-वार्ड, कोल्हापुर
	3. ग-वार्ड, कोल्हापुर
	4. घ-वार्ड, कोल्हापुर
	5. ड-वार्ड, कोल्हापुर
	6. च-वार्ड, कोल्हापुर
	7. छ-वार्ड, कोल्हापुर
	8. ज-वार्ड, कोल्हापुर
	9. झ-वार्ड, कोल्हापुर
	10 एस०एस०सी०, कोल्हापुर
	11. आयकर अधिकारी, रत्नागिरि
	12. क-वार्ड, सांगली
	13 ख-वार्ड, सांगली
	14. ग-वार्ड, सांगली
	15. घ-वार्ड, सांगली
	16. ड-वार्ड, सांगली
	17. च-वार्ड, सांगली
	18. क-वार्ड, इचलल करंजी
	19. ख-वार्ड, इचलल करंजी
	20. ग-वार्ड, इचलल करंजी

जहां कोई आयकर सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग इस अधिसूचना द्वारा एक रेंज से किसी अन्य रेंज को अन्तरित हो जाता है, वहां उस आय-कर सर्किल वार्ड या जिले या उसके भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और उस रेंज को, जिससे वह आय-कर सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, सहायक आय-कर आयुक्त (अपील) के समक्ष इस अधिसूचना की तारीख के ठीक पूर्व लंबित अपीलें उस तारीख से जिस तारीख को यह अधिसूचना प्रभावी होती है, उस रेंज को, जिसको उक्त सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, सहायक आयकर आयुक्त (अपील) को अन्तरित की जाएगी और उसके द्वारा उन पर कार्यवाही की जाएगी ।

यह अधिसूचना 1-11-1979 से प्रभावी होगी ।

[संख्या 3058/फा०सं० 261/5/78-आ०क०ज०]

S.O. 4053—In exercise of the powers conferred by sub-section (i) of Section 122 of the Income-tax Act 1961 (43 of 1961) and in supersession of all the previous, notifications in this regard the Central Board of Direct Taxes, hereby directs that Appellate Assistant Commissioner of Income-tax of the Ranges specified in column (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of all persons and income assessed to Income-tax in the Income-tax Circles, Wards and Districts specified in the corresponding entry in column (2) there of excluding all persons and incomes assessed to Income-tax over which the jurisdiction vests in commissioner of Income-tax (Appeals).

SCHEDULE

Ranges	Income-tax Circles, Wards and Districts
1	2
A.A.C., P.R., Pune.	1. A—Ward, Pune.
	2. B—Ward, Pune.
	3. C—Ward, Pune.
	4. D—Ward, Pune.
	5. E—Ward, Pune.
	6. F—Ward, Pune.
	7. G—Ward, Pune.
	8. H—Ward, Pune.
	9. J—Ward, Pune.
	10. K—Ward, Pune.
	11. Central Circle-II, Pune.
	12. L—Ward, Pune.
	13. M—Ward, Pune.
	14. N—Ward, Pune.
	15. P—Ward, Pune.
	16. Q—Ward, Pune.
	17. R—Ward, Pune.
	18. S—Ward, Pune.
	19. Central Circle-III, Pune.
	20. T—Ward, Pune.
	21. U—Ward, Pune.
	22. W—Ward, Pune.
	23. X—Ward, Pune.
	24. Y—Ward, Pune.
	25. Z—Ward, Pune.
	26. Companies Circle-I, Pune.
	27. Companies Circle-II, Pune.
	28. Central Circle-I, Pune.
	29. S.S.C.I., Pune.
	30. S.S.C.II, Pune.
	31. S. & R. Circle-I, Pune.
	32. S & R Circle-II, Pune.
	33. S & R Circle-III, Pune.
	34. S & R Circle-IV, Pune.
	35. G.H.Q.I., Pune.
	36. G.H.Q.II Pune.
	37. G.H.Q.III, Pune.
	38. Addl. J.—Ward, Pune.
	39. Foreign Section, Pune.
	40. Addl. C—Ward, Pune.
	41. Addl. G—Ward, Pune.
	42. A—Ward, Satara.
	43. B—Ward, Satara.
	44. C—Ward, Satara.
	45. D—Ward, Satara.
	46. A.D.I. (Int), Pune.
	47. Central Circle-IV, Pune.
	48. Circle—I, Pune.
	49. Circle—II, Pune.
	50. Circle—III, Pune.
A.A.C., T.R., Thane.	1. A—Ward, Thane.
	2. B—Ward, Thane.
	3. C—Ward, Thane.
	4. D—Ward, Thane.
	5. H—Ward, Thane.
	6. K—Ward, Thane.
	7. M—Ward, Thane.
	8. N—Ward, Thane.
	9. I.T.O., Palghar.
	10. E—Ward, Thane.
	11. F—Ward, Thane.
	12. G—Ward, Thane.
	13. J—Ward, Thane.
	14. L—Ward, Thane.
	15. P—Ward, Thane.
	16. Q—Ward, Thane.
	17. S.S.C., Thane.
	18. A—Ward, Panvel.
	19. B—Ward, Panvel.
	20. C—Ward, Panvel.
	21. A—Ward, Solapur.
	22. B—Ward, Solapur.
	23. C—Ward, Solapur.
	24. D—Ward, Solapur.
	25. E—Ward, Solapur.
	26. F—Ward, Solapur.
	27. S.S.C., Solapur.
	28. I.T.O., Barsi.
	29. A—Ward, Ahmednagar.
	30. B—Ward, Ahmednagar.
	31. C—Ward, Ahmednagar.
	32. D—Ward, Ahmednagar.
	33. E—Ward, Ahmednagar.
A.A.C., K.R., Kolhapur.	1. A—Ward, Kolhapur.
	2. B—Ward, Kolhapur.
	3. C—Ward, Kolhapur.
	4. D—Ward, Kolhapur.
	5. E—Ward, Kolhapur.
	6. F—Ward, Kolhapur.
	7. G—Ward, Kolhapur.
	8. H—Ward, Kolhapur.
	9. J—Ward, Kolhapur.
	10. S.S.C., Kolhapur.
	11. I.T.O., Ratnagiri.
	12. A—Ward, Sangli.
	13. B—Ward, Sangli.
	14. C—Ward, Sangli.
	15. D—Ward, Sangli.
	16. E—Ward, Sangli.
	17. F—Ward, Sangli.
	18. A—Ward, Ichalkaranji.
	19. B—Ward, Ichalkaranji.
	20. C—Ward, Ichalkaranji.

Whereas the Income-tax Circle, Ward or District or part thereof stands transferred by this Notification from one range to another range, appeals arising out of the assessments made in that Income-tax Circles, Ward or Districts or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Appellate Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred shall from the date of this notification takes effect be, transferred to and dealt with by the Appellate Assistant Commissioner of the Range to whom the said Circle, Ward or District or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1-11-1979.

[No. 3058/F. No. 261/5/78-ITJ]

नई दिल्ली, 6 नवम्बर, 1979

का०आ० 4054.—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 122 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और इस बाबत सभी पूर्व अधिसूचनाओं को अधिक्रान्त करते हुए, निदेश देता है कि नीचे अनुसूची के स्तम्भ (1) में विनिर्दिष्ट रेंजों के सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), उसके स्तम्भ (2) में तत्संबंधी प्रविष्टि में विनिर्दिष्ट आय-कर सर्किलो, वार्डों और जिलों में आय-कर से निर्धारित सभी व्यक्तियों और आय की बाबत, आय-कर से निर्धारित उन सभी व्यक्तियों और आय को छोड़कर जिन पर अधिकारिता आय-कर आयुक्त (अपील) में निहित है, अपने कृत्यों का पालन करेंगे ।

अनुसूची

रेंज	आय-कर सर्किल/वार्ड और जिले
1	2
1. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), क-रेंज, जयपुर	1. क, ख, ग वार्ड, जयपुर 2. विशेष सर्वेक्षण सर्किल, जयपुर 3. वेतन सर्किल, जयपुर 4. कम्पनी सर्किल, जयपुर 5 केन्द्रीय सर्किल, जयपुर 6. सम्पदा-शुल्क तथा आय-कर सर्किल, जयपुर 7. सभी वार्ड/सर्किल, अलवर
2. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील) ख-रेंज, जयपुर	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1. जयपुर (सहायक आय-कर आयुक्त, क-रेंज, जयपुर के सामने विनिर्दिष्ट को छोड़कर) 2. झुंझुनु 3. सिकर 4. भरतपुर
3. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), अजमेर-रेंज, अजमेर	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1. अजमेर 2. बियावर 3. सवाई माधोपुर
4. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), कोटा-रेंज, कोटा	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1. कोटा 2. बूंदी 3. झालावाड़
5. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), जोधपुर-रेंज, जोधपुर	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1. जोधपुर 2. सम्पदा-शुल्क तथा आय-कर सर्किल, जोधपुर 3. बाड़मेर 4. पाली 5 सुमेरपुर
6 सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), उदयपुर-रेंज, उदयपुर	निम्नलिखित स्थानो पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1 उदयपुर 2. चितौड़गढ़ 3. भीलवाड़ा 4. सिरोही 5 जालोर
7. सहायक आय-कर आयुक्त (अपील), बीकानेर-रेंज, बीकानेर	निम्नलिखित स्थानो पर सभी वार्ड/सर्किल :— 1. बीकानेर 2. श्री गंगानगर 3. हनुमानगढ़ 4 नागौर 5. चुरू

जहां कोई आकरयु सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग इस अधिसूचना द्वारा एक रेंज से किसी अन्य रेंज को अन्तरित हो जाता है, वहां उस आय-कर सर्किल, वार्ड या जिले या उसके भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और उस रेंज के, जिससे वह आय-कर सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, सहायक आय-कर आयुक्त (अपील) के समक्ष इस अधिसूचना की तारीख के ठीक पूर्व लंबित अपीलें उस तारीख से जिस तारीख को यह अधिसूचना प्रभावी होती है, उस रेंज के, जिसको उक्त सर्किल, वार्ड या जिला या उसका भाग अन्तरित हुआ है, सहायक आयकर आयुक्त (अपील) को अन्तरित की जाएगी और उसके द्वारा उन पर कार्यवाही की जाएगी ।

यह अधिसूचना 1-11-1979 से प्रभावी होगी ।

[सं० 3061/फा०सं० 261/20/79—आई टी ए]

New Delhi, the 6th November, 1979

S.O. 4054.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 122 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in supersession of all the previous notifications in this regard, the Central Board of Direct Taxes, hereby directs that Appellate Assistant Commissioner of Income-tax of the Ranges specified in column (1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of all persons and income assessed to income-tax in the Income-tax Circles, Wards and Districts specified in the corresponding entry in column (2) thereof excluding all persons and income assessed to Income-tax over which the jurisdiction vests in Commissioner of Income-tax (Appeals).

SCHEDULE

Ranges	Income-tax Circles, Wards and Districts
1	2
1. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, A-Range, Jaipur.	1. A, B, C Wards, Jaipur. 2. Special Survey Circle, Jaipur. 3. Salary Circle, Jaipur. 4. Company Circles, Jaipur. 5. Central Circles, Jaipur. 6. Estate Duty-cum-I.T. Circles, Jaipur. 7. All Wards/Circles at Alwar.

1	2
2. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, B-Range, Jaipur.	All Wards/Circles at: 1. Jaipur (other than those specified Against AAC A-Ranee, Jaipur). 2. Jhunjhunu. 3. Sikar 4. Bharatpur.
3. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, Ajmer Range, Ajmer.	All Wards/Circles at: 1. Ajmer. 2. Beawar. 3. Sawai Madhopur.
4. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, Kota Range, Kota.	All Wards/Circles at: 1. Kota. 2. Bundi. 3. Jhalawar.
5. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, Jodhpur Range, Jodhpur.	All Wards/Circles at: 1. Jodhpur. 2. Estate Duty-cum-I.T. Circles, Jodhpur. 3. Barmer. 4. Pali. 5. Sumerpur.
6. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, Udaipur Range, Udaipur.	All Wards/Circles at: 1. Udaipur. 2. Chittorgarh. 3. Bhilwara. 4. Sirohi. 5. Jalore.
7. Appellate Assistant Commissioner of Income-tax, Bikaner Range, Bikaner.	All Wards/Circles at: 1. Bikaner. 2. Sriganganagar. 3. Hanumangarh. 4. Nagaur. 5. Churu.

Whereas the Income-tax Circle, Wards or District or part thereof stands transferred by this notification from one Range to another Range, appeals arising out of the assessments made in that Income-tax Circle, Wards or districts or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Appellate Assistant Commissioner of the Range from whom that Income-tax Circle, Ward or District or part thereof is transferred shall from the date of this notification takes effect be transferred to and dealt with by the Appellate Asstt. Commissioner of the Range to whom the said Circle, Ward or District or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1-11-1979.

[No. 3061/F.No. 261/20/79-ITJ]

का०आ० 4055.—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 121क की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और अधिसूचना सं० 2818 (फा०सं० 261/16/78-आई टी जे), तारीख 16-5-79 को अधिक्रान्त करते हुए, निदेश देता है कि नीचे अनुसूची के स्तम्भ (1) में विनिर्दिष्ट भारसाधनों के आय-कर आयुक्त (अपील), उसके स्तम्भ (2) और (3) में तत्सम्बन्धी प्रविष्टियों में विनिर्दिष्ट आय-कर वार्डों, सर्किलों, जिलों और रेंजों में आय-कर या धनकर या ब्याजकर से निर्धारित ऐसे व्यक्तियों की बाबत, जो आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उपधारा (2) के खण्ड (क) से (ज), ब्याज-कर अधिनियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 15 की उपधारा (1) में उल्लिखित किसी आदेश से व्यथित हैं और ऐसे व्यक्तियों या व्यक्ति-वर्ग की बाबत भी जिनके लिए बोर्ड ने आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 246 की उपधारा (2) के खण्ड (i) के उपबन्धों के अनुसार निदेश किया है या भविष्य में निदेश दे, अपने कृत्यों का पालन करेंगे ।

अनुसूची

भारसाधन और मुख्यालय	आय-कर वार्ड और सर्किल	सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण) की रेंज
1	2	3
1. आय-कर आयुक्त (अपील), राजस्थान-1, जयपुर	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल:— 1. केन्द्रीय सर्किल, जयपुर को छोड़कर जयपुर । 2 सम्पदा-शुल्क तथा आयकर सर्किल, जयपुर 3 अजमेर 4. बियावर 5 कोटा 6. बूंदी 7. सवाई माधोपुर 8. झालावाड़ 9. सिकार 10. झुनझुनू 11 उदयपुर 12. चित्तौड़गढ़ 13. भीलवाड़ा 14. सिरोही 15. जलोर	1. सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण), रेंज-I, जयपुर 2. सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), रेंज-II, जयपुर 3. सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), (सहायक), जयपुर 4. सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) उदयपुर-रेंज, उदयपुर । 5 सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), अजमेर रेंज, अजमेर
2. आय-कर आयुक्त (अपील), राजस्थान-II, जयपुर	निम्नलिखित स्थानों पर सभी वार्ड/सर्किल:— 1. केन्द्रीय सर्किल, जयपुर 2. अलवर 3. भरतपुर 4. जोधपुर 5. सम्पदा तथा आयकर सर्किल, जोधपुर 6. पाली 7. बाड़मेर 8. सुमेरपुर 9. बीकानेर 10. नागौर 11. चुरू 12. श्री गंगानगर 13. हनुमानगढ़	1. सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), रेंज-1, जयपुर 2. सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), जोधपुर रेंज, जोधपुर 3. सहायक आय-कर आयुक्त (निरीक्षण), बीकानेर-रेंज, बीकानेर

जहां कोई आयकर सर्किल, वार्ड या जिला या रेंज या उसका भाग इस अधिसूचना द्वारा एक रेंज से किसी अन्य रेंज को अन्तरित हो जाता है, वहां उस आय-कर सर्किल, वार्ड या जिले या रेंज या उसके भाग में किए गए निर्धारणों से उत्पन्न होने वाली और उस भारसाधन के, जिससे वह आय-कर सर्किल, वार्ड या जिला या रेंज या उसका भाग अन्तरित

हुआ है, आय-कर आयुक्त (अपील) के समक्ष इस अधिसूचना की तारीख के ठीक पूर्व लंबित अपीलें उस तारीख से जिस तारीख को यह अधिसूचना प्रभावी होती है, उस भारसाधन के, जिसको उक्त सर्किल, वार्ड या जिला या रेंज या उसका भाग अन्तरित हुआ है, आयकर आयुक्त (अपील) को अन्तरित की जाएगी और उसके द्वारा उन पर कार्यवाही की जाएगी ।

यह अधिसूचना 1-11-1979 से प्रभावी होगी ।

[सं० 3062/फा०सं० 261/20/79-आई टी जे]

एस० के० भटनागर, अवर सचिव

S.O. 4055.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 121 A of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) and in supersession of Notification No. 2818 (F.No.261/16/78-ITJ) dated 16-5-79, the Central Board of Direct Taxes hereby directs that the Commissioners of Income-tax (Appeals) of the Charges specified in Column(1) of the Schedule below, shall perform their functions in respect of such persons assessed to Income-tax or Sur-tax or Interest Tax in the Income-tax Wards, Circles, Districts and Ranges specified in the corresponding entries in column (2) and column (3) thereof as are aggrieved by any of the orders mentioned in clauses (a) to (h) of sub-section (2) of section 246 of the Income-tax Act, 1961, in sub-section (1) of Section 15 of the Interest Tax Act, 1974 (45 of 1974) and also in respect of such persons or classes of persons as the Board has directed or may direct in future in accordance with the provisions of clause (i) of sub-section (2) of Section 246 of the Income-tax Act, 1961.

SCHEDULE

Charge with Headquarters	Income-tax Wards & Circles	Ranges of Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax
1	2	3
1. Commissioner of Income-tax (Appeals) Rajasthan-I, Jaipur.	All Wards/Circles at: 1. Jaipur excepting Central Circles, Jaipur. 2. Estate Duty cum Income-tax Circle Jaipur. 3. Ajmer. 4. Beawar. 5. Kota. 6. Bundi. 7. Sawai Madhopur. 8. Jhalawar. 9. Sikar. 12. Jhunjhunu. 11. Udaipur. 12. Chittorgarh. 13. Bhilwara. 14. Sirohi. 15. Jalore.	1. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Range-I, Jaipur. 2. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Range-II, Jaipur. 3. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax (Asstt.) Jaipur. 4. Inspecting Asstt. Commr. of Income-tax, Udaipur Range, Udaipur. 5. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Ajmer Range, Ajmer.
2. Commissioner of Income-tax (Appeals) Rajasthan-II, Jaipur.	All Wards/Circles at: 1. Central Circle, Jaipur. 2. Alwar. 3. Bharatpur. 4. Jodhpur. 5. Estate cum-I.T. Circles, Jodhpur. 6. Pali. 7. Barmer. 8. Sumerpur. 9. Bikaner. 10. Nagaur. 11. Churu. 12. Sriganganagar 13. Hanumangarh.	1. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Range-I, Jaipur. 2. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Jodhpur Range, Jodhpur. 3. Inspecting Asstt. Commissioner of Income-tax, Bikaner Range, Bikaner.

Whereas the Income-tax Circle, Ward or District or Range or part thereof stands transferred by this Notification from one charge to another charge, appeals arising out of the assessments made in that Income-tax Circle, Ward or District or Range or part thereof and pending immediately before the date of this notification before the Commissioner of Income-tax (Appeals) of the Charge from whom that Income-tax Circle, Ward or District or Range or part thereof is transferred shall from the date of this notification takes effect, be transferred to and dealt with by the Commissioner of Income-tax (Appeals) of the Charge to whom the said Circle, Ward or District or Range or part thereof is transferred.

This notification shall take effect from 1-11-1979.

[No. 3062/F.No. 261/20/79-ITJ]

S. K. BHATNAGAR, Under Secy.

वाणिज्य तथा नागरिक पूर्ति मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 1979

का. आ. 4056.—केन्द्रीय सरकार, निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) अधिनियम, 1963 (1963 का 22) की धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह द्योतन करने के प्रयोजन के लिए एल्यूमिनियम के बर्तनों के संबंध में भारतीय मानक संस्थान प्रमाणीकरण चिन्ह को मान्यता देने का प्रस्ताव करती है कि जहां एल्यूमिनियम के बर्तनों पर ऐसा चिन्ह चिपकाए जाए वहां वे बर्तन उक्त अधिनियम के अधीन उन्हें लागू मानक विनिर्देशों के अनुरूप समझे जाएंगे ।

और केन्द्रीय सरकार ने उक्त प्रस्तावों को निर्यात (क्वालिटी नियंत्रण और निरीक्षण) नियम 1964 के नियम 11 के उपनियम (2) की अपेक्षानुसार निर्यात निरीक्षण परिषद् को भेज दिया है ;

अतः अब उक्त उपनियम के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार उक्त प्रस्तावों को उन सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित करती है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है;

2. सूचना दी जाती है कि यदि उक्त प्रस्तावों के बारे में कोई व्यक्ति कोई आपत्ति या सुझाव देना चाहता है तो वह उसे इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर निर्यात निरीक्षण परिषद् 'वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर' (आठवीं मंजिल) 14/1 बी. एजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-700001 को भेज सकता है ।

3. इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए "एल्यूमिनियम के बर्तन" से कोई ऐसा बर्तन अभिप्रेत है जो एल्यूमिनियम या इसकी मिश्रित धातु से, चाहे पीट कर या चाहे ढाल कर बना है और जिसका बर्तन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है ।

[सं. 6(3)/79-नि.नि. तथा नि.उ.]

सी. बी. कुकरेती, संयुक्त निदेशक

MINISTRY OF COMMERCE AND CIVIL SUPPLIES

(Department of Commerce)

New Delhi, the 22nd December, 1979

S.O. 4056.—Whereas the Central Government in exercise of the powers conferred by section 8 of the Export (Quality Control and Inspection) Act, 1963 (22 of 1963), proposes to recognise the Indian Standards Institution Certification Mark in relation to aluminium utensils for the purpose of denoting that where aluminium utensils are affixed with such mark, they shall be deemed to be in conformity with the standard specification applicable thereto under the said Act;

And whereas the Central Government has forwarded the aforesaid proposal to the Export Inspection Council as required by sub-rule (2) of rule 11 of the Export (Quality Control and Inspection) Rules, 1964 ;

Now, therefore, in pursuance of the said sub-rule, the Central Government hereby publishes the said proposal for the information of the public likely to be affected thereby.

2. Notice is hereby given that any person desiring to forward any objections or suggestions with respect to the said proposal may forward the same within five days of the publication of this notification in the Official Gazette to the Export Inspection Council, 'World Trade Centre' (7th Floor), 14/1B, Ezra Street, Calcutta-700001.

3. For the purpose of this notification, "aluminium utensils" means any utensil manufactured from aluminium or its alloys, wrought or cast, which can be used as an utensil.

[No. 6(3)/79-EI&EP]

C. B. KUKRETI, Jt. Director

(नागरिक पूर्ति विभाग)

भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 1979-11-30

भा० मा० 4057.—समय-समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिन्ह) विनियम 1955 के विनियम 8 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि जिन 134 लाइसेंसों के ब्यौरे नीचे अनुसूची में दिए गए हैं, उनका फरवरी 1977 में नवीकरण किया गया है।

अनुसूची

क्रम संख्या	सी एम/एल संख्या	बैध — से	बैध — तक	भारतीय मानक विशिष्टि की पद संख्या
1	2	3	4	5
1.	52	77 02 01	78 01 31	IS 10—1970
2.	80	77 03 01	78 02 28	IS 10—1970
3.	105	77 02-16	78-03-15	IS 10—1970
4.	107	77-02-16	78-02-15	IS 10—1970
5.	137	77-02-16	78-02-15	IS: 10—1970
6.	156	77-01-16	78-01-15	IS. 220—1972
7.	158	77-02-01	78-01-31	IS: 398—2961
8	226	77-01-16	78-01-15	IS: 1221—1971
9	244	77-01-16	78-01-15	IS: 1300—1966
10.	272	77-02-16	78-02-15	IS: 398—1961
11	499	77-02-01	78-01-31	IS: 1011—1968
12.	570	77-02-01	78-01-31	IS: 494 (भाग 1 और 2) 1964
13.	612	77-02-01	78-01-31	IS: 2927—1975
14.	698	77-01-16	78-01-15	IS. 774—1971
15.	834	77-02-01	78-01-31	IS: 398—1976
16.	860	77-01-01	77-12-31	IS: 2818 (भाग 2)—1975
17.	987	77-02-01	78-01-31	IS . 2287—1970
18.	1013	77-03-01	78-02-28	IS : 774—1971
19.	1168	77-01-01	77-12-31	IS : 398—1961
20.	1184	77-03-01	78-02-28	IS : 325—1970
21.	1210	76-02-16	77-02-15	IS : 1011—1968
22.	1231	77-02-01	78-01-31	IS : 434 (भाग 2)—1964
23.	1384	77-02-01	78-01-31	IS : 21—1975
24	1389	77-01-16	78-01-15	IS : 3242—1965
25.	1487	77-01-01	77-12-31	IS : 916—1966
26.	1512	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
27.	1547	77-02-16	78-02-15	IS : 774—1971
28.	1628	77-02-01	78-01-31	IS : 1550—1967
29.	1638	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
30.	1820	77-03-01	78-02-28	IS : 564—1975
31.	1969	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
32.	2030	77-02-01	78-01-31	IS : 2802—1964
33.	2184	77-01-16	78-01-15	IS : 694 (भाग 2)—1964
34.	2248	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
35.	2479	76-12-16	77-12-15	IS : 4100—1967
36.	2498	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
37.	2532	77-02-16	78-02-15	IS : 779—1968
38.	2648	77-01-16	78-01-15	IS : 2567—1973
39.	2720	77-02-16	78-02-35	IS : 3811—1966
40.	2758	76-10-01	77-09-30	IS : 1308—1974
41.	3172	77-01-16	78-01-15	IS : 4334—1967
42.	3173	77-01-16	78-01-15	IS : 4335—1967
43.	3174	77-01-16	78-01-15	IS : 4336—1967
44.	3175	77-01-16	78-01-15	IS : 4526—1968
45.	3176	77-01-16	78-01-15	IS : 5646—1970
46.	3177	77-01-16	78-01-15	IS : 5647—1970
47.	3178	77-01-16	78-01-15	IS : 5649—1970
48.	3188	77-02-16	78-02-15	IS : 6595—1972
49.	3243	77-02-16	78-02-15	IS : 325—1970
50.	3295	77-01-16	78-01-15	IS : 427—1965
51.	3310	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
52.	3313	77-02-01	78-01-31	IS : 6595—1972
53.	3317	77-02-01	78-01-31	IS : 1703—1968
54.	3318	77-02-01	78-01-31	IS : 761—1967

1	2	3	4	5
55.	3326	77-02-16	78-02-15	IL : 10—1970
56	3327	77-02-01	78-01-31	IS . 1554 (भाग 1)—1964
57.	3379	77-03-01	78-02-28	IS : 398—1961
58.	3485	77-02-16	78-02-15	IS : 2465—1969
59	3612	77-02-01	78-01-31	IS : 5852—1970
60.	3658	77-01-16	78-01-15	IS : 4892—1968
61.	3676	77-01-16	78-01-15	IS : 694 (भाग 2)—1964
62.	3678	77-02-01	78-01-31	IS : 916—1966
63.	3686	77-01-16	78-01-15	IS : 5648—1970
64.	3689	77-02-01	78-01-31	IS : 6914—1973
65.	3690	77-02-01	78-01-31	IS : 6915—1973
66.	3694	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
67	3696	77-02-01	78-01-31	IS . 398—1961
68.	3699	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
69.	3700	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
70.	3701	77-02-01	78-01-31	IS : 2567—1973
71.	3702	77-02-01	78-01-31	IS : 6003—1970
72.	3703	77-02-01	78-01-31	IS : 1785 (भाग 1)—1966 और IS : 1785 (भाग 2)—1967
73.	3705	77-02-16	78-02-15	IS : 2148—1968
74.	3711	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
75.	3717	77-02-16	78-02-15	IS : 325—1970
76.	3719	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
77.	3901	77-02-01	78-01-31	IS : 1011—1968
78.	3967	76-11-16	77-11-35	IS : 10—1970
79.	4128	77-01-16	78-01-15	IS : 6914—1973
80.	4132	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
81.	4133	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
82.	4150	77-01-16	78-01-15	IS : 398—1961
83.	4153	77-02-01	78-01-31	IS : 1165—1967
84.	4154	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
85.	4155	77-02-01	78-01-31	IS : 5346—1975
86.	4159	77-02-01	78-01-31	IS : 7122—1973
87.	4160	77-02-01	78-01-31	IS : 5679—1970
88.	4161	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
89.	4165	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
90.	4166	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
91.	4179	77-02-01	78-01-31	IS : 1875—1971
92.	4187	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
93.	4189	77-02-01	78-01-31	IS : 5346—1975
94.	4192	77-01-01	78-01-31	IS : 565—1975
95.	4196	77-02-16	78-02-15	IS : 2567—1973
96.	4199	77-02-01	78-01-31	IS : 1165—1967
97.	4201	77-02-16	78-02-15	IS : 7122—1973
98.	4203	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
99.	4206	77-02-16	78-04-30	IS : 781—1967
100.	4208	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
101.	4209	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
102.	4222	77-03-01	78-04-30	IS : 635—1975
103.	4318	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
104.	4333	77-01-01	77-03-31	IS : 1310—1974
105.	4334	77-01-01	77-12-31	IS : 561—1972
106.	4335	77-01-01	77-12-31	IS : 564—1975
107.	4353	77-10-01	77-12-31	IS : 2567—1973
108.	4406	77-01-01	77-12-31	IS : 3284—1965
109.	4859	76-12-01	77-11-30	IS : 7406—1974
110.	4939	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
111.	4942	77-01-16	78-01-15	IS : 1703—1968
112.	4943	77-01-16	78-01-15	IS : 781—1967
113.	4944	77-01-16	78-01-15	IS : 1795—1974
114.	4952	77-01-16	78-04-15	IS : 1308—1974
115.	4953	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
116.	4954	77-01-16	78-01-15	IS . 1308—1974
117.	4955	77-01-16	78-01-15	IS : 325—1970 और IS : 1520—1972
118.	4962	77-02-01	78-01-31	IS : 3975—1967
119.	4963	77-01-01	78-01-31	IS : 774—1971
120.	4964	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
121.	4970	77-02-01	78-01-31	IS : 5515—1969
122.	4972	77-02-01	78-01-31	IS : 780—1969
123.	4973	77-02-01	78-01-31	IS : 779—1968
124.	4978	77-02-01	78-01-31	IS : 1554 (भाग 1)—1964
125.	4979	77-02-01	78-01-31	IS : 1165—1967
126.	4980	77-02-01	78-03-31	IS : 694 (भाग 2)—1964
127.	4981	77-02-01	78-01-31	IS : 335—1972
128.	4995	77-02-16	78-02-15	IS : 325—1970
129	5010	77-02-16	78-02-15	IS : 1536 (भाग 1 से 23—1976
130.	5012	77-03-01	78-02-15	IS : 7121—1973
131.	5022	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
132.	5034	77-03-01	78-02-28	IS : 3637—1966
133.	5050	77-10-16	78-01-15	IS : 814 (भाग 1)—1974
134.	5080	77-03-01	78-02-28	IS : 1027—1968

[सं० सी एम डी/13 : 12]

(Department of Civil Supplies)

INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 1979-11-30

S. O. 4057—In pursuance of sub-regulation (1) of Regulation 8 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations 1955, as amended from time to time, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that 134 licences, particulars of which are given in the following Schedule, have been renewed during the month of February, 1977.

SCHEDULE

Sl. No.	CM/L No.	Valid From	Valid To	Indian Standard Specification No.
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	52	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
2.	80	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970

1	2	3	4	5
3.	105	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
4.	107	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
5.	137	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
6.	156	77-01-16	78-01-15	IS : 220—1972
7.	158	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
8.	226	77-01-16	78-01-15	IS : 1221—1971
9.	244	77-01-16	78-01-15	IS : 1300—1966
10.	272	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
11.	499	77-02-01	78-01-31	IS : 1011—1968
12.	570	77-02-01	78-01-31	IS : 694 (Pt I & II) —1964
13.	612	77-02-01	78-01-31	IS : 2927—1975
14.	698	77-01-16	78-01-15	IS : 774—1971
15.	834	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1976
16.	860	77-01-01	77-12-31	IS : 2818 (Pt II) — 1975
17.	987	77-02-01	78-01-31	IS : 2287—1970
18.	1013	77-03-01	78-02-28	IS : 774—1971
19.	1168	77-01-01	77-12-31	IS : 398—1961
20.	1184	77-03-01	78-02-28	IS : 325—1970
21.	1210	76-02-16	77-02-15	IS : 1011—1968
22.	1231	77-02-01	78-01-31	IS : 434 (Pt II)— 1964
23.	1384	77-02-01	78-01-31	IS : 21—1975
24.	1389	77-01-16	78-01-15	IS : 3242—1965
25.	1487	77-01-01	77-12-31	IS : 916—1966
26.	1512	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
27.	1547	77-02-16	78-02-15	IS : 774—1971
28.	1628	77-02-01	78-01-31	IS : 1550—1967
29.	1638	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
30.	1820	77-03-01	78-02-28	IS : 564—1975
31.	1969	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
32.	2030	77-02-01	78-01-31	IS : 2802—1964
33.	2184	77-01-16	78-01-15	IS : 694 (Pt II)— 1964
34.	2248	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
35.	2479	76-12-16	77-12-15	IS : 4100 -1967
36.	2498	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
37.	2532	77-02-16	78-02-15	IS : 779—1968
38.	2648	77-01-16	78-01-15	IS : 2567—1973
39.	2720	77-02-16	78-02-15	IS : 3811—1966
40.	2758	76-10-01	77-09-30	IS : 1308—1974
41.	3172	77-01-16	78-01-15	IS : 4334—1967
42.	3173	77-01-16	78-01-15	IS : 4335—1967
43.	3174	77-01-16	78-01-15	IS : 4336—1967
44.	3175	77-01-16	78-01-15	IS : 4526—1968
45.	3176	77-01-16	78-01-15	IS : 5646—1970
46.	3177	77-01-16	78-01-15	IS : 5647—1970
47.	3178	77-01-16	78-01-15	IS : 5649—1970
48.	3188	77-02-16	78-02-15	IS : 6595—1972
49.	3243	77-02-16	78-02-15	IS : 325—1970
50.	3295	77-01-16	78-01-15	IS : 427—1965
51.	3310	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
52.	3313	77-02-01	78-01-31	IS : 6595—1972
53.	3317	77-02-01	78-01-31	IS : 1703—1968
54.	3318	77-02-01	78-01-31	IS : 781—1967
55.	3326	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
56.	3327	77-02-01	78-01-31	IS : 1554 (Pt I)— 1964
57.	3379	77-03-01	78-02-28	IS : 398—1961
58.	3485	77-02-16	78-02-15	IS : 2465—1969
59.	3612	77-02-01	78-01-31	IS : 5852—1970
60.	3658	77-01-16	78-01-15	IS : 4892—1968
61.	3676	77-01-16	78-01-15	IS : 694 (Pt II)— 1964
62.	3678	77-02-01	78-01-31	IS : 916—1966
63.	3686	77-01-16	78-01-15	IS : 5648—1970
64.	3689	77-02-01	78-01-31	IS : 6914—1973
65.	3690	77-02-01	78-01-31	IS : 6915—1973
66.	3694	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
67.	3696	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
68.	3699	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
69.	3700	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
70.	3701	77-02-01	78-01-31	IS : 2567—1973
71.	3702	77-02-01	78-01-31	IS : 6003—1970
72.	3703	77-02-01	78-01-31	IS : 1785 (Pt I)— —1966; and IS : 1785 (Pt II)— 1967
73.	3705	77-02-16	78-02-15	IS : 2148—1968
74.	3711	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
75.	3717	77-02-16	78-02-15	IS : 325—1970
76.	3719	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
77.	3901	77-02-01	78-01-31	IS : 1011—1968
78.	3967	76-11-76	77-11-15	IS : 10—1970
79.	4128	77-01-16	78-01-15	IS : 6914—1973
80.	4132	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
81.	4133	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
82.	4150	77-01-16	78-01-15	IS : 398—1961
83.	4153	77-02-01	78-01-31	IS : 1165—1967
84.	4154	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
85.	4155	77-02-01	78-01-31	IS : 5346—1975
86.	4159	77-02-01	78-01-31	IS : 7122—1973
87.	4160	77-02-01	78-01-31	IS : 5679—1970
88.	4161	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1979
89.	4165	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
90.	4166	77-02-01	78-01-31	IS. 398—1961
91.	4179	77-02-01	78-01-31	IS : 1875—1971
92.	4187	77-02-01	78-01-31	IS : 10—1970
93.	4189	77-02- 1	78-01-31	IS : 5346—1975
94.	4192	77-02-01	78-01-31	IS : 565—1975
95.	4196	77-02-16	78-02-15	IS : 2567—1973
96.	4199	77-02-01	78-01-31	IS . 1165—1967
97.	4201	77-20-16	78-02-15	IS : 7122—1973
98.	4203	77-02 16	78-02-15	IS . 10—1970
99.	4206	77-02-'6	78-04-30	IS : 781—1967
100.	4208	77-02-16	78-02-15	IS : 12—1970
101.	4209	77-02-01	78-01-31	IS : 398—1961
102.	4222	77-03-01	78-04-30	IS : 633—1975
103.	4318	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
104.	4333	77-01-01	77-03-31	IS: 1310—1974
105.	4334	77-01-01	77-12-31	IS : 561—1972
106.	4335	77-01-01	77-12-31	IS : 564—1975
107.	4353	77-12-01	77-12-31	IS : 2567—1973
108.	4406	77-01-01	77-12-31	IS : 3284—1965
109.	4859	76-12-01	77-11-30	IS : 7406—1974
110.	4939	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
111.	4942	77-01-16	78-01-15	IS : 1703—1968
112.	4943	77-01-16	78-01-15	IS : 781—1967
113.	4944	77-01-16	78-01-15	IS : 1795—1974
114.	4952	77-01-16	78-04-15	IS : 1308—1974
115.	4953	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
116.	4954	77-01-16	78-01-15	IS : 1308—1974
117.	4955	77-01-16	78-01-15	IS : 325—1970 & IS : 1520—1972
118.	4962	77-02-01	78-01-31	IS : 3975—1967
119.	4963	77-01-01	78-01-31	IS : 774—1971
120	4964	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
121.	4970	77-02-01	78-01-31	IS : 5515—1969
122.	4972	77-02-01	78-01-31	IS : 780—1969

1	2	3	4	5
123.	4973	77-02-01	78-01-31	IS 779—1968
124	4978	77-02-01	78-01-31	IS · 1554 (Part I) —1964
125	4979	77-02-01	78-01-31	IS 1165—1967
126.	4980	77-02-01	78-03-31	IS 694 (Part II) —1964
127.	4982	77-02-01	78-01-31	IS 335—1972
128.	4995	77-02-16	78-02-15	IS 325—1970
129	5010	77-02-16	78-02-15	IS 1536 (Part I to XXIII)—1976
130	5012	77-03-01	78-02-15	IS 7121—1973
131	5022	77-03-01	78-02-28	IS · 562—1972
132	5034	77-03-01	78-02-28	IS 363/—1966
133.	5050	77-10-16	78-01-15	IS 814 (Part I) —1974
134	5080	77-03-01	78-02-28	IS 1027—1968

[No CMD/13 12]

का० आ० 4058.—समय-समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम 1955 के विनियम 8 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि जिन 217 लाइसेंसो के ब्यौरे नीचे अनुसूची में दिए गए हैं उनका मार्च 1977 में नवीकरण किया गया है।

अनुसूची

क्रम संख्या	सीएम/एल संख्या	वैध से	वैध तक	भारतीय मानक विशिष्टि की पत्र संख्या
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	7	77-01-01	78-03-31	IS 254—1973
2	278	77-03-01	78-02-28	IS 398—1961
3	391	77-04-01	78-03-31	IS 226—1975
4	392	77-04-01	79-03-31	IS 432—1966
5	393	77-04-01	79-03-31	IS 961—1975
6	515	77-04-01	78-03-31	IS 1221—1971
7	576	77-04 01	78 03-31	IS 2062—1969
8	631	77-02-01	78-01-31	IS 2358—1963
9	632	77-02-01	78-01-31	IS 3281—1965
10	654	77-03 01	78-02-28	IS 561—1972
11	663	77-03-01	78-02 28	IS 692—1973
12	671	77 04 01	78 03-31	IS 1977—1975
13	747	77-02-16	78 02-15	IS 779—1968
14	833	77 02-16	78-02-15	IS 21—1975
15	981	77-02-01	78-01-31	IS 1785 (भाग 1) —1966 और IS 1785 (भाग 2)—1967
16	998	77-02-16	78-02-15	IS 2552—1970
17	1005	77-02-16	78-02-15	IS 226—1975
18	1006	77-02 16	78-02 15	IS 1977—1975
19	1013	77-03-01	78 02-28	IS 774—1971
20	1015	77-03-16	78-03-15	IS 779—1968
21	1021	77-04-01	78-03-31	IS 1875—1971
22	1022	77-04-01	78-03-31	IS 1875—1971
23	1034	77-04-01	78 03-31	IS 2830—1975
24	1035	77 04 01	78 0 -31	IS 2831—1975
25	1066	77-03-01	78-02 28	IS 226—1975
26	1067	77-03 01	78-02 28	IS 1977—1975
27	1109	77-02-16	78-02-15	IS 280—1972
28	1152	77 02 01	78 01-31	IS 2865—1974
29	5105	77-03-16	78-03-15	IS 562—1972
30	1201	77-03-01	78-02-28	IS 561—1972
31	1202	77-03-01	78-03-31	IS 1310—1973
32	1227	77-03-16	78-03-15	IS 325—1970
33	1397	77-03-01	78-02-28	IS 1507—1966
34	1469	77-04-01	78 03-31	IS 1333—1973
35	1488	77-03-16	78-03-15	IS 10—1970
36	1194	77-03-01	78-02 28	IS 2645—1975
37	1499	77-04-01	78 03-31	IS 1184—1966
38	1510	77-03-16	78-03-15	IS 398—1961
39	1552	77-03-01	78 02-28	IS 398—1961
40	1605	77 03-16	78-03 15	IS 10—1970
41	1618	77-03-01	78-02-28	IS 562—1972
42	1651	77-03-16	78-03-15	IS 651—1971
43	1664	77-04-01	78-03-31	IS 2791—1972
44	1790	77-03-01	78-02-28	IS 2567—1973
45	1862	77-03-16	78-03-15	IS 10—1970
46	1872	77-04-01	78-03-31	IS 1786— 1966
47	1884	77-02-16	78-02-15	IS 3989—1967
48	1921	77-03-01	78-02-28	IS 1554 (भाग 1) —1964 और IS 1554 (भाग 2) —1970
49	1932	77-03-16	78-03 15	IS 3055—1965
50	1934	77-04-01	78-03-31	IS 1786—19[illegible]
51	1952	77-04-01	78 03-31	IS 2879—197[illegible]
52	2003	77-02-01	78 01 31	IS 1029—19[illegible]
53	2012	77-03-01	78-02-28	IS 632—1966
54	2077	77-03-01	78-02-28	IS 3284—1965
55	2078	17-03-01	78-02 28	IS 1307—1973
56	2109	77-01-16	78-01-15	IS 561—1972
57	2129	77-04-01	78-03-31	IS 561—1972
58	2154	77-03-01	78-02-28	IS 10 (भाग 3)——1974
59	2174	77-02-16	78 02-15	IS 10—1970
60	2177	77-01-01	77 12-31	IS 398—1976
61	2251	77-02-16	78-02-15	IS 10 (भाग 3) —1974
62	2270	77-03-01	78-02-28	IS 10—1970
63	2284	77-04-01	78-03-31	IS 10—1970
64	2317	77-04-01	78-03-31	IS 3309—1975
65	2335	77-04-01	78-03 31	IS 2202 (भाग 1) —1966
66	2368	77-01-16	78-01-15	IS 562—1972
67	2371	77-01-16	78-01-15	IS 10—1970
68	2439	77-01-16	78-01-15	IS 564—1975
69	2440	77-01-16	77-03-31	IS 1310—1974
70	2411	77-01-16	78-01-15	IS 633—1965

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
71	2471	77-02-16	78-02-15	IS 561—1972
72	2484	77-01-16	78-01-15	IS 2567—1973
73	2511	77-04-16	78-04-15	IS 3564—1975
74	2532	77-02-16	78-02-15	IS 779—1968
75	2572	77-03-16	78-03-15	IS 1739—1968
76	2575	77-03-16	78-03-15	IS 694 (भाग 2) —1964
77	2588	77-03-16	78-03-15	IS 4900—1969
78	2590	77-03-16	78-03-15	IS 2566—1965
				IS 3667—1966
				IS 1913—1961
79	2591	77-03-16	78-03-15	IS 3667—1966 और IS 2566—1965
80	2598	76-03-16	77-03-15	IS 3076—1969
81	2614	77-04-01	78-03-31	IS 718—1971
82	2633	77-02-01	78-01-31	IS 1729—1964
83	2696	77-02-01	78-01-31	IS 2645—1964
84	2711	77-02-01	78-01-31	IS 325—1970
85	2739	77-02-16	78-02-15	IS 4985—1968
86	2741	77-03-01	78-02-28	IS 1786—1966
87	2811	77-03-01	78-02-28	IS 3811—1966
88	2844	77-03-01	78-02-28	IS 10—1970
89	2871	77-03-01	78-02-28	IS 2568—1973
90	2878	77-02-01	78-01-31	IS 2512—1963
91	2891	77-03-01	78-02-28	IS 2865—1964
92	2896	77-02-16	78-02-15	IS 2650—1964
93	2907	77-02-16	78-02-15	IS 1601—1960
94	2913	77-02-16	78-02-15	IS 1786—1966
95	2921	77-02-16	78-02-15	IS 398—1961
96	2923	77-02-16	78-02-15	IS 1596—1970
97	2930	77-03-01	78-02-28	IS 5277—1969
98	2938	77-03-01	78-02-28	IS 1786—1966
99	2968	77-03-16	78-03-15	IS 3830—1970
100	2986	77-02-16	78-02-15	IS 1554 (भाग 1) —1964
101	3093	77-03-16	78-03-15	IS 1554 (भाग 1) —1964
				IS 694 (भाग 2) —1964
102	3137	77-01-16	78-01-15	IS 1809—1968
103	3149	77-03-16	78-03-15	IS 10—1970
104	3194	77-03-01	78-02-28	IS 633—1975
105	3317	77-02-01	78-01-31	IS 1703—1968
106	3318	77-02-01	78-01-31	IS 781—1967
107	3333	77-03-01	78-02-28	IS 1726—1971
108.	3342	77-03-01	78-02-28	IS 10—1970
109	3343	77-03-01	78-02-28	IS. 694 (भाग 2) —1964
110.	3346	77-03-16	78-03-15	IS 496 (भाग 2) —1975
111	3357	77-03-16	78-03-15	IS 1786—1966
112	3431	77-02-01	78-01-31	IS 5281—1969
113.	3536	77-03-16	78-03-15	IS 561—1972
114.	3560	77-03-01	78-02-28	IS 4323—1967
115	3706	77-02-16	78-02-15	IS 226—1975
116	3709	77-02-16	78-02-15	IS 1223 (भाग 1)—1970
117	3716	77-02-16	78-02-15	IS 21—1975
118	3721	77-02-16	78-02-15	IS 1809—1968
119	3723	77-03-01	78-02-28	IS 633—1975
120	3724	77-03-01	78-02-28	IS 2289—1963
121	3732	77-03-16	78-03-15	IS 1761—1968
122	3738	77-03-16	78-03-15	IS 561—1975
123.	3740	77-03-16	78-03-15	IS 4246—1972
124	3744	76-09-16	77-09-15	IS 2118—1968
125	3777	77-04-01	78-03-31	IS 1149—1967
126	3787	77-02-01	78-01-31	IS 561—1972
127	3788	77-02-01	78-01-31	IS 1310—1974
128.	3789	77-02-01	78-01-31	IS 3903—1975
129	3790	77-02-01	78-01-31	IS 5281—1969
130	3791	77-02-01	78-01-31	IS 562—1972
131	3792	77-02-01	78-01-31	IS 565—1975
132	3793	77-02-01	78-01-31	IS 1507—1966
133	3794	77-04-01	78-03-31	IS 561—1972
134.	3814	77-04-16	78-04-15	IS 1307—1973
135	3829	77-02-01	78-01-31	IS 561—1972
136	3830	77-02-01	78-01-31	IS 562—1972
137	3831	77-02-01	78-01-31	IS 564—1975
138	3832	77-02-01	78-01-31	IS 565—1975
139	3833	77-02-01-	78-01-31	IS 632—1972
140	3834	77-02-01	78-01-31	IS 633—1975
141	3835	77-02-01	77-03-31	IS 1310—1974
142	3836	77-02-01	78-01-31	IS 1507—1966
143	3837	77-02-01	78-01-31	IS 3903—1975
144	3945	77-03-01	78-02-28	IS 694 (भाग 1 और 2) —1964
145	3950	77-03-01	77-12-31	IS 3903—1966
146	4026	77-02-16	78-02-31	IS 1786—1966
147	4157	77-02-01	78-01-31	IS 7121—1973
148.	4158	77-02-01	78-01-31	IS. 7122—1973
149	4193	77-02-01	78-01-31	IS 1694—1974
150	4194	77-02-01	78-01-31	IS 2052—1968
151	4200	77-02-16	78-02-15	IS 1703—1968
152	4205	77-02-16	78-02-15	IS 2567—1973
153	4210	77-02-16	78-02-15	IS 2910—1971
				IS 1186—1971 और IS 2784—1971
154	4211	77-02-16	78-02-15	IS 10—1970
155	4217	77-03-01	78-02-28	IS 2567—1973
156	4221	77-03-01	78-02-28	IS 633—1975
157	4225	77-03-01	78-02-28	IS. 2879—1975
158	4247	77-03-01	78-02-28	IS. 1786—1966
159	4249	77-03-01	78-02-28	IS 3865—1966
160	4250	77-02-16	78-02-15	IS 5346—1975
161	4259	77-03-16	78-03-15	IS 1695—1974
162	4260	77-03-16	78-03-15	IS 2923—1974

1	2	3	4	5
163.	4262	77-03-16	78-03-15	IS : 1520—1972
164.	4271	77-03-16	78-03-15	IS . 916—1975
165.	4275	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
166.	4289	77-04-01	78-03-31	IS . 916—1975
167.	4391	77-01-16	78-01-15	IS 565—1975
168.	4603	76-09-16	77-08-15	IS : 564—1975
169	4653	76-10-01	77-08-15	IS : 561—1972
170.	4870	76-12-01	77-11-30	IS 7406—1974
171.	4939	77-01-16	78-01-15	IS 564—1975
172.	4945	77-02-01	78-01-31	IS : 1239 (भाग 1) —1973
173.	4959	77-02-01	78-01-31	IS · 5346—1975
174.	4961	77-02-01	78-02-15	IS : 7406—1974
175.	4965	77-02-01	78-01-31	IS : 5225—1969
176.	4969	77-02-01	78-01-31	IS . 3035 (भाग 1)—1965
177.	4971	77-02-01	77-12-15	IS · 1026—1966
178.	4976	77-02-01	78-01-31	IS : 7407—1974
179.	4983	77-02-01	78-01-31	IS : 1875—1971
180.	4984	77-02-16	78-02-15	IS : 2831—1975
181.	4985	77-02-01	78-01-31	IS : 6914—1973
182.	4986	77-02-01	78-01-31	IS : 6915—1973
183.	4989	77-02-16	78-02-15	IS : 1660(भाग 1)—1967
184.	4991	77-02-01	78-01-31	IS : 7407—1974
185.	4992	77-02-16	78-02-15	IS : 7121—1973
186.	4993	77-02-16	78-02-15	IS : 3903—1975 और
187.	4994	77-02-16	78-02-15	IS : 2175—1962
188.	4996	77-02-16	78-02-15	IS : 5346—1975
189.	5001	77-02-01	78-01-31	IS : 814 (भाग 1 और 2)—1974
190.	5007	77-02-16	78-02-15	IS : 564—1975
191.	5008	77-03-01	78-02-28	IS : 507—1970
192.	5013	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
193.	5014	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1973
194.	5015	77-03-01	78-02-28	IS : 7122—1973
195.	5019	77-02-16	78-02-15	IS : 1165—1967
196.	5020	77-02-16	78-02-15	IS : 561—1972
197.	5024	77-03-01	78-02-28	IS . 562—1972
198.	5025	77-03-01	78-02-28	IS : 4184—1967
199.	5026	77-03-01	78-05-31	IS : 4322—1967
200.	5028	77-03-01	78-02-28	IS : 5281—1969
201.	5029	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
202.	5030	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
203.	5031	77-03-01	78-02-28	IS : 5950—1971
204.	5036	77-03-01	78-02-28	IS : 1135—1973
205.	5037	77-03-01	78-02-28	IS : 7122—1973
206.	5038	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
207.	5039	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
208.	5040	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970
209.	5045	77-04-01	78-03-31	IS : 561—1972
[illegible]	5046	77-03-01	78-02-28	IS : 780—1969
[illegible]	[illegible]054	77-03-01	78-02-28	IS : 7407—1974
[illegible]	[illegible]	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
213.	5068	77-03-16	78-03-15	IS . 1507—1966
214.	5070	77-03-16	78-06-15	IS · 4323—1967
215	5077	77-03-01	78-05-31	IS : 5281—1969
216.	5093	77-04-01	78-03-31	IS 561—1972
217.	5098	77-03-01	78-02-20	IS : 916—1975

[स० सी० एम० डी०/13 : 12]

S. O. 4058.—In pursuance of sub-regulation (1) of Regulation 8 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations 1955, as amended from time to time the Indian Standards Institution hereby notifies that 217 licences, particulars of which are given in the following Schedule, have been renewed during the month of March 1977

SCHEDULE

Sl. No.	CM/L No.	Valid From	Valid To	Indian Standard Specification No.
1	2	3	4	5
1.	7	77-04-01	78-03-31	IS : 254—1973
2.	278	77-03-01	78-02-28	IS : 398—1961
3.	391	77-04-01	78-03-31	IS : 226—1975
4.	392	77-04-01	78-03-31	IS : 432—1966
5.	393	77-04-01	78-03-31	IS : 961—1975
6.	515	77-04-01	78-03-31	IS : 1221—1971
7.	576	77-04-01	78-03-31	IS : 2062—1969
8.	631	77-02-01	78-01-31	IS : 2358—1963
9.	632	77-02-01	78-01-31	IS : 3284—1965
10.	654	77-03-01	78-02-28	IS : 561—1972
11.	663	77-03-01	78-02-28	IS : 692—1973
12.	671	77-04-01	78-03-31	IS : 1977—1975
13.	747	77-02-16	78-02-15	IS : 779—1968
14.	833	77-02-16	78-02-15	IS : 21—1975
15.	989	77-02-01	78-01-31	IS : 1785 (Pt I)-1966 IS : 1785 (Pt II)-1967
16.	998	77-02-16	78-02-15	IS : 2552—1970
17.	1005	77-02-16	78-02-15	IS : 226—1975
18.	1006	77-02-16	78-02-15	IS : 1977—1975
19.	1013	77-03-01	78-02-28	IS : 774—1971
20.	1015	77-03-16	78-03-15	IS : 779—1968
21.	1021	77-04-01	78-03-31	IS : 1875—1971
22.	1022	77-04-01	78-03-31	IS : 1875—1971
23.	1034	77-04-01	78-03-31	IS : 2830—1975
24.	1035	77-04-01	78-03-31	IS : 2831—1975
25.	1066	77-03-01	78-02-28	IS : 226—1975
26.	1067	77-03-01	78-02-28	IS : 1977—1975
27.	1109	77-02-16	78-02-15	IS : 280—1972
28.	1152	77-02-01	78-01-31	IS : 2865—1974
29.	5105	77-03-16	78-03-15	IS : 562—1972
30.	1201	77-03-01	78-02-28	IS : 561—1972
31.	1202	77-03-01	78-03-31	IS : 1310—1973
32.	1227	77-03-16	78-03-15	IS : 325—1970
33.	1397	77-03-01	78-02-28	IS : 1507—1966
34.	1469	77-04-01	78-03-31	IS : 1333—1973
35.	1488	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
36.	1494	77-03-01	78-02-28	IS : 2645—1975
37.	1499	77-04-01	78-03-31	IS : 1184—1968
38.	1510	77-03-16	78-03-15	IS : 398—1961
39.	1552	77-03-01	78-02-28	IS : 398—1961
40.	1605	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
41.	1618	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
42.	1651	77-03-16	78-03-15	IS : 651—1971

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
43.	1664	77-04-01	78-03-31	IS : 2791—1972
44.	1790	77-03-01	78-02-28	IS : 2567—1973
45.	1862	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
46.	1872	77-04-01	78-03-31	IS : 1786—1966
47.	1884	77-02-16	78-02-15	IS : 3989—1967
48.	1921	77-03-01	78-02-28	IS : 1554 (Pt I)-1964 IS : 1554(Pt II)-1970
49.	1932	77-03-16	78-03-15	IS : 3055—1965
50.	1934	77-04-01	78-03-31	IS : 1786—1966
51.	1952	77-04-01	78-03-31	IS : 2879—1975
52.	2003	77-02-01	78-01-31	IS : 1029—1970
53.	2012	77-03-01	78-02-28	IS : 632—1966
54.	2077	77-03-01	78-02-28	IS : 3284—1965
55.	2078	77-03-01	78-02-28	IS : 1307—1973
56.	2109	77-01-16	78-01-15	IS : 561—1972
57.	2129	77-04-01	78-03-31	IS : 561—1972
58.	2154	77-03-01	78-02-28	IS :10(Pt III)—1974
59.	2174	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
60.	2177	77-01-01	77-12-31	IS : 398—1976
61.	2251	77-02-16	78-02-15	IS : 10 (Pt III) - 1974
62.	2270	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970
63.	2284	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
64.	2317	77-04-01	78-03-31	IS : 3309—1975
65.	2335	77-04-01	78-03-31	IS : 2202(Pt I)—1966
66.	2368	77-01-16	78-01-15	IS : 562—1972
67.	2371	77-01-16	78-01-15	IS : 10 —1970
68.	2439	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
69.	2440	77-01-16	77-03-31	IS : 1310—1974
70.	2441	77-01-16	78-01-15	IS : 633—1975
71.	2471	77-02-16	78-02-15	IS : 561—1972
72.	2484	77-01-16	78-01-15	IS : 2567—1973
73.	2511	77-04-16	78-04-15	IS : 3564—1975
74.	2532	77-02-16	78-02-15	IS : 779—1968
75.	2572	77-03-16	78-03-15	IS : 1739—1968
76.	2575	77-03-16	78-03-15	IS : 694—(Pt II) 1964
77.	2588	77-03-16	78-03-15	IS : 4900—1969
78.	2590	77-03-16	78-03-15	IS : 2566—1965 IS : 3667—1966 IS : 1943—1964
79.	2591	77-03-16	78-03-15	IS : 3667—1966 IS : 2566—1965
80.	2598	76-03-16	77-03-15	IS : 3076—1968
81.	2614	77-04-01	78-03-31	IS : 718—1971
82.	2633	77-02-01	78-01-31	IS : 1729—1964
83.	2696	77-02-01	78-01-31	IS : 2645—1964
84.	2711	77-02-01	78-01-31	IS : 325—1970
85.	2739	77-02-16	78-02-15	IS : 4985—1968
86.	2741	77-03-01	78-02-28	IS : 1786—1966
87.	2811	77-03-01	78-02-28	IS : 3811—1966
88.	2844	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970
89.	2871	77-03-01	78-02-28	IS : 2568—1973
90.	2878	77-02-01	78-01-31	IS : 2512—1963
91.	2891	77-03-01	78-02-28	IS : 2865—1964
92.	2896	77-02-16	78-02-15	IS : 2650—1964
93.	2907	77-02-16	78-02-15	IS : 1601—1960
94.	2913	77-02-16	78-02-15	IS : 1786—1966
95.	2921	77-02-16	78-02-15	IS : 398—1961
96.	2923	77-02-16	78-02-15	IS : 1596—1970
97.	2930	77-03-01	78-02-28	IS : 5277—1969
98.	2938	77-03-01	78-02-28	IS : 1786—1966
99.	2968	77-03-16	78-03-15	IS : 3830—1970
100.	2986	77-02-16	78-02-15	IS : 1554(Pt I) 1964
101.	3093	77-03-16	78-03-15	IS : 1554—(Pt I)1964 IS : 694 (Pt II) 1964
102.	3137	77-01-16	78-01-15	IS : 1809—1968
103.	3149	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
104.	3194	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
105.	3317	77-02-01	78-01-31	IS : 1703—1968
106.	3318	77-02-01	78-01-31	IS : 781—1967
107.	3333	77-03-01	78-02-28	IS : 1726—1974
108.	3342	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970
109.	3343	77-03-01	78-02-28	IS : 694(Pt II)—1964
110.	3346	77-03-16	78-03-15	IS : 4964(Pt II)—1975
111.	3357	77-03-16	78-03-15	IS : 1786—1966
112.	3431	77-02-01	78-01-31	IS : 5281—1969
113.	3536	77-03-16	78-03-15	IS : 561—1972
114.	3560	77-03-01	78-02-28	IS : 4323—1967
115.	3706	77-02-16	78-02-15	IS : 226—1975
116.	3709	77-02-16	78-02-15	IS : 1223(Pt I)-1970
117.	3716	77-02-16	78-02-15	IS : 21—1975
118.	3721	77-02-16	78-02-15	IS : 1809—1968
119.	3723	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
120.	3728	77-03-01	78-02-28	IS : 2289—1963
121.	3732	77-03-16	78-03-15	IS : 4761—1968
122.	3738	77-03-16	78-03-15	IS : 564—1975
123.	3740	77-03-16	78-03-15	IS : 4246—1972
124.	3744	76-09-16	77-09-15	IS : 2148—1968
125.	3777	77-04-01	78-03-31	IS : 4449—1967
126.	3787	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
127.	3788	77-02-01	78-01-31	IS : 1310—1974
128.	3789	77-02-01	78-01-31	IS : 3903—1975
129.	3790	77-02-01	78-01-31	IS : 5281—1969
130.	3791	77-02-01	78-01-31	IS : 562—1972
131.	3792	77-02-01	78-01-31	IS : 565—1975
132.	3793	77-02-01	78-01-31	IS : 1507—1966
133.	3794	77-04-01	78-03-31	IS : 561—1972
134.	3814	77-04-16	78-04-15	IS : 1307—1973
135.	3829	77-02-01	78-01-31	IS : 561—1972
136.	3830	77-02-01	78-01-31	IS : 562—1972
137.	3831	77-02-01	78-01-31	IS : 564—1975
138.	3832	77-02-01	78-01-31	IS : 565—1975
139.	3833	77-02-01	78-01-31	IS : 632—1972
140.	3834	77-02-01	78-01-31	IS : 633—1975
141.	3835	77-02-01	77-03-31	IS : 1310—1974
142.	3836	77-02-01	78-01-31	IS : 1507—1966
143.	3837	77-02-01	78-01-31	IS : 3903—1975
144.	3945	77-03-01	78-02-28	IS : 694 (Pt I & II)—1964
145.	3950	77-03-01	77-12-31	IS : 3903—1966
146.	4206	77-02-16	78-02-31	IS : 1786—1966
147.	4157	77-02-01	78-01-31	IS : 7121—1973
148.	4158	77-02-01	78-01-31	IS : 7122—1973
149.	4193	77-02-01	78-01-31	IS : 1694—1974
150.	4194	77-02-01	78-01-31	IS : 2052—1968
151.	4200	77-02-16	78-02-15	IS : 1703—1968
152.	4205	77-02-16	78-02-15	IS : 2567—1973
153.	4210	77-02-16	78-02-15	IS : 2910—1971, IS : 1186—1971 & IS : 2784—1971
154.	4211	77-02-16	78-02-15	IS : 10—1970
155.	4217	77-03-01	78-02-28	IS : 2567—1973
156.	4221	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
157.	4225	77-03-01	78-02-28	IS : 2879—1975
158.	4247	77-03-01	78-02-28	IS : 1786—1966
159.	4249	77-03-01	78-02-28	IS : 3865—1966
160.	4250	77-02-16	78-02-15	IS : 5346—1975
161.	4259	77-03-16	78-03-15	IS : 1695—1974
162.	4260	77-03-16	78-03-15	IS : 2923—1974
163.	4262	77-03-16	78-03-15	IS : 1520—1972
164.	4271	77-03-16	78-03-15	IS : 916—1975

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
165.	4275	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
166.	4289	77-04-01	78-03-31	IS : 916—1975
167.	4391	77-01-16	78-01-15	IS : 565—1975
168.	4603	76-09-16	77-08-15	IS : 564—1975
169.	4653	76-10-01	77-08-15	IS : 561—1972
170.	4870	76-12-01	77-11-30	IS : 7406—1974
171.	4939	77-01-16	78-01-15	IS : 564—1975
172.	4945	77-02-01	78-01-31	IS : 1239—(Pt I) —1973
173.	4959	77-02-01	78-01-31	IS : 5346—1975
174.	4961	77-02-01	78-02-15	IS : 7406—1974
175.	4965	77-02-01	78-01-31	IS : 5225—1969
176.	4969	77-02-01	78-01-31	IS : 3035 (Pt I) —1965
177.	4971	77-02-01	77-12-15	IS : 1026—1966
178.	4976	77-02-01	78-01-31	IS : 7407—1974
179.	4983	77-02-01	78-01-31	IS : 1875—1971
180.	4984	77-02-16	78-02-15	IS : 2831—1975
181.	4985	77-02-01	78-01-31	IS : 6914—1973
187.	4986	77-02-01	78-01-31	IS : 6915—1973
183.	4989	77-02-16	78-02-15	IS : 1660 (Pt I) — 1967
184.	4991	77-02-01	78-01-31	IS : 7407—1974
185.	4992	77-02-16	78-02-15	IS : 7121—1973
186.	4993	77-02-16	78-02-15	IS : 3903—1975
187.	4994	77-02-16	78-02-15	IS : 2175—1962
188.	4996	77-02-16	78-02-15	IS : 5346—1975
189.	5001	77-02-01	78-01-31	IS : 814—(Pt I & II)—1974
190.	5007	77-02-16	78-02-15	IS : 564—1975
191.	5008	77-03-01	78-02-28	IS : 507—1970
192.	5013	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
193.	5014	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1973
194.	5015	77-03-01	78-02-28	IS : 7122—1973
195.	5019	77-02-16	78-02-15	IS : 1165—1967
196.	5020	77-02-16	78-02-15	IS : 561—1972
197.	5024	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
198.	5025	77-03-01	78-02-28	IS : 4184—1967
199.	5026	77-03-01	78-05-31	IS : 4322—1967
200.	5028	77-03-01	78-02-28	IS : 5281—1969
201.	5029	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
202.	5030	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
203.	5031	77-03-01	78-02-28	IS : 5950—1971
204.	5036	77-03-01	78-02-28	IS : 1135—1973
205.	5037	77-03-01	78-02-28	IS : 7122—1973
206.	5038	77-03-01	78-02-28	IS : 562—1972
207.	5039	77-03-01	78-02-28	IS : 633—1975
208.	5040	77-03-01	78-02-28	IS : 10—1970
209.	5045	77-04-01	78-03-31	IS : 561—1972
210.	5046	77-03-01	78-02-28	IS : 780—1969
211.	5054	77-03-01	78-02-28	IS : 7407—1974
212.	5055	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
213.	5068	77-03-16	78-03-15	IS : 1507—1966
214.	5070	77-03-16	78-06-15	IS : 4323—1967
215.	5077	77-03-01	78-05-31	IS : 5281—1969
216.	5093	77-04-01	78-03-31	IS : 561—1972
217.	5098	77-03-01	78-02-28	IS : 916—1975

[NO. CMD/13 : 12]

का० आ० 4059.—समय समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम 1955 के विनियम 8 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि जिन 249 लाइसेंसों के ब्यौरे नीचे अनुसूची में दिए गए हैं, उनका अप्रैल, 1977 में नवीकरण किया गया है :

अनुसूची

क्रम सं०	लाइसेंस संख्या	वैध से	वैध तक	भारतीय मानक विनिर्दिष्ट की पत्र संख्या
1	2	3	4	5
1.	172	77-04-01	78-03-31	IS 1011—1968
2	173	77-04-01	78-03-31	IS 1011—1968
3	174	77-04-01	78-03-31	IS 1011—1968
4	186	77-04-01	78-03-31	IS : 325—1970
5	189	77-05-01	78-04-30	IS 325—1970
6	275	77-04-01	78-03-31	IS 1507—1966
7	365	77-02-16	78-02-15	IS . 368—1963
8	386	77-03-16	78-03-15	IS 1320—1958
9	396	77-03-31	78-02-28	IS : 226—1975
10	397	77-04-01	78-03-31	IS 432—1966
11	398	77-04-01	78-03-31	IS 961—1975
12	399	77-04-01	78-03-31	IS 1149—1973
13	400	77-04-01	78-03-31	IS 1149—1973
14.	402	77-04-16	78-04-15	IS 1675—1971
15	450	77-03-16	78-03-15	IS 996—1964
16	514	77-03-16	78-03-15	IS 5103—1969
17	575	77-03-31	78-02-28	IS . 2062—1969
18	608	77-03-31	78-02-28	IS 1977—1975
19	643	77-04-16	78-04-15	IS 1223 (भाग 1)—1970
20.	778	77-04-01	78-03-31	IS 692—1965
21.	934	76-11-01	77-11-30	IS 1943—1964 IS 2566—1965 IS 2874—1964
22	1078	77-03-16	78-03-15	IS 774—1971
23	1156	77-04-01	78-03-31	IS 1554 (भाग 1)—1964
24	1322	77-04-01	78-03-31	IS 1566—1967
25	1337	77-03-16	78-03-15	IS 2052—1975
26	1398	77-03-01	78-02-28	IS 1308—1968
27.	1419	77-04-01	78-03-31	IS 1977—1975
28	1420	77-04-01	78-03-31	IS 226—1975
29	1538	77-04-16	78-04-15	IS 3564—1975
30	1603	77-04-01	78-03-31	IS 2208—1962
31.	1607	77-04-01	78-03-31	IS . 10—1970
32	1650	77-03-16	78-03-15	IS . 398—1976
33	1657	77-04-01	78-03-31	IS 1554 (भाग 1)—1964 और IS 1554 (भाग 2)—1970
34	1665	77-04-01	78-03-31	IS : 226—1975
35	1669	77-04-16	78-04-15	IS 325—1970
36	1679	77-05-01	78-04-30	IS 226—1975
37.	1687	77-04-01	78-03-31	IS . 398—1976
38	1738	77-03-01	78-02-28	IS . 564—1975
39	1753	77-05-01	78-04-30	IS 226—1975
40	1777	77-04-01	78-03-31	IS 1786—1966

1	2	3	4	5
41.	1780	77-04-16	78-04-15	IS : 996—1964
42.	1854	77-04-16	78-04-15	IS : 1040—1960
43.	1876	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
44.	1943	77-04-01	78-03-31	IS : 1221—1971
45	1963	77-03-16	78-03-15	IS : 398—1961
46.	1993	77-05-01	78-04-30	IS : 553—1969
47	2149	77-04-16	78-04-15	IS : 10—1970
48.	2171	76-06-16	77-06-15	IS : 10—1970
49.	2211	77-05-01	78-04-30	IS : 10—1970
50.	2238	77-02-01	78-01-31	IS : 1855—1961 और IS : 1856—1970
51.	2239	77-02-01	78-01-31	IS : 2266—1970
52	2261	77-02-01	78-01-31	IS 1989—1973
53.	2268	77-02-01	78-03-31	IS : 4323—1967
54.	2273	77-03-01	78-02-28	IS : 3413—1966
55.	2275	77-03-16	78-03-15	IS : 1038—1975
56.	2278	77-03-16	78-03-15	IS : 10—1970
57.	2279	77-03-01	78-02-28	IS : 565—1975
58.	2286	77-04-01	78-03-31	IS : 3975—1967
59.	2289	77-03-16	78-03-15	IS : 779—1968
60.	2301	77-05-01	78-04-30	IS : 4269—1967
61	2305	77-04-01	78-03-31	IS : 3224—1971
62	2341	77-04-01	78-03-31	IS : 220—1972
63	2354	77-05-01	78-04-30	IS : 694 (भाग 1 और 2) —1964
64.	2463	77-04-01	78-03-31	IS : 1547—1968
65.	2470	77-05-01	78-04-30	IS : 561—1962
66.	2480	77-04-16	78-04-15	IS : 814 (भाग 1 और 2) —1974
67.	2512	77-04-01	78-03-31	IS : 4948—1974
68.	2592	77-03-15	77-03-31	IS : 561—1972
69	2593	77-03-16	78-03-15	IS : 564—1975
70.	2598	77-03-16	78-03-15	IS : 3076—1968
71.	2599	77-03-16	78-03-15	IS : 3564—1975
72.	2610	77-04-01	78-03-31	IS : 21—1975
73.	2621	77-04-01	78-03-31	IS : 21—1975
74.	2625	77-04-01	78-03-31	IS : 10 (भाग 3) —1974
75	2628	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
76.	2632	77-04-01	78-03-31	IS : 4450—1967
77.	2649	77-04-01	78-03-31	IS : 4323—1967
78.	2650	77-04-01	78-03-31	IS : 633—1975
79.	2657	77-04-01	78-03-31	IS : 1786—1966
80	2659	77-04-01	78-03-31	IS : 3944—1966
81.	2671	77-04-01	78-03-31	IS : 3811—1966
82.	2688	77-03-15	77-03-31	IS : 1310—1974
83.	2724	77-02-16	78-02-15	IS : 3076—1968
84.	2745	77-03-16	78-03-15	IS : 565—1975
85.	2774	77-04-01	78-03-31	IS : 5514—1969
86	2778	77-04-01	78-03-31	IS : 10 (भाग 3) —1974
87.	2789	77-04-16	78-04-15	IS : 10—1970
88.	2809	77-05-16	78-05-15	IS : 5852—1970
89.	2812	77-02-01	78-01-31	IS : 1989—1973
90	2882	77-03-16	78-03-15	IS : 5444—1969 IS : 5445—1969 IS : 5446—1969 IS : 5447—1969 IS . 5881—1970 IS : 5907—1970 IS 5918—1970 IS 5919—1970 IS . 5926—1970 और IS : 6091—1971
91.	2939	77-03-16	78-03-15	IS : 6595—1972
92.	2960	77-03-16	78-03-15	IS . 325—1970
93.	2965	77-04-01	78-03-31	IS : 5513—1969
94.	2967	77-03-16	78-03-15	IS : 3829—1966 और IS : 4510—1968
95.	2969	77-04-01	78-03-31	IS : 2300—1968
96	2973	77-03-16	78-03-15	IS : 226—1975
97.	2975	77-03-16	78-03-15	IS : 694 (भाग 1 और 2) —1964
98.	2981	77-03-16	78-03-15	IS : 4984—1972
99	2983	77-04-01	78-03-31	IS : 4151—1976
100.	2900	77-03-16	78-03-15	IS : 1554 (भाग 1) —1964
101.	2993	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
102.	3003	77-04-01	78-03-31	IS : 2386 (भाग 1 और 2)—1963
103.	3004	77-04-01	78-03-31	IS : 1786—1966
104.	3006	77-04-01	78-03-31	IS : 3637—1961
105.	3010	77-04-01	78-03-31	IS : 4800 (भाग 4 और 5)—1968
106.	3012	77-04-01	78-03-31	IS : 3035 (भाग 1 और 2)—1965
107.	3014	77-04-01	78-03-31	IS : 2566—1965 और IS : 1943—1964
108.	3017	77-04-01	78-03-31	IS : 3231—1965
109.	3023	77-04-01	78-03-31	IS : 1943—1964 और IS : 2566—1965
110.	3058	77-03-01	78-03-31	IS : 1310—1974
111.	3085	77-04-01	78-03-31	IS : 2818 (भाग 2) —1971
112.	3135	76-10-16	77-10-15	IS : 3319—1965
113	3185	77-02-01	78-01-31	IS : 2512—1965
114.	3231	77-04-16	78-04-15	IS : 1601—1960
115.	3330	77-05-01	78-04-30	IS : 3035 (भाग 1) —1965 और IS : 3035 (भाग 3) —1967
116.	3341	77-04-16	78-04-15	IS : 10—1970
117.	3345	77-03-01	78-02-28	IS : 5852—1970
118.	3347	77-03-16	78-03-15	IS : 21—1975
119.	3350	77-03-16	78-03-15	IS : 6595—1972

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
120	3354	77-03-16	78-03-15	IS 722 (भाग 2) —1969 और IS 722 (भाग 3) —1966
121	3362	77-03-16	78-03-15	IS 335—1972
122	3369	77-03-16	78-03-15	IS 399—1976
123	3371	77-04-01	78-03-31	IS 9055—1965
124	3395	77-04-01	78-03-31	IS 562—1972
125	3573	77-04-01	78-03-31	IS 780—1969
126	3667	78-01-16	78-01-15	IS 2148—1968
127	3727	77-03-01	78-02-28	IS 427—1965
128	3728	77-03-01	78-02-28	IS 2925—1975
129	3730	77-03-01	78-02-28	IS 398—1961
130	3731	77-03-01	78-02-28	IS 694 (भाग 1 और 2) —1964
131	3733	77-03-16	78-03-15	IS 398—1976
132	3736	77-03-16	78-03-15	IS 5557—1969
133	3739	77-03-16	78-03-15	IS 2567—1973
134	3743	77-03-16	78-03-15	IS 780—1969
135	3746	77-03-16	78-03-15	IS 398—1976
136	3748	77-03-16	78-03-15	IS 1520—1972 और IS 6595—1972
137	3751	77-03-16	78-03-15	IS 2025—1975
138	3762	77-04-01	78-03-31	IS 2548—1967
139	3765	77-04-01	78-03-31	IS 562—1972
140	3766	77-04-01	78-03-31	IS 564—1975
141	3767	77-04-01	78-03-31	IS 565—1975
142	3768	77-04-01	78-03-31	IS 1506—1967
143	3769	77-04-01	78-03-31	IS 633—1975
144	3771	77-04-01	78-03-31	IS 1507—1966
145	3772	77-04-01	78-03-31	IS 2567—1973
146	3776	77-04-01	78-03-31	IS 3811—1966
147	3779	77-04-01	78-03-31	IS 3805—1966
148	3785	77-04-01	78-03-31	IS 3035 (भाग 1) —1965
149	3804	77-04-16	78-04-15	IS 1851—1966
150	3811	77-05-01	78-04-30	IS 694 (भाग 2) —1964
151	3812	77-05-01	78-04-30	IS 3035 (भाग 1) —1965 और IS 3035 (भाग 3) —1967
152	3825	77-05-01	78-04-30	IS 5427—1969
153	4039	77-04-01	78-03-31	IS 341—1973
154	4130	77-01-16	78-01-15	IS 325—1970
155	4204	77-02-16	78-02-15	IS 2925—1975
156	4218	77-02-16	78-02-15	IS 868—1956
157	4220	77-03-01	78-02-28	IS 1476—1971
158	4224	77-04-01	78-03-31	IS 432 (भाग 2) —1966
159	4226	77-03-01	77-12-31	IS 1536—1969
160	4227	77-03-01	78-02-28	IS 415—1963
161	4236	77-03-01	78-02-28	IS 398—1961
162	4237	77-03-01	78-02-28	IS 565—1975
163	4238	77-03-01	78-02-28	IS 2039—1964
164	4256	77-03-16	78-03-15	IS 633—1975
165	4261	77-03-16	78-03-15	IS 1554 (भाग 1) —1964
166	4267	77-04-01	78-03-31	IS 3224—1971
167	4268	77-04-01	78-03-31	IS 7347—1974
168	4272	77-04-01	78-03-31	IS 1239 (भाग 1) —1973
169	4276	77-04-01	78-03-31	IS 10—1970
170	4277	77-04-01	78-03-31	IS 10—1970
171	4278	77-04-01	78-03-31	IS 10—1970 —1976
172	4285	77-01-16	78-06-30	IS 1312—1967
173	4286	77-04-01	78-03-31	IS 2567—1973
174	4296	77-04-16	78-04-15	IS 398 (भाग 1 और 2) 1976
175	4299	77-04-16	78-04-15	IS 633—1956
176	4300	77-04-16	78-04-15	IS 208—1972
177	4301	77-04-16	78-04-15	IS 204—1974
178	4303	77-04-16	78-04-15	IS 2906—1969
179	4311	77-04-16	78-04-15	IS 1438—1969
180	4312	77-04-16	78-04-15	IS 1520—1972
181	4314	77-04-16	78-04-15	IS 398 (भाग 1 और 2) —1976
182	4317	77-04-16	78-04-15	IS 1601—1960
183	4331	77-03-01	78-02-28	IS 779—1968
184	4338	77-05-01	78-04-30	IS 1601—1960
185	4347	77-05-01	78-04-30	IS 325—1970
186	4404	77-04-01	78-03-31	IS 874 (भाग 1 और 2) —1974
187	4511	77-04-01	78-03-31	IS 562—1972
188	4542	77-04-01	78-03-31	IS 1308—1958
189	4543	77-04-01	78-03-31	IS 2864—1968
190	4600	77-04-01	78-03-31	IS 1506—1967
191	4735	76-10-16	77-12-31	IS 3062—1974
192	4901	77-01-01	77-12-31	IS 562—1972
193	4915	77-01-01	77-12-31	IS 427—1965 और IS 428—1969
194	4946	77-01-16	78-04-15	IS 4985—1968
195	4990	77-02-16	78-02-15	IS 7231—1974
196	5023	77-03-01	78-02-28	IS 3035 (भाग 1) —1965
197	5036	77-03-01	78-02-28	IS 1135—1974
198	5041	77-03-01	78-02-28	IS 780—1969
199	5044	77-03-01	78-04-15	IS 561—1972
200	5048	77-03-16	78-03-15	IS 3035 (भाग 3) —1967
201	5051	77-03-01	78-02-28	IS 1239 (भाग 1) —1973
202	5052	77-03-16	78-03-15	IS 3149—1968
203	5053	77-03-01	78-02-28	IS 7407—1974
204	5057	77-03-16	78-03-15	IS 1554 (भाग 1) —1964
205	5058	77-03-16	78-03-15	IS 7122—1973
206	5059	77-03-16	78-03-15	IS 7407—1974

1	2	3	4	5
207	5060	77-03-16	78-03-15	IS 7407—1974
208	5066	77-03-16	78-03-15	IS 1786—1966
209	5067	77-03-16	78-03-15	IS 6438—1972
210	5071	77 04 16	78-04-15	IS 1979 (भाग 1) —1974
211	5083	77-04 01	78-03-31	IS 3062—1974
212	5084	77-04-01	78-03 31	IS 3652—1974
213	5085	77-04-16	78 06-15	IS 1307—1973
214	5086	77 04 01	78-03 31	IS 4984—1972
215	5087	77-03-16	78 03-15	IS 7452—1974
216	5088	77-03-01	78 02 28	IS 1601—1960
217	5090	77-04-01	78-03-31	IS 774—1971
218.	5091	77-03 16	78 03 15	IS 897—1966
219	5092	77-03-16	78-03-15	IS 1027—1969
220	5095	77-04-01	78-06-30	IS 1311—1966
221	5096	77-04 16	78-04-15	IS 325—1970
222	5097	77-04-01	78-03 31	IS 2037—1962
223	5099	77-04-16	78-04-15	IS 3461—1966
224	5102	77-04-01	78-03 31	IS 1786—1966
225	5103	77-03-16	78-03 15	IS 5852—1970
226	5106	77 03 16	78-03-15	IS 1786—1966
227	5107	77-04-16	78-04-15	IS 10—1970
228	5109	77-04-16	78-04-15	IS 1601—1960
229	5110	77-03-16	78-03 15	IS 561—1972
230	5115	77 04-01	78 03-31	IS 3976—1975
231	5119	77 04 01	78-03 31	IS 398 (भाग 1 और 2) —1976
232	5120	77-04 01	78-03 31	IS 398 (भाग 1 और 2)—1976
233	5121	77-04-01	78-03-31	IS 7652—1975
234	5127	77 03-61	78-03-15	IS 4432—1967
235	5132	77 03 16	77 03-15	IS 226—1975
236	5133	77-03-16	78 03-15	IS 280—1972
237	5134	77 03 16	78-03-15	IS 4174—1967
238	5143	77 04 01	78 03 31	IS 2906—1969
239	5146	77-04-16	77-12-31	IS 3906 (भाग 1) —1974
240	5149	77 05 01	78-04-30	IS 4246—1972
241	5151	77-05-01	78 04-30	IS 2645—1975
242	5156	77 05-01	78-04-30	IS 7231—1974
243	5220	77 04 01	78-03-31	IS 4100—1967
244	5221	77 04 01	78-03-31	IS 3811—1966
245	5222	77 04-01	78-03-31	IS 4450—1967
246	5223	77 04 01	78-03 31	IS 4449—1976
247	5224	77 04 01	78-03-31	IS 3865—1966
248	5228	77-06 01	78-05 31	IS 10 (भाग 2) —1976
249	5282	77 04-01	78-03-31	IS 1958—1967

[सं० सी एम डी/13 12]

ए० पी० बनर्जी, उपमहानिदेशक

S O 4059 — In pursuance of sub-regulation(1) of Regulation 8 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations 1955, as amended from time to time, the Indian Standards Institution hereby notifies that 249 licences, particulars of which are given in the following Schedule, have been renewed during the month of April 1977

SCHEDULE

Sl No	CM/L No	Valid From	Valid To	Indian Standard Specification No.
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1	172	77-04-01	78-03-31	IS : 1011—1968
2	173	77-04-01	78-03-31	IS · 1011—1968
3	174	77-04-01	78-03-31	IS : 1011—1968
4	186	77-04-01	78-03-31	IS : 325—1970
5	189	77-05-01	78-04-30	IS : 325—1970
6	275	77-04-01	78-03-31	IS · 1507—1966
7	365	77-02-16	78-02-15	IS . 368—1963
8	386	77-03-16	78-03-15	IS · 1320—1958
9	396	77-03-31	78-02-28	IS · 226—1975
10	397	77-04-01	78-03-31	IS · 432—1966
11	398	77-04-01	78 03-31	IS 961—1975
12	399	77 04-01	78-03-31	IS · 1148—1973
13	400	77 04-01	78-03-31	IS 1149—1973
14	402	77-04-16	78-04-15	IS 1675—1971
15	450	77 03-16	78-03-15	IS . 996—1964
16	514	77-03-16	78-03-15	IS . 5103—1969 & IS 5101—1969
17	575	77-03-31	78-02 28	IS 2062—1969
18	608	77-03-31	78-02-28	IS . 1977—1975
19	643	77-04-16	78-04-15	IS 1223 (Part I)—1970
20.	778	77-04-01	78-03-31	IS · 692—1965
21	934	76-11-01	77 11-30	IS 1943—1964 IS 2566—1965 IS . 2871—1964
22	1078	77 03-16	78-03-15	IS 774—1971
23	1156	77-04-01	78-03 31	IS 1554 (Part I)—1964
24	1322	77-04-01	78 03-31	IS 1566—1967
25	1337	77-03-16	78-03 15	IS 2052—1975
26.	1398	77-03-01	78-02-28	IS 1308 1968
27	1419	77-04-01	78-03-31	IS 1977 1975
28	1420	77-04-01	78-03-31	IS 226 1975
29	1538	77-04-16	78-04-15	IS 3564—1975
30	1603	77-04-01	78-03-31	IS 2208 1962
31.	1607	77-04-01	78-03-31	IS 10—1970
32	1650	77-03-16	78-03-15	IS . 398—1976
33	1657	77-04-01	78-03-31	IS 1554 (Par I)—1964 & IS 1554 (Part II)—1970
34	1665	77-04-01	78-03-31	IS · 226—1975
35	1669	77 04-16	78-04-15	IS 325—1970
36	1679	77-05-01	78-04-30	IS 226—1975
37	1687	77-04-01	78 03-31	IS 398—1976
38	1738	77-03-01	78-02-28	IS 564 1975
39	1753	77-05-01	78-04-30	IS 226—1975
40	1777	77-04-01	78-03-31	IS 1786—1966
41	1780	77-04-16	78-04-15	IS 996—1964
42	1854	77 04-16	78-04-15	IS 1040—1960
43	1876	77-03-16	78-03-15	IS 10—1970
44	1943	77-04-01	78-03-31	IS . 1221—1971
45	1963	77-03-16	78-03-15	IS 398—1961
46	1993	77-05-01	78-04-30	IS 553—1969
47	2149	77-04-16	78-04-15	IS 10—1970
48	2171	76 06-16	77-06-15	IS 10—1970
49	2211	77-05-01	78-04-30	IS · 10—1970
50	2238	77-02-01	78-01 31	IS 1855—1961 & IS . 1856—1970

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
51.	2239	77-02-01	78-01-31	IS : 2266—1970
52.	2261	77-02-01	78-01-31	IS : 1989—1973
53.	2268	77-02-01	78-03-31	IS : 4223—1967
54.	2273	77-03-01	78-02-28	IS : 3413—1966
55.	2275	77-03-16	78-03-15	IS : 1038—1975
56.	2278	77-03-16	78-03-15	IS: 10—1970
57.	2279	77-03-01	78-02-28	IS : 565—1975
58.	2286	77-04-01	78-03-31	IS : 3975—1967
59.	2289	77-03-16	78-03-15	IS : 779—1968
60.	2301	77-05-01	78-04-30	IS : 4269—1967
61.	2305	77-04-01	78-03-31	IS: 3224—1971
62.	2341	77-04-01	78-03-31	IS: 220—1972
63.	2354	77-05-01	78-04-30	IS: 694 (Part I &II) —1964
64.	2463	77-04-01	78-03-31	IS: 1547—1968
65.	2470	77-05-01	78-04-30	IS : 561—1962
66.	2480	77-04-16	78-04-15	IS : 814 (Part I &II) —1974
67.	2512	77-04-01	78-03-31	IS: 4948—1974
68.	2592	77-03-15	77-03-31	IS: 561—1972
69.	2593	77-03-16	78-03-15	IS: 564—1975
70.	2598	77-03-16	78-03-15	IS : 3076—1968
71.	2599	77-03-16	78-03-15	IS : 3564—1975
72.	2610	77-04-01	78-03-31	IS : 21—1975
73.	2621	77-04-01	78-03-31	IS: 21—1975
74.	2625	77-04-01	78-03-31	IS : 10 (Part III)—1974
75.	2628	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
76.	2632	77-04-01	78-03-31	IS: 4450—1967
77.	2649	77-04-01	78-03-31	IS: 4323—1967
78.	2650	77-04-01	78-03-31	IS: 633—1975
79.	2657	77-04-01	78-03-31	IS: 1786—1966
80.	2659	77-04-01	78-03-31	IS: 3944—1966
81.	2671	77-04-01	78-03-31	IS: 3811—1966
82.	2688	77-03-15	77-03-31	IS: 1310—1974
83.	2724	77-02-16	78-02-15	IS : 3276—1968
84.	2745	77-03-16	78-03-15	IS : 565—1975
85.	2774	77-04-01	78-03-31	IS: 5514—1969
86.	2778	77-04-01	78-03-31	IS: 10 (Part III)—1974
87.	2789	77-04-16	78-04-15	IS : 10—1970
88.	2809	77-05-16	78-05-15	IS : 5852—1970
89.	2812	77-02-01	78-01-31	IS : 1989—1973
90.	2882	77-03-16	78-03-15	IS : 5444—1969 IS : 5445—1969 IS : 5446—1969 IS : 5447—1969 IS : 5881—1970 IS : 5907—1970 IS : 5918—1970 IS : 5919—1970 IS : 5926—1970 & IS : 6091—1971
91.	2959	77-03-16	78-03-15	IS : 6595—1972
92.	2960	77-03-16	78-03-15	IS : 325—1970
93.	2965	77-04-01	78-03-31	IS : 5513—1969
94.	2967	77-03-16	78-03-15	IS : 3829—1966 & IS : 4510—1968
95.	2969	77-04-01	7--03-31	IS : 2300—1968
96.	2973	77-03-16	78-03-15	IS : 226—1975
97.	2975	77-03-16	78-03-15	IS : 694 (Part I &II) —1964
98.	2981	77-03-16	78-03-15	IS : 4984—1972
99.	2983	77-04-01	78-03-31	IS : 4151—1976
100.	2990	77-03-16	78-03-15	IS : 1554 (Part I)—1964
101.	2993	7-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
102.	3003	77-04-01	78-03-31	IS : 2386 (Part I &II) 1963
103.	3004	77-04-01	78-03-31	IS : 1786—1966
104.	3006	77-04-01	78-03-31	IS : 3637—1961
105.	3010	77-04-01	78-03-31	IS : 4800 (Part IV & V)—1968
106.	3012	77-04-01	78-03-31	IS: 3035 (Part I&II) 1965
107.	3014	77-04-01	78-03-31	IS : 2566—1965 & IS : 1943—1964
108	3017	77-04-01	78-03-31	IS : 3231—1965
109.	3023	77-04-01	78-03-31	IS: 1943—1964 & IS : 2566—1965
110.	3058	77-03-01	78-03-31	IS : 1310—1974
111.	3085	77-04-01	78-03-31	IS : 2818(Part II)—1971
112.	3135	76-10-16	77-10-15	IS : 3319—1965
113.	3185	77-02-01	78-01-31	IS : 2512—1963
114.	3231	77-04-16	78-04-15	IS : 1601—1960
115.	3330	77-05-01	78-04-30	IS : 3035 (Part I)—1965 IS : 3035 (Part III)—1967
116.	3341	77-04-16	78-04-15	IS : 10—1970
117.	3345	77-03-01	78-02-28	IS : 5852—1970
118.	3347	77-03-16	78-03-15	IS : 21—1975
119.	3350	77-03-16	78-03-15	IS : 6595—1972
120.	3354	77-03-16	78-03-15	IS : 722(Part II)—1969 IS : 722 (Part III)—1969
121.	3362	77-03-16	78-03-15	IS : 335—1972
122.	3369	77-03-16	78-03-15	IS : 398—1976
123.	3371	77-04-01	78-03-31	IS : 3055—1965
124	3395	77-04-01	78-03-31	IS : 562—1972
125.	3573	77-04-01	78-03-31	IS : 780—1969
126.	3667	78-01-16	78-01-15	IS : 2148—1968
127.	3727	77-03-01	78-02-28	IS : 427—1965
128.	3728	77-03-01	78-02-28	IS: 2925—1975
129.	3730	77-03-01	78-02-28	IS: 398—1961
130.	3731	77-03-01	78-02-28	IS : 694 (Part I &II) 1964
131.	3733	77-03-16	78-03-15	IS : 398—1976
132.	3736	77-03-16	78-03-15	IS : 5557—1969
133.	3739	77-03-16	78-03-15	IS : 2567—1973
134.	3743	77-03-16	78-03-15	IS : 780—1969
135.	3746	77-03-16	78-03-15	IS : 398—1976
136.	3748	77-03-16	78-03-15	IS : 1520—1972 & IS : 6595—1972
137.	3751	77-03-16	78-03-15	IS: 2925—1975
138.	3762	77-04-01	78-03-31	IS: 2548—1967
139.	3765	77-04-01	78-03-31	IS : 562—1972
140.	3766	77-04-01	78-03-31	IS : 564—1975
141.	3767	77-04-01	78-03-31	IS : 565—1975
142.	3768	77-04-01	78-03-31	IS : 1506—1967
143.	3769	77-04-01	78-03-31	IS : 633—1975
144.	3771	77-04-01	78-03-31	IS : 1507—1966
145.	3772	77-04-01	78-03-31	IS : 2567—1973
146.	3776	77-04-01	78-03-31	IS: 3811—1966
147.	3779	77-04-01	78-03-31	IS : 3865—1966
148.	3785	77-04-01	78-03-31	IS : 3035(Part I)—1965
149.	3804	77-04-16	78-04-15	IS : 1851—1966
150.	3811	77-05-01	78-04-30	IS : 694—Part II)—1964

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
151.	3812	77-05-01	78-04-30	IS : 3035 (Part I)—1965 IS : 3035 (Part III) 1967
152.	3825	77-05-01	78-04-30	IS : 5423 -1969
153.	4039	77-04-01	78-03-31	IS: 341 --1973
154.	4136	77-01-16	78-01-15	IS : 325—1970
155.	4204	77-02-16	78-02-15	IS. 2925--1975
156.	4218	77-02-16	78-02-15	IS: 868—1956
157.	4220	77-03-01	78-02-28	IS : 1476--1971
158.	4224	77-04-01	78-03-31	IS : 432 (Part II)—1966
159.	4226	77-03-01	77-12-31	IS : 1538—1969
160.	4227	77-03-01	78-02-28	IS : 415—1963
161.	4236	77-03-01	78-02-28	IS . 398—1961
162.	4237	77-03-01	78-02-28	IS : 565 1975
163.	4238	77-03-01	78-02-28	IS : 2039--1964
164.	4256	77-03-16	78-03-15	IS : 633—1975
165.	4261	77-03-16	78-05-15	IS : 1554 (Part I)—1964
166.	4267	77-04-01	78-03-31	IS: 3224—1971
167.	4268	77-04-01	78-03-31	IS. 7347—1974
168.	4272	77-04-01	78-03-31	IS: 1239 (Part I)—1973
169.	4276	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
170.	4277	77-04-01	78-03-31	IS: 10—1970
171.	4278	77-04-01	78-03-31	IS : 10—1970
172.	4285	77-01-16	78-06-30	IS : 1312—1967
173.	4286	77-04-01	78-03-31	IS : 2567—1973
174.	4296	77-04-16	78-04-15	IS : 398 (Part I&II) --1976
175.	4299	77-04-16	78-04-15	IS : 633—1956
176.	4300	77-04-16	78-04-15	IS : 208—1972
177.	4301	77-04-16	78-04-15	IS: 204—1974
178.	4303	77-04-16	78-04-15	IS : 2906—1969
179.	4311	77-04-16	78-04-15	IS: 1438—1969
180.	4312	77-04-16	78-04-15	IS: 1520—1972
181.	4314	77-04-16	78-04-15	IS; 398 (Part I&II) 1976
182.	4317	77-04-16	78-04-15	IS: 1601—1960
183.	4331	77-03-01	78-02-28	IS: 779—1968
184.	4338	77-05-01	78-04-30	IS. 1601—1960
185.	4347	77-05-01	78-04-30	IS: 325--1970
186.	4404	77-04-01	78-03-31	IS: 874 (Part I&II)—1974
187.	4511	77-04-01	78-03-31	IS : 562—1972
188.	4542	77-04-01	78-03-31	IS: 1308—1958
189.	4543	77-04-01	78-03-31	IS: 2864—1968
190.	4600	77-04-01	78-03-31	IS: 1506- 1967
191.	4735	76-10-16	77-12-31	IS: 3062—1974
192.	4901	77-01-01	77-12-31	IS: 562—1972
193.	4915	77-01-01	77-12-31	IS: 427—1965 & IS: 428—1969
194.	4946	77-01-16	78-04-15	IS: 4985—1968
195.	4990	77-02-16	78-02-15	IS: 7231—1974
196.	5023	77-03-01	78-02-28	IS: 3035(Part I)—1965
197.	5036	77-03-01	78-02-28	IS: 1135—1973
198.	5041	77-03-01	78-02-28	IS: 780—1969
199.	5044	77-03-01	78-04-15	IS: 561—1972
200.	5048	77-03-16	78-03-15	IS: 3035 (Part III)—1967
201.	5051	77-03-01	78-02-28	IS: 1239 (Part I)—1973
202.	5052	77-03-16	78-03-15	IS: 3149—1968
203.	5053	77-03-01	78-02-28	IS: 7407—1974
204.	5057	77-03-16	78-03-15	IS: 1554 (Part I)—1964
205.	5058	77-03-16	78-03-15	IS: 7122—1973
206.	5059	77-03-16	78-03-15	IS: 7407—1974
207.	5060	77-03-16	78-03-15	IS: 7407—1974
208.	5066	77-03-16	78-03-15	IS: 1786—1966
209.	5067	77-03-16	78-03-15	IS: 6438—1972
210.	5071	77-04-16	78-04-15	IS: 1979 (Part I)—1974
211.	5083	77-04-01	78-03-31	IS: 3062—1974
212.	5084	77-04-01	78-03-31	IS: 3652—1974
213.	5085	77-04-16	78-06-15	IS: 1307—1973
214.	5086	77-04-01	78-03-31	IS: 4984—1972
215.	5087	77-03-16	78-03-15	IS: 7452—1974
216.	5088	77-03-01	78-02-28	IS: 1601--1960
217.	5090	77-04-01	78-03-31	IS: 774—1971
218.	5091	77-03-16	78-03-15	IS: 897—1966
219.	5092	77-03-16	78-03-15	IS: 1027—1968
220.	5095	77-04-01	78-06-30	IS: 1311—1966
221.	5096	77-04-16	78-04-15	IS: 325—1970
222.	5097	77-04-01	78-03-31	IS: 2037—1962
223.	5099	77-04-16	78-04-15	IS: 3461—1966
224.	5102	77-04-01	78-03-31	IS: 1786—1966
225.	5103	77-03-16	78-03-15	IS: 5852—1970
226.	5106	77-03-16	78-03-15	IS: 1786—1966
227.	5107	77-04-16	78-04-15	IS: 10—1970
228.	5109	77-04-16	78-04-15	IS: 1601—1960
229.	5110	77-03-16	78-03-15	IS: 561—1972
230.	5115	77-04-01	78-03-31	IS: 3976—1975
231.	5119	77-04-01	78-03-31	IS: 398 (Part I&II)—1976
232.	5120	77-04-01	78-03-31	IS: 398 (Part I&II)—1976
233.	5121	77-04-01	78-03-31	IS: 7652—1975
234.	5127	77-03-16	78-03-15	IS- 4432—1967
235.	5132	77-03-16	77-03-15	IS: 226—1975
236.	5133	77-03-16	78-03-15	IS : 280—1972
237.	5134	77-04-16	78-03-15	IS: 4174—1967
238.	5143	77-04-01	78-03-31	IS: 2906—1969
239.	5146	77-04-16	77-12-31	IS : 3906 (Part I)—1974
240.	5149	77-05-01	78-04-30	IS: 4246—1972
241.	5151	77-05-01	78-04-30	IS: 2645—1975
242.	5156	77-05-01	78-04-30	IS: 7231—1974
243.	5220	77-04-01	78-03-31	IS: 4100—1967
244.	5221	77-04-01	78-03-31	IS: 3811—1966
245.	5222	77-04-01	78-03-31	IS: 4450—1967
246.	5223	77-04-01	78-03-31	IS: 4449--1976
247.	5224	77-04-01	78-03-31	IS: 3865—1966
248.	5228	77-06-01	78-05-31	IS: 10 (Part II)—1976
249.	5282	77-04-01	78-03-31	IS: 1958—1967

[No. CMD/13:12]

A.P. BANERJI, Dy. Director-General

पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय

(पेट्रोलियम विभाग)

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 1979

का०आ० 4060.—यत: इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम, 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार अधिसूचना द्वारा इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन

लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस सलग्न अनुसूची मे विनिर्दिष्ट भूमियो के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यत: इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची मे निर्दिष्ट गाव के नाम के सामने दिखायी गयी तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अत: पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली, 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट सक्रिया पर्यवसान के रूप मे एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन सक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम	गाव	का०आ० सं०	भारत के राज्यपत्र में प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पैट्रोलियम विभाग)	अलीया	1924	21-6-75	15-11-78
	गंगाजला	1924	21-6-75	15-11-78

[सं० 12020/3/79-प्रो०-II]

MINISTRY OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILISERS

(Petroleum Department)

New Delhi, the 30th November, 1979

S.O.4060.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the Schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the Schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Alia	1924	21-6-75	15-11-78
	Gangajala	1924	21-6-75	15-11-78

[No. 12020/3/79-Prod.—II]

का० आ० 4061.—इस सलग्न अनुसूची मे विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि मे उपयोग के अधिकारो का अर्जन) अधिनियम, 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार की अधिसूचना द्वारा इण्डियन ऑयल कोर्पोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस सलग्न अनुसूची मे विनिर्दिष्ट भूमियो के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यत. इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) मे निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट गांव के नाम के सामने दिखायी गयी तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अत: पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली, 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट सक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।,

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन सक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम	गाव	का०आ० सं०	भारत के राज्यपत्र मे प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पैट्रोलियम विभाग)	सापर	1925	21-6-75	31-5-79
	मोटीखावडी	1925	21-5-75	31-5-79

[सं० 12020/3/79 प्रो०-I]

S.O. 4061.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the Schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the Schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Vnamgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the Schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Sapar	1925	21-6-75	31-5-79
	Motikhavdi	1925	21-6-75	31-5-79

[No. 12020/3/79-Prod.-I]

का० आ० 4062.—यत इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम, 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार की अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कार्पोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमि के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यत. इण्डियन आयल कार्पोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट गाव के नाम के सामने दिखाई गई तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अत पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली, 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर नविष्ट सक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन का सक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम		गाव	का०आ० सं०	भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम	(1)	काणोदर	3547	19-11-77	28-5-79
रसायन और	(2)	जगाणा	,,	,,	26-6-79
उर्वरक	(3)	अस्बीपुरा	,,	,,	7-6-79
मंत्रालय	(4)	पालनपुर	,,	,,	14-7-79
(पैट्रोलियम	(5)	सोनगढ़	,,	,,	7-6-79
विभाग)	(6)	वरवाडीया	,,	,,	2-6-79
	(7)	खेमाणा	,,	,,	28-5-79
	(8)	मालाना	,,	,,	4-6-79
	(9)	हबतपुरा	,,	,,	8-6-79
	(10)	चित्रासणी	,,	,,	7-6-79
	(11)	कोटडा चांदगढ़	609	4-3-78	14-7-79
	(12)	राजपुरीया सर्वे नं० 9 को छोड़कर	,,	,,	28-5-79
	(13)	जेथी	,,	,,	14-7-79
	(14)	इकबालगढ़	,,	,,	9-7-79
	(15)	सासरवा	,,	,,	,,
	(16)	जुनीसरोली	,,	,,	,,
	(17)	डोलिभा	3548	19-11-78	,,
	(18)	कालीमाटी	,,	,,	26-6-79
	(19)	धनपुरा	3548	19-11-78	26-6-79
	(20)	जोरपुरा	,,	,,	13-6-79
	(21)	खुणीया	,,	,,	,,
	(22)	कीडोतर	,,	,,	,,
	(23)	अमीरगढ़	,,	,,	,,
	(24)	डूगरपुरा	,,	,,	,,
	(25)	उपलाबन्द	,,	,,	,,
	(26)	नीचलाबन्द	,,	,,	,,
	(27)	आवल	,,	,,	,,

[सं० 12020/17/79-प्रो०-II]

S.O. 4062.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the Schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the Schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the Schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	(1) Kanodar	3547	19-11-77	28-5-79
	(2) Jagana	,,	,,	26-6-79
	(3) Asbipura	,,	,,	7-6-79
	(4) Palanpur	,,	,,	14-7-79
	(5) Songadh	,,	,,	7-6-79
	(6) Varvadia	,,	,,	2-6-79
	(7) Khemana	,,	,,	28-5-79
	(8) Malana	,,	,,	4-6-79
	(9) Hebatpur	,,	,,	8-6-79
	(10) Chitrasani	,,	,,	7-6-79
	(11) Kotda Changadh	609	4-3-78	14-7-79
	(12) Rajpuria (Except Survey No. 9)	,,	,,	28-5-79
	(13) Jethi	,,	,,	14-7-79
	(14) Ikbalgadh	,,	,,	9-7-79
	(15) Zanzarva	,,	,,	,,
	(16) Junisarotri	,,	,,	,,
	(17) Dholia	3548	19-11-77	,,
	(18) Kalimati	,,	,,	26-6-79
	(19) Dhanpura	,,	,,	,,
	(20) Jorapura	,,	,,	13-6-79
	(21) Khuniya	,,	,,	,,
	(22) Kidotar	,,	,,	,,
	(23) Amirgadh	,,	,,	,,
	(24) Dungarpura	,,	,,	,,
	(25) Uplobandh	,,	,,	7-6-79
	(26) Nichjabandh	,,	,,	,,
	(27) Awal	,,	,,	,,

[No. 12020/17/79-Prod.-II]

का० आ० 4063.—यतः इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यतः इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट गांव के नाम के सामने दिखायी गयी तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अतः पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट सक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन सक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम	गांव	का०आ० सं०	भारत के राज्यपत्र में प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पैट्रोलियम विभाग)	मसादर	2919	17-9-77	28-5-79

[सं० 12020/17/79 प्रो०—I]

S.O. 4063.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act., 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Mazadar	2919	17-9-77	28-5-79

[No. 12020/17/79-Prod.—I]

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 1979

का० आ० 4064.—यतः इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार की अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यत इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट गांव के नाम के सामने दिखाई गई तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अतः पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट सक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइलाइन का सक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम	गांव	का०आ० सं०	भारत के राज्य पत्र में प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पैट्रोलियम विभाग)	कणों	2421	11-11-78	24-1-79

[सं० 12016/35/79-प्रो०—II]

New Delhi, the 30th November, 1979

S. O. 4064.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerls Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 the Right of User has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery Koyali, in Gujarat State.

And Whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the schedule.

Now, therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination.
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Kani	2421	11-11-78	24-1-79

[No. 12016/25/79-Prod-II]

का० आ० 4065.—यतः इस संलग्न अनुसूची मे विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार की अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यतः इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट गांव के नाम के सामने दिखाई गई तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अतः पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारो का अर्जन) नियमावली 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट प्रक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन-क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन प्रक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय का नाम	गांव	का०आ० सं०	भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि	प्रक्रिया पर्यवसान की तिथि
पैट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पैट्रोलियम विभाग)	वरवाड़ा	2751	3-9-77	13-2-79
	टुंडाव	2751	3-9-77	2-3-79

[सं० 12016/25/79-प्रो०—I]

S.O. 4065.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act., 1962, the Right of User has been adquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the trans port of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the schedule.

Now, therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963 the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination.
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Varvada	2751	3-9-77	13-2-79
	Tundav	2751	3-9-77	2-3-79

[No. 12016/25/79-Prod-I]

नई दिल्ली, 4 दिसम्बर, 1979

का० आ० 4066.—यतः इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार की अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यतः इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया को अनुसूची में निर्दिष्ट नाम के सामने दिखायी गई तिथि से पर्यवसित कर दिया है।

अब अतः पट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट प्रक्रिया पर्यवसान के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाइपलाइन का प्रक्रिया पर्यवसान

मंत्रालय, का नाम	गांव	का०आ० सं०	भारत के राज्यपत्र में प्रकाशन की तिथि	प्रक्रिया पर्यवसान की तिथि
पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग)	गौतमगढ़	1759	7-6-75	28-5-79

[12020/4/79-प्रो०—II]

New Delhi, the 4th December, 1979

S.O. 4066.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act., 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation.

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Gautamgadh	1759	7-6-75	28-5-79

[No. 12020/4/79-Prod. II]

का० आ० 4067.—यत: इस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट और पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकारों का अर्जन) अधिनियम 1962 की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन प्रकाशित भारत सरकार अधिसूचना द्वारा इण्डियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड के लिए गुजरात राज्य के सलाया से उत्तर प्रदेश में मथुरा तक और गुजरात राज्य में विरमगाम से गुजरात शोधनशाला कोयली तक पट्रोलियम के परिवहन के लिए उस संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियो के उपयोग का अधिकार अर्जित कर लिया गया है।

और यत: इण्डियन आयल कार्पोरेशन लिमिटेड ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के खण्ड (1) में निर्दिष्ट प्रक्रिया की अनुसूची में निर्दिष्ट गांव के नाम के सामने दिखायी गई तिथि से पर्यवसित कर दिया गया है।

अब अत: पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि के उपयोग के अधिकारों का अर्जन) नियमावली 1963 के नियम 4 के अधीन, सक्षम प्राधिकारी उक्त तिथि को ऊपर निर्दिष्ट सक्रिया पर्यवासन के रूप में एतद्द्वारा अधिसूचित करते हैं।

अनुसूची

व्यवन क्षेत्र सलाया से मथुरा तक पाईप लाइन सक्रिया पर्यवासन

मंत्रालय का नाम	गांव	का०आ० सं०	भारत के राज्य-पत्र में प्रकाशन की तिथि	सक्रिया पर्यवासन की तिथि
पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग)	कानपुर	962	29-3-75	30-5-79

[सं० 12020/4/79-प्रो० I]

श्री कान्त वडेरा,

गुजरात राज्य के लिए अधिनियम के अन्तर्गत सक्षम प्राधिकारी

S.O. 4067.—Whereas by the notification of Government of India as shown in the schedule appended hereto and issued under sub-section (ii) of section 6 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act., 1962, the Right of User has been acquired in the lands specified in the schedule appended thereto for the Indian Oil Corporation Limited for the transport of petroleum from Salaya in Gujarat State to Mathura in Uttar Pradesh and from Viramgam to Gujarat Refinery, Koyali, in Gujarat State.

And whereas the Indian Oil Corporation Limited has terminated the operation referred to in clause (i) of sub-section (i) of section 7 of the said Act on the date shown against the name of village in the schedule.

Now therefore, under rule 4 of the Petroleum & Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Rules, 1963, the Competent Authority hereby notifies the said date as the date of termination of the said operation

SCHEDULE

Termination of Operation of Pipeline from Salaya to Mathura

Name of Ministry	Name of Village	S.O. No.	Date of publication in the Gazette of India	Date of Termination
Petroleum, Chemicals & Fertilisers (Petroleum Department)	Kanpar	962	29-3-75	30-5-79

[No. 12020/4/79-Prod. I]

S.D. VADERA,

Competent Authority Under the Act, for Gujarat State.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 1979

का० आ० 4068.—भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्, अधिनियम 1970 (1970 का 48) की धारा 14 के उप खण्ड (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारत सरकार ने भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद के परामर्श से उक्त अधिनियम की दूसरी अनुसूची में एतद्द्वारा निम्नलिखित संशोधन किये हैं:—

(1) उक्त अनुसूची के भाग-1 में क्रम संख्या 24 के सामने जो गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर के बारे में है, "प्राणाचार्य ... ... एम०एस०ए०एम०" के बाद निम्नलिखित प्रविष्टि कर ली जाये :—

डाक्टर आफ फिलासफी (आयुर्वेद)	पी०एच०डी० (आयुर्वेद)	1977 और उसके बाद से

(2) उक्त अनुसूची के भाग 1 में क्रम संख्या 60 के सामने जो आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धति बम्बई के संकाय के बारे में है, "आयुर्वेद विशारद" ... "डी०ए०एस०एफ० (बम्बई)" के बाद निम्नलिखित प्रविष्टि कर ली गई है :—

बैचलर आफ आयुर्वेद मेडिसिन एण्ड सर्जरी	बी०ए०एम०एस० (महाराज फैकल्टी)	1975 और उसके बाद से

(3) उक्त अनुसूची के भाग दो में क्रम संख्या 11 और तत्सबंधी प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टियां कर दी गई है —

11 क	आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा पद्धति फ़ैकल्टी का महाराष्ट्र संकाय	यूनानी चिकित्सा और सर्जरी का डिप्लोमा	डी०यू०एम०एस०	1973 और उसके बाद से

[सं० वी० 26011/2/79-ए०ई०]

सुन्दर कुमार कथकि, उप सचिव

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE

New Delhi, the 30th November, 1979

S.O. 1068.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 14 of the Indian Medicine Central Council Act, 1970 (48 of 1970), the Central Government, after consulting the Central Council of Indian Medicine, hereby makes the following amendments in the Second Schedule to the said Act, namely:—

(i) In Part I of the said Schedule against serial No. 24 in the entries relating to Gujarat Ayurved University, Jamnagar, after the entry "Pranacharya.. M.S.A.M." the following entry shall be inserted, namely:—

Doctor of Philosophy (Ayurveda)	Ph.D. (Ayurveda)	From 1977 onwards

(ii) In Part I of the said Schedule against serial No. 60 relating to Faculty of Ayurvedic and Unani Systems of Medicine, Bombay, after the entry "Ayurvedic Visharad.. .D.A.S.F. (Bombay)", the following entry shall be inserted, namely:—

Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery.	B.A.M.S. (Maharashtra Faculty)	From 1975 onwards

(iii) In Part II of the said Schedule, after serial No. 11 and the entries relating thereto, the following serial number and entries shall be inserted, namely:—

11A. Maharashtra Faculty of Ayurvedic and Unani Systems of Medicines, Bombay.	Diploma in Unani Medicine & Surgery.	D.U.M.S.	From 1973 onwards

[No.V.26011/2/79-AE]
S.K. KARTHAK, Dy. Secy.

इस्पात, खान और कोयला मंत्रालय

(खान विभाग)

नई दिल्ली, 28 नवम्बर, 1979

का०आ० 4069.—यतः केन्द्रीय सरकार का यह अभिमत है कि भारत में खनिजों के संरक्षण और विकास के लिए यह आवश्यक है कि निम्नलिखित सारणी के कालम (1) में उल्लिखित क्षेत्रों में या क्षेत्रों के अन्तर्गत उपलब्ध किसी खनिज के बारे में यथा-सम्भव सही-सही जानकारी एकत्र की जाए :—

और यतः कथित क्षेत्रों के बारे में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की राज्य सरकारों द्वारा खनन पट्टे स्वीकृत किए गए है,

अतः अब, खान और खनिज (विनियमन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 67) की धारा 18ए की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार कथित धारा 18ए की उपधारा (1) के परन्तुक की अपेक्षाओं के अनुसार, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की राज्य सरकारों से परामर्श के बाद, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण को कथित सारणी में उल्लिखित क्षेत्रों में यथा आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से एतद्द्वारा व्यापक खोज करने के लिए प्राधिकृत करती है।

सारणी

पट्टे के क्षेत्र का विवरण	मालिक/पट्टाधारी का नाम	क्षेत्र
1	2	3
1 धनमुआ खान, धनमुआ फारेस्ट रेंज, तालुक बैहड़, जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश।	मैसर्स फतेह चन्द एण्ड सन, सार भवन, तुमसर, महाराष्ट्र।	33.82 हैक्टेयर्स
2 तोकर खान, धनमुआ फोरेस्ट रेंज, तालुक बैहड, जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश।	मैसर्स पैसिफिक मिनरल्स प्राइवेट लि०, 11 गदर स्ट्रीट, कलकत्ता।	127 57 हैक्टेयर्स
3 बैरवर्जी लीज होल्ड एरिया, मैंगनीज ओर इण्डिया लि० की भारवेली खानों के समीप, गाव भायेरा, ओलाझारी तालुक और जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश।	मैसर्स बहमनशा पैस्टम जी, बैरमजी, 7 बैरवी टाउन, नागपुर।	125.26 हैक्टेयर्स
4 रामरामा खान, गाव रामरामा, तालुक वाडासिओनी, जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश।	मैसर्स जे० ए० त्रिवेदी एण्ड ब्रदर्स, माइनिंग प्रोपराइटर मैन रोड, बालाघाट।	94 48 हैक्टयर्स
5 नेटरा खान, सानेवाली फारेस्ट रेंज तालुक बाडासिओनी जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश।	मैसर्स जे० ए० त्रिवेदी एण्ड ब्रदर्स, माइनिंग प्रोपराइटर, मैन रोड, बालाघाट।	289.38 हैक्टेयर्स

6 नेटरा खान, गवर्नमेंट फारेस्ट रेंज, तालुक. बाड़ासिओनी जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश	मैसर्स पैसिफिक मिनरल्स प्राइवेट लि०, 11 सुदर स्ट्रीट, कलकत्ता	20 वर्ष के लिए पट्टा 1-12-1967 से 1-12-1987 तक
7 हिउरा खानें, गाव हिउरा, तालुक और जिला : भंडारा, महाराष्ट्र (दो खनन पट्टों के अन्तर्गत खसरा नं० 24, 33 से 38 और 49 और 32 के भाग	श्री एम० पी० शामने, तुमसर, भंडारा	29 26 एकड़
8 आर० बी० लंजेवर, तालुक : तुमसर, जिला भंडारा : महाराष्ट्र (दो खनन पट्टों के अंतर्गत खसरा नं० 21 से 24, 27 और खसरा नं० 22 से 24, 26 और 27 के भाग)	श्री आर० बी० लजेवर तुमसर, भंडारा	33.62 एकड़
9. सटक खान, तालुक : रामटेक, जिला : नागपुर, महाराष्ट्र	मैसर्स इंडिया मिनरल्स, मैसर्स जे० बी० अग्रवाल से स्थानान्तरित	23 76 एकड़
10 चिकला, मीनासावंगी और दुरखुवी गाव, तालुक और जिला : भंडारा, महाराष्ट्र	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	372 26 एकड़
11. चिकला गांव, (खसरा नं० 563, 564, 566 से 568) तालुक और जिला : भंडारा, महाराष्ट्र	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	30 02 एकड़
12. चिकला गांव (खसरा नं० 475 से 477, 483, 485, 548, 555, 556, और 440 से 442, 460 से 463, 467 से 469, 471, 474, 484, 486, 489, 490, 496, 541 से 543, 546, 547, 551 से 554 और 557 के भाग) तालुक और जिला : भंडारा, महाराष्ट्र	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	176.21 एकड़
13. चिकला गांव (खसरा नं० 436, 438, 447 से 454, 456 से 459, 464, 466, 487, 488, 498 से 500, 539, 540, 549 से 552, 554, 39, 53 52, 54 से 62, 111 से 124, 128, 147, 148, 149 384, 385, 398, 400 से 402, 428 से 430, 432 से 434 और खसरा नं० 443, 446, 445, 455, 460 से 463, 465, 467 से 469, 471, 486, 489, 490, 511 से 543, 546, 547, 395 से 397, 431 और 435 के भाग) तालुक और जिला : भंडारा, महाराष्ट्र	मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड, नागपुर	284.26 एकड़
14. चिकला गांव (खसरा नं० 563 और 564 के भाग) तालुक और जिला भंडारा, महाराष्ट्र	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	12 42 एकड़
15. भारवली, हीरापुर, मनेगांव, समारा, ओलझिरी-नेवारी गाव, तालुक और जिला : बालाघाट, मध्य प्रदेश	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	452 43 एकड़
16. गांव लवेझारी, तालुक और जिला : बालाघाट, मध्य प्रदेश	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	12 44 एकड़
17. गांव मिरगपुर, तालुक वाड़ासिओनी, जिला : बालाघाट, मध्य प्रदेश	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	365.74 एकड़
18. गांव उकवा, गुडमा, लगमा और समनापुर, तालुक : बेहड़, जिला : बालाघाट, मध्य प्रदेश	मैंगनीज ओर इंडिया लि०, नागपुर	731 22 एकड़

[फा० सं० 1(46)/76-खान 6/एम० एम०]

प्रसन्न चन्द्र, अवर सचिव

MINISTRY OF STEEL, MINES AND COAL

(Department of Mines)

New Delhi, the 28th November, 1979

S.O. 4059.—Whereas the Central Government is of opinion that for the conservation and development of minerals in India it is necessary to collect as precise information as possible with regard to any minerals available in or under the areas specified in column (i) of the Table below:—

And whereas in respect of the said areas, mining leases have been granted by the State Governments of Maharashtra and Madhya Pradesh;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 18A of the Mines and Minerals (Regulation and Development) Act, 1957 (67 of 1957), the Central Government, after consultation with the State Governments of Maharashtra and Madhya Pradesh, as required by the proviso to sub-section (1) of the said section 18A, hereby authorises the Geological Survey of India to carry out such detailed investigations for the purpose of obtaining such information as may be necessary in the areas specified in the said Table.

TABLE

Detail of the leasehold area	Name of the owner/lessee	Area
1	2	3
1. Dhansua Mine, Dhansua Forest Range, Taluk Baihar, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs Fatch Chand and Sons, Mor Bhavan, Tumsur, Maharashtra.	33.82 Hectares.
2. Laugur Mine, Dhansua Forest Range, Taluk Baihar, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs Pacific Minerals Private Limited, 11 Sudder Street, Calcutta.	127.57 Hectares.
3. Byramji Lease hold areas near Bharweli Mines of Manganese Ore India Limited, Villages Bharweli, Aolajhari, Taluk and District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs Bahmansha Pestonji, Byramji, 7 Byramji Town, Nagpur.	125.26 Hectares.
4. Ramrama Mine, Village Ramrama, Taluk Waraseoni, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs J.A. Trivedi and Brothers, Mining Proprietors, Main Road, Balaghat.	94 48 Hectares.
5. Netra Mine, Sonewani Forest Range, Taluk Waraseoni, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs J.A. Trivedi and Brothers, Mining Proprietors, Main Road, Balaghat.	289.38 Hectares
6. Netra Mine, Government Forest Range, Taluk Waraseoni, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Messrs Pacific Minerals Private Limited, 11 Sudder Street, Calcutta.	Lease for 20 years from 1-12-1967 to 1-12-1987.
7. Hiura Mines, Hiure Village, Taluk and District Bhandara, Maharashtra (Khasra Nos. 24, 33 to 38 and parts of 49 and 32 under two mining leases).	Shri M.P. Damle, Tumsur, Bhandara.	29.26 acres.
8. R.B. Lanjewar, Taluk Tumsur, District Bhandra, Maharashtra (Khasra Nos. 21 to 24, 27 and parts of Khasra Nos. 22 to 24, 26 and 27 under two mining leases).	Shri R.B. Lanjewar, Tumsur, Bhandra.	33.62 acres.
9. Satak Mine, Taluk Ramtek, District Nagpur, Maharashtra.	Messrs Dodia Minerals transferred from Messrs J.B. Aggarwal.	23.76 acres.
10. Chikla, Sitasaongi and Edurbuchi villages, Taluk and District Bhandara, Maharashtra.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	372.26 acres.
11. Chikla village, (Khasra Nos. 563, 564, 566 to 568) Taluk and District Bhandra, Maharashtra.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	30.02 acres.
12. Chikla village (Khasra Nos. 475 to 477, 483, 485, 548, 555, 556 and parts of 440 to 442, 460 to 463, 467 to 469, 471, 474, 484, 486, 489, 490, 496, 541 to 543, 546, 547, 551 to 554 and 557), Taluk and District Bhandara, Maharashtra.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	176.24 acres.
13. Chikla village, (Khasra Nos. 436, 438, 447 to 454, 456 to 459, 464, 466, 487, 488, 498 to 500, 539, 540, 549 to 552, 554, 39, 53, 52, 54 to 62, 111 to 124, 128, 147, 148, 149, 384, 385, 398, 400 to 402, 428 to 430, 432 to 434 and parts of Khasra Nos, 443, 446, 445, 455, 460 to 463, 465, 467 to 469, 471, 486, 489, 490, 541 to 543, 546, 547, 395 to 397, 431 and 435), Taluk and District Bhandara, Maharashtra.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	284.26 acres

1	2	3
14. Chikla village (Parts of Khasra Nos. 563 and 564), Taluk and District Bhandara, Maharashtra.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	12.42 acres.
15. Bharwali, Hirapur, Manegaon, Manjhara, Aolajhiri-Tawejhari villages; Taluk and District Balaghat, Madhya Pradesh.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	452.43 acres.
16. Village Tawejhari, Taluk and District Balaghat, Madhya Pradesh.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	12.44 acres.
17. Village Miragpur, Taluk Waraseoni, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	365.74 acres.
18. Village Ukwa, Gudma, Lagma and Samnapur, Taluk Baihar, District Balaghat, Madhya Pradesh.	Manganese Ore India Limited, Nagpur.	731 22 acres.

[File No. 1(46)/76-MVI/MM]

PARSAN CHANDRA, Under Secy.

पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय

नई दिल्ली, 5 दिसम्बर, 1979

का०आ० 4070.— केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा उस समयावधि को, जिसके कि अन्तर-अन्दर भारत सरकार के पर्यटन और नागर विमानन, मंत्रालय की अधिसूचना सं० ए०वी० 15013/15/79-ए, दिनांक 21 अगस्त, 1979 द्वारा नियुक्त की गयी जांच अदालत को उपर्युक्त अधिसूचना में निर्दिष्ट मामलों की जांच पूरी करने तथा केन्द्रीय सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने की आशा थी, और आगे बढ़ा कर 31 मार्च, 1980 करती है।

[फा०सं० ए०वी० 15013/15/79-ए]

एस० एकाम्बरम, उप सचिव

MINISTRY OF TOURISM & CIVIL AVIATION

New Delhi, the 5th December, 1979

S.O. 4070.—The Central Government hereby further extends upto the 1st March, 1980, the period of time within which the Court of Inquiry appointed by the Government of India in the Ministry of Tourism and Civil Aviation vide Notification No. AV. 15013/15/79-A dated 21st August, 1979 will be expected to complete its inquiry into the matters specified in the Notification mentioned above, and report to the Central Government.

[F. No. AV. 15013/15/79-A]

S. EKAMBARAM, Dy. Secy.

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नयी दिल्ली, 5 दिसम्बर, 1979

का०आ० 4071.—मेट्रो रेलवे (निर्माण कार्यों का निर्माण) अधिनियम, 1978 (1978 का 33) की धारा 16(1) के अनुसार केन्द्रीय सरकार श्री एस०आर० राय को जो कि पश्चिम बंगाल उच्चतर न्यायिक सेवा के एक अधिकारी तथा नगर सिविल और सत्र न्यायालय कलकत्ता के न्यायाधीश हैं, मेट्रो रेलवे कलकत्ता के लिए उक्त अधिनियम के प्रयोजन हेतु 9 नवम्बर, 1979 से पंचाट के रूप में नियुक्त करती है।

[सं० 79 ई(ओ) II/25/4]

के० बालचन्द्रन, सचिव एवं पदेन संयुक्त सचिव

MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 5th December, 1979

S.O. 4071.—In terms of Section 16(i) of the Metro Railways (Construction of Works) Act, 1978 (No. 33 of 1978) the Central Government appoints Shri S. R. Roy, an officer of West Bengal Higher Judicial Service and Judge, City Civil and Sessions Court, Calcutta, as Arbitrator for the purposes of the said Act for Metro Railway, Calcutta, w.e.f. 9th November, 1979.

[No. 79E(O)II/25/4]

K. BALACHANDRAN, Secy.

and ex-officio Jt. Secy.

श्रम मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 20 नवम्बर, 1979

का०आ० 4072.—भारतीय खाद्य निगम के प्रबन्धतन्त्र से सम्बद्ध नियोजकों और मद्रास पोर्ट एण्ड एगमोर गोदामों में उनके कर्मकारों ने, जिनका प्रतिनिधित्व ट्रान्सपोर्ट एण्ड डाक वर्कर्स यूनियन, मद्रास ने किया है, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 10 की उपधारा (2) के अधीन संयुक्त रूप से केन्द्रीय सरकार को आवेदन किया है कि वह उनके बीच विद्यमान औद्योगिक विवाद को, जो उक्त आवेदन में उपवर्णित है और इससे उपाबद्ध अनुसूची में उल्लेख विषयों के बारे में है, किसी औद्योगिक अधिकरण को निर्देशित कर दे;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि आवेदन करने वाले व्यक्ति प्रत्येक पक्षकार के बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हैं;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 7-क और धारा 10 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए एक औद्योगिक अधिकरण गठित करती है, जिसके पीठासीन अधिकारी श्री टी० सुदरसनम होनियल होंगे, तथा मुख्यालय मद्रास में होगा और उक्त विवाद को न्याय-निर्णयन के लिए उक्त अधिकरण को निर्देशित करती है।

अनुसूची

"क्या कर्मकारों का यह दावा कि उन्हें 1-4-1977 को और उसके पश्चात् किसी भी दिन उनकी सामान्य शिफ्ट के अतिरिक्त

किए गए काम के लिए साधारण मजदूरी दर की अपेक्षा दुगनी मजदूरी दर दी जाए, न्यायोचित है ? यदि नहीं, तो उन कर्मकारों का अन्य क्या अनुतोष दिया जाए ?"

[सं० एल० 42011/35/79-डी० 2 बी०]

एस० एच० एस० अय्यर, डेस्क अधिकारी

MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 20th November, 1979

S.O 4072.—Whereas the employers in relation to the management of the Food Corporation of India and their workmen in the Madras Port and Egmore Godowns represented by the Transport and Dock Workers Union, Madras, have jointly applied to the Central Government under sub-section (2) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) for reference of an industrial dispute that exists between them to an Industrial Tribunal in respect of the matters set forth in the said application and reproduced in the Schedule hereto annexed;

And whereas the Central Government is satisfied that the persons applying represent the majority of each party;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 7-A and sub-section (2) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby constitutes an Industrial Tribunal of which Shri T. Sudarsanam Daniel shall be the Presiding Officer with headquarters at Madras and refers the said dispute for adjudication to the said Tribunal.

SCHEDULE

Whether the claim of the workmen for twice the ordinary rate of wages for work that has been done by them on and after 1-4-1977 beyond their normal shift on any day is justified ? If not, what other relief may be allowed to the workmen ?

[No. L-42011(35)/79-D.II(B)]

New Delhi, the 13th December, 1979

S.O. 4073.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal No. 2, Dhanbad, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Gondudih Colliery of Messrs. Bharat Coking Coal Limited, Post Office Dhansar, District Dhanbad and their workmen, which was received by the Central Government on the 7th December, 1979.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL (NO. 2) AT DHANBAD

Reference No. 26 of 1979

In the matter of an industrial dispute under S. 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947.

PARTIES :

Employers in relation to the management of Gondudih colliery of Messrs. Bharat Coking Coal Limited, Post office Dhansar, District Dhanbad

AND

Their workmen.

APPEARANCES :

On behalf of the employers—Shri T. P. Choudhury, Advocate.

PRESENT :

On behalf of the workmen—Shri M. M. Mullik, Advocate.

State : Bihar. Industry : Coal

30th November, 1979.

AWARD

This reference has been made by the Central Government under Section 10 of the I.D. Act, 1947 to this Tribunal for adjudication with the following schedule :

SCHEDULE

"Whether the action of the management, Gondudih colliery of Messrs. Bharat Coking Coal Limited, Post office Dhansar, District Dhanbad in denying the designation and wages of Line Mistry to Shri Rajendra Singh, an employee of Gondudih colliery is justified ? If not, to what relief is the said workman entitled ?"

The case of the workman, Shri Rajendra Singh in short is that he has been continuously working as line mistry w.e.f. 30-12-1976 in category IV. He had been issued authorisation slip by the competent authority to work as line mistry. His grievance is that the management has without any justification stopped him to work as line mistry and reverted him to the job of line mazdoor.

The management on the other hand has taken the plea that Sri Rajendra Singh had been working as line mazdoor in category II in Gondudih colliery. It was denied that he was ever authorised to work as line mistry. It was also stated that Sri Rajendra Singh was not competent to work as line mistry in category IV and therefore he was never placed in category IV as line mistry.

The workman was represented by Shri M. M. Mallik, Advocate and the management by Shri T. P. Choudhury, Advocate. On 21-9-1979 the hearing commenced and Shri B. K. Jha, MW. 1 was examined and cross-examined. Exts. M1 to M8 were marked for the Management Exts. W. 1 and W. 2 were also marked for the workmen. On account of the submissions of both parties' lawyers 25-9-1979 was fixed for further evidence. On that date Shri T. P. Choudhury was present but the workman was not present nor his lawyer was present. Sri T. P. Choudhury examined Shri S. C. Pandey, MW. 2 for the management and his evidence was closed. Since there was no justification for any further adjournment Shri T. P. Choudhury was heard and the award was reserved. Later on Shri Mallik, Advocate saw me in the chamber and stated that his client came late as he was assured by the manager that the case will be amicably settled. He hoped to bring the settlement. It was for this reason that the consideration of the award was delayed by me ; but no settlement could be forthcoming. I may further mention that on 25-9-1979 Shri S. C. Pandey manager of the colliery was examined. Had he talk about settlement with the workman, Shri Pandey would have stated so in his evidence. It appears that there is no substance in the contention that any talk of settlement took place between the manager and the workman. I have therefore no option but to consider the case on merit.

MW. 1 Shri U. K. Jha is Sr. Personnel Officer of Dhansar-Kusunda colliery. Gondudih colliery is in the area No. VI, i.e. Kusunda Area. He has proved Exts. M1 to M8 which are the registers of the colliery. He has said that the category and designation of the workman is mentioned in Form C register and wage sheet. The concerned workman, according to him is a line mazdoor and not line mistry. He further says that he has been getting his wages as line mazdoor. In the cross-examination the witness has proved Exts. W1 and W2. The next witness MW. 2 is the manager of Gondudih

colliery. He also said that the concerned workman Sri Rajendra Singh is a line mazdoor According to his evidence in 1979 February he had been authorised to work as line mistry for a period of six months during which he did not work properly In the month of July his authorisation was withdrawn due to his unsatisfactory work. He has clarified that for the purpose of promotion from lower category to a higher one a workman is authorised to work in higher post for a particular period and if his work is satisfactory recommendation is made to the higher authority for absorption in the higher post. The manager as such has no authority to promote anybody from lower category. He has further said that during the authorisation period the workmen get pay for higher category. His evidence is that on examination of papers he has found that the workman was not working as line mistry from 30-12-1976.

On behalf of the workman no witness was examined and so his case has to depend upon the two exhibits marked on his behalf, i.e. Ext. W. 1 and Ext. W. 2. Ext. W. 1 is a letter addressed to Sri Rajendra Singh, line mazdoor signed by the manager Shri Pandey. It is dated 28-2-1979. The letter shows that the manager promoted Sri Rajendra Singh to work as line mistry from 15-2-1979 on a temporary basis Ext. W. 2 is a charge-sheet issued by Shri Pandey against Sri Rajendra Mistry, line mazdoor which is dated 30-6-1979. It was to the effect that on 29-6-1979 at 5.30 P.M. there was some defect in the line, and in absence of the line mistry he was asked to work in a temporary capacity which he refused to do. He was further asked to rectify the defects in some other lines but that also he refused to do.

It will appear from the documents of the workman, Ext. W. 1 he was asked to work as line mistry on a temporary basis. Then again after 4 months, Ext. W. 2 shows that the workman had been reverted to his own position as line mazdoor and he was again asked to work as line mistry which he refused. It cannot therefore be said that the workman was appointed on a permanent basis as line mistry. The documents on behalf of the management would clearly go to show that the workman happened to be a line mazdoor and whenever he used to work as line mistry he used to get wages as such. The management therefore was justified in denying the designation and wages to Rajendra Singh (Mistry) as he was never promoted permanently to that post. The workman cannot claim permanent promotion to the post of line mistry just because he was given a temporary assignment as such. The reference is, therefore answered accordingly.

This is my award.

J. P. SINGH, Presiding Officer

[No. L-20012/7/79-DIII(A)]

S. H. S IYER, Desk Officer

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1979

का०आ० 4074—भारत सरकार के भूतपूर्व श्रम, रोजगार और पुनर्वास मंत्रालय (श्रम और रोजगार विभाग) के अधिसूचना का०आ० संख्या 2747 दिनांक 6 सितम्बर, 1966 द्वारा गठित औद्योगिक अधिकरण जिसका मुख्यालय जबलपुर में स्थित है, के पीठासीन अधिकारी का पद रिक्त हो गया है,

अतः अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 8 के उपबन्धों के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार श्री अब्दुल गय्यूर कुरेशी को पूर्वोदन गठित औद्योगिक अधिकरण का पीठासीन अधिकारी नियुक्त करती है ।

[सं० एस० 11020/11/79 डी० आई० ए० (1)]

New Delhi, the 10th December, 1979

S.O. 4074.—Whereas a vacancy has occurred in the Office of the Presiding Officer of the Industrial Tribunal, Jabalpur, constituted by the notification of the Government of India in the then Ministry of Labour Employment and Rehabilitation (Department of Labour and Employment) No. S.O. 2747 dated the 6th September, 1966.

Now, therefore, in pursuance of the provisions of section 8 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) the Central Government hereby appoints Shri Abdul Gaiyur Qureshi as the Presiding Officer of the said Industrial Tribunal with effect from the 3rd December, 1979 (Forenoon).

[No. S. 11020/11/79/DIA(i)]

का०आ० 4075.—भारत सरकार के भूतपूर्व श्रम, रोजगार और पुनर्वास मंत्रालय (श्रम और रोजगार विभाग) के अधिसूचना का०आ० संख्या 141 तारीख 29 जनवरी, 1965 द्वारा गठित श्रम न्यायालय जिसका मुख्यालय जबलपुर में स्थित है, के पीठासीन अधिकारी का पद रिक्त हो गया है ।

अतः अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 8 के उपबन्धों के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार श्री अब्दुल गय्यूर कुरेशी को पूर्वोदन गठित औद्योगिक श्रम न्यायालय का पीठासीन अधिकारी नियुक्त करती है ।

[सं० एस० 11020/11/79 डी आई ए (ii)]

पी० बी० एल० सक्सेना, डेस्क अधिकारी

S.O. 4075.—Whereas a vacancy has occurred in the office of the Presiding Officer of the Labour Court, Jabalpur, constituted by the notification of the Government of India in the then Ministry of Labour Employment and Rehabilitation (Department of Labour and Employment) No S.O. 441 dated the 29th January, 1965

Now, therefore, in pursuance of the provisions of section 8 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947) the Central Government hereby appoints Shri Abdul Gaiyur Qureshi as the Presiding Officer of the said Labour Court, with effect from the 3rd December, 1979 (Forenoon).

[No. S. 11020/11/VI/79/DIA(ii)]

P. B. L. SAXENA, Desk Officer

नई दिल्ली, 15 दिसम्बर, 1979

का. आ. 4076.—केन्द्रीय सरकार, ठेका श्रम (विनियमन और उत्सादन) अधिनियम, 1970 (1970 का 37) की धारा 10 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय बोर्ड से परामर्श करने के पश्चात्, देश में सभी लोहा खानों में, इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्यों पर, ठेका श्रमिकों के नियोजन को 10 मई, 1980 से प्रतिषिद्ध करती है ।

अनुसूची

1 अधिभार हटाना ,

2 ड्रिल और विस्फोटक करना ; और

3 विमुक्त अयस्क संक्रियाएं ।

[संख्या यू-23013(9)/76-एल डब्ल्यू]

New Delhi, the 15th December, 1979

S O 4076—In exercise of the powers conferred by Sub-section (1) of Section 10 of the Contract Labour (Regulation and abolition) Act, 1970 (37 of 1970), the Central Government, after consultation with the Central Board, hereby prohibits the employment of contract labour in the works specified in the Schedule annexed hereto, in all iron mines in the country, with effect on and from the 10th May, 1980.

SCHEDULE

1 Over burden removal ,

2 Drilling and Blasting ; and

3 Float ore operations.

[No U-23013(9)/76-LW]

का. आ. 4077—केन्द्रीय सरकार, ठेका श्रम (विनियमन और उत्सादन) अधिनियम, 1970 (1970 का 37) की धारा 10 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय बोर्ड से परामर्श करने के पश्चात्, देश में चूना-पत्थर, डोलोमाइट और मैंगनीज खानों में, इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्यों पर ठेका श्रमिकों के नियोजन को, इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से उस तारीख के लिए, जब ऐसे प्रकाशन से छह मास की अवधि समाप्त होती है, प्रतिषिद्ध करती है ।

अनुसूची

1 अधिभार हटाना ,

2 ड्रिल और विस्फोटन करना ।

[संख्या एस-16025(58)/77-एल डब्ल्यू]

अशोक नारायण, उपसचिव

S.O. 4077—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 10 of the Contract Labour (Regulation and Abolition) Act, 1970 (37 of 1970) the Central Government, after consultation with the Central Board, hereby prohibits the employment of contract labour in the works specified in the Schedule annexed hereto, in the Limestone, Dolomite and Manganese mines in the country, with effect on and from the date on which the period of six months, from the date of publication of this Notification expires

SCHEDULE

1 Over-bardan removal ,

2 Drilling and blasting

[No S-16025(58)/77 LW]

ASHOK NARAYAN, Dy Secy

New Delhi, the 14th December, 1979

S.O 4078—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following consolidated award of the Central Govt Industrial Tribunal, Ahmedabad, (Gujarat) in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Punjab National Bank, Himatnagar and their workmen over termination of services of S/Shri A B Shah and P D Patel, Temporary Godownkeeper which was received by the Central Government on the 27 11 79

BEFORE SHRI R C ISRANI, B A (Hons), LL B, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL AT AHMEDABAD

Reference (ITC) No. 2 of 1976

ADJUDICATION

BETWEEN

The Punjab National Bank, Himatnagar

AND

The workmen employed under it

In the matter of termination of services of Shri P D. Patel from 18-1-1968

WITH

Reference (ITC) No 5 of 1976

ADJUDICATION

BETWEEN

The Punjab National Bank, Himatnagar

AND

The workmen employed under it

In the matter of termination of services of Shri A. B. Shah, Godown Keeper.

Appearances : Dr. Anand Prakash, Senior Counsel assisted by the advocate Shri Jagat Arora for the employer-bank; and Shri M. S. Udeshi, Advocate assisted by Shri C.L. Bhardwaj and Shri K.N. Malhotra for the workmen.

CONSOLIDATED AWARD

These are two references which have been made by the Government of India, Ministry of Labour, New Delhi, to this Industrial Tribunal u/s. 10(1)(d) read with Section 33B(1) of the Industrial Disputes Act, 1947, hereinafter to be referred to as the 'Act', in respect of certain industrial disputes which have arisen between the parties, viz., The Punjab National Bank, Himmatnagar, hereinafter to be referred to as the 'Bank' and the workmen employed under it

2. The Reference (ITC) No. 2 of 1976, hereinafter to be referred to as the 'First Reference' was originally made to the then Industrial Tribunal Central presided over by Shri M.U. Shah vide the Government of India, Ministry of Labour, New Delhi's Order dt. 17-1-76, ex.1. Ultimately, on the retirement of Shri M.U. Shah, the said reference was transferred to the Industrial Tribunal vide the Government of India, Ministry of Labour, New Delhi's order dt. 10-3-78, ex.4

3. The industrial dispute as it appears from the schedule attached to the original order under which this reference has been made relates to the demand which is as under :

"Whether the action of the management of the Punjab National Bank, Bombay in terminating the services of Shri P. D. Patel, temporary Godown Keeper, Himmatnagar (now working as Clerk-cum-Godown Keeper at Nadiad) and denying him confirmation with effect from 18th January, 1968, is justified? If not to what relief is the workman entitled?"

4. The Reference (ITC) No. 5 of 1976, which will hereinafter be referred to as the 'Second Reference' was originally made to the Industrial Tribunal Central presided over by Shri M.U. Shah vide the Government of India, Ministry of Labour, New Delhi's order dt. 20-10-75, ex.1. Ultimately, after the retirement of Shri M.U. Shah, the said reference was transferred to this Industrial Tribunal vide the Government of India, Ministry of Labour, New Delhi's order dt. 27-8-77.

5. The industrial dispute as it appears from the schedule attached to the original order of reference under which this reference has been made, relates to the demand which is as under :

"Whether the action of the Management of the Punjab National Bank, Bombay in terminating the services of Shri A.B. Shah, temporary Godown Keeper, Himmatnagar (presently working as Clerk-cum-Godown Keeper at Bulsar) from time to time and reappointing him and denying confirmation to him with effect from the 9th June, 1968, is justifiable. If not, to what relief is the said workman entitled ?"

6. In both these references the two concerned workmen are represented by All India Punjab National Bank Employees Association, Delhi, hereinafter to be referred to as the 'Association,' of which Association the Punjab National Bank Employees (Gujarat State) is a component unit, hereinafter to be referred to as the 'Local Union.' On behalf of the above mentioned two institutions, the case of the two concerned workmen in these two references was put forth by the learned advocate Shri M. S. Udeshi, assisted by Shri C. L. Bhardwaj and Shri K.N. Malhotra. So far as the Bank is concerned, it was represented in these two cases by their learned Senior Counsel Dr. Anand Prakash, assisted by the learned advocate Shri Jagat Arora. At the joint request of the parties, as contained in the purshis ex.21 dt. 11-7-78, the two references have been consolidated because there are common questions of facts and law involved in the adjudication of the industrial disputes covered by these two references. The First Reference has been treated as the main reference and the Second Reference has been consolidated with it. In the First Reference, the workman involved is Shri P. D. Patel, who will hereinafter be referred to as the 'workman in the First Reference' and in the Second Reference, the workman concerned is Shri A. B. Shah, who will hereinafter be referred to as the 'workman in the Second Reference'.

7. So far as the First Reference is concerned, the statement of claim has been filed at ex. 12 dated 30-9-1975 in support of the demand covered by that reference. It is the case of the Association, that the workman in the First Reference was originally appointed as a temporary godown keeper in the branch of the Bank at Himmatnagar w.e.f. 18-1-1967. He continued in that service without any interruption or break upto 18-10-1968. The allegation of the Association is that the termination of the service of the workman in the First Reference w.e.f. 19-10-1968 was illegal and without any justification. He remained out of employment till 24-1-1969 and was again appointed w.e.f. 25-1-1969. However, his services were again terminated w.e.f. 31-1-1969. It appears that without any break, he was again appointed w.e.f. 1-2-1969 and continuously served upto 3-11-1969. However, from 4-11-1969 his services were terminated. He was reemployed w.e.f. 16-1-1970 and continuously served upto 13-7-1970 and his services were terminated w.e.f. 14-7-1970. After a few months, he was reemployed from 9-11-1970 and continuously served upto 8-10-1971 when his services were terminated w.e.f. 9-10-1971. He was again employed w.e.f. 30-11-1971 and served continuously upto 30-9-1972 when his services were again terminated w.e.f. 1-10-1972. He was reemployed w.e.f. 1-12-1972 and served continuously upto 15-9-1973 when his services were terminated w.e.f. 16-9-1973. He was again reemployed w.e.f. 17-12-1973 and served upto 18-4-1974.

8. The grievance of the Association is that even though the workman in the First Reference had put in so much continuous service under the Bank, right from the day of his first appointment, viz., 18-1-1967, yet, the Bank did not take into consideration all that service of about 7 years and gave him the fresh appointment as a probationary clerk cum godown keeper at Nadiad branch of the Bank w.e.f. 19-4-1974. The contention of the Association therefore is that in fact the first termination of the service of the workman in the First Reference w.e.f. 19-10-1968 be declared to be illegal and unjustified.

It is also prayed that a direction be given to the Bank that this workman in the First Reference be treated as having been confirmed in the service of the Bank w.e.f. 18-1-1968 on the completion of one year of service under the Bank which he started w.e.f 18-1-1967. It is also claimed that for the periods during which illegal and artificial breaks were effected in the otherwise continuous service of this workman, he should be paid his full back wages. The five prayers made on behalf of this workman are contained in para 15 of the statement of claim ex. 12 and it will be convenient to reproduce the same in order to appreciate properly as to what are the reliefs claimed through this reference. They are as under :—

"(a) decide the reference in favour of the workmen,

(b) to direct the bank to treat Shri P. D. Patel as a confirmed hand from 18-1-1968,

(c) to pay wages for the periods when he was illegally kept out of employment,

(d) to allow to Shri P. D. Patel graded increments from the anniversary date, i.e. 18th January for the years 1968 and so on and all other benefits to which permanent confirmed hands are entitled under the Bank Award as modified upto date.

(e) Any other relief which this Hon'ble Tribunal may deem proper alongwith costs upto date."

9. On behalf of the Bank, the written statement ex. 2 has been filed in the First Reference and it is dated 25-8-1976. In the first instance it is urged that the First Reference is illegal and not tenable in law; that this Tribunal has no jurisdiction to entertain this reference. It is explained that the workman in the First Reference has now been taken in the regular service of the Bank w.e.f. 19-4-1974 and has also been confirmed on the completion of period of probation. In view of this position, it is urged that the demand of the Association that he should be deemed to have been confirmed w.e.f. 18-1-1968 cannot be entertained. The case of the Bank, regarding the appointment of the workman in the First Reference as a temporary godown keeper is, that his services were absolutely temporary and whenever it was found necessary to employ him to keep a watch over the godown in which the goods of the customers of the Bank were kept by way of pledge with the Bank, he was employed as a temporary godown keeper. It was, therefore, urged that he had absolutely no right to claim permanency or to remain in service of the Bank even though there was no necessity to employ him, there being no customer whose goods were required to be pledged with the Bank. It was urged on behalf of the Bank that the breaks in his service were absolutely natural and they were necessitated by the exigencies of the time as during those periods when he had remained out of employment, no goods of any customer were pledged with the Bank and therefore there was no necessity of employing a godown keeper.

10. In this connection, the Bank also referred to a settlement between the Bank and its employees by which the employees who were IInd class graduates and who were in clerical cadre were required to pass, at their option, the job test or N.I.B.M. test and if they passed such test and also successfully appeared at the interview, they were to be selected and were to be taken in the regular employment on probation in the regular employment by the Bank. It was explained by the Bank that the workmen in the First Reference, in consequence to that settlement, had opted to appear for that job test and he had successfully given that test and had also been successful in the interview. It is, therefore, that he was placed on the regular employment on probation w.e.f. 19-4-1974. The Bank also explained the different rules which are to be followed before an employee can claim confirmation or permanency in the service under the Bank. In this connection, the reliance was also placed on certain terms and conditions of the above mentioned settlement and unless they were complied with no employee of the Bank could claim confirmation or permanency. It was urged that after the workman in the First Reference, complied with these conditions, he was immediately taken on the regular establishment w.e.f. 19-4-1974. As regards the different terminations of the services of this workman, it was explained that there was no violation of any provision of the Act or the Sastri Award which governs the conditions of services of the employees of the Bank. It was denied that the breaks which had occurred in the service of the workman in the First Reference were deliberately effected or that they were intentional. As regards the claim for the wages for the periods during which he had remained out of employment, it was contended that he would not be entitled to claim any such wages because the terminations were quite natural and bona fide. They were also in accordance with the provisions of the Act and the different awards and settlements governing the conditions of services of the employees of the Bank including these workmen. It was therefore urged that the demand covered by this reference be rejected.

11. After filing this written statement ex. 2, the application ex. 19 was presented on behalf of the Bank on 16-6-78 for the amendment of the original written statement ex.2. After hearing the other side, he said application was allowed vide the order ex. 22 dt. 14-7-78. Thereafter the amended written statement ex. 24 was filed by the Bank on 7-8-78. Through this amended written statement, certain legal pleas of technical nature were raised. It was urged that these references have been made in excess of the demands and disputes raised by these workmen with the management of the Bank. It was also contended that the termination of services of these workmen during the intermediate periods cannot be challenged. It was urged that in view of the conduct of these workmen, they were estopped from challenging the previous terminations. The most formidable objection which was raised through this amended written statement was, that since through the demand notices, no plea regarding violation of the provisions of Section 25F of the Act was not taken, the said plea cannot be resorted to now during the adjudication of this dispute through these references. Similarly, it was urged that the settlement dt. 13-7-72 cannot be revoked by the workman in the First Reference. In addition to these legal technical contentions, this amended written statement has also reiterated the previous case as contained in the original written statement ex. 2 on the merits of the dispute, but it will not be necessary to refer to these facts because it would amount to repetition.

12. So far as the Second Reference relating to the case of Shri A. B. Shah is concerned, who was also a temporary godown keeper at Himmatnagar branch of the Bank the statement of claim in support of the demand contained in the Second Reference is filed at ex. 2 on 25-3-76. The case

of the Association in respect of this workman in the Second Reference is that he was initially appointed as a temporary godown keeper on 9-6-67. He remained in the continuous service of the Bank up to 7-10-69 as his services were terminated w.e.f. 8-10-69. He was re-employed w.e.f. 23-12-69 and served continuously upto 29-9-70. His services were terminated from 30-9-70. Again he was reemployed w.e.f. 13-11-70 and served upto 20-8-71 and his services were terminated w.e.f. 21-8-71. He was re-employed from 24-9-71 and was continued upto 7-10 71 and was discharged from service w.e.f. 8-10-71. He was again re-employed from 1-12-71 and continuously worked upto 30-10-72 and his services were terminated w.e.f. 31-10-72. He was re-employed from 7-12-72 and continuously worked upto 17-6-73. He was again employed from 10-12-73 and worked upto 22-4-74 but his services were terminated w.e.f. 23-4-74.

13. The contention of the Association is that all these breaks in the otherwise continuous service of the workmen in the Second Reference were artificial and unjustified; that they were effected mala fide only with a view to depriving him of the benefits of cotinuous service. It is therefore that a prayer has been made in para 18 claiming five reliefs which are as under :—

"In view of the facts mentioned above it is prayed that this Hon'ble Tribunal be pleased to :—

(a) decide the reference in favour of the workmen.

(b) to direct the Bank to treat Shri A.B. Shah as a confirmed hand from 9-6-68.

(c) to pay wages for the periods when he was illegally kept out of the employment.

(d) to allow Shri A. B. Shah graded increments from the anniversary date, i.e. 9th June, 1967, each year commencing from 9-6-68 and so on, together with all other benefits to which permanent confirmed hands are entitled under the Bank Award as modified upto date.

(e) Any other relief which this Hon'ble Tribunal may deem fit and proper together with costs."

14. On behalf of the Bank, written statement ex. 3 has been filed in the Second Reference on 28-7-76. Through this written statement also the similar contentions have been taken which have been taken by the Bank in the First Reference. The Bank has justified the breaks in his service on the ground that during these periods, the Bank did not require his service as a godown keeper. The case of the Bank in this regard is that he was only a temporary hand and therefore since his services were no more required, the same were terminated. In this case also the Bank has referred to that settlement between the Bank and its employees regarding the giving of test and appearing at the examination. According to the Bank, in pursuance to the said settlement, the workman in the Second Reference did not appear at such test or at such examination and therefore the question of making him permanent did not arise However, at a subsequent stage, he appeared and passed the said test. Thereafter he was appointed as a clerk cum godown keeper in the service of the Bank and was given appointment vide the order dt. 3-4-74 and was posted at Bulsar branch of the Bank. He actually joined his duties in that branch w.e.f. 29-4-74. It was denied that he had reported for duty on 24-4-74 but was not allowed to join the duties. In this case also the contention of the Bank is that the reliefs claimed through this reference cannot be legally granted in favour of the concerned workman and therefore even this reference be rejected.

15. In this case also the application ex. 13 was given on behalf of the Bank for the amendment of the written statement on 16-6-78. After hearing the parties, the said application was granted vide the order ex. 22 dt. 14-7-78. Thereafter the amended written statement ex. 16 was filed on behalf of the Bank on 7-8-78. Through this amended written statement, the similar legal and technical contentions were raised as were raised by the Bank in the First Reference to which a reference has already been made in the earlier part of this consolidated award

16. Before going into the merits of the two demands covered by these two references, it will be necessary to deal with and dispose of the legal and technical contentions raised on behalf of the Bank by their learned Council Dr. Anand Prakash. Each contention will have to be examined separately and individually.

17. In the first instance, the learned counsel has urged that the scope of this Tribunal in dealing with the industrial disputes covered by these two references is very limited and it will have to confine to the exact terms of reference. In this connection, it is urged by him that in the First Reference the Association on behalf of the workman of that reference has tried to urge before this Tribunal that after giving a declaration that the termination of service of that workman was unjustified, a direction be given that the workman should be deemed to have been in the continuous service of the Bank without there being any break and further that he should also be paid his full back wages for the period for which he had remained out of employment under the said Bank. In the Second Reference, the request of the Association is that every termination of the service of the workman in the Second Reference should be declared to be unjustified and in his case also the order for back wages for the periods during which he had remained without employment under the Bank, be passed. The contention of the learned counsel appearing on behalf of the Bank is that the terms of reference do not specifically relate to the awarding of back wages for such periods during which the workman may have remained without employment under the Bank or for any compensation in terms of money on that account. After hearing and after giving my careful consideration to this contention raised on behalf of the Bank, I am of the opinion that the two references are quite clear and specific. Again, in this connection, it will be important to refer to the Section 11A of the Act. This is a very important section which was inserted in the Act by S.3 of the Industrial Disputes Amendment Act, 1971. This section gives wide powers to a Labour Court, Tribunal or a National Tribunal in industrial disputes relating to the discharge or dismissal of a workman. It will be necessary to reproduce S.11A of the Act which is as under ;—

S.11A. Where an industrial dispute relating to the discharge or dismissal of a workman has been referred to a Labour Court, Tribunal or National Tribunal for adjudication and, in the course of the adjudication proceedings, the Labour Court, Tribunal or National Tribunal, as the case may be, is satisfied that the order of discharge or dismissal was not justified, it may, by its award, set aside the order

of discharge or dismissal and direct reinstatement of the workman on such terms and conditions, if any, as it think fit, or give such other relief to the workman including the award of any lessor punishment in lieu of discharge on dismissal as the circumstances of the case may require :

Provided that in any proceeding under this section the Labour Court, Tribunal or National Tribunal, as the case may be, shall rely only on the materials on record and shall not take any fresh evidence in relatior to the matter."

18. After very carefully scrutinising the terms of reference made by the Central Government in these two cases, against the back ground of the provisions of S.11A of the Act, it will clearly appear that if the action of the Bank in terminating the services of the two concerned workmen is ultimately held to be unjustified and illegal, it would be within the powers and jurisdiction of this Tribunal to give relief in respect of the back wages for the period these two workmen had remained without employment as a result of or in consequence of the said illegal and unjustified action of the Bank in terminating their services, in the case of the workman in the First Reference w.e.f. 18-10-68, which was the first occasion of terminating his service and in the case of the workman in the Second Reference, at different times when his services were terminated which were terminated on in all seven occasions. In view of this legal and factual position, this Tribunal would certainly give the consolidated award in these two references. after keeping in view the strict scope of these two references. According to me in case the action of the Bank is declared to be illegal and unjustified, the consequential relief regarding the payment of back wages can be legally granted on the basis of the dispute referred for adjudication to this Tribunal as contained in these two references. This first contention is, therefore, hereby disposed of.

19. As regards the second contention, the learned counsel for the Bank has drawn my attention to the fact that the wordings of the two references are not similar and therefore both the references cannot be treated as alike and consequently, the application of law and facts to each reference would be different. On scrutinising the language of the two references, the main points raised in respect of the industrial dispute are the same. In the First Reference, the termination of service of Shri P. D. Patel is challenged and in the Second Reference the termination of service of Shri A.B. Shah is challenged. The prayer for consequential reliefs in both the references clearly appears to be the same, as it is left to this Tribunal to decide as to, to what relief they would be entitled to in case the action of the Bank in terminating their services is found to be illegal and unjust. The only difference which is evident from the language of the two references is that in the case of First Reference only the single termination of service of the concerned workman Shri P. D. Patel is challenged. Admittedly, even in the case of Shri Patel his services were terminated on as many as 8 occasions However, the reference has been made obviously to the first termination of his service which had taken place on 18-10-68. On the other hand, in the second reference relating to Shri A. B. Shah, the challenge is directed against not only the first termination which took place on 8-8-69, but even to subsequent terminations which occurred thereafter from time to time. In his case there were in all 7 terminations on different occasions. Again in the case of both the references, the question of confirmation of the two workmen has been raised and even that dispute would require the adjudication of this Tribunal. This Tribunal is thankful to the learned counsel appearing on behalf of the Bank for drawing its attention to this difference and after having become conscious of that fact which will always be kept in view, that so far as the First Reference is concerned, the legality and validity of the first termination of service of the concerned workman in that First Reference will be examined and adjudicated upon. However, in the case of the Second Reference all the terminations of service of the workman concerned in that second Reference shall be examined and considered. As such, this difference in the language of the two references will not ifso facto invalidate these references or create any hinderance in the adjudication of the industrial disputes covered by them. The second contention is also hereby disposed of.

20. The third and the most formidable contention which has been taken by the learned counsel appearing on behalf of the Bank is that during the proceedings of these two references, the Association and the learned advocate appearing on their behalf have tried to raise a plea that the termination of services of these two workmen amounted to retrenchment as defined u|s. 2(oo) of the Act and that since the conditions laid down in S. 25F of the Act which are the conditions precedent to retrenchment of workmen, were not complied with in the case of these two workmen, the termination of their service was ab initio void and therefore it should be held that irrespective of the said terminations they still continue to be in the service of the Bank. It is very vehimently urged by the learned counsel appearing on behalf of the Bank that neither in the notices of demand nor through the statement of claim, the Association has taken any such plea based on the provisions of S.2(oo), 25B or 25F of the Act and therefore the Association or the concerned workmen now cannot be permitted to raise that plea. In order to examine the force of this contention it will be necessary to scrutinize the various letters addressed on behalf of the workmen or the Association or the Local Union to the Assistant Commssioner of Labour, Central. In the First Reference, one Shri T. R. Mishra was examined on behalf of the workman at ex. 35. He is a person working in the office of the Assistant Commissioner of Labour, Central and he was called upon, on behalf of the workmen, to bring the files relating to these two workmen, viz., Shri P. D. Patel and Shri A. B. Shah. On behalf of the workmen, the letters ex. 31 dated 10-2-75 and ex. 34 of the same date were also produced in the First Reference. They were addressed to the Assistant Commissioner of Labour, Central, on behalf of each workman by the General Secretary Shri C. L. Bhardwaj. Since these two letters were the copies of the original letters, this clerk was directed to bring the original file containig the original letters. This gentleman was cross examined by the learned advocate Shri Jagat Arora on behalf of the Bank and during his cross examination, he got produced the originals of these letters. The original letter in respect of Shri A. B. Shah is produced at ex. 36 and in respect of Shri P. D. Patel is produced at ex. 37. As such, it will appear that the letters ex. 31 and 36 are the same relating to Shri A. B. Shah and the letters exhs. 37 and 34 are also the same relating to Shri P.D. Patel. These letters were addressed as early as on 10-2-75. Through these letters, the General Secretary of the Union had raised a contention challenging the termination of the services of these two workmen in the language which it will be necessary and important to reproduce at this stage. Relevant passage from these

letters which is common in both of them is to the following effect :—

"Bank's action in terminating his services in violation of the terms of employment read with Para 522(4) of Sastry Award and Section 25B and 25F of the I. D. Act is illegal and as such be got reinstated from 19-10-68 and be got paid full wages with all other allied benefits with annual graded incremental benefits from 18-1-58 onwards on anniversary date and adjust his basic pay accordingly from the date he has been taken as a fresh entrant, more so when the management absorbed the following employees who were similarly situated, were junior to him and did not possess better qualifications than Shri Patel, yet, were absorbed permanently on the basis of the then existing rules, as contained in Bank's Circulars relating to such employees during 1967 to 1973 without any job and/or NIBM test."

21. This extract is from ex. 31 relating to Shri P. D. Patel. Similar extract is found in the letter ex. 34 relating to Shri A. B. Shah with only this exception that the benefits in his case are claimed w.e.f. 9-6-68. From this quotation, it becomes very clear that even at the earliest stage a contention was raised on behalf of the concerned workmen that the termination of their service was in violation of the provisions of S. 25B and 25F of the I. D. Act. If that is so, how can it lie in the mouth of the Bank to raise a contention that the plea based on illegal retrenchment as contemplated u/s. 25B and 25F cannot be raised on behalf of the concerned workmen in these two references. It should not be forgotten that these are the two references made by the Government of India to this Tribunal for adjudication under industrial law in which two workmen are concerned. The rule of strict adherence to the pleadings as applied in civil courts cannot be applied with the same force to matters before an Industrial Tribunal or for that matter before any industrial adjudicator. In this case, a specific plea was taken regarding the violation of the provision S. 25B and S. 25F of the Act, but in my opinion, even if no such specific plea had been taken and only a general plea had been taken that the termination of services of these two workmen on different occasions was against law or illegal, that would have been sufficient in my opinion to have given the justification to the workmen to raise any legal contention relying on the different provisions of the Act in order to show that the action of the management of the Bank was illegal and unjust.

22. The two references are made as they appear. In general terms, and they have given the authority to this Tribunal to examine the justification of the action of the Bank in terminating the services of these two workmen and in not confirming them in accordance with either the rules, regulations, applicable to the Bank or the procedure hitherto followed by the Bank in that respect. The references are worded in general language and it is to be found out considering both the facts as well as the law, whether the action of the management in terminating their services at different points of time and in not confirming them was justifiable. If not, it will again be within the jurisdiction of this Tribunal to decide as to, what relief should be given to the concerned workmen ? As such, even within the scope of these references, it will be necessary to examine the legality of the said action of the Bank against the background of the provisions of the Act relating to the termination of service by retrenchment or otherwise.

23. Again, it is the cardinal principle that the action or the order which is void ab initio or in direct violation of the mandatory provisions of law is a nulity and in fact without any effect. Such an action or order having no legal existence need not even be got declared as such and thereafter got set aside. In the instant case therefore if after considering the legal provisions as contained in the Act and the rules it can be held that the termination of services of these two workmen at different points of time amounted to retrenchment, and if it is further found that the mandatory conditions precedent to effecting such retrenchment as contained in S. 25F of the Act were not complied with, then, it can be legitimately held that the said action or the orders made in that connection were void ab initio and therefore also it was neither necessary nor legal on the part of these workmen to specifically raise pleas challenging the said void action or orders. As such, examined from any angle, even this third legal contention raised on behalf of the Bank has absolutely no force.

24. The fourth legal contention raised on behalf of the Bank is in respect of the two categories of godown keepers. It is urged by Dr. Anand Prakash that the Bank employs two types of godown keepers. One type of godown keepers is employed by the Bank for managing the godowns of the bank itself in which the property of the Bank is stored or kept. The other type of godown keepers is employed no doubt by the Bank, but for and on behalf of their customers who on taking loans from the bank, pledge their goods which are stored in godowns in the charge of such godown keepers. In this connection Dr. Prakash has referred to certain paras from the Sastry Award. So far as this contention is concerned due consideration will be given to it and while deciding these references on their merits, care will be taken to find out as to, whether the concerned two workmen belonged to the first category, viz., the godown keepers of the godowns belonging to the Bank or to the second category of godown keepers in charge of the godowns in which the goods belonging to the customers of the Bank are stored which are pledged with the Bank for the customers having taken loan from the Bank.

25. The fifth contention raised by Dr. Anand Prakash on behalf of the Bank is based on the principle of estoppel. It is urged by him that if on behalf of these two workmen, a clear contention was taken through the notices of demand as well as through the statement of claims that the termination of their services was in violation of the provisions of Sastry Award or the various settlements and agreements between the Bank and its workmen, then the workmen would be estopped from taking up the specific plea relating to mala fides on the part of the Bank authorities and resorting to new and fresh pleas based on the violation of any provisions of the Act. In this connection, he has referred to a decision of Delhi High Court reported in 1977 LAB. I.C. 823 in the case of Lachman Das and another v/s. Indian Express Newspapers (Bombay) Pvt. Ltd. and another. The relevant observations relied upon by him are in para 7 on p. 825 which are as under :—

"The law is well settled that no amount of evidence can be looked upon a plea which was never put forward. [Siddik Mohomed Shah v. Mt. Saran, AIR 1930 PC 57(1)]. The reason is that a party cannot be allowed to benefit himself from such evidence which was at a variance wth his pleading. If he were allowed to do so the opposite party would be taken by surprise [Nagubai Ammal v. B. Shama Rao 1956 SCR 451 : (AIR 1956 SC 593)]. Even if therefore the petitioners themselves had wanted to turn round and ask the Additional Labour Court to hold that the termination of their services was by way of retrenchment, they could not have been allowed to do so. A fortiori, the Additional Labour Court of its own accord could not have so held in the absence of such a stand being taken by the petitioners."

26. In my opinion, this decision cannot be applied to the facts of the present two references because as pointed out above in these two references, a specific plea was taken regarding the violation of the provisions of S. 25B and 25F of the Act which relate to 'Continuous Service' and 'Conditions precedent to retrenchment of workmen'. It therefore cannot be said that this plea of retrenchment is being taken for the first time on behalf of the workmen challenging the termination of their services at different points of time. Even if it was urged on behalf of the workmen that their services were terminated in violation of any agreements or awards between the Bank and its employees and even if any ulterior motives were alleged against the Bank in not confirming them on their due dates, then too, because specific reference was made to the violation of the above mentioned two sections of the Act, the two workmen cannot be estopped from raising the plea that the termination of their services amounted to retrenchment and because the conditions precedent to effecting retrenchment were not complied with, the said action of the Bank should be held to be illegal and unjust.

27. The sixth contention is based on the existence of two settlements entered into between the Bank and a section of employees represented by the union. So far as these

two settlements are concerned, it is very fairly conceded by Dr. Anand Prakash on behalf of the Bank that though they purported to be the settlements as contemplated u/s. 2(p) of the Act, yet, the procedure prescribed in that connection under the rules framed by the State Government under the Act in respect of such settlements u/s. 2(p) has not been followed. It will be important to reproduce S. 2(p) of the Act defining settlement which is as under :—

> "(p) "Settlement" means a settlement arrived at in the course of conciliation proceeding and includes a written agreement between the employer and workmen arrived at otherwise than in the course of conciliation proceeding where such agreement has been signed by parties thereto in such manner as may be prescribed and a copy thereof has been sent to an officer authorised in this behalf by the appropriate Government and the conciliation officer."

Again, a reference will have to be made to the Industrial Disputes (Gujarat) Rules, 1966 made under the provisions of S.38 of the Act. Rule 62 relates to 'Memorandum of settlement.' Sub-Rule (4) of Rule 62 is important for our purpose and it will be profitable to reproduce the same. It is as under :—

> "(4) Where a settlement is arrived at between an employer and his workmen otherwise than in the course of conciliation proceedings before a Conciliation Officer or Board, the parties to the settlement shall jointly send a copy thereof to the Secretary to the Government of Gujarat, Education and Labour Department, Ahmedabad, the Commissioner of Labour, Ahmedabad, the Deputy Commissioner of Labour, Ahmedabad and the Conciliation Officer concerned."

28. It is an admitted position that these two settlements were not arrived at between the Bank and its employees during the course of conciliation proceedings before the Conciliation Officer or the Board, but they were arrived at privately between the abovementioned parties. If that is so, the parties to this settlement were bound jointly to send a copy of each of that settlement to four authorities, viz., the Secretary to the Government of Gujarat, Education and Labour Department, Ahmedabad, the Commissioner of Labour, Ahmedabad, the Deputy Commissioner of Labour, Ahmedabad and the Conciliation Officer concerned. Admittedly, no such copies of the said settlements were jointly sent by the parties to these settlements, viz., the Bank and the union concerned in these settlements representing the employees of the Bank. In view of this position, the said settlements cannot have the force of the settlement as defined u/s. 2(p) of the Act and consequently any action taken in pursuance of the said settlements would not be binding upon the parties to these settlements, much less upon these two workmen who are admittedly not a party to these settlements. In view of this position, even the sixth contention can have no force and if the two workmen otherwise succeed on the merits of their case, the existence or the execution of these two settlements cannot legally come in their way.

29. By way of seventh contention, the learned counsel appearing on behalf of the Bank has relied upon the case between the State Bank of India v. N. Sundaramoney reported in 1976-I L.L.J. 478. In fact, for the purpose of showing that the terminations of the services of these two workmen in these two cases at different points of time, did amount to their retrenchment as contemplated under the Act, even the learned advocate appearing on behalf of the workmen, has placed reliance on this very decision, but on behalf of the Bank it has been cited in order to show as to what reliefs can be legally granted to these workmen, even if it were to be held on the merits of their case, that the termination of their services amounted to retrenchment? According to Dr. Anand Prakash in that case, the Supreme Court allowed reinstatement, but on the particular facts and circumstances of that case it was directed that the workman shall be put back where he left off, though it was directed that his new salary would be what he would have drawn, if he were to be appointed in the same post de nove. The Court further ordered that as regards his emoluments, he will have to pursue other remedies, if they were any. By citing this decision, so far as the reliefs are concerned, it has been tried to be urged that in the instant case, the question of reinstatement does not arise as both of them are already in the service of the Bank, but according to the learned counsel for the Bank, they should not be awarded any back wages for the periods during which they were out of employment under the Bank. After a decision is given on merits regarding the justification or otherwise for the termination of the services of these two workmen on different occasions, the question regarding payment of back wages, if any, shall be considered after keeping in view the above mentioned decision of the Supreme Court of India relied upon by the learned counsel appearing on behalf of the Bank.

30. Finally, by way of eighth objection, Dr. Anand Prakash has urged that if the Bank had known the law properly, it could have very easily and also legitimately followed the provisions of S. 25F of the Act and given retrenchment compensation to these workmen even at the time of the first termination of their services. In that case, the compensation would have been very much less than the total pay packet for the periods during which they had remained out of employment under the Bank, on account of the breaks in their service. It is urged by him that the principle of equity would be violated if these workmen are directed to be paid by way of past wages anything which may be in excess of or more than what would have been the retrenchment compensation payable to them at the time of the first termination of their services under the Bank. Even this submission made on behalf of the Bank will be kept in view after a decision is given on merits regarding the legality or validity of the action of the Bank in terminating the services of these two workmen. I have thus discussed all the preliminary legal contentions raised on behalf of the Bank by their learned counsel and have tried to give replies to all these contentions. I will now enter upon the examination of the action of the Bank in terminating the services of the workman in the First Reference on the first occasion i.e. w.e.f. 18-10-68 and in the case of the workman in the Second Reference on seven occasions which occurred from time to time beginning from 8-10-69 and ending on 23-4-74.

31. So far as the case of Shri P. D. Patel, the workman in the First Reference is concerned, vide the appointment order ex. 7/2 dt. 18-1-67, he was appointed as a temporary godown keeper. The relevant portion from para 1 of that appointment order is to the following effect :—

> "Your services would be liable to be terminated at any time during the prescribed period of temporary appointment by giving you 14 days notice and would come to an automatic end on the adjustment of the above account or when the party refuse to pay the bank the salary of the godown keeper. . . ."

Now, it is an admitted position as disclosed from the written statement ex. 2 filed by the Bank, that he had remained in continuous service of the Bank upto 17-10-68. He had therefore put in a continuous service of as many as 640 days. His services were however terminated w.e.f. 18-10-68. The reason for the termination of his service as given by the Bank is that because he was a temporary godown keeper employed by the Bank for the specific purpose of looking after the godown of their customer, viz., M/s. Shri Sur Road Tinning and Pressing Factory and since it was no more necessary to continue him in service as the customer had ceased to pledge the goods with the Bank, his services were terminated. Now, S. 25B of the Act gives the definition of continuous service S. 25B(1) of the Act is as under :—

> "(1) a workman shall be said to be continuous service for a period if he is, for that period, in uninterrupted service, including service which may be interrupted on account of sickness or authorised leave or an accident or a strike which is not illegal, or a lock-out or a cessation of work is not due to any fault on the part of the workman;"

In view of this definition of continuous service, it becomes fully established, and on behalf of the Bank it has not been possible for the learned counsel to challenge that position that the workman in the First Reference had put in a continuous service of 640 days, i.e. for more than one year before his services were terminated w.e.f. 18-10-68. The definition of retrenchment as given in S. 2(oo) of the Act cited above clearly shows that termination by the employer of the service of a workman for any reason whatsoever would amount to retrenchment. In this connection, once again a reference is invited to the case between the State Bank of India v. N. Sundaramoney

reported in 1976-I L.L.J. 478. In that case the Supreme Court has clearly held after considering the provisions of S. 2(oo) of the Act that termination of service for any reason whatsoever would embrace all kinds of terminations of service and such terminations would amount to retrenchment as contemplated under the Act. In the instant case, even if it were to be accepted that retrenchment would contemplate the surplusness of the workman or employee concerned, then too, in the instant case it can be legitimately held that because the workman in the First Reference had become surplus employee under the Bank at its Himmatnagar Branch, his services were no more required and, therefore, they were terminated. It is the definite case of the Bank that because the concerned customer had repaid the loan taken from the Bank and, therefore, it was not necessary to keep his goods as pledged with the Bank, the services of this godown keeper were also not necessary. This would clearly indicate that he was a surplus hand who could not be provided any alternative work under the Bank and, therefore, his services were terminated. Such a termination would undoubtedly amount to retrenchment as contemplated under the Act. If that is so, the conditions precedent to such retrenchment as envisaged u/s. 25F of the Act should have been complied with which admittedly was not done in this case. It will be necessary to reproduce S. 25F of the Act which is as under :—

"25F. No workman employed in any industry who has been in continuous service for not less than one year under an employer shall be retrenched by that employer until—

(a) the workman has been given one month's notice in writing indicating the reasons for retrenchment and the period of notice has expired, or the workman has been paid in lieu of such notice, wages for the period of the notice :

Provided that no such notice shall be necessary, if the retrenchment is under an agreement which specifies a date for the termination of service ;

(b) the workman has been paid, at the time of retrenchment, compensation which shall be equivalent to fifteen days' average pay for every completed year of continuous service or any part thereof in excess of six months ; and

(c) notice in the prescribed manner is served on the appropriate Government or such authority as may be specified by the appropriate Government by notification in the Official Gazette."

32. As regards the effect of non-compliance with the provisions of S. 25F of the Act, a reference will have to be made to a decision in the case of B. M. Gupta v. State of West Bengal and others reported in 1979 LAB I.C. 499. The relevant observations are given in para 8 of the Judgement on p. 505. These observations are as under :—

"After considering the respective submissions of the learned counsel appearing for the parties, it appears to me that if the conditions precedent for an order of retrenchment under s. 25F of the Act are not fulfilled, the order of retrenchment is not effective at all but the same is void ab initio and the relationship between the employer and the employee is not affected by such void retrenchment order and the employee continues in service despite the purported order of retrenchment. I respectfully agree with the views expressed by the Gujarat High Court, Patna High Court and Punjab High Court in this regard as discussed hereinbefore and with all respects I cannot subscribe to the view expressed by the Andhra Pradesh High Court in the said decision made in the case of National Insurance Co. v. Biswanath, 1977 Lab IC 242 (supra). It appears to me that the Supreme Court in the case of State of Bombay v. Hospital Majdoor Sabha, (AIR 1960 SC 610) has specifically laid down the principle of law that the requirements prescribed by S. 25F of the Act are mandatory requirements and failure to comply with the said condition precedent relationship of employer and employee. In such perative in law. If an order is invalid and inoperative in law, then it cannot be made operative by awarding some compensation later on. S. 25F of the Act lays down the conditions precedent for retrenchment of an employee and if the conditions precedent are not complied with the order of retrenchment becomes only a purported order but not a valid order in the eye of law. Accordingly the petitioner must be deemed to be in service and it must be held that there was no cessation of the relationshop of employer and employee. In such circumstances there was no occasion for the Tribunal to go into the question as to whether the order of retrenchment could have been passed with justification in the facts of the case and to decide as to whether some relief other than reinstatement is warranted. It appears to me that such circumstance was also considered by the Supreme Court in the said case of M/s. National Iron & Steel Co. v. State of West Bengal (AIR 1967 SC 1206) (supra) when the Supreme Court specifically held that where there was no compliance with S. 25F, it was not necessary to consider the other point namely, justification of the order of retrenchment. Mr. Dutta Gupta, however, contended in this connection that although the Supreme Court held that in the absence of compliance with the provisions of S. 25F, the order of retrenchment becomes invalid and there was no justification to consider the other points, the Supreme Court as a matter of fact took into consideration the relevant facts for the purpose of coming to the finding as to whether the order was justified or not. Mr. Dutta Gupta contended that although the Supreme Court incidentally took into consideration the facts relating to justification of the order, it must be held that the courts of law should also consider the relevant facts for deciding as to whether the order itself was justified or not. I am, however, unable to accept this contention of Mr. Dutta Gupta. The Supreme Court specifically laid down the principle of law that when there was no compliance with the mandatory provision of S. 25F, the order itself was illegal and invalid and it was not necessary to consider the other points. In the said case the Supreme Court only incidentally considered it, but for such incidental consideration by the Supreme Court it cannot be contended that all Court's are also bound to consider incidentally the factors relating to the justification of the order of retrenchment."

33. In view of this position, it will not be difficult to hold that the termination of service of the workman in the First Reference on 18-10-68 was the action which was void ab initio and therefore not justifiable at all. Since it was a void action the result would be that the workman concerned would be taken to have continued in the employment of the Bank. The subsequent appointments and terminations of his service will have very little force and the said workman shall be deemed to be in the continuous service of the Bank right from 18-1-67, the date of his first appointment till today as he continues to be in the service of the Bank. The action of the Bank in treating him as fresh entrant w.e.f. 19-4-74 will have absolutely no effect and he shall be deemed to be in continuous service.

34. The action of the Bank having been declared to be void ab initio in terminating the services of the workman in the First Reference w.e.f. 18-10-68 and his services having been declared to be continuous right from the date of his first appointment, viz., 18-1-67 till this day, the question regarding the wages for the period during which he had remained unemployed under the Bank will have to be considered. Now, it was not the fault of the workman for the illegality committed by the Bank in terminating his service on the first occasion and thereafter indulging in further illegalities by effecting artificial breaks in his otherwise continuous service. On the contrary, such an action on the part of the Bank had resulted in uncertainty, hardship and torture to the concerned workman of the First Reference. He was always prepared to serve the Bank and he had not committed any act which could have justified the Bank to have taken any such action against him of discharging him from service. If the workman in the First Reference had not been in the employment of the Bank today, the consequence of giving the above mentioned declaration regarding the action of the Bank would have been to direct reinstatement of the workman in his original position. In normal course any such reinstatement would be followed by the order regarding payment of back wages. If that is so, it will have to be seen, whether there are any reasons or justifications for not follow-

ing that normal course in respect of the payment of back wages to this workman ? There is neither any proof nor any strong suggestion from the Bank that during the period of his unemployment under the Bank, the said workman had done any other alternative business or service and thereby had earned any money out of that business or service. The burden in this connection was upon the Bank to have proved that fact if it had any knowledge in that connection. I am, therefore, of the opinion that the justice would require that the workman in the First Reference should be paid the wages for the period during which he was illegally and unjustifiably kept out of employment under the Bank which had violated the provisions of S. 25F of the Act.

35. It is no doubt true as contended by Dr. Anand Prakash on behalf of the Bank, that if the Bank had paid the retrenchment compensation and had followed the provisions of S. 25F of the Act at the time of terminating his services, this workman might not have received by way of compensation as much amount as would be found due to him for the period during which he had remained unemployed, but the Bank has to thank itself for its default in not acting in accordance with the provisions of the Act. The Bank is an institution which is by now nationalised and at all times, it has the assistance of their legal officers as well as legal consultants whose services they can acquire by making suitable payments. It was for the Bank to have consulted their legal officers and then taken necessary action of terminating the services of this workman in the First Reference. Again, if actually the services of this workman were not required by the Bank, how is it that after these small breaks the workman was re-employed from time to time ? As described above, it becomes clear that there were as many as 8 terminations of service even in the case of this workman. The facts indicate that the gap in these breaks in the services were also not big. It would indicate that in reality the services of the workman were necessary for a continuous period. But for certain ulterior motives, viz., that he should not claim continuity of service right from the date of his first appointment, these artificial breaks were effected or introduced in his otherwise continuous service. It appears to be unbecoming of an institution like the Bank which is a nationalised bank, to have indulged in such a practice or effecting artificial breaks in the otherwise continuous service of this workman. I, therefore, strongly feel that the workman in the First Reference shall have to be paid full back wages for the period for which he had remained out of employment on account of these artificial breaks.

36. So far the question of payment of back wages is concerned Dr. Anand Prakash the learned counsel appearing on behalf of the Bank, has placed reliance on the Supreme Court judgement in the case of N. Sundaramoney reported in 1976. I L.L J. 478 to which a reference has already been made in the earlier part of this award. It is urged by him that even in that case when reinstatement was granted, the back wages were not allowed and therefore in this case also merely because it is felt that the orders of termination at various points of time were not legal, necessarily the back wages should be allowed to the concerned workman. If we go through the said judgement relied upon by the learned counsel for the Bank, it will appear that no general proposition is laid down by the Supreme Court that in all cases of reinstatement, necessarily the back wages need not be granted. On the contrary, the judgment shows that in the particular facts and circumstances of that case Their Lordships felt that the concerned workman should be put back where he left off. However it was directed that his new salary would be what he would have drawn were he to be appointed to the same post de novo. The said direction was in view of the particular facts and circumstances of that case and, therefore, it can be legitimately held that the said decision so far as payment of back wages is concerned, has not laid down any general rule or proposition to be applied to other cases of reinstatement. I have already discussed above the facts and circumstances of this case and have come to the conclusion that in this case the concerned workman of the First Reference would be entitled to the back wages for the period for which he had remained unemployed illegally and unjustifiably on account of the above mentioned act of the Bank.

37. The next question is regarding his confirmation. It is an admitted position that this workman in the First Reference has now been confirmed w e f 19-10-74. The claim of the Association on his behalf is that he should have been confirmed after having put in a continuous service for one year Since he was appointed w e f. 18-1-67, it is urged that he should have been confirmed w e.f 18-1-68. For this demand the Association has placed reliance upon certain provisions of Sastry Award as well as reliance has been placed on certain circulars of the Bank. The first circular which has been cited in this connection is ex. 15/2 dt. 5-2-69. Para 3 of that circular shows that the policy of the Bank has been to arrange for permanent godown keepers. The other circular is ex. 15/1 dt. 9-1-70. Through this circular also instructions were given to all the incumbents in charge to appoint permanent godown keepers at the out station godowns. The purpose of citing these two circulars is to show the policy of the Bank to appoint permanent godown keepers. After citing these two circulars, the learned advocate appearing on behalf of the concerned workmen has also cited para 499 of Sastry Award. This para refers to two types of godown keepers, employed by the Bank, the point to which the learned counsel for the Bank had already referred to while raising the preliminary legal contentions. It will be important to reproduce that para which is as under :—

> "499. With regard to godown keepers the workmen demand that they should be made permanent after continuous service of one year or total service of two years if there is a break. We understand that godown keepers can be classified into two categories (1) those in charge of godowns maintained by banks generally in large cities for storing goods belonging to several parties to whom advances are made, (2) those who are required to look after one or more godowns belonging generally to one party to whom advances are made ordinarily for short periods against goods stored in the borrower's godown, such as in the case of godowns of sugar mills, ginning factories, grain merchants etc. In the case of godown keepers coming under the first category we direct that the period of temporary service should not exceed one year, after the expiry of which they should be placed on the permanent list unless the vacancy itself is a temporary one. In the case of persons coming under the second category whose work is of a temporary nature and whose salary and allowances are generally borne by the parties who are owners of the goods in the godowns, we do not think it proper to insist upon their confirmation even after the expiry of any definite period, particularly as we understand that their emoluments and service conditions in actual practice are not generally different from those of the permanent employees. We however recommend that as far as possible such godown keepers whose work is found to be satisfactory and whose services can be utilized to look after other godowns in the same place or a place near or in the clerical establishment of the banks should be made permanent after the expiry of one year."

38. On a close study of this para from Sastry Award it will appear that the award has made a recommendation which would again depend upon a few other factors which will have to be established before the Bank can be called upon to make permanent or confirm any such godown keepers.

These factors are regarding the satisfactory performance of the work as well as the utilization of their services for looking after other godowns in the same place or the places hereby. Again, it is important to note that the recommendation is to be implemented as far as it would be possible to do so. There would be so many factors which would be considered by the Bank and, therefore, it will not be possible to agree with the Associated that in every case where the temporary godown keeper puts in a minimum service of one year under the Bank, he should automatically be confirmed in that post. In the instant case the workman in the First Reference having already been confirmed w.e.f. 19-10-74. it would not be proper to disturb that position especially because the other factors which require consideration are not completely available to justify the giving of a direction regarding the confirmation of this workman on the completion of his one year of service. This disposes of the case of the workman in the First Reference.

39. As regards the workman in the Second Reference it is an admitted position that he was first applied w.e.f. 9-6-67 as a temporary godown keeper. He was also of the same category as the workman in the First Reference. Admittedly, he remained in continuous service till 7-10-69 and his services were terminated for the first time w.e.f. 8-10-69. This would show that he had put in a continuous service as contemplated u/s. 25B of the Act, for as many as 853 days. Not only that, but during that period of more than two years, he had alseo earned two annual increments. His services were also terminated for the same reasons for which the services of the workman in the First Reference were terminated. For the reasons given in the case of the workman in the First Reference, even in the case of the workman in the Second Reference it can be legitimately held that the termination of his service w.e.f. 8-10-69 amounted to retrenchment. However, before effecting that retrenchment, the conditions precedent to such retrenchment as laid down in S. 25F of the Act were admittedly not complied with. If that is so, the said retrenchment was also invalid and the action of the Bank was void ab initio. In view of this position, the subsequent appointments and again retrenchments would be of not much importance because the service of this workman also would be held to be continuous right from the date of his first appointment, viz., 9-6-67. In view of this position, every subsequent retrenchment would also be illegal and unjustifiable, The last termination took place on 23-4-74. However, before that termination, the Bank had issued the order ex. 2/8 on 3-4-74 through which the workman in the Second Reference was given permanent appointment. He took charge of that post at Bulsar branch of the Bank on 1-5-74. For the reasons already given while discussing the case of the workman in the First Reference, it will also have to be declared in this case, that the first termination of his service as well as the subsequent termination from time to time were both illegal and unjustified.

40. As regards the payment of back wages to this workman for the periods during which he had remained unemployed under the Bank, for the same reasons which have been advanced in the case of the workman in the First Reference, even this workman shall have to be paid full back wages for those periods.

41. As regards the prayer for his confirmation w.e.f. 9-6-68, on completion of one year of service, he having been first appointed w.e.f. 9-6-67, for the same reasons which have been given in this connection in the case of the workman in the First Reference, it will not be possible to grant that relief even in favour of this workman. The question of confirmation as stated above, would depend upon so many factors and if ultimately it is found by the concerned workmen that there had been any injustice to them in that respect, they would be at liberty to raise a demand in that connection and ultimately a dispute may also be raised for proper adjudication.

42. (i) It is hereby declared that the termination of service of Shri P. D. Patel by the Punjab National Bank, Himmatnagar, with effect from 18-10-68 was illegal and unjustified. It is further declared that with effect from the first date of his appointment, viz., 18-1-67, his service has been a continuous one and it shall be treated as such, without any breaks which had occurred in his otherwise continuous service.

(ii) It is also declared that because his entire service has been held to be continuous and because the breaks which were effected in his otherwise continuous service were also unjustified and illegal, he would be entitled to his full back wages for the period during which he had remained out of employment on account of these breaks.

(iii) It is hereby directed that the back wages for the said period becoming due to him shall be paid to him by the Bank within a period of one month from the date of publication of this award in The Gazette of India.

(iv) The claim of this workmen regarding his confirmation with effect from 18-1-68 is hereby disallowed.

43. (i) So far as the other workman Shri A. B. Shah in the Second Reference is concerned, it is hereby declared that th termination of his service with effect from 8-10-69 and the subsequent terminations of his service from time to time with effect from 30-9-70, 21-8-71, 8-10-71, 31-10-72, 18-6-73 and 23-4-74 were illegal and unjustified.

(ii) It is therefore further declared that the said workman has been in continuous service with effect from the date of his first appointment, viz., 9-6-67 till to-day irrespective of any breaks in his service which were also artificial, illegal and unjustified.

(iii) The service of this workman having been treated as continuous, he would be entitled to full back wages for the period during which he had remained out of employment under the Bank. It is, therefore, hereby directed that he shall be paid his full back wages for the said periods at the rate at which he would have received those wages, if he had remained in the actual employment of the Bank during those periods.

(iv) It is further directed that the amount of back wages payable to this workman shall be paid to him within a period of one month from the date of publication of this award in the Gazette of India

(v) The claim of this workman for confirmation with effect from 9-6-68 is hereby disallowed.

44. The Bank to bear its own costs and also to pay the costs of the other side in the two references, viz., The Association of the Punjab National Bank Employees (Gujarat State), which are quantified at Rs. 1,000/-.

R. C. ISRANI, Presiding Officer

Ahmedabad :

Dated : 12-11-79

[F. No. L-12012/21/75-D.II.A & L-12012/25/75-D.II.A]

G. S. SUBRAMNIAN, Under Secy.

नई दिल्ली, 26 जुलाई 1979

का० आ० 4079.—केन्द्रीय सरकार, खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 27 के अनुसरण में, उक्त नियम की धारा 24 की उपधारा (4) के अधीन सिलवाड़ा कोयला खान, जिला नागपुर, महाराष्ट्र राज्य में 18 नवम्बर, 1975 को हुई दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की जांच करने के लिए नियुक्त जांच-न्यायालय द्वारा उसे प्रस्तुत की गई निम्नलिखित जांच रिपोर्ट प्रकाशित करती है ।

सिलवाड़ा कोयला खान, जिला नागपुर, महाराष्ट्र राज्य में 18 नवम्बर, 1975 को हुई दुर्घटना की बाबत जांच न्यायालय की रिपोर्ट ।

महाराष्ट्र राज्य में नागपुर जिले की सिलवाड़ा कोयला खान में 18 नवम्बर, 1975 को हुई दुर्घटना के कारणों तथा परिस्थितियों की जांच करने वाली अदालत की रिपोर्ट

अदालत के अध्यक्ष
पी०एम० नायक

(श्रम मंत्रालय, भारत सरकार की अधिसूचना सं० एन०11015/7/75-एम०आई०, दिनांक 9 मार्च, 1976 द्वारा नियुक्त)

अध्याय 1

प्रस्तावना

1. यह एक जांच है, जो खान अधिनियम, 1952 की धारा 24 के अंतर्गत उस दुर्घटना के सम्बन्ध में की गई थी, जो 18-11-75 को महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले में सिलवाड़ा कोलियरी में घटी थी और जिसमें 10 जानें गई थीं । भारत सरकार के 9 मार्च, 1976 की अधिसूचना के अन्तर्गत गठित अदालत से यह अपेक्षित है कि वह इस दुर्घटना (परिशिष्ट-I) के कारणों तथा परिस्थितियों की औपचारिक रूप से जांच करे ।

2. इस जांच में दिलचस्पी रखने वाले व्यक्तियों या संघों या संस्थाओं के नाम सरकारी नोटिस जारी करते उन्हें अदालत के समक्ष उपस्थित होने के लिए बुलाया गया । इन नोटिस के जवाब में निम्नलिखित पार्टियां अदालत के सामने उपस्थित हुई और उन्होंने लिखित रूप में अपने-अपने बयान पेश किए ।

1. दि वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (वै० को० लि०)
2. खान सुरक्षा महानिदेशालय (खा० सु० म० नि०)
3. श्री आर० के० जोशी सिलवाड़ा कोलियरी के भूतपूर्व सर्वेक्षक
4. महाराष्ट्र प्रदेश राष्ट्रीय कोयला खदान कामगार संघ (म० प्र० रा० को० ख० का० स०)
5. कोयला खदान कर्मचारी संघ (को०ख०क० सं०)
6. विदर्भ कोल माइन्स एमप्लायीज एसोसिएशन (वि० को० मा०ए०ए०)

3. गवाहियां लेने तथा दलीलें सुनने के लिए इस अदालत की 18 बैठकें हुईं । पहली 26-5-76 को और अन्तिम 9-6-78 को । बैठकें अधिकतर नागपुर में हुईं जो सिलवाड़ा कोलियरी से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी पर है । वै० को० लि० ने 8 गवाहों के बयान लिए हैं । खा० सु० म० नि० तथा श्री आर० के० जोशी ने एक-एक गवाह के बयान लिए । अदालत ने म० प्र० रा० को० ख० क० स० की ओर से चार वि० को० मा० ए० ए० की ओर से दो तथा ख० क० सं० की ओर से एक गवाह के बयान लिए ।

4. पार्टियों से समुचित सहयोग प्राप्त करने के लिए अदालत ने जांच के प्रारंभिक चरण में ही निर्णय के लिए नीचे लिखे मुद्दे तय कर लिए थे :

(1) दुर्घटना की परिस्थितियां और कारण क्या थे ?

(2) क्या इस दुर्घटना को रोका जा सकता था ।

(3) क्या किन्हीं सांविधिक नियमों या विनियमों का उल्लंघन हुआ था ? यदि ऐसा हुआ था तो वे कौन से हैं ।

(4) दुर्घटना के लिए कौन व्यक्ति या पार्टी अथवा पार्टियां जिम्मेदार हैं । इनके बीच जिम्मेदारी का संविभाजन कैसे किया जाए ?

(5) भविष्य में ऐसी दुर्घटनाएं रोकने के लिए विधियों नियमों व विनियमों जिनमें, सुरक्षा विनियम भी शामिल हैं में क्या-क्या संशोधन किए जाएं और वर्तमान प्रक्रियाओं में कौन-कौन से परिवर्तन किए जाएं ?

(6) इसी प्रकार इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कौन-कौन से संस्थागत परिवर्तन किए जाएं ?

(7) अन्य संबंधित मामले जिनमें लागत भी शामिल है ।

5. अधिसंख्य पार्टियों ने लिखित दलीलें पेश की थीं और अदालत में सभी पार्टियों का मौखिक बयान लिया गया । कुछ असेसरों के साथ मैंने इस कोयला खान का दो बार निरीक्षण किया (26-5-76 और 26-7-76 को, और दुर्घटना स्थल तथा उसके आसपास के कार्यस्थल का निरीक्षण किया ।

6. इस अदालत के गठित होने से पहले इस दुर्घटना के सिलसिले में अलग से चार जांच पहले ही हो चुकी थीं । पहली खानसुरक्षा महानिदेशालय के श्री एस० एम० प्रसाद द्वारा की गई थी । यह जांच दुर्घटना के चन्द दिनों के बाद की गई थी और श्री प्रसाद के निष्कर्ष उनके टिप्पण (प्रदर्श सी०-25) में दिए गए हैं । दूसरी वै० को० लि० के अपर मुख्य खान इंजीनियर, श्री ए० के० मुखर्जी द्वारा की गई थी । तीसरी वै० को० लि० द्वारा स्थापित कोल इंडिया लिमिटेड के दो वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति द्वारा की गई थी । समिति के अधिकारी थे—श्री आर० जे० सिन्हा महाप्रबंधक (समन्वय), ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड और श्री पी० सी० आहलुवालिया महाप्रबंधक (समन्वय), वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड । चौथी तथा अन्तिम जांच नागपुर के खान सुरक्षा निदेशक के द्वारा की गई थी । अंतिम तीनों जांच लगभग एक ही समय में अर्थात् नवम्बर 75 के अन्तिम सप्ताह या दिसम्बर 75 के पहले सप्ताह में की गई थीं । महानिदेशक, खान सुरक्षा, नागपुर की रिपोर्ट महानिदेशालय, खान सुरक्षा के लिखित बयान के अंश के रूप में पेश की गई है । सिन्हा-आहलुवालिया समिति की रिपोर्ट भी वै० को० लि० द्वारा अदालत में पेश की गई थी । जांच और निष्कर्ष के अतिरिक्त इन दोनों रिपोर्टों में उन व्यक्तियों के बयान भी दर्ज हैं जिनसे जिरह की गई थी । व० को० लि० के श्री ए० के० मुखर्जी, मु० खा० इं० द्वारा दर्ज बयान भी अदालत में पेश किए गए यद्यपि स्वयं उनका बयान नहीं लिया गया । श्री मुकर्जी के निष्कर्ष अदालत को उपलब्ध नहीं हैं परन्तु बताया गया है कि यह उस मौखिक जांच के अनुसार है जो उन्होंने पहले की थी । उनके द्वारा कुछ लोगों के बयान दर्ज किए जाने से पहले ही 25 नवम्बर, 1975 को सिलवाड़ा कोलियरी के तीन अधिकारियों के विरुद्ध प्रशासनिक कार्रवाई की जा चुकी थी और उन्हें निलम्बित किया जा चुका था । ये अधिकारी थे—श्री एस० के० ओवर, कोयला खान प्रबंधक, श्री आर० के० दुबे, सहायक कोयलाखान प्रबंधक और श्री आर० के० जोशी, खान सर्वेक्षक । बाद में मार्च 1976 को उनके निलम्बन आदेश रद्द कर दिए गए और इन तीन अधिकारियों को सिलवाड़ा कोलियरी के बाहर वै० को० लि० में अन्य उपयुक्त कार्य सौंपा गया । यह बताया गया कि इन अधिकारियों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई इस जांच के पूरी होने तक स्थगित रखी गई है ।

अध्याय 2

खान

1. सिलवाड़ा कोलियरी, जो वेस्टर्न कोलफील्ड्स लि० के नियंत्रण में है (यह नियंत्रक कम्पनी मै० कोल इंडिया लि० की एक सहायक कम्पनी है) महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी

पर स्थित है । यह कोयलाखान एक पक्की सड़क द्वारा नागपुर शहर से जुड़ी हुई है । यह सड़क नागपुर-छिंदवाड़ा मार्ग के साथ 19 किलोमीटर तक, खापड़खेड़ा बिजलीघर को जाने वाली फीडर रोड के साथ-साथ 5 किलोमीटर तक और खान को जाने वाली शाखा सड़क के साथ 3 किलोमीटर तक गई हुई है । खान संपत्ति 21°-15' तथा 21°-20' उत्तर अक्षांश और 79°-05' पूर्व तथा 79°-10' पूर्व देशान्तर रेखांश के बीच स्थित है। खान का अपना डाकघर है जो खापड़खेड़ा थाने के सीमा क्षेत्र में विद्यमान है । खान का अवस्थिति नक्शा परिशिष्ट-2 में दिया गया है ।

2. सिलवाड़ा कोलियरी तथा उसके आस-पास की खानों (खापरी, पिपला और पाटनसोंगी) को इस ढंग से बनाया गया था कि उनसे सिलवाड़ा खान से क्रमशः 7 किलोमीटर और 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कोराडीह और खापड़खेड़ा ताप बिजली घरों (महाराष्ट्र राज्य बिजली बोर्ड के केंद्र) को कोयले की सप्लाई हो सके । आजकल सिलवाड़ा खान केवल कोराडीह ताप बिजली घर को ही कोयला सप्लाई कर रहा है।

3. कोयलाखान का स्थल म० समुद्रतल से 283 मीटर से 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है । इस क्षेत्र में उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली कान्हन नदी उतराई पर खान से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर पेंच नदी से मिलती है । कान्हन नदी कोयलाखान के उत्तर में स्थित है और उस क्षेत्र के प्रमुख निकास को नियंत्रित करती है ।

4. जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, सिलवाड़ा कोलियरी कोराडीह ताप बिजली घर से जुड़ी हुई है और बिजली घर द्वारा अपेक्षित ग्रेड का कोयला सप्लाई कर रही है । खान संपत्ति में पांच सीम हैं; प्रत्येक सीम की मोटाई और उनके बीच के विभाजन की मोटाई बोर होल सं० के० एम० टी० 19 के रिकार्ड के अनुसार इस प्रकार है :—

सीम/विभाजन	मोटाई (मीटर)
नं० 5 सीम	6.53
विभाजन	20.57
नं० 4 शीर्ष सीम	4.18
विभाजन	6.57
नं० 4 निचली सीम	2.02
विभाजन	36.06
नं० 3 सीम	1.63
विभाजन	22.27
नं० 2 सीम	4.72
विभाजन	2.43
नं० 1 सीम	3.36 (छेड़ा नहीं गया)

5. स्तर का 41° दक्षिण-पश्चिम में औसतन डिप कोण 1/4 है।

6. खान की नं० 4 शीर्ष और नं० 4 निचली सीमों के भंडारों को निकालने के लिए सन् 1964 में दो इन्क्लाइन शुरू किए गए—एक वाहक पट्टे (कानवेयर बेल्ट) के लिए तथा दूसरा मनुष्यों और सामग्री के लिए ये इन्क्लाइन 74½° दक्षिण-पश्चिम में बनाए गए (जिस दिशा में सीम का आभासी डिप कोण लगभग 1/4.8 है) ताकि नं० 4 निचली सीम तक 1/4 की प्रवणता पर पहुंचा जा सके । नं० 4 निचली सीम का विकासकार्य सन् 1969 में शुरू किया गया और इन्क्लाइन के दोनों ओर की सीम का विकास परम्परागत 'बोर्ड और पिलर' विधि द्वारा किया गया । नं० 4 निचली सीम का विकास कार्य सन् 1972 तक चलता रहा। उक्त दुर्घटना नं० 4 निचली सीम के कार्यस्थल में कोयले की एक रोधी दीवार के फट जाने से हुई।

7. अप्रैल, 1970 में प्रबंधकों ने खानसुरक्षा महानिदेशालय से क्रास कट डिस्ट्रिक में नं० 4 निचली सीम से खंभे तोड़ने की अनुमति मांगी थी । खंभों को चार चरणों में तोड़ने (अन्तिम प्रक्रिया के रूप में) तथा खाली स्थानों को द्रवचालित भरण पद्धति द्वारा रेत से भरने की भी अनुमति मांगी गई । खा० सु० म० नि० द्वारा अपेक्षित अनुमति प्रदान की गई और भरण सहयोजन के साथ नं० 4 निचली सीम में खंभों को तोड़ने का कार्य अप्रैल, 1974 में पूरा कर लिया गया । 8 वीं लेवल ईस्ट का निकास लेवल के रूप में इस्तेमाल किया गया और उसे भरा नहीं गया । इसी तरह 7वीं और 8वीं लेवलों के बीच अन्तर-संयोगी गैलरियों को भी नहीं भरा गया।

8. इन्क्लाइन के दोनों ओर शीर्ष सीम का विकास नं० 4 निचली सीम के विभिन्न क्षेत्रों से क्रास-मेजर ड्रिफ्ट के जरिए किया गया । शीर्ष सीम में विकास कार्य जनवरी, 1970 में प्रारंभ किया गया था और खा० सु० म० नि० से उस क्षेत्र की सीम से खंभे तोड़ने की अनुमति प्राप्त हो गई थी जो निचली सीम में 2 क्रास कट डिप के ऊपर फैला हुआ था । खंभे तोड़ने की अनुमोदित पद्धति यह थी कि खंभों का एक लेवल स्प्लिट द्वारा तोड़ा जाए, जो आगे खंभे रह जायें उन्हें डिप स्लाइस द्वारा तोड़ा जाए तथा खाली स्थान को भर दिया जाए । इस स्थल से खंभे तोड़ने का कार्य दिसम्बर, 1974 में प्रारंभ किया गया और नवम्बर, 1975 को दुर्घटना घटने के समय तक काफी क्षेत्र के खंभे तोड़े जा चुके थे ।

9. नं० 2 सीम में विकास कार्य मार्च, 1973 में शुरू किया गया था सीम में एक प्रवेश मार्ग नं 4 निचली सीम से तथा दूसरा नं० 4 शीर्ष सीम से क्रास—मेजर ड्रिफ्ट द्वारा बनाया गया । नं० 4 निचली सीम की ड्रिफ्ट अन्तर्ग्राही वायुमार्ग तथा कर्षण मार्ग का और नं० 4 शीर्ष सीम का ड्रिफ्ट नं० 2 सीम के कार्यस्थल के लिए बहिर्गामी वायुमार्ग का कार्य करता था ।

10. नं० 4 निचली सीम से डिप साइड पर 40 मीटर ऊर्ध्वपात भ्रंश के पार दो क्रास मेजर ड्रिफ्ट और बनाए गए ताकि क्षेत्र की सेक्टर सी नामक डिप साइड पर काम में लाया जा सके । भ्रंश के उठान का क्षेत्र (जहां ऊपर बताई गई नं० 4 शीर्ष सीम और निचली सीम पर कार्य किया गया है) सेक्टर-बी के नाम से जाना जाता है ।

11. इनमें से एक ड्रिफ्ट कोयला सप्लाई के लिए तथा दूसरा सामग्री सप्लाई के लिए है । वायुसंचार, तथा भरण के लिए इस क्षेत्र में एक शैफ्ट भी लगाया गया है ।

दुर्घटना

12. मुख्य इन्क्लाइन के पूर्वी क्षेत्र में नं० 4 निचली सीम में विकास और निकासी का कार्य पूरा करने के बाद तथा नं० 4 निचली सीम में कथित क्षेत्र पर फैली हुई नं० 4 शीर्ष सीम में पूर्ण विकास और अधिक सीमा तक खंभे तोड़ने का कार्य पूरा करने के बाद यह निश्चय किया गया कि पश्चिम में कन्वेयर डिप इन्क्लाइन, पूर्व में 2 क्रास डिप और दक्षिण में 40 मी० ऊर्ध्वपात भ्रंश के बीच कोयले का एक अछूता खण्ड छोड़ दिया जाए । इस क्षेत्र में जो 3—डिप क्षेत्र (अनुबंध 3) के नाम से जाना जाता था, विकास कार्य जुलाई, 1975 में प्रारंभ किया गया और अक्टूबर 1975 के प्रथम सप्ताह तक 9वें लेवल ईस्ट तक पहुंच गया था, जिस दिशा में यह लेवल बनाया जा रहा था वह ऐसा था कि नं० 2 क्रास कट में 8वें लेवल के नीचे बनाए गए डिप के नजदीक पहुंच जाए।

13. 5 नवम्बर, 1975 को लगभग 2.5 मीटर लंबे और 1.6—2.0 मीटर ऊंचे टुकड़े पर 9 वीं लेवल गैलरी (3 डिप क्षेत्र में) के उठान वाले क्षेत्र पर पानी रिसता हुआ देखा गया । इस रिसन को देखने पर आगे का लेवल कार्य रोक दिया गया और लेवल के सिरे के निकट एक डिप गैलरी (नं. 5 डिप) बना दी गई । गैलरी का कार्य कुछ दिनों तक चलता रहा परन्तु पानी जमा हो जाने के कारण इसे रोक दिया गया। इस दौरान डिप लगभग 4.5 मीटर तक बढ़ चुका था । इस बीच 9वीं लेवल पर पहले जो पानी का रिसना देखा गया था, वह जारी रहा।

14. 18-11-75 को पहली पारी का सामान्य कार्य शुरू हुआ। इसमें 3-डिप क्षेत्र में निम्नलिखित कामगार नियुक्त थे :—

लोडर	21
टिम्बर मैन	9
लाइन मैंग	3
ट्रैपर	6
कर्षण खलासी	1
लाइन सफाई और पैकिंग मजदूर	4
ड्रिलर	2

15. 5 टिम्बरमैनों को अर्गला (काम बार के द्वारा छत 9वीं ईस्ट लेवल और 5 डिप के संगम-पर) को सहारा देने का काम सौंपा गया। टिम्बरमैनों ने अर्गला सूराख तैयार किए और संबंधित स्थल पर अर्गला ले आए। दोपहर को लगभग 2.45 बजे जब वे अर्गला उठा रहे थे, उन्हें लेवल गैलरी के उठान वाले क्षेत्र से एक जोरदार चटखने की आवाज सुनाई दी। अचानक लेवल गैलरी के सिरे के लगभग 2.1 मीटर के खुले स्थान से लगभग 20 सें० मीटर चौड़ी पानी की धारा फूट पड़ी। पांच टिम्बरमैन जो इससे कुछ मीटर की दूरी पर ही कार्य कर रहे थे तत्काल लेवल से बाहर भागे, इनमें से तीन सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए परन्तु शेष दो तेजी से बढ़ते हुए पानी के कारण बाहर नहीं निकल सके। जब ये टिम्बरमैन सुरक्षित स्थान की ओर भाग रहे थे तो वे चिल्लाते हुए दूसरे कामगारों को भी भागने के लिए कह रहे थे। जिस खुले स्थान से पानी निकल रहा था वह बाद में बढ़कर 1.9 मीटर ऊंचा और 0.90 मीटर चौड़ा हो गया।

16. श्याम लाल और नन्द लाल नामक दो कामगारों को जो तीसरे कर्षण डिप में मौजूद थे अपने शरीर पर हवा का झोंका महसूस हुआ और 9वीं ईस्ट लेवल से तेजी से पानी आता हुआ दिखाई दिया। वे दूसरे कामगारों को भागने की चेतावनी देने के लिए चिल्लाए और स्वयं कर्षण डिप की तरफ भागे। उनकी चीख सुनकर उस क्षेत्र में काम कर रहे कामगार, जिनमें लोडर और माईनिंग सिरदार भी थे, कर्षण मार्ग तथा 'वेस्ट कम्पेनियम राईज' द्वारा सुरक्षित स्थान की ओर भागे। दुर्भाग्य से 9वीं और 10वीं लेवल के बीच खड़ा एक लोडर और एक सफाई मजदूर बच नहीं सके। 3-डिप क्षेत्र के और सभी कामगार डिप स्थल पर पानी भर जाने से पहले समय रहते बाहर निकल आने में सफल हो गए।

17. 9वीं लेवल ईस्ट से निकलने वाला पानी 3-डिप क्षेत्र के डिप साईड के कार्यस्थल में भर गया और 8वीं लेवल वेस्ट के ऊपर से बहकर उस कन्वेयर डिप में पहुंच गया जहां एक कन्वेयर बेल्ट काम कर रहा था। इस डिप में 8 कामगार विभिन्न कार्यों में लगे हुए थे। इनमें से दो किसी और काम से पहले ही बाहर चले गए थे। शेष 6 व्यक्तियों में, जो भरण स्थल पर नीचे नं० 2 ट्रिपलर शूट और सैक्टर-सी ट्रिपलर शूट में कार्य कर रहे थे, केवल एक व्यक्ति भाग सका; दुर्भाग्य से अन्य पांचों व्यक्ति डूब गए श्री धर्मराम बलीराम नामक जो अकेला व्यक्ति बच निकला वह बिजली के तार से लटककर अपनी जान बचा सका।

18. चूंकि बेल्ट इन्कलाईन का एक सिरा बन्द था इसलिए पानी ड्रिपलिंग प्वाईंट से नीचे सैक्टर-सी के स्टेल पिट से होकर नं० 4 शीर्ष सीम के कार्यस्थल में पहुंच गया और 15 वेस्ट लेवल के साथ बहता हुआ 16 वें और 17 वें वेस्ट लेवलों को पहुंच गया। इसने 17 वें लेवल को पूर्णरूप से और 16वें लेवल को आंशिक रूप से भर दिया। 17वें लेवल से पानी सामग्री सप्लाई ड्रिफ्ट (जो सैक्टर सी की ओर 40 मी० उर्ध्वपात अंश पर बनाया गया था) की ओर बहने लगा और उसने नं० 2 इनलाईन डिप तथा नं० 4 निचली सीम और नं० 4 शीर्ष सीम की संयोजी ड्रिफ्ट के संगम पर बने 'नाद' को भर दिया। इसके बाद पानी सामग्री सप्लाई ड्रिफट में पहुंच गया जो पहले से ही पानी से भरा था। इस तरह पानी ने सैक्टर सी के कार्यस्थल के दो प्रवेश मार्गों में से एक को पूर्ण रूप से अलग थलग कर दिया। परन्तु फिर भी सैक्टर सी के सभी कामगार दूसरे प्रवेश मार्ग से सुरक्षित स्थानों पर पहुंच गए।

19. पानी नं० 2 सीम परत के टिपलर प्रवेश मार्ग तक भी भर गया और ड्रिफ्ट से होता हुआ इस सीम के कार्यस्थल के कुछ अंशों में भर गया। दो लाइनमैन जो ड्रिफ्ट से ऊपर आ रहे थे, नीचे की ओर आते हुए पानी की चपेट में आ गए। इनमें से एक बच निकलने में सफल हो गया परन्तु दूसरा ड्रिफ्ट के पाद-स्थल तक बह गया और बाद में मलबे में छाती तक आंशिक रूप से दबा हुआ पाया गया। एक बचाव दल ने दोपहर लगभग 3.30 बजे उसे इस अवस्था में देखा। यद्यपि उसे मलबे में से निकालने का काफी प्रयास किया गया तथापि उसे उस स्थान से नहीं निकाला जा सका जहां वह आंशिक रूप से दबा पड़ा था और अन्ततोगत्वा शाम 6.30 बजे उसकी मृत्यु हो गई।

20. जिन कामगारों की जानें गईं उनकी सूची इस प्रकार है :—

अवस्थिति	श्रेणी	संख्या	मृतकों के नाम
3-ड्रिप क्षेत्र 10 एल 2 डिप	टिम्बरमैन	2	कान्त नाथू और बलिराम दोराजी
3-डिप क्षेत्र 10 एल 2 डिप	लोडर	1	सदना मंगली
3-डिप क्षेत्र 10 एल 2 डिप	सफाई मजदूर	1	नामदेव आत्माराम
बेल्ट इन्कलाइन	बिजली सहायक (इलैक्ट्रिक हैल्पर)	1	बालचन्द कन्हैया
वही	सामान्य मजदूर	4	मिठाई लाल इतवा (विविध कार्य मजदूर) हरिदास पांडुरंग (शूटमैन) चुन्ना भरमा (बेल्ट सफाई मजदूर) शिव लक्ष्मण (विविध कार्य मजदूर)
2 सीम ड्रिफ्ट	लाइन मिस्त्री	1	शिवदयाल रामेलाल

अध्याय 3

मालिक

1. एक प्रश्न उठा है कि खान अधिनियम में उल्लिखित परिभाषा के अनुसार सिलवाड़ा खान के 'मालिक' न तो अदालत के सामने उपस्थित हुए और न ही उन्होंने कोई लिखित बयान पेश किया। वेस्टर्न कोलफील्डस लिमिटेड की ओर से जो लिखित बयान पेश किया गया था उस पर वैस्टर्न कोलफील्डस के श्री ए०बी०शाह, महाप्रबंधक, नागपुर और महाप्रबंधक (समन्वय), नागपुर द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। इस बयान में कम्पनी की स्थिति और दर्जे के बारे में निम्न शब्दों में स्पष्टीकरण दिया गया है :—

"वैस्टर्न कोलफील्डस को, जो नियंत्रक सरकारी कम्पनी कोल (इण्डिया) लिमिटेड की सहायक है, अबसे 'कंपनी' कहा जाएगा। सिलवाड़ा कोयलाखान नागपुर स्थित वैस्टर्न कोलफील्डस लिमिटेड के महाप्रबन्धक के प्रशासनिक नियंत्रण में है। पहले इस कोयलाखान के 'मालिक' थे नेशनल कोल डिवलपमैंट कार्पोरेशन लिमिटेड जिसका नया नाम है सेंट्रल कोलफील्डस लिमिटेड, जो कोल (इंडिया) लिमिटेड की एक और सहायक कम्पनी है। अतः वस्तुस्थिति यह है कि इस कोयला खान का स्वामित्व सेन्ट्रल कोलफील्डस लि० का ही बना हुआ

है यद्यपि यह वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के नियंत्रण में है। इसलिए वे खान के 'मालिक' की ओर से इस बयान को पेश करने में सक्षम हैं।"

2 1973 में जब कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण हुआ तो कोल (इंडिया) लिमिटेड ने वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का भार अपने हाथ में ले लिया। लिखित बयान में उस समय उसकी स्थिति इस प्रकार बताई गई है :—

"कोयलाखान (प्रबन्ध भार ग्रहण) अधिनियम, 1973 के लागू हो जाने पर सिलवाड़ा कोलियरी का प्रबन्ध केन्द्र सरकार के कोयला खान प्राधिकरण (कोल माइन्स अथोरिटी) के हाथ में आ गया। इसके पश्चात कोयला खान (राष्ट्रीयकरण) अधिनियम 1973 के पारित होने पर केन्द्र सरकार ने निर्देश दिया कि सभी राष्ट्रीयकृत खानों को एक सरकारी कंपनी कोल माइन्स अथोरिटी के रूप में गठित कर दिया जाए। अतः यद्यपि कोल माइन्स अथोरिटी खान का प्रबन्ध कर रही थी तथापि दि नेशनल कोल डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड इस खान के स्वामी थे। बाद में, कोल माइन्स अथोरिटी लिमिटेड को एक प्रबन्धक कंपनी कोल (इंडिया) लिमिटेड के रूप में परिवर्तित कर दिया गया जिसकी निम्नलिखित सहायक कंपनियां हैं :—

(1) सेंट्रल माइन्स प्लानिंग एण्ड डिजाइन इनस्टीट्यूट लिमिटेड इसका मुख्यालय रांची में है।

(2) भारत कोकिंग कोल लिमिटेड जिसमें भारत कोकिंग कोल के अतिरिक्त नेशनल कोल डेवलपमेंट कार्पोरेशन की सुदामडीह और मोनीडीह खानें भी शामिल हैं। इसका मुख्यालय धनबाद में है।

(3) ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, इसमें कोल माइन्स अथोरिटी का वर्तमान ईस्टर्न डिवीजन शामिल है। इसका मुख्यालय सेंटोरिया बर्धमान है।

(4) सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड, इसमें कोल माइन्स अथोरिटी/नेशनल कोल डेवलपमेंट कार्पोरेशन के सेंट्रल डिवीजन शामिल है परन्तु सुदामडीह और मोनीडीह खानें शामिल नहीं हैं। इसका मुख्यालय रांची में है।

(5) वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड इसमें कोलमाइन्स अथोरिटी का वैस्टर्न डिवीजन शामिल है। इसका मुख्यालय नागपुर में है।"

3. खान अधिनियम की धारा 2 में 'मालिक' की परिभाषा दी गई है। मैं परिभाषा से संबंधित भाग यहां उद्धृत करता हूं :—

"किसी खान के सन्दर्भ में 'मालिक' का तात्पर्य है ऐसा व्यक्ति जो खान या उसके किसी भाग का असली मालिक या पट्टेदार अथवा दखलदार हो और यदि स्वामित्व किसी कंपनी का हो तो उस मामले में उस कंपनी का कार्य चलाने वाले प्रबन्ध एजेंट या ऐसा प्रबंधक एजेंट....."

जहां कोई प्रबन्धक एजेंट न हो, जैसा कि इस मामले में नहीं है, वहां यह मानना वैध होगा कि कम्पनी का महाप्रबन्धक ही इसका 'मालिक' होगा। वर्तमान मामले में ऐसे मालिक हैं, श्री सी० बलराम, महाप्रबन्धक वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड। जांच के दौरान एक बार वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने यह बताया कि वे श्री बलराम को एक गवाह के रूप में पेश करेंगे परन्तु बाद में उन्होंने इस प्रस्ताव पर अमल नहीं किया। परन्तु फिर भी किसी कम्पनी के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वे अपने महाप्रबन्धक को गवाह के रूप में पेश करे। श्री ए०बी० शाह जो वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के नागपुर डिवीजन के महाप्रबन्धक हैं तथा वे० को० लि० का प्रतिनिधित्व करने के लिए जिनकी पात्रता का किसी ने विरोध नहीं किया है, जिन्होंने लिखित बयान पर हस्ताक्षर किया है और उसे पेश किया है, तथा श्री एस० राधाकृष्णन, सिलवाड़ा सब एरिया के सब एरिया प्रबन्धक और श्री सी० पी० अग्रवाल, सिलवाड़ा ग्रुप के एजेंट को गवाह के रूप में पेश किया गया और उनसे जिरह की गई। जैसा कि ऊपर बताया गया है, सिलवाड़ा कोलियरी को महाप्रबन्धक, नागपुर के प्रशासनिक नियंत्रण में बताया गया है। इसका किसी ने खंडन नहीं किया है और न ही इस बात का किसी ने खंडन किया कि श्री ए० बी० शाह नागपुर डिवीजन के महाप्रबन्धक हैं। नागपुर डिवीजन के उपर्युक्त तीन वरिष्ठ अधिकारियों के गवाहों के रूप में बयान लिए गए और जांच के दौरान किसी भी समय वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के प्रबन्धकों की ओर से संबंधित इन अधिकारियों से अपेक्षित कोई दस्तावेज या कागजात अदालत में पेश करने में कोई ढील नहीं हुई। मैं यह समझता हूं कि वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने इस जांच में पूर्ण रूप से और सक्रिय रूप से हिस्सा लिया है। अतः मेरे विचार में इस आपत्ति पर आगे और विचार करना आवश्यक नहीं है कि जांच में 'मालिक' के रूप में किसी ने प्रतिनिधित्व नहीं किया है।

अध्याय 4

क्या 2 क्रास-कट डिप सूखा था ?

1. 'विचारार्थ विषय' पर विचार करते समय प्रमुख प्रश्नों में से पहले इस प्रश्न का जवाब मिलना चाहिए कि क्या दुर्घटना से पहले 2 क्रास-कट डिप में पहले से पानी जमा हुआ था या वह सूखा था। वे० को० लि० ने जोरदार शब्दों में यह कहा है कि डिप पूरी तरह सूखा था जबकि म०नि०खा०सु० और जांच में भाग लेने वाली अन्य पार्टियों ने उतने ही जोरदार शब्दों में कहा है कि डिप पानी से भरा हुआ था। वे० को० लि० के लिखित बयान के अनुसार दुर्घटना का कारण था :—

"अचानक पानी भर जाने का सीधा और तात्कालिक कारण था 8वें लेवल के प्रथम डिप के सिरे और 9वें लेवल गैलरी के उठान वाले पक्ष के बीच पतले विभाजन का अचानक फट जाना। यह फूट संभवतः उस पानी के दबाव के कारण हुई थी जो पुराने कार्यस्थल के 8वें लेवल के प्रथम डिप के सिरे में प्रवेश करके वहां जमा हो गया था। यह इतने अप्रत्याशित रूप में अचानक फटा कि उसका पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता था। इसमें महत्वपूर्ण घटक—जिसके कारण पानी भर जाने की शंका नहीं की जा सकी—यहगलत सर्वेक्षण नक्शा तथा ईसटर्न सैक्शन (परिशिष्ट-3क) की नं० 4 निचली सीम का कार्यस्थल है जिससे गंभीर चूक होने का पता चलता है। इस गलती के परिणामस्वरूप यह विश्वास किया गया कि विभाजन लगभग 5 मीटर मोटा है जबकि फटने समय वह वास्तव में केवल 0.6 मीटर ही मोटा था।

ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यधिक मात्रा में पानी, जिसके कारण विभाजन फट गया और वहां पानी भर गया, पुराने कार्यस्थल से नहीं आया और न ही यह भरण जल के रूप में एकत्रित था अथवा पुराने कार्यस्थल में सामान्यतः अपेक्षित किसी और प्रकार का पानी था। परिस्थितियों से पता चलता है कि अधिक मात्रा में पानी जमा होने की यह घटना हाल ही की थी जो बड़ी तेजी से घटी थी। अन्यथा नं० 4 निचली सीम के जिस भरे गए क्षेत्र में अधिक से अधिक केवल 12 लाख गैलन पानी आ सकता है उसमें यदि 18 लाख गैलन पानी जमा हो जाता तो पानी छठे लेवल गैलरी से नं० 3 डिप क्षेत्र के नए कार्यस्थल में बहता जो भली भांति और स्पष्टरूप से दिखाई पड़ता। इससे यही तर्कपूर्ण निष्कर्ष निकलता है कि लगभग 18 लाख गैलन पानी नं० 4 शीर्ष सीम के कार्यस्थल के ऊपर के स्तर से आया तथा छत की दरारों से शीर्ष सीम में प्रवेश कर गया और सीमों के बीच पतले विभाजन में 1.2 मीटर से 1.5

मीटर के अर्ध्वपात भ्रंश तथा सर्पी तलों (स्लिप प्लेन) के माध्यम से तल पर आ गया।"

बे०को०लि० ने आगे और स्पष्ट किया :—

"जहां तक उस तात्कालिक कारण का प्रश्न है जिसके परिणाम-स्वरूप तेजी से पानी आया, ऐसा कतिपय स्तरों के सचलन के कारण हुआ जो उल्लिखित जलयुक्त शैलों में हुआ और जिसके परिणामस्वरूप नं० 4 शीर्ष सीम कार्यस्थल में या नं० 4 निचली सीम के कार्यस्थल में, जहां नं० 4 शीर्ष में अथवा भ्रंश तल के निकट कोई विकास नहीं था, अचानक पानी प्रवेश कर गया। इस क्षेत्र में नं० 4 निचली सीम के कार्यस्थल नं० 4 शीर्ष और नं० 4 निचले तल के बीच विभाजन में दरार पड़ जाने या छत के गिर जाने से जगह-जगह पर नं 4 शीर्ष सीम के कार्यस्थल से जुड़ गए थे। नं० 4 शीर्ष सीम के पुराने कार्यस्थल में प्रवेश करने वाला अधिकांश पानी इस रास्ते से होकर ही नं० 4 निचले तल के कार्यस्थल तक पहुंचा होगा। चूंकि पुराने कार्यस्थल में 8वीं लेवल गैलरी अत्यधिक डिप गैलरी थी अतः स्वभावतः पानी तत्काल उसमें प्रवेश कर गया।"

2. बे०को०लि० का प्रारंभिक मत (उनके लिखित बयान के अनुसार) यह था कि यदि पानी जमा हुआ होगा तो संभवतः ऐसा 4 नवम्बर, 1975 के बाद हुआ क्योंकि इस तारीख को ही पहली बार 9वीं लेवल ईस्ट पर पानी का रिसना देखा गया था। गवाहियों के परिप्रेक्ष्य में इस मत में थोड़ा बहुत संशोधन किया गया और तर्क के दौरान यह बताया गया कि इसकी आखिरी जांच सितम्बर, 1975 के अन्त में प्रबन्धक द्वारा की गई थी जब उसने इस क्षेत्र को पूर्णरूप से सूखा पाया था और यह कि यदि पानी का जमाव हुआ होगा तो इसके बाद ही अर्थात् 18 नवम्बर, 1975 को हुई दुर्घटना से पहले लगभग 6 सप्ताह की अवधि में हुआ।

3. मैं पहले इस मुद्दे पर दी गई गवाही और उस पर आधारित तर्कों पर विचार करूंगा।

4. किस प्रकार पानी अचानक 2 क्रास-कट में तेजी से प्रवेश कर गया और उसने रोध को फाड़ दिया जिसके कारण दुर्घटना घटी, उसके बारे में अपने सिद्धान्त की भूमिका के रूप में बे०को०लि० ने यह बताया है कि क्रास-कट डिप में पहले कोई पानी जमा नहीं था। आगे यह भी कहा गया कि इस जांच के दौरान तथा खान सुरक्षा के निदेशक द्वारा पहले की गई जांच के दौरान जो गवाही रिकार्ड की गई थी उसमें इस क्षेत्र में पानी जमा होने का उल्लेख नहीं किया है। पिट सैफ्टी कमेटी की बैठकें नियमित रूप से होती थी परन्तु इसके सदस्यों में से किसी ने विशेषकर इस क्षेत्र में कार्य करने वाले कोयलाखान के अधीनस्थ कर्मचारियों ने, पानी जमा होने के बारे में कोई सन्देह व्यक्त नहीं किया है, अतः इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि वहां के स्टाफ तथा कोयलाखान के वरिष्ठ कर्मचारियों ने जानबूझकर 3-डिप क्षेत्र के कार्यस्थल को 2 क्रास-कट की ओर बढ़ाया यह जानते हुए भी कि यह क्षेत्र पानी से भरा हुआ है। विशेषरूप से यह कहा गया कि कोयलाखान के प्रबन्धक श्री ग्रोवर ने स्वयं तीन बार 2 क्रास-कट डिप का निरीक्षण किया था—पहली बार दिसम्बर 1974 में, दूसरी बार मई 1975 में और तीसरी बार सितम्बर 1975 के अन्त में तथा हर बार उन्होंने इसे पूर्णरूप से सूखा पाया था। मैंने इस मुद्दे पर दोनों पार्टियों द्वारा पेश किए गए गवाहों के बयानों पर ध्यानपूर्वक विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यह मानना अत्यन्त कठिन है कि 2 क्रास-कट डिप में पानी जमा नहीं था। सर्वप्रथम सभी पक्षों ने यह माना है कि सिलवाड़ा एक जलयुक्त खान है। वर्षाजल के प्राकृतिक अन्तःस्रवण और पूर्वी तरफ कान्हन नामक बड़ी नदी के बहने के कारण इस क्षेत्र में काफी मात्रा में पानी इकट्ठा हो गया होगा। रेत भरण पानी ने इसमें और वृद्धि की होगी। बे० को०लि० की एकाधिक गवाहियों से इस बात की पुष्टि होती है। सब एरिया प्रबंधक श्री एस० राधाकृष्णन ने जलस्रोत के तीन संभावित कारणों—जैसे जल छिद्र (बीम होल) वर्षाजल, अपवाह के कारण अन्तःस्राव का उल्लेख करते हुए यह अनुमान लगाया है कि पानी की मात्रा 30 से 40 गैलन प्रति मिनट थी।

5. यह बताना आवश्यक है कि अप्रैल 1974 में पूर्वी क्षेत्र के नं० 4 निचले सीम में खंभे तोड़ने का कार्य पूरा हो जाने के बाद 2 क्रास-कट डिप में दो पम्प चल रहे थे। कुछ समय के अन्तर पर ये दोनों पम्प हटा लिए गए और नवम्बर, 1974 तक इस क्षेत्र में कोई पम्प नहीं था। इस प्रकार लगभग 12 महीने की अवधि में अर्थात् नवम्बर, 1975 को दुर्घटना घटने तक पानी जमा होने की काफी गुंजाइश दिखाई देती है।

6. बे०को०लि० ने प्रबन्धक श्री ग्रोवर की गवाही को काफी महत्व दिया है। श्री ग्रोवर ने यह दावा किया है कि उन्होंने 2 क्रास-कट डिप का स्वयं तीन बार निरीक्षण किया है। मेरा निष्कर्ष यह है कि श्री ग्रोवर की गवाही का यह भाग अधिक महत्व दिए जाने लायक नहीं है। यह बताया गया है कि उक्त निरीक्षण श्री ग्रोवर द्वारा स्वयं किया गया था जबकि उनके साथ कोयलाखान के कर्मचारियों में से कोई भी नहीं था और निरीक्षण का कोई लिखित रिकार्ड भी नहीं है क्योंकि निरीक्षण के तत्काल बाद या बाद में इसका कोई रिकार्ड नहीं बनाया गया। यह सच है कि मई, 1975 में जब निरीक्षण किया गया था, श्री ग्रोवर का दावा है कि उन्होंने तत्काल टेलीफोन द्वारा निरीक्षण का परिणाम महाप्रबन्धक श्री ए०बी०शाह को सूचित किया था। यह बताया गया कि श्री शाह ने श्री ग्रोवर को अपने कार्यालय में 26 मई, 1976 को (जो संयोग से रविवार था) टेलीफोन किया और यह पूछा कि क्या वे व्यक्तिगत रूप से इस बात से आश्वस्त हैं कि 2 क्रास-कट डिप में कोई पानी नहीं है। श्री ग्रोवर ने तत्काल स्वयं निरीक्षण किया और उसी दिन श्री शाह को उनके कार्यालय में फोन पर इसकी सूचना दे दी। श्री शाह, श्री राधाकृष्णन, श्री बंसल तथा अधीनस्थ कर्मचारी जैसे सहायक प्रबन्धक श्री दुबे—सभी ने श्री ग्रोवर के इन निरीक्षण पर विश्वास किया जिनके आधार पर श्री ग्रोवर ने यह निष्कर्ष निकाला था कि 2 क्रास-कट पूर्णतः सूखा है। परन्तु किसी को भी इस बात की व्यक्तिगत जानकारी नहीं थी। मुझे यह गवाही अस्वीकृत करनी पड़ रही है क्योंकि अदालत में जिन बाधाओं और जिस रूप में यह पेश की गई है वह स्वीकार्य नहीं है। इसमें न तो सचाई है और न ही विश्वसनीयता की गंध। श्री दुबे ने ज्योंहीं उस क्षेत्र का कार्यभार ग्रहण किया उन्होंने बेमन से उसके निरीक्षण का प्रयास किया परन्तु क्रास कट की पूर्वी 6वीं लेवल के संगम के नीचे छत गिर जाने से उनका कार्य रुक गया। इस बात के प्रमाण हैं कि इस छत को सहारा देकर जमाया जा सकता था और निरीक्षण कार्य को सुरक्षित बनाया जा सकता था बशर्ते कि वास्तव में ऐसा करने की इच्छा होती।

7. कुछ और बातें भी हैं जिनके आधार पर मेरे इस निष्कर्ष की पुष्टि होती है कि उस क्षेत्र में काफी पानी इकट्ठा हो गया था। मैं एक-एक करके इन पर विचार करूंगा।

8. बे० को० लि० ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि अनुमान से भी यह माना जा सकता है कि 2 क्रास-कट क्षेत्र में पानी नहीं रहा होगा। तर्क का आधार यह है कि यदि इस क्षेत्र में लगातार पानी बह रहा होता तो 30 दिन की अवधि में यह क्षेत्र पानी से भर गया होता और बाद में छठे लेवल में से होकर अतिरिक्त पानी बह रहा होता। परन्तु अतिरिक्त पानी का ऐसा कोई बहाव न तो देखा गया और न ही हुआ। यह बताया गया कि अधिक समय के दौरान पानी के जमा होने की कोई संभावना नहीं है। इस बात पर मैं उस समय विस्तार से विचार करूंगा जब मैं छठे लेवल ईस्ट के जरिए नं० 4 शीर्ष और नं० 4 निम्न तल को जोड़ने वाले तीन बोर होलों के बारे में विचार करूंगा। थोड़ा पूर्वानुमान के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच सकता हूं कि बे० को० लि० का तर्क स्वीकार्य नहीं है।

9 दूसरा विचारणीय विषय है--0.6 मीटर की विभाजन पट्टी जो 16 नवम्बर, 1975 को टूट गयी और जिसके कारण दुर्घटना घटी। यह बताया गया कि अगर पट्टी वास्तव मे इतनी पतली होती तो काफी पहले ही टूट गई होती, विशेषरूप से तब जब इस पर काफी समय से पानी के एक प्रवाह का दबाव पड़ रहा था और मुख्यत: 4 नवम्बर, 1975 और 5 नवम्बर, 1975 को जब 9वी लेवल ईस्ट मे विस्फोट किया गया था । यहां मैंने पट्टी में सूराख होने के बारे में भी एम० एस० कहलो, निदेशक खान सुरक्षा के द्वारा व्यक्त मत को ध्यान मे रखा है जो इस प्रकार है :

"ऐसा प्रतीत होता है कि पट्टी मे सूराख तब हुआ जब कोयला और शैल के वितरण और संस्तरण तल पानी के रिसने से लिबलिबे हो गए और वह पतली पट्टी भी कालान्तर में इतनी कमजोर हो गई कि संबंधित पट्टी का एक भाग जलदाब की ओर अधिक सहन नहीं कर सका । नजदीक के 5-डिप में जो विस्फोट किए गए और उनसे जो कंपन उत्पन्न हुए उन्होंने भी पट्टी के लिए अतिरिक्त तनाव बनाया जिसके फलस्वरूप पट्टी के टूटने की क्रिया में गति आई ।"

यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि कोयले की पट्टी के पीछे रेत जमा हो गया था और 7वीं लेवल संगम से रेत की तह लगभग 12 से 15 मीटर थी । चूंकि पट्टी रेत से पूरी तरह भरी हुई थी अतः यह निष्कर्ष निकालना युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि 9वीं लेवल ईस्ट या इस लेवल के 5-डिप में विस्फोट के तत्काल बाद पट्टी के टूटने की संभावना नहीं थी ।

10 बे० का० लि० ने पिट सेफ्टी कमेटी के रजिस्टरों और उनकी बैठकों का हवाला दिया है । मैं समझता हूं कि समिति का सामान्य कार्य कामगारों मे सुरक्षा की भावना को बढ़ाना है । मैंने रजिस्टर और बैठकों के कार्यवृत्त का अध्ययन किया है । सामान्यत: महीने में एक बार बैठक बुलाई गई, कुछ तो कोरम के अभाव में या अन्य किसी अध्यक्ष कारण से रद्द कर दी गई । कार्यवृत्त से पता चलता है कि समिति मुख्यत: कामगारों को खान सुरक्षा के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए एक मंच का कार्य करती थी । यह कहना कठिन है कि अधीनस्थ कर्मचारी समिति को और उसकी बैठकों को गंभीरता से लेते थे या नहीं । उन्होंने उसे गंभीरता से ही लिया होगा यदि समिति के सचिव के रूप में अलग से एक ऐसा सुरक्षा अधिकारी होता जिस पर अन्य जिम्मेदारियां न होती तो अच्छा होता, परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ । ऐसे एक अधिकारी से वास्तविक प्रेरणा पाकर अधीनस्थ कर्मचारी उन खान कार्यस्थलों के बारे में बात करने का साहस कर सकते जिनसे उन्हें खतरा पैदा हो सकता था । ऐसा प्रतीत होता है कि कामगारों को प्रशिक्षित करने के अतिरिक्त इन बैठकों मे अधिकतर जमीन के नीचे काम करने वाले कामगारों की विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधाएं प्रदान करने पर ही विचार किया जाता था । इन बैठकों के कार्यवृत्त से पता चलता है कि जमीन के नीचे के भयंकर खतरों से संबंधित मामले न कभी उठाए गए और न उनके बारे में कोई चर्चा की गई । मैं यह राय दूंगा कि समिति के कार्यक्षेत्र में विस्तार किया जाना चाहिए ताकि उसमें ये मामले भी शामिल किए जा सकें ।

11. मुझे निदेशक, खान सुरक्षा श्री एम० एस० कहलो की गवाही में काफी तथ्य नजर आता है :

"सिलवाड़ा खान में पानी के प्रमुख स्रोत हैं, प्राकृतिक अन्त: स्रवण अर्थात् वर्षा और एक बड़ी नदी । प्राकृतिक अन्त: स्रवण अर्थात वर्षा का जल मलबा आवरण को प्रभावित कर रहा है ।"

प्रबंधकों द्वारा किए गए द्रव भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों तथा उनसे संबंधित खान इंजीनियरों, जिनमें प्रबंध निदेशक भी शामिल है के अनुभवों से यह पता लगा लिया गया है कि मलबा आवरण अत्यन्त जलयुक्त है । न० 4 निचली सीम और नं० 4 शीर्ष सीम जो मलबा आवरण स्तर के नीचे है उन पर मलबा आवरण से निरंतर पानी का प्रभाव होता रहता है । संबंधित क्षेत्र के एक ओर जो बड़ी नदी है और जो नं० 4 निचली सीम और नं० 4 शीर्ष सीम की ओर बहती है गुरुत्वाकर्षण के कारण वह निरन्तर अन्त स्रवण का स्रोत बनी हुई है । प्रबंधकों ने यह मत व्यक्त किया कि वहां शैल तल हैं जो पानी को इन सीमाओं से होकर बहने नहीं देंगे । निस्संदेह यह मत केवल अर्ध तल पर जल प्रभाव के विरुद्ध है न कि उस मलबा आवरण से संस्तरण तल के साथ-साथ होने वाले जल प्रभाव के विरुद्ध है जहां कोयले की सीम का मलबा आवरण से संपर्क होता है । जहां तक शैल का संबंध है, मेरा विचार यह है कि वे अपारगम्य नहीं होते यद्यपि वे अक्षुण्ण पत्थर की तुलना में कुछ पारगम्य होते हैं । अत. नं 4 शीर्ष सीम के ऊपर विद्यमान शैल तल शीर्ष स्तर से सीम पर पानी के रिसने को पूर्णत. नहीं रोक सकते । इसके अतिरिक्त कोई भी शैल तल के चटकने से इन्कार नहीं कर सकता अर्थात् वे घिसकर पतले हो सकते हैं और कहीं-कहीं उनका पूर्णत: लोप भी हो सकता है । महाराष्ट्र की कोयला खानों में द्रव भूवैज्ञानिकों ने ऐसी चटकने की क्रिया देखी है । सिलवाड़ा में संबंधित बड़े क्षेत्र में केवल कुछ ही बोर होल हैं और सेक्शन 3 के सूराखों का अध्ययन करके कोई भी यह नहीं कह सकता कि चटकने की क्रिया नहीं हुई होगी । दुर्घटना से पहले रेत भरने की क्रिया 2 क्रास-कट क्षेत्र के लिए पानी का एक और स्रोत बन गया । शीर्ष सीम में रेत भरा जा रहा था और रेत का पानी केवल रिसकर या अन्त:स्रवण द्वारा निचली सीम में जा सकता था । भरण पाईपों के जमाव को साफ करने के लिए प्रयुक्त जल के बहने से भी 2 क्रास-कट क्षेत्र में पानी जमा हो गया । चूंकि 2 क्रास-कट एक बहुत बड़े क्षेत्र का सर्वाधिक नत भाग है और ऊपर बताए अनुसार वहां पानी के कई स्रोत हैं अत कोई भी खान इंजीनियर यह नहीं कह सकता कि यह क्षेत्र जलमुक्त रहेगा ।"

12. जिरह के दौरान यही प्रश्न श्री एम० एस० कहलो ने विशेषज्ञ गवाह डा० बी० सिंह से किया था :

प्रश्न : क्या आप बता सकते हैं कि विभाजन और नं० 4 शीर्ष सीम के बीच की शैल पट्टियों की कुछ तलों पर चटकने की क्रिया नहीं हुई होगी ?

उत्तर : मैं नहीं बता सकता ।

प्रश्न : अगर चटकने की क्रिया हुई है और शैल तल के 1000 फुट × 500 फुट के विशाल क्षेत्र में कोई ऐसे कमजोर तल हैं जिनका निरीक्षण आप नहीं कर पाए है तो क्या हम यह मान लें कि इतनी बड़ी नदी, अत्यधिक जलयुक्त शैल और विभिन्न अन्य प्राकृतिक अन्त:स्रवण वाले स्थान पर केवल 5 गैलन प्रति मिनट के हिसाब से अन्त:स्रवण हुआ ?

उत्तर : ऊपर बताई गई स्थितियों में इस संभावना से मैं इंकार नहीं करता । ऐसा हो सकता है ।

प्रश्न : सारा अन्त:स्रवित जल, चाहे उसकी मात्रा कितनी ही कम क्यों न हो, अन्त में बहकर निचली सीम में 8वें लेवल पर ही पहुंचेगा--क्या आप इस बात से सहमत हैं । ?

उत्तर : जी--हां ।

प्रश्न : जैसा कि प्रबंधकों ने दावा किया है कि पम्प को अन्तिम रूप से नवम्बर, 1974 में 2 क्रास-कट डिप से हटा लिया गया था । 5 गैलन प्रति मिनट की दर से, जो कि बहुत कम मात्रा में है, दुर्घटना की तारीख तक 2 क्रास-कट क्षेत्र में 18 लाख गैलन पानी जमा हो गया । कृपया हिसाब लगाकर इसकी पुष्टि कीजिए ।

उत्तर . मैं इससे सहमत हूं । यह 18 लाख गैलन ही बनता है ।

13 परंतुक एक और तथ्य का सन्तोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दे पाए हैं—वह है 3-डिप गैलरी के 7वें और 8वें लेवल ईस्ट गैलरियों का 2 क्रास कट कार्यस्थलों से जोड़ा न जाना । इन गैलरियों को 2 क्रास कट कार्यस्थल से केवल 1-5 मीटर की दूरी पर रोक दिया गया था । प्रबंधकों के इस तर्क को कि छत की खराब स्थिति के कारण ऐसा किया गया था, स्वीकार नहीं किया जा सकता । उस क्षेत्र में कोई कृत्रिम सहारा न होने के बावजूद दुर्घटना के कई महीने बाद भी गैलरियां बिल्कुल स्वाभाविक पाई गईं । अतः यह निष्कर्ष निकालना युक्तिसंगत होगा कि दुर्घटना के समय 2 क्रास कट डिप कार्यस्थल 7वें लेवल तक पानी से पूरी तरह भरे हुए थे और प्रबंधकों को इस बात का पता अवश्य रहा होगा और यह कि इस जानकारी के कारण ही 3 डिप क्षेत्र की 7वीं और 8वीं लेवल ईस्ट गैलरियों को 2 क्रास कट क्षेत्र के कार्यस्थलों से नहीं जोड़ा गया ।

14. आगे मैं एक और गवाही पर विचार करूंगा जो महानिदेशक, खान सुरक्षा ने 2 क्रास कट डिप में पानी के जमा होने की बात को सिद्ध करने के सिलसिले में पेश की थी । यह 2 क्रास कट में स्टील गार्डरों पर जंग लगने और शहतीरों पर फफूंद लगने से संबंधित है । यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि इनसे इस बात की पुष्टि होती है कि इस क्षेत्र में काफी समय से पानी विद्यमान था । इसी से मिलता-जुलता एक और प्रमाण है, दुर्घटना के बाद इस क्षेत्र में हाइड्रोजन सल्फाइड की गंध का पाया जाना । दोनों पक्षों की ओर से इन मुद्दों पर काफी प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं । मेरे विचार में इन प्रमाणों से पानी जमा होने की पुष्टि नहीं होती । परन्तु फिर भी, इनसे मेरे उस निष्कर्ष पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जो मैं अन्य आधारों के माध्यम से निकाल चुका हूं कि उस क्षेत्र में काफी पानी जमा था ।

अध्याय-5

आरोप और स्पष्टीकरण

1. यह संभवतः उपयुक्त रहेगा यदि मैं इस समय वै० को० लि० के प्रबंधकों द्वारा दुर्घटना के तत्काल बाद प्रबंधक श्री ग्रोवर, सहायक प्रबंधक श्री दुबे और सर्वेक्षक श्री जोशी के विरुद्ध लगाए गए आरोपों तथा जवाब में उनके द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के बारे में कुछ उल्लेख करूं ।

2. श्री एम० के० ग्रोवर : आरोप पत्र तारीख 25-11-73 : एक प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह दुर्घटना इसलिए घटी क्योंकि विनियम 127 के अंतर्गत 5-डिप क्षेत्र में गैलरियां बनाते समय भूमिगत जल के अचानक आगे बढ़ने के विरुद्ध समुचित पूर्वोपाय नहीं किए गए थे । यह प्रतीत होता है कि आपने सांविधिक कर्तव्यों का पालन करते समय आपसे चूक हुई है जो अत्यधिक लापरवाही का सूचक है ।

3. स्पष्टीकरण, तारीख 9-12-75 (सारांश) : चूंकि अप्रचलित कार्यस्थल में कोई पानी नहीं था इसलिए नवम्बर, 1974 में वहां से पम्प हटा लिए गए । एक महीने बाद उस स्थान का फिर से निरीक्षण किया गया और उसे सूखा पाया गया । बाद में भी मैंने उन अप्रचलित कार्यस्थलों का निरीक्षण किया और उन्हें जलरहित पाया । मैंने आखिरी बार निरीक्षण सितम्बर, 1975 के अंत में किया था । मेरे विचार में इस पानी के जमा होने की घटना हाल ही की है । मैं निम्नलिखित कारणों से इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं :

(1) यदि पतली विभाजन पट्टी पर पानी का दबाव होता तो वह विस्फोट से टूट गई होती ।

(2) संपूर्ण खाली स्थान में केवल 9 लाख गैलन पानी समा सकता है । 6वें लेवल में से प्लावित होकर आए बिना वहां 18 लाख गैलन पानी जमा नहीं हो सकता । परन्तु ऐसा कोई प्लावन नहीं हुआ था । निदेशक, खान सुरक्षा के साथ हाल ही के निरीक्षण के दौरान अधिकतम जल का स्तर 7वें लेवल के संगम के ऊपर 5 से लेकर 20 फुट से अधिक नहीं था । यदि जल स्तर को इस बिन्दु से माना जाए तो इसमें 11 लाख गैलन से अधिक पानी नहीं समा सकता ।

(3) दुर्घटना के दो घंटे बाद जल प्रवाह की दर लगभग 1200 गैलन प्रतिमिनट तथा लगभग 6 घंटे बाद 200 गैलन प्रति मिनट तथा 30 नवम्बर को 45 गैलन प्रति मिनट और 2 दिसम्बर को 30 गैलन प्रति मिनट थी ।

(4) दुर्घटना के बाद 4 शीर्ष में भरण कार्य रोक दिया गया और जो दो पम्प पहले भरण के पानी को निकालने में समर्थ थे अब केवल स्तर का जल निकालने और जल स्तर को बनाए रखने में समर्थ थे । पानी निकालने के लिए 500 गैलन प्रति मिनट सामर्थ्य वाला एक और पंप लगाना पड़ा । इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भरण के बाहरी क्षेत्र में पानी तेजी से बढ़ आया था ।

(5) इस क्षेत्र में एकुईफेरस शैल हैं जो जल के लिए बदनाम हैं और संलग्न नक्शे में दिखाए गए बोर होलों के लट्ठों से यह देखा जा सकता है कि बसुआपत्थर जो नं० 4 शीर्ष सीम से ठीक ऊपर है, उसकी मोटाई 20 मीटर है और यह पल्वा-आवरण के ठीक नीचे विद्यमान है । जैसा कि संलग्न नक्शे में दर्शाया गया है, यह देखा जा सकता है कि X 'AA' और 'BB' के नीचे चिन्हित कार्यस्थलों के कुछ भागों में कोई अपारगम्य शैल नहीं है । केवल नं० 4 शीर्ष सीम के ठीक ऊपर कमजोर शैल पट्टियां हैं । किसी भी कारण से यदि कोई छोटी दरार पड़ जाए तो इस प्रकार की दुर्घटना घट सकती है । नं० 4 शीर्ष सीम से पानी सभी तलों और नं० 4 शीर्ष और नं० 4 निचले तल के बीच की दरारों से होकर निकला होगा । सभी प्रकार के पूर्वोपायों के बावजूद इस क्षेत्र में खनन प्रक्रिया निस्संदेह अत्यन्त जोखिमपूर्ण है । यहां तक कि जब विकास कार्य चल रहा हो, गैलरियां जल के उन फीडरों को स्पर्श करती पाई गई हैं जिनका स्रोतों से कोई संबंध नहीं है । अतः यह खतरे का क्षेत्र है और भरण क्रिया के साथ आंशिक अथवा पूर्ण रूप से खम्भे तोड़े जाने की स्थिति में इस प्रकार तेजी से पानी भर जाने की घटना से इंकार नहीं किया जा सकता ।

यह दुर्घटना मेरे बस के बाहर की बात थी और एक प्राकृतिक घटना थी ।

4. श्री आर० के० दुबे : आरोप-पत्र, तारीख 25-11-75 :— प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह दुर्घटना इसलिए घटी क्योंकि विनियम 127 और 41क के अंतर्गत 3-डिप में गैलरियों का वेधन करते समय भूमिगत जल के अचानक आगे बढ़ने के विरुद्ध समुचित पूर्वोपाय नहीं किए गए थे । यह प्रतीत होता है कि आपसे चूक हुई है ।

5. स्पष्टीकरण, तारीख 8-12-75 (सारांश) :—श्री ग्रोवर ने मुझे बताया था कि 3 डिप सूखा था । अनुदेशानसार शीर्ष सीम होदी से पानी निकाल देने के लिए 9वें लेवल को आगे बढ़ाया गया । चूंकि निचली सीम होदी तैयार नहीं थी और पम्प लगाकर इसे शीर्ष होदी के साथ जोड़ा जाना था इसलिए 9वें लेवल को रोक दिया गया । 5-11-75 को पानी का रिसना देखा गया और 9वें लेवल को और आगे नहीं बढ़ाया गया । 5-11-75 को खोला गया । 5-डिप भी 7-11-75 को रोक दिया गया । मैं पुराने कार्यस्थल का निरीक्षण नहीं कर सका क्योंकि एक मात्र प्रवेश मार्ग पर काफी टूट-फूट थी ।

मेरे दस्ती नक्शे और प्रबंधक के कार्यालय में रखे नक्शे से पता चला कि न्यूनतम विभाजन पट्टी 7 मीटर मोटी है। पानी के रिसन पर सावधानी से नजर रखी गई। 18-11-75 तक इस रिसन में कोई वृद्धि नहीं हुई।

विनियम 41ए का उल्लंघन मुद्दा पर लागू नहीं होता।

6. श्री आर० के० जोशी : प्रारम्भिक जांच से पता चलता है कि यह दुर्घटना इसलिए घटी क्योंकि आपने विनियम 49 के अंतर्गत अपेक्षित सांविधिक कर्तव्यों का पालन नहीं किया है। यदि आप विनियम के अंतर्गत समुचित ध्यान रखते तो यह दुर्घटना न घटती।

7. स्पष्टीकरण, तारीख 9-12-1975 : मैं सांविधिक और विधीतर कार्यों के अत्यधिक बोझ से दबा हुआ हूं। संबंधित क्षेत्र में चालन नक्शे के अनुसार ही किया गया लेकिन प्रबन्धक के निर्देशानुसार और विनियम के अंतर्गत केवल स्तंभों के आकार को धरातल से कार्यस्थल के आवरण की गहराई के अनुसार कम कर दिया गया।

22/8 से 26/9 तक मैं छुट्टी पर था। 1/11 से 6/11 तक मैं फिर छुट्टी पर था और छुट्टी से लौटने के बाद 9 तारीख तक मैं एयर शाफ्ट संबंधी कार्य पर लगा हुआ था। 10 तारीख को जब मैंने 3-डिप के बारे में पूछताछ की तो मुझे बताया गया कि 9वां ईस्टर्न लेवल आगे नहीं बढ़ाया गया है और नक्शानवीस सर्वेक्षक द्वारा 4/11 को डी० पी० आर० में एक टिप्पण लिखा गया है कि आवश्यक पूर्वोपाय किए जाएं क्योंकि 9वां ईस्टर्न लेवल क्रास कट डिप के निकट पहुंच रहा है।

दुर्घटना के तत्काल बाद इन अधिकारियों पर लगाए गए आरोप और उनके द्वारा दिए गए स्पष्टीकरणों से इस जांच में किन्हीं निर्णयों पर पहुंचने और निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलेगी।

अध्याय 6

'अकस्मात पानी घुस जाना'—दुर्घटना का कारण

1. प्रारम्भ में वै० को० लि० के उच्च प्रबंधकों का यह मत था कि 2 क्रास कट क्षेत्र में पानी जमा है और इस पर कोयला खान विनियम 1957 का विनियम 127 लागू होता है। 25-11-75 को श्री ग्रोवर और श्री दुबे पर लगाए गए आरोपों से यह बात स्पष्ट है। (जहां तक सर्वेक्षक श्री जोशी का सम्बन्ध है, उनका भी मत था कि विनियम 49 लागू होता है) मंत्रालय के नाम महाप्रबन्धक के उस पत्र (प्रदर्श डी-23) से भी इस बात की पुष्टि होती है जिसमें से मैं कुछ अंश उद्धृत करता हूं :—

> "नवम्बर, 1974 में यह देखते हुए कि चालन कार्य वास्तव में रुक गया है, भरण क्षेत्र से पम्प को हटा लिया गया। यह पता चला है कि उसके बाद काफी समय तक स्थानीय प्रबन्धकों द्वारा इस बात की पुष्टि के लिए कोई निरीक्षण नहीं किया गया कि चालन गैलरी जल मुक्त है। 3-डिप क्षेत्र में विकास कार्य जुलाई, 75 से चल रहा था और यह मानते हुए कि चालन गैलरी सूखी है, आवश्यक औपचारिकताएं पूरी किए बिना या चालन गैलरी का भलि-भांति निरीक्षण किये बिना 9वीं लेवल ईस्ट गैलरी को 60 मीटर तक बढ़ाया गया।"

प्रारम्भिक जांच से पता चलता है कि गैलरी (9वीं लेवल ईस्ट) के चालन से सम्बन्धित सम्भावित खतरों को समझने में कोमला खान प्रबन्धक, सहायक प्रबन्धक/सुरक्षा अधिकारी और सर्वेक्षक से चूक हुई अतः उन सब पर आरोप लगाकर उन्हें कार्य से निलम्बित कर दिया गया।"

2. ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में प्रबन्धकों के मत में क्रमिक परिवर्तन आता गया है। यह परिवर्तन श्री ग्रोवर के 9-12-75 के स्पष्टीकरण में तथा 9-12-75 को सिन्हा, महलुवालिया समिति के समक्ष गवाही देते समय श्री एस० राधाकृष्णन, सब एरिया प्रबन्धक द्वारा दिए गए बयान में देखा जा सकता है।

प्रश्न : इस दुर्घटना के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है ?

उत्तर : वहां अचानक तेजी से पानी आ गया था। पानी के तेजी से आने का कारण वहां हुई कुछ टूट-फूट है।

3. उसी समिति के सामने 9-12-75 को श्री सी० पी० बंसल एजेन्ट का बयान इस प्रकार था :

> "मेरे विचार में अचानक इतना पानी जमा हो जाने का कारण पुराने कार्यस्थल में कहीं छत का फट जाना हो सकता है जिससे कि कार्यस्थल में ऊपर फैले एकुईफेरस स्तर में से तेजी से पानी आया। यदि ऐसा न होता तो पानी अवश्य छठे लेवल में से होकर छलकता। आज भी 35 गैलन प्रति मिनट की दर से पानी छलक रहा है।"

4. उसी समिति के समक्ष 7-12-75 को अपनी गवाही में श्री ग्रोवर ने बताया :

> "मैं नहीं बता सकता कि इतना पानी कैसे इकट्ठा हो गया जिसके कारण दुर्घटना घटी। सम्भवतः मेरे अन्तिम निरीक्षण के बाद किसी अज्ञात स्रोत से पानी आना शुरू हो गया होगा। मेरे विचार में नं० 4 शीर्ष और नं० 5 सीमों के परिसर में एक मोटा मलवायुक्त एकुईफेरस बलुआ पत्थर है जो लगभग 20, 25 मीटर मोटी नं० 4 शीर्ष सीम के ऊपर फैला हुआ है। इन पत्थरों में काफी मात्रा में पानी होता है। सम्भवतः एकुईफेरस बलुआ पत्थर के नीचे और नं० 4 शीर्ष सीम के ऊपर का कमजोर शैल किसी कारण से टूट गया हो जिससे नं० 4 शीर्ष सीम में काफी पानी आ गया जहां से यह सभी नलों/दरारों से होता हुआ नं० 4 निचली सीम में पहुंच गया।"

5. अगली घटना वै० को० लि० प्रबन्धकों के उस निर्णय से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत मार्च, 76 के प्रारम्भ में श्री ग्रोवर को काम में फिर से लिए जाने पर (जो व्यक्ति इस दुर्घटना से इतना सम्बन्धित है उसका चयन वास्तव में एक मजेदार बात है) उन्होंने उसे धनबाद स्थित सैन्ट्रल माइनिंग रिसर्च स्टेशन भेजा। इस मिशन का उद्देश्य सै० मा० रि० स्टे० के डा० बी० सिंह से मिलना और इस दुर्घटना के कारणों के बारे में उनका मत प्राप्त करना प्रतीत होता है। श्री ग्रोवर के इस मिशन का उद्देश्य आकस्मिक प्रतीत होता है। वे पहले से ही यह पता लगाए बिना कि डा० बी० सिंह वहां है, धनबाद पहुंच गए और यह पाया कि डा० सिंह शहर से बाहर गए हुए हैं। एक महीने बाद श्री ग्रोवर दुबारा धनबाद गए और इस बार डा० बी० सिंह से मिलने में सफल हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके साथ दुर्घटना के बारे में नैमित्तिक बातचीत ही हो सकी। श्री गोवर डा० सिंह को दिखाने के लिए कोई लिखित सामग्री या कोई नक्शा अपने साथ नहीं ले गए थे और न ही डा० सिंह ने स्वयं कोई लिखित मत प्रदान किया था। डा० बी० सिंह के अनुसार ऐसा लिखित मत देने का प्रश्न काफी बाद में उठना अर्थात् उस समय जब वै० को० लि० ने सै० मा० रि० स्टे० को इसके बारे में लिखा था। परन्तु फिर भी, श्री ग्रोवर डा० बी० सिंह की राय लेकर नागपुर वापस आ गए और कोयला खान के वरिष्ठ अधिकारियों, जिनमें महाप्रबन्धक भी थे, की एक बैठक में इस मत को व्यक्त किया। ऐसा प्रतीत होता है कि बैठक में हुई चर्चाओं (जो एकाधिक चर्चाएं हुई थीं) के परिप्रेक्ष्य में ही 'अचानक आना' का सिद्धान्त निकाला गया। इस सिद्धान्त के अनुसार यह पहले से मान लिया गया कि 2 क्रास कट डिप पूर्णतः सूखा था जो बाद में पानी से पूर्णतः प्लावित हो गया। यह पानी पहले मलवा आवरण से शुरू हुआ,

फिर वह बलुआ पत्थर की परत में पहुंचा, फिर नं० 4 शीर्ष सीम में पहुंचा और इसके बाद न० 4 शीर्ष और नं० 4 निम्न तल के बीच की रोध में होते हुए न० 4 शीर्ष सीम पर पहुंचा। डा० बी० सिंह के अनुसार, जिन्होंने 23-7-77 को खान का निरीक्षण किया था और दो दिन के बाद वै० को० लि० की ओर से विशेषज्ञ गवाह के रूप में अदालत में गवाही दी थी, उपर्युक्त दरार स्थल से होकर पानी के प्रवेश करने के कारण निम्नलिखित हो सकते हैं:—

(1) ऊपर के रिसाव, जिसके कारण न० 4 शीर्ष और नं० 4 निम्न तल के बीच विभाजन में दरार पड़ जाना।

(2) उस क्षेत्र के बोर होलों के जरिए।

(3) प्रदर्श डी-5 में दिखाए अनुसार सर्पी तल या भ्रंश के जरिए।

(4) आमतः छत और सीम के भरण वाले भाग के बीच विद्यमान खाली स्थान के जरिए।

6. डा० बी० सिंह स्वयं दूसरे और चौथे घटक की सम्भावनाओं का खण्डन करते है परन्तु उनका मत है कि पहले और तीसरे घटक का सम्बन्ध हो सकता है। विशेष रूप से उनका मत है कि सर्पी तल या भ्रंश ने जल भरणी का रूप लिया होगा। अपने व्यक्तिगत निरीक्षण के दौरान देखी गई बातों तथा सम्भावित कारणों के विश्लेषण के आधार पर डा० सिंह ऊपर विद्यमान पानी के "अचानक अन्तर्वाह" वाले सिद्धान्त से सहमत नहीं है, भले ही 2 क्रास कट क्षेत्र में पहले से पानी जमा रहा हो या नहीं। अगले दिन अपने बयान में उन्होंने इस तथ्य को इन शब्दों में और अधिक स्पष्ट किया:

"अचानक जल अन्तर्वाह" का मतलब मैं यह समझता हूं कि नं० 4 शीर्ष सीम और नं० 4 निचली सीम के ऊपर विद्यमान जलयुक्त शैलों से पानी का बहना। जैसा कि मैंने कहा है, यह सम्भव नहीं था। परन्तु फिर भी, मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि मेरे विचार में जैसा कि मैंने कल कहा था सर्पी या भ्रंश तल के जरिए पानी के बहने की घटना स्वतन्त्र है—भले ही 2 क्रास कट डिप में पहले से पानी विद्यमान रहा हो या नहीं। विश्लेषण के अनुसार, कार्यस्थलों में मौजूद स्थितियों के अन्तर्गत सर्पी या भ्रंश तल से होकर पानी बहा होगा जैसी कि कल चर्चा की गई थी।"

7. मेरे अपने निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

विभिन्न स्रोतों से पानी 2 क्रास कट डिप क्षेत्र में बहा होगा और दिसम्बर, 1974 में जब पम्प हटा लिए गए तब से 10 महीने तक वहां जमा होता रहा होगा। मैं इस बात की सम्भावना से इन्कार नहीं करता कि पूर्णतः जलयुक्त मलबा आवरण, जो कोयले की चट्टानों के आवरण के रूप में था, से बराकर बलुआ पत्थर के जरिए न० 4 शीर्ष और नं० 4 निचली सीमों के बीच की विभाजन पट्टी में पानी का सामान्य बहाव भी रहा होगा। कुछ समय के बाद 2 क्रास कट डिप में जमा पानी के कारण वह पट्टी फट गई होगी।

8. वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने यह तर्क दिया है कि यदि पानी 2 क्रास कट क्षेत्र से आया होता तो कार्यस्थलों में केवल लगभग 12 लाख गैलन पानी भरा होता। चूंकि कार्यस्थलों में 18 लाख गैलन पानी था अतः उन्होंने यह मत व्यक्त किया है कि 4 शीर्ष सीम के ऊपर सुपर इन्कैम्बैन्ट स्तर से अचानक सवेग पानी आने के कारण ही जलप्लावन की स्थिति उत्पन्न हुई होगी।

9. हम यह बात पहले ही बता देना चाहते हैं कि यह सारा हिसाब मोटे तौर पर लगाया गया है और यह न तो गैलरी और न ही जल स्तर के सही मापों पर आधारित है। दुर्घटना के एक घन्टे के अन्दर ही कार्यस्थलों में पानी भर गया। इसी आधार पर वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड यह मानकर चला है कि चूंकि 2 क्रास कट क्षेत्र में पानी एकत्र नहीं था, अतः 4 शीर्ष सीम के ऊपरी स्तर से ही पानी 30,000 गैलन प्रति मिनट की रफ्तार से अन्दर घुसा। जलप्लावन के लगभग छह घन्टे बाद 4 तल सीम में वस्तुतः बहने वाले पानी की रफ्तार 200 गैलन प्रति मिनट बताई गई। सिलवाड़ा खान के इतिहास में ऐसा कोई उल्लेख नहीं मिलता जब पानी 30,000 गैलन प्रति मिनट की रफ्तार से एक घन्टे तक बराबर अन्दर भरता रहा हो और छह घन्टे बाद उसकी रफ्तार अचानक चमत्कारिक ढंग से केवल 200 गैलन प्रति मिनट रह गई हो।

10. वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने यह भी कहा है कि दुर्घटना के बाद 4 शीर्ष सीम में पानी का प्रवाह बढ़ गया था। सिन्हा-अहलूवालिया समिति ने इस बात का उल्लेख किया है कि दुर्घटना के पश्चात् शीर्ष सीम की हौदी के पानी का विशेष रूप से सत्यापन किया गया था और उसके जल स्तर में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया। अतः समिति ने निचली सीम में, शीर्ष सीम के पानी के बहकर भर जाने की सम्भावना का निराकरण किया है।

11. दुर्घटना के पश्चात् शीर्ष सीम में पानी की मात्रा में वृद्धि हो जाने के सिद्धान्त के समर्थन में वै० को० लि० ने यह तर्क भी प्रस्तुत किया कि 4 शीर्ष सीम में एक अतिरिक्त पम्प लगाने के पश्चात् हौदी का स्तर ढाल के साथ-साथ 11 दिन में 18 मीटर घट गया। पानी में डूबे हुए कामगारों के शवों को बरामद करने के लिए निचली सीम से बड़ी व्यग्रता से जल निकालने में व्यस्त रहने के कारण 4 शीर्ष सीम से पानी निकालने के काम पर सम्भवतः पूरा ध्यान नहीं दिया जा सका। श्री एस० एम० गुहा की अदालत में खान सुरक्षा निदेशक ने खान के इंजीनियर से जो जिरह की, उसका ब्यौरा इस प्रकार है:

प्रश्न: क्या आप इस बात से सहमत हैं कि शीर्ष सीम से पानी निकालने का काम तब तक शुरू नहीं किया गया जब तक कि सारे शवों को निकाल नहीं लिया गया ?

उत्तर: हां, मैं इस बात से सहमत हूं।

12. दुर्घटना के तुरन्त बाद खान का भरण सम्बन्धी सभी कार्य रोक दिया गया। हालांकि भराई कार्य को स्थगित करने के फलस्वरूप 4 शीर्ष सीम में पानी नहीं भरा किन्तु उक्त सीम के भरण किए गए क्षेत्र से पानी बराबर रिसता रहा।

13. खान सुरक्षा महानिदेशक के अनुदेशानुसार 25-11-1975 को 4 शीर्ष में एक और पम्प लगा दिया गया ताकि हौदी में रुके जल की मात्रा को कम किया जा सके। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि शीर्ष सीम का पानी 11 दिन में ढाल के साथ-साथ केवल 18 मीटर ही घटा हो।

14. अतः वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का यह तर्क विश्वसनीय नहीं जान पड़ता कि शीर्ष सीम के स्तर से पानी के बहाव के कारण कार्यस्थल में पानी भर गया। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्घटना मूलतः, पुराने पानी भरे कार्यस्थलों में पर्याप्त एहतियात न बरते जाने तथा दूसरे गलत सर्वेक्षण मानचित्रों के कारण हुई जिनमें 5-7 मीटर मोटी रोध दिखाई गई है जबकि यह वस्तुतः 0.6 मीटर से अधिक मोटी नहीं थी। इससे निश्चित ही तत्परता में ढील अथवा उपेक्षा की भावना का पता चलता है। पानी के अचानक बह निकलने तथा 18 नवम्बर, 1975 को उसके उसी वेग से सहसा 2 क्रास कट क्षेत्र में भर आने के सिद्धान्त से मैं सहमत नहीं हूं। 4 शीर्ष सीम के ऊपर फैले जलयुक्त शैलों से पानी वहां बराबर आ रहा था।

अध्याय 7

रोध

1. वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने अपने पक्ष में दूसरा मत यह व्यक्त किया है कि तर्क की दृष्टि से यदि यह मान लिया जाए कि 2 क्रास कट क्षेत्र जलग्रस्त था तो भी आठवें लेवल से 2 क्रास कट के ढलान के अन्त तथा 9वें पूर्वी स्तर के संरेखण के बीच पर्याप्त रोध थी जो सम्बद्ध जिला क्षेत्र को जलप्लावन से बचाने के लिए काफी थी। वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने यह दिखाने के लिए कि रोध की मोटाई लगभग 5 मीटर थी अनेक भूगत नक्शे प्रस्तुत किए, उक्त नक्शों के प्रमुख प्रदर्श जे-14, सी-2, सी-3, डी-21 तथा सी-25 हैं।

2. प्रदर्श जे-14 4 निचली सीम का जल खतरा नक्शा है जो आर एफ 1:1200 के आधार पर तैयार किया गया है। इसे श्री आर० के० जोशी ने 30-6-1972 से 30-9-1975 तक प्रत्येक तिमाही के लिए उद्यतन तथा सही प्रमाणित किया है और इस पर श्री ग्रोवर ने प्रबन्धक की हैसियत से 31-3-75 तक प्रत्येक तिमाही के लिए प्रति-हस्ताक्षर किए हैं।

3. इसी नक्शे में सर्वेक्षक श्री सिंह ने सील अन्य प्रविष्टियां भी की हैं जिन पर प्रबन्धक, श्री के० एस० पी० वर्मा ने प्रतिहस्ताक्षर किए हैं। ये प्रविष्टियां 30-9-1972 से किए गए त्रैमासिक सर्वेक्षणों से सम्बन्धित हैं। स्पष्ट ही श्री सिंह द्वारा की गई प्रविष्टि गलत हैं क्योंकि नक्शा सर्वप्रथम 1971 में बनाया गया था और सिंह की प्रविष्टियां क्रमशः 30-9-1971, 31-12-1971 तथा 31-3-1972 की होनी चाहिए थीं।

4. 8वें स्तर से 2 क्रास कट डिप को 'खुला' दिखाया गया है और 31-3-1969 को समाप्त होने वाले त्रैमासिक सर्वेक्षण की संभंग रेखा को खुली गैलरी के अन्तिम सिरे पर समाप्त होता हुआ दिखाया गया है। उक्त नक्शे की संभंग रेखाओं (31-3-1969) की बारीक जांच करने से यह पता चलता है कि 30-9-1972 के त्रैमासिक सर्वेक्षण की रेखा 9वें लेवल के उठान वाले फलक के पास से गुजर रही थी। इस सर्वेक्षण रेखा (30-9-1972) को बाद में मिटाया गया है। इसी प्रकार 2 क्रास कट को भी, जिसे मूलतः 9वें लेवल तक फैला दिखाया गया था, मिटा दिया गया है। 2 क्रास कट के पश्चिम में लेवलों 6, 7 तथा 8 स्क्वायर को, नक्शे में सेट की सहायता से सही तरीके से अंकित किया गया है किन्तु नक्शे को अद्यतन बनाने के लिए 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के कार्यस्थलों को पेन्सिल से यों ही हाथ से अंकित कर दिया गया है। कुछ संयोजनों के घटे हुए लेवलों को पेन्सिल से वृत्त बनाकर दर्शाया गया है और घटे हुए जल स्तर के पाठ्यांकों को भी पेन्सिल से लिखा गया है।

5. प्रदर्श सी-2, 4 तल सीम के कार्यस्थलों का भूगत नक्शा है जिसे कोयला खान विनियमावली की अपेक्षाओं के अनुसार आर० एफ० 1:1200 के आधार पर मड़ाईदार कागज पर बनाया गया है। मड़ाईदार कागज का प्रयोग सामान्यतः सांविधिक भूगत नक्शों के लिए किया जाता है। उक्त नक्शा श्री आर० के० जोशी द्वारा 30-6-72 से 30-9-1974 तक अद्यतन तथा सही प्रमाणित किया गया है। 30-6-73 से 30-9-74 तक के त्रैमासिक सर्वेक्षणों पर कोयला खान प्रबन्धक श्री ग्रोवर के प्रति-हस्ताक्षर हैं। इससे पूर्व अवधि के सर्वेक्षणों पर पहले प्रबन्धक श्री के० एम० पी० शर्मा के प्रतिहस्ताक्षर हैं।

6. उक्त नक्शे में 2 क्रास कट की डिप की परीक्षा करने से यह पता चलता है कि डिप, 8वें लेवल के संयोजन के नीचे केवल 8 मीटर तक ही बढ़ी है। 8 मीटर के आगे के भाग को मिटा दिया गया है। डिप गैलरी के अन्तिम सिरे को खुला दिखाया गया है। 9वें लेवल के पूर्वी भाग तथा उसके 4 डिप की पेन्सिल से अंकित की गई प्रगति रेखा को भी मिटाने का प्रयास किया गया है। अतः सार रूप में यह कहा जा सकता है कि क्रास कट डिप को, मूलतः 9वें लेवल तक 9 मीटर से आगे बढ़ा हुआ दिखाया गया था और 2 क्रास कट डिप की प्रगति दर्शाने वाली रेखा को मिटा दिया गया है। नक्शे से यह भी पता चलता है कि 2 क्रास कट डिप की दो रेखाओं तथा 2 क्रास कट से अलग आठवें पश्चिमी लेवल के कुछ भाग पर यों ही हाथ से फिर से स्याही फेर दी गई है। 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के कुछ विकास को हाथ से स्याही से अंकित किया गया है और शेष भाग पेन्सिल से तैयार किया गया है। जलस्तरा के कुछ साइ-केन्द्रों को भी मानचित्र में पेन्सिल से दिखाया गया है।

7. इस सम्बन्ध में सर्वेक्षक द्वारा 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के कार्यस्थलों के बारे में अदालत के सामने पेश किए गए साक्ष्य को नीचे दिया जा रहा है :—

"इस डिस्ट्रिक्ट का त्रैमासिक सर्वेक्षण नहीं किया गया।

3-डिप डिस्ट्रिक्ट के मामले में किसी अन्य प्रकार का सर्वेक्षण भी नहीं किया गया। सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट के अनुसार, जरीब माप पर आधारित 3-डिप डिस्ट्रिक्ट का आलेखन भी पेन्सिल से किया गया था और उक्त 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के आलेखन के अन्य कोई नक्शे दुर्घटना से पहले के नहीं दिखाए गए, इन्हें दुर्घटना के बाद तैयार किया गया। अन्य नक्शे भी दुर्घटना के बाद तैयार किए गए।"

8. मैंने प्रदर्श सी-3 की भी जांच की है, जिसे वै० को० लि० सांविधिक भूगत नक्शा मानती है। यह नक्शा अक्सी कागज पर बना हुआ है जिसका आर० एफ० 1:1200 है। इसे सर्वेक्षक ने 30-9-75 तक अद्यतन तथा सही प्रमाणित किया है और इस पर 31-3-75 तक प्रबन्धक के प्रतिहस्ताक्षर हैं। यह समझ में नहीं आता कि प्रबन्धक ने 30-6-75 तथा 30-9-75 को समाप्त होने वाली त्रैमासिक अवधियों में किए गए सर्वेक्षणों पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किए।

9. उक्त नक्शे में 2 क्रास कट डिप को स्याही से अंकित दिखाया गया है जो 8वें लेवल के संयोजन से 7 मीटर और आगे तक बढ़ी है। 31-3-1969 के त्रैमासिक सर्वेक्षण की रेखा 2 क्रास डिप के सिरों से गुजरती हुई दिखाई गई है। 2 क्रास कट डिप के उठान की ओर की त्रैमासिक सर्वेक्षण रेखा में पश्चिम अथवा पूर्व की ओर किए गए सर्वेक्षण की तारीखों का स्पष्ट उल्लेख नहीं है क्योंकि ये तारीखें मिटा दी गई हैं। तथापि, पूर्व की ओर की तारीख 30-9-1972 दीख पड़ती है। 7वें लेवल पूर्व के सामने की डिप पर जान-बूझकर दोबारा स्याही फेरी गई है ताकि 4 तल पूर्वी डिस्ट्रिक्ट के सर्वेक्षण की तारीख 30-9-1972 दिखाई जा सके। यदि नक्शे पर बिन्दुओं से अंकित तारीख 31-9-69 की त्रैमासिक सर्वेक्षण रेखा की सावधानीपूर्वक जांच की जाए तो उससे यह पता चलेगा कि यह सर्वेक्षण रेखा, 2 क्रास कट डिप के सामने 9वें लेवल पूर्व के उठान वाले फलक का लगभग स्पर्श कर रही है।

10. ऐसा प्रतीत होता है कि 2 क्रास कट डिप के 9वें लेवल के शीर्ष तक की प्रगति को मिटा दिया गया है और डिप की प्रगति को केवल 7 मीटर तक दिखाने के लिए हाथ से स्याही से दोबारा बनाया गया है जबकि मूल रूप में यह प्रगति रेखा मिटाए जाने से पूर्व 12 मीटर का संकेत करती है।

11. यह उल्लेखनीय है कि खा०सु०म०नि० के अनुसार, जिसने दुर्घटना के पश्चात् 2 क्रास कट का सर्वेक्षण किया 9वें लेवल पूर्व के टूटे स्थल तथा 9वें लेवल केन्द्र के बीच की दूरी 18.7 मीटर थी।

12. प्रदर्श डी-21, 4 निचली सीमा के कार्यस्थलों का संवातन नक्शा है जो आर० एफ० 1:1200 के आधार पर तैयार किया गया है। उक्त नक्शे को 30-9-1975 को समाप्त होने वाली त्रैमासिक अवधि के लिए सर्वेक्षक श्री आर०के० जोशी ने अद्यतन तथा सही प्रमाणित किया है और प्रबंधक ने इस पर 31-3-1975 तक की त्रैमासिक अवधि के लिए प्रतिहस्ताक्षर किए हैं।

13 इस नक्शे में से 3-डिप कार्यस्थलों को योंही हाथ से दर्शाया गया है और 2 क्रास कट की प्रगति मूलतः 9वें लेवल पूर्व के उठान वाले फलक तक दिखाई गई थी। नक्शे में 2 क्रास कट डिप को 9वें लेवल तक मिटा दिया गया है और 8वें लेवल संयोजन से केवल 8.5 मीटर की प्रगति अंकित की गई है। उक्त नक्शे के 9वें लेवल के उठान वाले फलक तक 2 क्रास कट डिप के निचले भाग में, जिसे वृत्त से घेर दिया गया है, मूलतः अंकित चिन्हों को स्पष्ट रूप से मिटा दिया गया है (इसे साफ देखा जा सकता है)। त्रैमासिक सर्वेक्षण की रेखाएं भी इसमें अंकित नहीं हैं।

14. प्रदर्श सी-25, 3 डिप डिस्ट्रिक्ट की पूर्व तथा निचली सीमा के कार्यस्थलों (अध्यारोपित) का संयुक्त नक्शा है। लाल सीम के कार्यस्थल पेंसिल से अंकित किए गए हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि 2 क्रास कट डिप की प्रगति को मिटा दिया गया है। 2 क्रास कट डिप की प्रगति दर्शाने वाली काली रेखा को मिटा दिया गया है और केवल शीर्ष सीम की स्थिति को प्रकट करने वाली लाल रेखा ही नक्शे में दीख पड़ती है। क्रास कट डिप के अंतिम छोर पर खिंची काली धुंधली रेखा को सरलतापूर्वक देखा जा सकता है क्योंकि यह रेखा पूरी तरह नहीं मिटाई जा सकती है। इस नक्शे में 2 क्रास कट की प्रगति 9वें लेवल पूर्व के संयोजन तक दिखाई गई है। उक्त रेखा की प्रगति 9वें लेवल उठान वाले फलक तक नहीं दिखाई गई है जैसा कि जे-14, सी-2, सी-3 तथा डी-21 नक्शों में दिखाया गया है।

15 अन्य अप्रासंगिक नक्शों की स्थिति इस प्रकार है :—

16. प्रदर्श सी-43 में 4 निचली सीम के भागशः कार्यस्थलों का 16-9-72 तक का मासिक प्रगति नक्शा प्रस्तुत किया गया है। इसमें 2 क्रास कट डिस्ट्रिक्ट का त्रैमासिक सर्वेक्षण केवल एक सबिन्दु रेखा द्वारा दर्शाया गया है और इस सर्वेक्षण रेखा पर 1-7-1972 की तारीख अंकित है।

17 उक्त तारीख को 8वें लेवल पश्चिम की प्रगति, 8वें लेवल के संयोजन से केवल 10 मीटर दूर थी और 8वें लेवल पूर्व की प्रगति 1 क्रास कट संयोजन से 65 मीटर पर थी। 2 क्रास कट डिप की प्रगति 8वें लेवल संयोजन से लगभग 8 मीटर थी तथा डिप का अंतिम सिरा भी बन्द नहीं है। नक्शा प्रदर्श सी-2, सी-3, डी-21 तथा जे-14 में 8वें पश्चिमी लेवल की प्रगति 2 क्रास कट से 29 मीटर है और 8वें पूर्वी लेवल की प्रगति 1 क्रास कट से 21 मीटर है।

18. 8वें लेवल के संयोजन से 9वें लेवल पूर्वी शीर्ष तक 2 क्रास कट की दूरी (नक्शा प्रदर्श जे-14, सी-2, सी-3 तथा डी-21 में) 12 मीटर है, (जैसा कि वै०को०लि० द्वारा दिखाया गया है) जबकि खा०सु० म०नि० के सर्वेक्षकों द्वारा यह दूरी टूटे स्थल तक 18.7 मीटर और वै०को०लि० द्वारा प्रदर्श सी-28 के अनुसार 19 मीटर मानी गई है।

19. डी-9 और डी-12 2 तल सेक्शन के ब्लूप्रिंट हैं जो आर०एफ० 1 : 1200 के आधार पर तैयार किए गए हैं और उनमें 2 क्रास कट डिप की प्रगति 8वें लेवल के संयोजन से 7/8 मीटर दर्शायी गई है। ये नक्शे 3 क्रास कट क्षेत्र की 4 निचली सीम के खंभे तोड़ने के लिए अनुमति प्राप्त करने हेतु खा०सु०म०नि० को प्रस्तुत किए गए थे।

20. प्रदर्श सी-28 (जो प्रबंधक के कमरे में लगे नक्शे जैसा ही बनाया जाता है) आर० एफ 1 : 2400 के आधार पर अक्सी कपड़े पर बना हुआ है और इसमें 4 निचली सीम का भूगत नक्शा दिखाया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि 8वें लेवल के संयोजन से 2 क्रास कट की दूरी 19 मीटर थी, जो लगभग उतनी ही बैठती है जितनी कि दुर्घटना के पश्चात् खा० सु० म०नि० द्वारा सर्वेक्षण करने पर निर्धारित की गई है। उक्त नक्शे में 9वें पूर्वी लेवल और 2 क्रास कट के बीच लगभग 4 मीटर का फासला दिखाया गया है। इसका कारण यह है कि 3-डिप के कार्यस्थलों का अभिविन्यास नक्शा सही रूप में नहीं बनाया गया है। यह कुछ स्याही से और कुछ पेंसिल से बनाया गया है। सर्वेक्षक श्री जोशी ने बताया है कि 3-डिप क्रास कट के कार्यस्थलों को केवल सटे हुए नक्शे (प्रदर्श सी-2) में ही पैमाने से अद्यतन बनाया गया है। इससे यह भी पता चलता है कि प्रदर्श सी28 में इन कार्यस्थलों का गलत अभिविन्यास दिखाया गया है। अतः स्पष्ट है कि प्रबन्धक के कार्यालय में लगे नक्शे में मापे गए रोध को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है।

21. कोयला खान विनियमावली के अनुसार खान में निम्नलिखित सांविधिक नक्शे रखे जाने आवश्यक हैं

(1) धरातल नक्शा

(2) प्रत्येक सीम के भूगत कार्यस्थलों के नक्शे (प्रदर्श सी-2 तथा सी-3)

(3) संवातन नक्शा (प्रदर्श डी-31)

(4) जल खतरा नक्शा (प्रदर्श जे 14)

22. उक्त सभी नक्शों की, जो सदैव अद्यतन तथा सही रूप में रखे जाने चाहिए, जांच करने से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि पहले 2 क्रास कट डिप की प्रगति 9वें पूर्व लेवल के शीर्ष तक दिखाई गई थी किन्तु उसे कई बार मिटाया-बनाया जा चुका है और उस पर अनेक बार स्याही भी फेरी जा चुकी है। इतना ही नहीं त्रैमासिक सर्वेक्षण की रेखाओं को भी अनेक बार मिटाया गया प्रतीत होता है।

23 वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के प्राधिकारियों की दलील है कि जब उन्होंने 9वें लेवल पूर्व उठान वाली ओर से पानी रिसते देखा तो उन्होंने पर्याप्त एहतियात के रूप में यह सुनिश्चित कर लिया कि 2 क्रास कट डिप के साथ 5 मीटर मोटा कोयले का जो रोध लगा है वह पर्याप्त है जैसा कि खान के नक्शों (मुख्य नक्शे तथा प्रबंधक के कमरे में लगे नक्शे प्रदर्श सी-25 जैसे ही एक अन्य नक्शे) से पता चलता है।

24. उन्होंने अपने लिखित बयान में भी इस बात का उल्लेख किया है कि सर्वेक्षक ने रोध की मोटाई की पुष्टि कर दी थी, जबकि उसने अन्वेषण में इस उक्त तथ्य को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था जैसा कि मैंने अन्यत्र कहा है।

25. उपर्युक्त की दृष्टि से यह बयान विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता है कि 2 क्रास कट डिप के सम्मुख 5 मीटर मोटी कोई रोध थी; मैं इस संबंध में इतना ही कह सकता हूं कि इतनी मोटी रोध दिखाने के लिए सांविधिक नक्शों को काफी विकृत किया गया है। यदि नक्शों को काफी बनाया-मिटाया न गया होता तो 2 क्रास कट डिप 9वें पूर्वी लेवल के उठान वाले फलक को छू रहा होता और वहां कोई रोध नहीं होती।

26. उपर्युक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मुझे इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं कि वै०को०लि० द्वारा रोध की मोटाई 5 मीटर सिद्ध करने के लिए प्रस्तुत किए गए तर्कों को अस्वीकार किया जाए। वस्तुतः नक्शों में सभी प्रकार की काट-पीट तथा फेर-बदल की पूरी गुंजाइश के बावजूद मैं यह कहने के लिए बाध्य हूं कि मेरे सामने प्रस्तुत किए गए नक्शों से इस बात का पता चलता है कि वहां किसी प्रकार की कोई रोध थी ही नहीं।

27. नक्शों और प्लानों में विभिन्न प्रकार की काटपीट तथा उनको छिपाने से सम्बन्धित सभी पक्षों और इस बात पर मैंने बहुत विचार किया है कि इस मामले में एक ओर श्री आर० के० जोशी, सर्वेक्षक तथा दूसरी ओर वै०को०लि० के प्रबन्धक वर्ग को किस सीमा तक और कैसे उत्तरदायी ठहराया जाए। उक्त काट-पीट तथा फेर-बदल के जिम्मेदार कौन लोग हैं तथा इसके लिए उन्हें किस सीमा तक उत्तरदायी

ठहराया जाए, यह प्रश्न बहुत जटिल है और मैं इस बारे में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा हूं। उक्त नक्शों में बहुत सारी काट-पीट अदालत के समक्ष प्रबन्धक वर्ग द्वारा प्रस्तुत किए गए पक्ष के समर्थन में की गई है और यह यथा सम्भव श्री जोशी और/या प्रबन्धक वर्ग के किसी वरिष्ठ सदस्य द्वारा काफी जल्दबाजी में की गई जान पड़ती है। ऐसी स्थिति में सारी जिम्मेदारी केवल प्रबंधकों पर ही डाली जानी चाहिए। मुझे विश्वसनीय रूप से यह बताया गया कि नक्शों को बिगाड़ने तथा मिटाने का सारा काम केवल कुछ घंटों में ही पूरा कर दिया गया होगा। सार रूप में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि 25 नवम्बर, 1975 को श्री जोशी के नियुक्ति किए जाने से पूर्व, दुर्घटना से सम्बंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों के विषय में श्री जोशी तथा शेष प्रबन्धक वर्ग के कथन बहुत अधिक मिलते-जुलते हैं किन्तु बाद में ये दोनों संभवतः अलग हो गए और श्री जोशी को अपना पक्ष स्वयं प्रस्तुत करना पड़ा और उन्हें अपनी सफाई भी स्वतंत्र रूप से पेश करनी पड़ी। यह स्वीकार किया गया है कि प्रदर्श सी-2 में पेंसिल से जो आलेखन किया गया है वह दुर्घटना के पश्चात् नक्शानवीस सर्वेक्षक श्री ओझा द्वारा किया गया था।

28. प्रलेखों की जब्ती के बारे में इस मामले में एक असंतोषजनक बात यह देखने में आई कि कुछ नक्शे तो 19-11-75 की सुबह ही जब्त कर लिए गए (जिसे 18-11-75) को अपराह्न 2 30 बजे दुर्घटना होने के बाद संविलम्ब ही कहा जाएगा) जबकि कुछ अन्य नक्शे तथा दस्तावेज 10 दिन बाद जब्त किए गए। मैं समझता हूं कि कोयला-खान विनियमावली में ही यह विहित करना वांछनीय है कि जब भी किसी बड़ी दुर्घटना के पश्चात् खान सुरक्षा महानिदेशालय के जो भी प्राधिकारी खान का निरीक्षण करने के लिए जाएं तो उन्हें उसी समय, दुर्घटना स्थल पर उनके साथ जाने वाले अधिकारियों में से किसी के भी जरिए, अपने अन्य अधिकारियों के माध्यम से सभी संगत नक्शों और दस्तावेजों को जब्त कर लेना चाहिए। मेरा यह भी सुझाव है कि कोयला खान विनियमावली की प्रथम अनुसूची के फार्म 4-ए में (जो घातक दुर्घटना की लिखित सूचना देने का फार्म है) यथोचित संशोधन किए जाने चाहिए ताकि उसमें (1) सूचना देने के समय, (2) दुर्घटना के समय के अतिरिक्त (जिसकी आजकल व्यवस्था है) उक्त सूचना प्रेषित करने के समय की भी सूचना दी जा सके। इससे विनियम 9 के वास्तविक आशय की ही पूर्ति होगी। छुट्टियों के दिनों में भी उक्त प्रकार की दुर्घटनाओं की सूचना प्राप्त करने के लिए खान सुरक्षा महानिदेशालय के सभी कार्यालयों पर ड्यूटी अधिकारियों की तैनाती की सम्भावनाओं पर भी सरकार को विचार करना चाहिए।

अध्याय 8

रिसन

1. अब मैं 9वें पूर्वी लेवल में पानी रिसने का पता लगाने से संबंधित प्रश्नों, उससे उत्पन्न पेचीदगियों और दुर्घटना के समय तक संबंधित दुष्परिणामों पर विचार करूंगा। वै०को०लि ने यह तर्क दिया कि रिसन सामान्य से अधिक नहीं था, वह 9वें पूर्वी लेवल गैलरियों के उठाने वाले फलक के अग्रभाग तथा फर्श, दोनों से लगभग 1.5 मीटर की दूरी पर शुरू हुआ। ऐसा ज्ञात होता है कि इसकी सूचना श्री आर०के० दुबे को सर्वप्रथम 5-11-1975 की प्रातः रात की पारी के सिरदार द्वारा दी गई। श्री दुबे ने 5-11-1975 की पहली पारी में जब उक्त रिसन का निरीक्षण किया तो उन्होंने पाया कि पानी बूंद-बूंद कर रिस रहा था। उन्होंने तुरन्त मुखाग्र को बंद कर देने के आदेश दिए और विस्फोट पर रोक लगा दी। श्री दुबे ने 2 क्रासकट क्षेत्र का निरीक्षण भी यह देखने के लिए करना चाहा कि क्या वहां पानी तो इकट्ठा नहीं हो गया है। किन्तु 2 क्रासकट के छठे लेवल संयोजन के ठीक नीचे की छत के गिर जाने के कारण वे क्रासकट के निचले लेवलों का निरीक्षण नहीं कर सके। तदोपरान्त उन्होंने अपने बस्ती नक्शे (प्रदर्श सी-35) तथा प्रबन्धक के कमरे में टंगे नक्शे को देखा और उन्हें देखकर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वहां कम से कम 7-8 मीटर मोटी कोयले की रोक थी। उस समय कोयला खान प्रबन्धक, श्री ग्रोवर छुट्टी पर थे। 10-11-1975 को छुट्टी से वापस आने पर श्री दुबे ने उन्हें तुरन्त रिसन की सूचना दी। उन्होंने 12-11-75 को रिसन का निरीक्षण किया तथा श्री दुबे द्वारा किए गए पूर्वोपायों की जानकारी प्राप्त की और बेहतर ऐतिहात के तौर पर उन्होंने यह आदेश दिया कि फेस पर लगातार निगरानी रखी जाए। इस एहतिहात का अभिप्राय यह था कि यदि रिसन इसी प्रकार होता रहता है तो इसे एक बार में सामान्य माना जा सकता है किन्तु यदि इसके आयतन और मात्रा में वृद्धि होती है तो इसे सामान्य से अधिक माना जाएगा और इस विषय में अवश्य ही कुछ करना होगा चूंकि उक्त कसौटी के अनुसार रिसन को सामान्य समझा गया तथा छठे लेवल के जरिए भी पानी का बहाव तेज नहीं था और इस सबके बावजूद वहां कम से कम 5 मीटर मोटी रोध थी, अतः वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने यह दलील दी है कि उन्होंने सभी संभव पूर्वोपाय कर लिए थे, विशेषतः तब जबकि वे इस बात से आश्वस्त थे कि 2 क्रासकट डिप में तनिक भी जलग्रस्त नहीं था।

2 खान सुरक्षा महानिदेशालय ने यह दलील दी है कि पानी प्राकृतिक रूप से छन कर आ रहा था और उसमें 2 क्रासकट क्षेत्र का पानी भी मिलता जा रहा था। उनके विचार से पानी निश्चित ही असामान्य रूप से रिस रहा था और उनकी यह मान्यता निम्नलिखित कारणों पर आधारित है।

(मैं यहां लिखित तर्कों से उद्धृत कर रहा हूं)

"(क) रिसन के कारण मध्य रेखा को 1-11-75 को बदल दिया गया था।

(ख) रिसन के कारण महत्वपूर्ण मुखाग्रों को बंद कर दिया गया था।

(ग) श्री दुबे रिसन देखने के पश्चात् तुरन्त कार्यालय गए।

(घ) रिसन की घातक गवाही देते समय कामगारों ने बताया कि रिसन के पानी ने प्रवाह का रूप धारण कर लिया था।

(ङ) रिसन के बारे में प्रविष्टियां कर दी गई हैं।

(च) प्रबंधक ने रिसन का अनुमान 5 गैलन प्रति मिनट लगाया। सामान्य रिसन के मामले में उक्त उपाय कदापि नहीं किए जाते।"

3. खान सुरक्षा महानिदेशालय के तर्क पर्याप्त सशक्त प्रतीत होते हैं। निस्संदेह संघट्ट खान एक गीली खान है और सभी गीली खानों में सामान्यतः उनकी दीवारों तथा छतों आदि से पानी टपकता है। जिस रिसन पर खान अधिकारियों का ध्यान गया वह निश्चित ही असामान्य रही होगी और इसी वजह से उसका मुंह भी बंद किया गया। दृष्टव्य है कि पांच दिन की छुट्टियों के पश्चात् प्रबंधक महोदय के वापस आने तथा उनसे उक्त विषय पर चर्चा किए जाने तक रिसन में वृद्धि न होने के कारण ही प्रबन्धक वर्ग निश्चेष्ट एवं निष्क्रिय रहा। उन्हें यह समझ लेना चाहिए था कि पानी का इस प्रकार रिसना समय के साथ कम होता जाता है क्योंकि कोयले में पड़ी दरारें गर्त के पानी में घुले पदार्थों से अवरुद्ध हो जाती हैं। पानी के लगातार रिसते रहने और उसकी मात्रा में कोई कमी न होने के तथ्य को एक चेतावनी के रूप में लिया जाना चाहिए था तथा 3-डिप डिस्ट्रिक्ट के कार्यस्थलों की स्थिति अंकित करने और/या बोर होलों के माध्यम से बीच की रोध की मोटाई ज्ञात करने के उपाय किए जाने चाहिए थे। दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं किया गया और इसके भयंकर परिणाम हुए।

4 यह सही है कि 1-11-75 को श्री दुबे के अनुरोधानुसार 9वें पूर्वी लेवल की मध्यरेखा को बदलकर डिप की तरफ और अधिक बढ़ा दिया गया था। श्री दुबे से इस संबंध में काफी पूछताछ की जा चुकी है

किन्तु उन्होंने ऐसा क्यों किया—इसका ठीक-ठीक कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। किन्तु पूर्वोक्त की दृष्टि से ऐसा ज्ञात पड़ता है कि सन्निकट ज्ञात जलग्रस्त क्षेत्र में खुदान का काम न करने के लिए मध्य लाइन को मोड़ दिया गया था।

5. मैं खा०सु०म०नि० की इस दलील से सहमत नहीं हूं कि नक्शे में रोध की जांच करने के प्रयोजन से श्री दुबे का तुरन्त कार्यालय जाना निश्चित ही रिसन की असामान्यता की ओर संकेत करता है। मेरे विचार से श्री दुबे ने समुचित एहतियात बरती और उनका उक्त व्यवहार मात्र स्वाभाविक ही कहा जाएगा। सिर्फ इतने से इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि रिसन असामान्य थी हालांकि शान्ति के बाद मैं अब इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं।

6. मेरे विचार से असामान्य रिसन का पता चल जाने से प्रबन्धक वर्ग को सन्निकट खतरे की चेतावनी मिल जानी चाहिए थी। प्रबन्धक वर्ग को इस मामले को पूरी गंभीरता से लेना चाहिए था तथा इसकी सूचना उसे अपने उच्चाधिकारियों (यथा, एजेंट, उपक्षेत्र प्रबंधक तथा महाप्रबन्धक) को देकर उनकी सलाह ले लेनी चाहिए थी। साथ ही उसे पहले से ही बोर होल तैयार करने के बारे में सावधानीपूर्वक आवश्यक उपाय करने चाहिए थे। वह वस्तुतः अपने ही भ्रमों में खोया रहा कि जलग्रस्त कार्यस्थल अभी काफी दूर है।

7. साक्ष्य में यह दिया गया है कि यदि दुर्घटना से पूर्व वस्तुतः प्रयास किया जाता तो छठे पूर्वी लेवल और 2 क्रास-कट डिप के संयोजन के टूट-फूट के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता था। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि प्रबन्धक, सहायक प्रबन्धक तथा कोयलाखान कर्मचारियों में से किसी ने भी इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया। इसकी व्याख्या केवल यही मानकर की जा सकती है कि उन्हें यह भलीभांति ज्ञात था कि क्रास-कट के कार्यस्थलों में पानी भरा हुआ था।

अध्याय 9

क्षेपक

1. अब मैं सर्वेक्षक की डायरी (प्रदर्श जे-1) तथा डिप प्रगति रजिस्टर (प्रदर्श सी-22) की प्रविष्टियों की चर्चा करना चाहूंगा जिन्हें क्षेपक कहा गया है। सर्वेक्षक की डायरी में श्री जोशी की तारीख 20-11-75 की टिप्पणी इस प्रकार है :—

> "4 पूर्वी सेक्शन का 9 लेवल पूर्व, चौथे तल पूर्व के उसी सीम के जलग्रस्त क्षेत्र के 60 मीटर की दूरी पर रह गया है। यह आपके सूचनार्थ तथा आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रस्तुत है तथा 13वां लेवल पश्चिमी तल भी भग्न तल के निकट है। आवश्यक कार्रवाई अपेक्षित है।
>
> प्रबन्धक को. . . .प्रस्तुत।"

उक्त प्रविष्टि को प्रबन्धक ने नहीं देखा (न ही श्री आई० के० सिंह ने इसे देखा जो उस समय अर्थात प्रविष्टि किए जाने के समय, कार्यपालक प्रबन्धक के रूप में काम कर रहे थे, और न ही इस प्रविष्टि को श्री डावर ने, 10-11-1975 को छुट्टी से लौटने पर देखा)।

2. डायरी को देखने से पता चलता है कि श्री जोशी के कोयलाखान में, सन् 1972 में सर्वेक्षक की हैसियत से कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने अपनी डायरी में अनेक प्रविष्टियां कीं और प्रत्येक प्रविष्टि प्रबंधक महोदय को भी प्रस्तुत की गई तथा उन्होंने उस पर उपर्युक्त हिदायतें भी दर्ज कीं। केवल 5-3-74 की प्रविष्टि को ही प्रबन्धक ने नहीं देखा जो इस प्रकार है :—

> "आपके आदेशानुसार सर्वेक्षक (के० एण्ड पी०) से उपकरण मांगे गए किन्तु उन्होंने उपकरण देने में असमर्थता व्यक्त की। कृपया सूचनार्थ देखें।
>
> कोयलाखान प्रबंधक को प्रस्तुत।"

इसके बाद 5-8-1975 की एक प्रविष्टि श्री बी० झा (नक्शानवीस सर्वेक्षक, जो संभवतः सर्वेक्षक के रूप में काम कर रहे थे) द्वारा 59वें उठान के 22वें पश्चिमी लेवल को रोकने, 22वें लेवल को तैयार करने तथा 20वें पूर्वी लेवल को 41वें उठान तक तैयार करने के बारे में की गई है। उक्त सभी उपाय बोर होल के एम० टी० 55 या के० एस० टी० 19 में पानी न जाने देने की एहतियात की गरज से किए जाते हैं। इसके बाद श्री जोशी कृत एक और प्रविष्टि है जो 20-10-1975 की है, जिसे प्रबंधक महोदय ने नहीं देखा।

3. डिप प्रगति रजिस्टर (प्रदर्श सी-22) में श्री जोशी द्वारा की गई विवादास्पद प्रविष्टि इस प्रकार है :

> "6वां पूर्वी लेवल जलग्रस्त क्षेत्र तक पहुंच रहा है" पूर्वोपाय आवश्यक है।

इस पर श्री जोशी के हस्ताक्षर तो हैं किन्तु तारीख अंकित नहीं है, यह प्रविष्टि रजिस्टर के प्रथम खाने में अंकित तारीख 20-10-1975 के सामने दर्ज है। श्री जोशी ने रजिस्टर के पृष्ठ के बाईं ओर उक्त तारीख के सामने जो प्रविष्टियां की हैं, वे हरी स्याही में हैं। पृष्ठ के एकदम दाईं ओर की गई विवादास्पद प्रविष्टि नीली बाल-प्वाइन्ट पेंसिल से की गई जान पड़ती है और यह प्रबंधक वाले खाने में अंकित है। इसके ठीक नीचे बाईं ओर सर्वेक्षक द्वारा 21/10 से 22/10 की प्रविष्टियां अंकित हैं जो एक ब्रैकेट में दी गई हैं। इन्हें सहायक प्रबंधक श्री दुबे ने देखा है और उन पर उन्होंने 25/10 को हस्ताक्षर किए हैं।

4. श्री जोशी की उक्त प्रविष्टि 1 को लेकर दोनों ही ओर से लंबी दलीलें पेश की जा चुकी हैं। बै० को० लि० ने तर्क दिया है कि सर्वेक्षक की डायरी में प्रविष्टि वस्तुतः 18-11-75 को, दुर्घटना होने के तुरंत पश्चात् इस आशय से की गई थी कि उन्हें दुर्घटना होने से पूर्व, कोयलाखान विनियम 49 के पालन न करने की जिम्मेदारी से समय रहते बचाया जा सके। दोनों ही पक्षों की दलीलों पर सम्यक् रूप से विचार करने के पश्चात् मेरा स्वयं का यह विचार है कि सम्बन्धित प्रविष्टि दुर्घटना के पश्चात् की गई है और यह क्षेपक है। यदि श्री जोशी यह कहते हैं कि उक्त प्रविष्टि वस्तुतः 20-10-75 को की गई थी और तदनुसार यह माना जाना चाहिए कि उन्होंने कोयलाखान, विनियम 49 की अपेक्षाओं का पालन किया है (जिसका विशिष्ट आरोप उनके ऊपर दुर्घटना के तुरंत पश्चात् लगाया गया था), तो मेरी समझ में यह नहीं आता कि उन्होंने उक्त आरोप के उत्तर में इस प्रविष्टि का उल्लेख क्यों नहीं किया। उन्होंने इसका उल्लेख सिन्हा-अहलूवालिया समिति के समक्ष दिए गए अपने बयान में भी नहीं किया। यदि उक्त तर्क उनके बचाव का मुख्य आधार था तो क्या दुर्घटना के तुरंत पश्चात् इसका उल्लेख न करना कोई महत्व नहीं रखता? दूसरी ओर ऐसा जान पड़ता है कि उस समय उन्होंने, नक्शानवीस सर्वेक्षक श्री बी० आर० झा द्वारा डिप प्रगति रजिस्टर में दर्ज की गई एक प्रविष्टि पर ही पूर्णतः निर्भर किया। दूसरे श्री जोशी ने 20-10-75 की अपनी प्रविष्टि को प्रबंधक को दिखाने तथा उस पर उनके प्रतिहस्ताक्षर करवाने का भी कोई प्रयत्न नहीं किया जान पड़ता। उन्हें यह कहने मात्र से छुटकारा नहीं मिल सकता कि वे प्रविष्टि के प्रबंधक के हस्ताक्षर करवाना भूल गए। श्री जोशी की ओर से यह दलील दी गई है कि उनका काम डायरी में प्रविष्टि करने तक ही सीमित था, प्रविष्टि को प्रबंधक ने देख लिया है या नहीं यह देखना उनकी जिम्मेदारी नहीं थी। यह दलील सर्वेक्षक की उत्तरदायित्वहीनता की द्योतक है और मुझे यह सोचने पर बाध्य करती है कि उनके द्वारा किए गए समग्र साक्ष्य को कितना महत्व दिया जाए? वस्तुतः मैं तो उनसे यह आशा करता हूं कि वे न केवल प्रबंधक के पास जाकर यह सुनिश्चित करेंगे कि उनकी प्रविष्टि देख ली है बल्कि अपनी

शंकाओ से व्यक्तिगत रूप से अवगत करायेंगे और यह भी पूछेंगे कि खतरे का मुकाबला करने के लिए उनकी क्या योजना है ।

5 इस संबंध मे मैं डिप प्रगति रजिस्टर मे दर्ज श्री बी० झा की टिप्पणी के विषय मे कुछ कहना चाहूंगा । यह प्रविष्टि 4-11-75 को अंकित की गई बतायी जाती है और इस प्रकार है :—

"हमें 9वें पूर्वी लेवल को तैयार करने में पूरी एहतियात बरतनी चाहिए क्योंकि यह पहले ही जलग्रस्त क्षेत्र के सन्निकट पहुंच गया है । दूसरे क्रास-कट डिप मे पूरी तरह पानी भर गया है । जलस्तर के बढ़ जाने तथा उसके दूसरे क्रास-कट डिप से मिल जाने की बहुत संभावना है । सर्वेक्षक श्री जोशी ने इसकी सूचना पहले ही कोयलाखान प्रबंधक को दे दी है ।"

6 यह प्रविष्टि, जिसका अंतिम वाक्य शेष भाग के लिए प्रयुक्त स्याही से भिन्न स्याही मे लिखा गया है, रजिस्टर के टिप्पणी वाले खाने मे दर्ज है ।

7 जिरह के दौरान श्री झा ने इस प्रविष्टि के बारे मे निम्नलिखित बयान दिया :—

"मैंने 4 नवम्बर, 1975 को डिप प्रगति रजिस्टर में एक प्रविष्टि की थी जिसकी शुरूआत में हमें 'एहतियात बरतनी चाहिए' और अब दूसरे क्रास कट डिप के साथ जोड़ दें" से होती है । बाद में श्री जोशी के छुट्टी से वापस आने पर 6 या 7 तारीख को मैंने टिप्पणी मे निम्नलिखित अंश और जोड़ा

"सर्वेक्षक श्री जोशी ने कोयलाखान प्रबंधक को पहले ही सूचना दे दी है ।"

तत्पश्चात मैने उक्त अंश के नीचे हस्ताक्षर कर दिए और प्रविष्टि पर 4-11-78 तारीख डाल दी ।

4/11 को मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि "9 पूर्वी लेवल जलग्रस्त क्षेत्र तक पहुंच रहा है क्योंकि मैंने पानी को रिसते देख लिया था । मुझे शक है कि 9 वें लेवल के ठीक ऊपर वाले क्रास-कट डिप मे कुछ पानी इकट्ठा हो गया होगा । मेरी यह टिप्पणी सही है कि दूसरा क्रास कट डिप पानी से भरा है । मुझे 9वें पूर्वी लेवल के निकट के क्षेत्र के जलग्रस्त होने का पता इसलिए चला क्योंकि किसी भी डिप मे सामान्यत पानी भर सकता है "।

8. डिप प्रगति रजिस्टर मे श्री झा की इस प्रविष्टि तथा श्री जोशी की दो प्रविष्टियां एक डिप प्रगति रजिस्टर मे तथा दूसरी सर्वेक्षक की डायरी मे, सच होने के बारे मे श्री जोशी की ओर से जो कुछ भी कहा गया है उस सब के बावजूद मुझे यह कहने में कोई संकोच नही है कि ये प्रविष्टियां क्षेपक है । श्री जोशी की प्रविष्टियां तो निश्चित है ही दुर्घटना के बाद की हैं, श्री झा की प्रविष्टि भी उतनी ही "संदेहास्पद" है ।

अध्याय 10

सुरक्षा अधिकारी का दुरुपयोग

1. जांच के दौरान अन्य ध्यान देने योग्य तथ्यो के साथ, कोयलाखान अधिकारी के पद के दुरुपयोग से संबंधित तथ्य भी सामने आया क्योंकि उसकी सेवाएं पूर्णत उत्पादन–प्रयोजनो के लिए ली जा रही थी । कोयलाखान विनियमावली, 1957 के विनियम 41-ए के अधीन सुरक्षा अधिकारी के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वो का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है :—

(क) (1) कामगारो से उनकी सुरक्षा के बारे मे बातचीत करने तथा इस विषय मे उनके सुझाव प्राप्त करने के लिए कामगारो से कार्यस्थल पर मिलने के प्रयोजन से खान के धरातलीय तथा भूगत भागो का दौरा करना,

(2) नए भर्ती किए गए कामगारो का चार्ज लेना और उन्हें खान दिखाना तथा उन्हें यह बताना कि खान मे काम करते समय क्या करना ठीक है और क्या खतरनाक ।

(ख) (1) छोटी-मोटी दुर्घटनाओं सहित, सभी प्रकार की दुर्घटनाओ एवं घटनाओं की जांच पड़ताल करना, खान मे होने वाली दुर्घटनाओ की सामान्य प्रकृति तथा उनके प्रमुख कारणो की ओर संकेत करते हुए उनका विश्लेषण करना,

(2) खान दुर्घटनाओं के ब्यौरेवार आंकड़े रखना और खानो मे होने वाली दुर्घटनाओ की सामान्य प्रकृति तथा उनके सामान्य कारणो की ओर संकेत करते हुए उनका विश्लेषण करना,

(3) बाढ़, आग, कोयलाखान गैस जैसे खतरे के अन्य सभी संभव कारणो का अध्ययन करना तथा प्रबंधक को उनकी जानकारी देना,

(ग) (1) सुरक्षा कक्षाएं लेना तथा पर्यवेक्षी कर्मचारियों (सुपरवाइजरी स्टाफ) को सुरक्षा संबंधी वार्ता तथा व्याख्यान देना,

(2) खानो में सुरक्षा सप्ताह मनाना तथा सुरक्षा संबंधी और भी शिक्षा देना तथा तत्संबंधी प्रचार करना,

(घ) यह देखना कि सभी संबंधित खान कर्मचारी विभिन्न स्थायी आदेशो (यथा खान यांत्रिक वातायनो को बंद करने तथा खान मे आग लगने या अन्य आपात्‌कालीन स्थिती से संबंधित आदेश) तथा सिस्टेमेटिक टिम्बरिंग रूल्स से भलीभांति परिचित हैं ।

(ङ) खान लेवल पर प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रम तैयार करने मे सहायता देना, जिसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण, गैस परीक्षण प्रशिक्षण तथा प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण भी शामिल है

(च) खान के विभिन्न भागो का निरीक्षण करने के पश्चात् प्रबंधक को इस संबंध मे सूचना देना कि खान अधिनियम के उपबंधों तथा उसके अधीन विभिन्न नियम-विनियमो का खान मे पालन हो रहा है या नही,

(छ) सुरक्षा उपायो को सामान्यत बढ़ावा देना तथा खान मे सुरक्षा की दृष्टि से किए जानेवाले कार्यों मे सक्रिय सहयोग एवं समर्थन देना, तथा

(ज) (1) सुरक्षा संबंधी अन्य सभी मामलो मे प्रबंधक की सहायता करना ।

(2) यदि प्रबंधक, सुरक्षा अधिकारी को उपरिनिर्दिष्ट कार्यों के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य सौंपता है तो उसे उसकी लिखित सूचना ऐसा करने के तीन दिन के भीतर, क्षेत्रीय निरीक्षक को भेजनी होगी ।

(3) सुरक्षा अधिकारी एक सजिल्द पुस्तिका में अपने दैनिक कार्य का विस्तृत ब्यौरा दर्ज करेगा ।

2. श्री आर० के० दुबे को सितम्बर, 1974 में खान सुरक्षा अधिकारी के रूप में अधिसूचित किया गया था। जुलाई, 1975 से लेकर वे सेक्टर भी का काम देखते रहे। 30-9-1975 से उन्हें 3-डिप डिस्ट्रिक्ट का कार्यभार भी सौंप दिया गया, अर्थात् उन्हें उक्त क्षेत्र के उत्पादन का प्रभारी सहायक प्रबंधक बना दिया गया, यद्यपि इसके लिए कोई लिखित आदेश जारी नहीं किया गया। दुर्घटना के दिन तक उनके पास दोहरा चार्ज रहा हालांकि यह स्पष्ट है कि खान में एक पूर्णकालिक सुरक्षा अधिकारी के बने रहने के लिए वहां पर्याप्त संख्या में प्रबंधक कर्मचारी थे। पिट सुरक्षा समिति की मासिक बैठकें बुलाने के अलावा, उन्होंने ऊपर विनियम 41-ए में उल्लिखित सुरक्षा अधिकारी के बहुत ही कम उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया। जिरह के दौरान श्री दुबे ने जो बातें कबूल की हैं, उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि खान में सुरक्षा अधिकारी के कर्तव्यपालन में गंभीर लापरवाही की गई है:

प्रश्न: क्या यह सही नहीं है कि पूर्णकालिक सुरक्षा अधिकारी के होने के नाते आप विनियम 41-ए के अधीन विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण नियमित रूप से तथा प्रायः कर सकते थे ?

उत्तर: मैं आप से सहमत हूं। मैं सुरक्षा अधिकारी के अनेक सांविधिक उत्तरदायित्वों का परिपालन नहीं कर पा रहा था। मुझे याद नहीं है कि 1974 या 75 के दौरान कितनी गंभीर दुर्घटनाएं हुई।

प्रश्न: क्या आप समझते हैं कि सुरक्षा अधिकारी के रूप में विधितः अपेक्षित कर्तव्यों का आप सम्यक् रूप से परिपालन कर रहे थे ?

उत्तर: नहीं। मैं सुरक्षा अधिकारी के केवल कुछ ही कामों को देख रहा था और मुझसे केवल उन्हीं कामों को करने के लिए कहा गया था।

प्रश्न: क्या यह सच नहीं है कि यदि आपको सहायक प्रबंधक के दायित्व न सौंपे जाते तो आप सुरक्षा अधिकारी के सभी कार्य करते ?

उत्तर: हां। यह सच है।

3. कोयला खान के वरिष्ठ अधिकारियों ने इस प्रकार के तर्क देकर कि 3-डिप डिस्ट्रिक्ट बिना उलझन वाला एक साधारण तथा सुव्यवस्थित क्षेत्र था और उत्पादन के काम पर ध्यान देने के बाद भी श्री दुबे के पास सुरक्षा अधिकारी का काम देखने के लिए बहुत समय था, अनेक आधारों पर, उन्हें उत्पादन कार्यों का दायित्व सौंपे जाने का औचित्य सिद्ध करने की चेष्टा की है। इस तरह की दलीलों में कोई जान नहीं है। उक्त चूक उस समय और भी गंभीर हो जाती है जब हमारा ध्यान, खान सुरक्षा महानिदेशक के द्वारा, प्रबंध निदेशक को विशेष रूप से जारी की गई इस सूचना की ओर जाता है कि सुरक्षा अधिकारियों को उत्पादन संबंधी दायित्व न सौंपे जाएं। यदि किसी अधिकारी पर अन्य उत्तरदायित्वों का भार डाले बिना, उसे पूर्णतः सुरक्षा अधिकारी के रूप में काम करने दिया जाता तो वह निश्चित ही 2 क्राम कट क्षेत्र में पानी जमा हो जाने के बारे में कुछ ठोस काम करता और उस दुर्घटना को रोकने में भी संभवतः योगदान दे पाता जिसके बारे में जांच की जा रही है।

4. सुरक्षा अधिकारियों तथा संचालन अधिकारियों का, उत्पादन के लिए दुरुपयोग करने की बात खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों के समक्ष नागपुर में आई थी और तदनुसार 27-10-1975 की बैठक में वे० को० लि० के प्रतिनिधियों तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों, (जिनके अध्यक्ष क्रमशः प्रबंध निदेशक तथा खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर थे) के बीच जिन विषयों पर चर्चा हुई थी, उनमें से एक यह भी था:—

"कोयलाखान प्राधिकरण (अर्थात् वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड) के अधिकारियों को यह बता दिया गया था कि सहायक प्रबंधकों, सुरक्षा अधिकारियों, संचालन अधिकारियों आदि में प्रायः यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि वे खान अधिनियम के अधीन अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन में ढील दिखाते हैं। सुरक्षा अधिकारियों तथा संचालन अधिकारियों द्वारा अपने काम के प्रति अरुचि दिखाने का एक कारण यह भी है कि इन कामों को उत्पादन संबंधी कामों के अपेक्षाकृत देय समझा जाता है। इस बात का भी विशेष रूप से उल्लेख किया गया कि अनेक स्थानों पर यह भी कहा गया है कि संचालन अधिकारियों तथा सुरक्षा अधिकारियों से उत्पादन कार्य करवाए जा रहे थे। इस संबंध में यह सुझाव भी दिया गया कि उक्त असंगति को दूर करने के लिए कोयला खान प्राधिकरण (सी० एम० ए०) को उत्पादन तथा उत्पादनेतर अधिकारियों को बारी-बारी से एक-दूसरे के काम पर लगाए जाने पर भी विचार करना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि कोयला खान प्रशासन को उक्त पहलू का सम्यक् आभास था और वे इस बात पर सहमत थे कि काम को बारी-बारी से कराना सिद्धान्तः ठीक था और इस समस्या पर आगे फिर विचार किया जाएगा।

प्रबंध निदेशक, कोयलाखान प्राधिकरण ने यह बताया कि देश में खान इंजीनियरों की आमतौर पर कमी होने के कारण एक व्यक्ति को, एक से अधिक हैसियत से काम करने के लिए प्राधिकृत करने से संबंधित प्रस्तावों का अनुमोदन किया जाना चाहिए। उन्हें यह बताया गया कि प्रत्येक मामले के गुणावगुण के आधार पर इस प्रकार के प्राधिकार दिए जाते हैं। कोयलाखान प्रशासन भविष्य में छूट के लिए लिख सकता है और उस पर गुणावगुण के आधार पर विचार किया जाएगा।"

5. जहां तक उक्त प्रकार की छूट का प्रश्न है कोयलाखान विनियमावली 41(2) को विनियम 31(ए) के साथ पढ़े जाने पर मैं समझता हूं कि उक्त अर्थ में छूट दिए जाने की कोई व्यवस्था नहीं है, दूसरी ओर विनियम 41(2) के अधीन केवल इतना करना ही आवश्यक है कि जब उन्हें सुरक्षा के लिए निर्दिष्ट ड्यूटियों के अलावा अन्य ड्यूटियां भी सौंपी जाएं तो इसकी सूचना खा० सु० म० नि० के प्राधिकारियों को दी जाए। मैं यह सिफारिश करना चाहूंगा कि यदि सुरक्षा अधिकारी को इस प्रकार का कोई अतिरिक्त काम सौंपा जाए तो उसका अनुमोदन खान सुरक्षा महानिदेशालय के प्राधिकारियों से लिखित रूप में ले लेना चाहिए जिसमें वे ऐसा करने के कारणों का उल्लेख भी करें।

अध्याय 11

डायरी रखना

1. जांच के दौरान एक और महत्वपूर्ण जो तथ्य सामने आया उसका संबंध "प्रबंधक के कर्तव्य और उत्तरदायित्व" शीर्षक के अधीन उल्लिखित विनियम 41 के महत्वपूर्ण उपबंधों से है, जो नीचे दिए जा रहे हैं:—

विनियम 41: प्रबंधकों के कर्तव्य और उत्तरदायित्व

(1) (क) प्रबंधक प्रत्येक खान का स्वयं पर्यवेक्षण करेगा और भूगत कार्यस्थलों के मामले में, वह सप्ताह में कम से कम चार दिन उनका दौरा तथा निरीक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए करेगा कि वहां सभी दृष्टियों से सुरक्षा की स्थिति ठीक है। इस प्रकार का निरीक्षण प्रत्येक

पखवाड़े में कम से कम एक बार खान की पारी मे अवश्य किया जाएगा । लेकिन यदि किसी अपरिहार्य कारण से वह उक्त कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का पालन करने या निरीक्षण करने में असमर्थ होता है तो वह खण्ड (ख) के अधीन रखी गई पुस्तिका मे ऐसा न कर पाने के कारण दर्ज करेगा ।

(ख) प्रबंधक, अवर प्रबंधक तथा यदि कोई सहायक प्रबंधक हो तो वह भी, सजिल्द पुस्तिका में एक डायरी उक्त प्रयोजन से अपने पास रखेगा जिसमें वह अपने प्रत्येक निरीक्षण के निष्कर्षों को दर्ज करेगा और यदि कोई दोष उसके देखने में आए हों तो उनके निराकरणार्थ उसके द्वारा की गई कार्रवाई का भी उसमें उल्लेख करेगा ।

(2) प्रबंधक, यह व्यवस्था करेगा कि सभी ओवरमैन तथा अन्य कर्मचारी अपने कामों के संबंध में चर्चा करने के प्रयोजन से उससे या अवर प्रबंधक से सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य मिल सकें ।

(3) प्रबंधक, अधिनियम या विनियमावली के अनुसार या उनके अधीन जारी किए गए आदेशों के अनुसार तैयार की गई रिपोर्टों अथवा उनमें विहित किए गए तरीके से रखे गए रजिस्टरों तथा अन्य अभिलेखों की जांच करेगा और उनपर तारीख सहित अपने प्रतिहस्ताक्षर करेगा । वह इस काम को लिखित रूप में किसी अवर प्रबंधक या सहायक प्रबंधक को भी सौंप सकता है किन्तु उन मामलों में ऐसा नहीं किया जाएगा जहां विशेष रूप से यह व्यवस्था की गई है कि प्रबंधक ही किसी रिपोर्ट अथवा रजिस्टर विशेष पर अपने प्रतिहस्ताक्षर करे ।"

2 यह समझ लेना सरल ही है कि उक्त उप-विनियम किस लिए बनाए गए । निःसन्देह इसका मुख्य प्रयोजन यह सुनिश्चित करना था कि भूगत निरीक्षण नियमित रूप से किए जा सकें और उक्त प्रकार के निरीक्षणों के अभिलेख कार्यालय के भावी कर्मचारियों तथा संगठन के अन्य उच्च अधिकारियों के लाभार्थ तथा अंततः यह सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध हो सकें कि निरीक्षणों के निष्कर्षानुसार, जहां आवश्यक है, शीघ्र उपयुक्त कार्रवाई की जाती है । प्रबंधक को प्रतिदिन अपनी डायरी में कार्यस्थलों के निरीक्षण के बारे में रिपोर्ट लिखनी चाहिए और उस पर तारीख सहित हस्ताक्षर भी करने चाहिए । उसे सहायक प्रबंधक तथा अन्य अधीनस्थ अधिकारियों की डायरियां भी देखनी चाहिएं और उनपर प्रतिहस्ताक्षर करने चाहिए । सहायक प्रबंधक तथा अन्य अधीनस्थ अधिकारियों को भी निरीक्षण के प्रत्येक दिन अपनी डायरियां भरनी चाहिए तथा उनपर हस्ताक्षर भी करने चाहिए (हालांकि इन प्रविष्टियों पर तारीख देना आवश्यक नहीं होता) । प्रबंधक, श्री ग्रोवर तथा सहायक प्रबंधक श्री दुबे ने भी उक्त अपेक्षाओं की पूर्ण अवहेलना की है । प्रदर्श सी 16 कार्यकारी प्रबंधक, श्री वाई० के० सिंह की उस समय की डायरी है जब वे श्री ग्रोवर के छुट्टी पर जाने पर प्रबंधक के रूप में काम कर रहे थे । डायरी के फार्म में, जो मुद्रित है, निम्नलिखित खड़े कालम है :

तारीख निरीक्षित क्षेत्र निरीक्षण का की गई कार्रवाई कैफियत परिणाम

श्री वाई० के० सिंह की डायरी काफी हद तक विनियम 41 की अपेक्षाओं के अनुकूल रखी गई है किन्तु दैनिक प्रविष्टियां विभिन्न खानों में न भरी जा कर लगातार एक ही पैरे में लिखी गई हैं । श्री ग्रोवर की डायरी केवल 1-9-1975 से शुरू होती है, हालांकि 9-9-1975 की सभी प्रविष्टियां निरीक्षण की तारीख से संबंधित हैं । तत्पश्चात् 23-9-75 तक की प्रविष्टियों में, निरीक्षित क्षेत्र का भी उल्लेख है किन्तु इससे अधिक और कुछ भी नहीं है । अन्य सभी खाने 25-9-75 को भरे गए हैं । इसके बाद 4-10-75 तक पहले की भांति केवल प्रथम दो खाने ही भरे गए है । 6-10-75 के बाद से शेष खानों को भरने की भी कोशिश की गई है । 9वें पूर्वी लेवल में पानी रिसने का उल्लेख केवल 12-11-1975 की प्रविष्टि में किया गया है । 'निरीक्षण के परिणाम पर कैफियत' वाले खाने में इस प्रकार लिखा है :—

"9वें लेवल से पानी दाईं ओर से रिस रहा था । सुरक्षा अधिकारी ने मुझे बताया कि उसका मुखाग्र एक सप्ताह पूर्व बंद कर दिया गया है ।"

"की गई कार्रवाई" वाले खाने की प्रविष्टि इस प्रकार है :—

"उसे यह सुनिश्चित करने के लिए अनुदेश दिया कि कोई भी इस मुखाग्र को न खोले ।'

3. डायरी में दर्ज 6-10-75 से आगे की सभी प्रविष्टियों पर विहंगम दृष्टि डालने मात्र से किसी के भी मन में यह संदेह उत्पन्न हो सकता है कि क्या 17-11-1975 तक की प्रविष्टियां प्रतिदिन लिखी गईं अथवा वे सभी एक ही साथ लिखी गईं । कहीं भी हस्ताक्षरों पर तारीखें अंकित नहीं है ।

4. श्री ग्रोवर यह स्वीकार करते हैं कि हालांकि उन्होंने प्रबंधक के रूप में सन् 1974 में कार्यभार संभाला किन्तु सितम्बर 1975 तक उन्होंने कोई डायरी नहीं रखी । उन्होंने सितम्बर, 1975 के प्रथम सप्ताह में डायरी रखने का निश्चय किया । वस्तुतः ऊपर बताए अनुसार निरीक्षित क्षेत्र तथा तारीख का उल्लेख करना तो दूर, डायरी ही 23-9-75 से भरनी शुरू की गई ।

5. सहायक प्रबंधक, श्री आर० के० दुबे की डायरी में प्रत्येक दिन की प्रविष्टियां होनी चाहिएं किन्तु उन्होंने भूगत कार्यस्थलों की केवल तीन चीजों, अर्थात् टेक, संवातन तथा गैसों का ही रिकार्ड रखा है । साक्ष्य के दौरान उन्होंने ईमानदारी के साथ यह स्वीकार किया उन्हें कार्यस्थल आदि के अन्य अनेक पहलुओं पर भी ध्यान देना चाहिए था किन्तु किसी भी वरिष्ठ अधिकारी ने उनसे ऐसा करने के लिए नहीं कहा । प्रविष्टियां बहुत कुछ एक दूसरे से मिलती-जुलती तथा घिसी-पिटी हैं, जो निम्न प्रकार हैं :—

"छत-पर्याप्त, संवातन-पर्याप्त ; जैसे नहीं है ।"

बहुत ही कम मामलों में टिप्पणी दी गई है कि संवातन खराब है । यहां भी मुझे संदेह है कि ये प्रविष्टियां प्रतिदिन की हैं या सभी की सभी एक ही दिन में अंकित कर दी गई हैं । प्रबंधक श्री ग्रोवर ने, श्री दुबे की डायरी को 17-7-75 से देखा है तथा तभी से उसपर उनके प्रतिहस्ताक्षर भी है । किन्तु मेरा इस निष्कर्ष पर पहुंचना संभवतः गलत नहीं होगा कि उन्होंने सभी हस्ताक्षर एक ही बार में कर डाले हैं (क्योंकि उनमें से किसी पर भी तारीख नहीं पड़ी है) । 5-10-1975 को पानी रिसने का पता चलने की बात का कोई उल्लेख श्री दुबे की डायरी में नहीं है । वस्तुतः इस तारीख की कोई प्रविष्टि है ही नहीं और न ही पानी रिसने का पता चलने पर की गई कार्रवाई से संबंधित कोई प्रविष्टि डायरी में है ।

6. यह स्पष्ट है कि इस मामले में श्री ग्रोवर तथा श्री दुबे दोनों ने ही, बहुत अधिक लापरवाही और अकर्मण्यता दिखाई है । निश्चित ही श्री ग्रोवर ने बहुत समय तक कोई डायरी नहीं रखी और उन्होंने बहुत समय तक श्री दुबे की डायरी को भी नहीं देखा । इस तरह की दुर्घटनाओं की कार्योत्तर जांच पड़ताल के मामले में समकालीन अभिलेख बहुत उपयोगी होते हैं, जो मुझे उपलब्ध नहीं हैं ।

7. यह भी द्रष्टव्य है कि संगठन के किसी भी वरिष्ठ अधिकारी यथा, महाप्रबंधक, उपक्षेत्र प्रबंधक तथा एजेंट ने खान का दौरा करते

समय इन डायरियों पर दृष्टिपात नहीं किया । भले ही, साविधिक रूप से वे ऐसा करने के लिए बाध्य न हो तब भी इससे किसी हद तक पर्यवेक्षण तथा प्रशासनिक ढील का पता चलता है । मेरी यह सिफारिश है कि जब भी संगठन का कोई अधिकारी (यथा एजेंट या महाप्रबंधक) किसी कोयलाखान के दौरे पर जाएं तो उसे साविधिक रूप से प्रबंधक की डायरी देखनी चाहिए और उसपर अपने प्रतिहस्ताक्षर करने चाहिए ।

अध्याय 12

2 कास-कट क्षेत्र के पानी का परिकलन

1 वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने, 3 डिपडिस्ट्रिक्ट के अनेक भागो तथा अन्य निकटस्थ क्षेत्रों में भरे पानी की मात्रा तथा उस पानी की मात्रा के आधार पर जो संभवतः 7वीं और 8वी गैलरियो की छतो और रेत के ढेर की ऊपरी सतह के बीच तथा भरी हुई और खाली गैलरियो के रिक्त स्थानो में भर गया हो, के आधार पर "अचानक पानी घुस आने" के अपने सिद्धात को पुष्ट करने का प्रयास किया है निम्नलिखित बयान में जो तर्क प्रस्तुत किया गया है वह इस प्रकार है:—

"परिस्थियों को देखते हुए यह जान पड़ता है कि बड़ी मात्रा में पानी हाल ही में और तेजी से इकट्ठा हुआ था ; अन्यथा चूंकि 4 तल के खाली क्षत्र में अधिक से अधिक 12 लाख गैलन भर सकता है और वहां यदि 18 लाख गैलन पानी इकट्ठा हो गया तो निश्चित ही वहां छठे लेबल की गलरी मे पर्याप्त मात्रा में पानी रहा होगा जो 3 डिप क्षेत्र के नए कायस्थलों में भर गया ।"

2. मुझे उक्त आंकड़ो के बारे में बहुत शक है जो निश्चित ही बहुत सटीक न होने के साथ-साथ जल्दी मे जुटाए गए जान पड़ते हैं । जहां तक बाढ़ के पानी का प्रश्न है जो पेट हुए स्थल से होकर वहा, उसके विषय मे श्री ए० बी० सिंह का कथन इस प्रकार है —

"मेरा विचार है कि कटन विशेष से आने वाले पानी का लेखा-जोखा 30/11 से रखा गया था । 30 से पहले की गणना अनुमान मात्र है और उसके विषय में सही जानकारी कोयला खान में उपलब्ध पप द्वारा निकाले गए पानी के रिकार्ड से की जा सकती है ।"

3. उक्त पम्पन अभिलेख भी अदालत के समक्ष प्रस्तुत नहीं किए गए, हालांकि इनकी माग की गई थी ।

4. कोयला खान प्रबंधक, श्री ग्रोवर से भी सिन्हा-अहलूवालिया समिति के अनुबंध-8 मे दी गई मगणना (जो वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के प्रबंधक वर्ग द्वारा दिए गए आंकडो पर पूर्णत आधारित थी) के बारे में पूछताछ की गई ।

प्रश्न. क्या सिन्हा/अहलुवालिया समिति की रिपोर्ट के अनुबन्ध-8 में दी गई संगणना सही है ?

उत्तर. नहीं । उसमें अनेक गलतियां हैं ।

प्रश्न यदि बाढ़ लेवल का माप खान सुरक्षा महानिदेशालय की रिपोर्ट में दर्ज आंकड़ो के आधार पर लघुकृतस्तर 212.5 मीटर मान लिया जाए तो इन कार्यस्थला में कुल कितना पानी भर सकता था ?

उत्तर. लघुकृतस्तर (आर० एल०) 217 7 के आधार पर, संबद्ध स्तर तक पानी की मात्रा लगभग 8.96 गैलन होनी चाहिए थी ।

लघुकृतस्तर 215.6 पर पानी की मात्रा, जैसा कि लघुकृतस्तर सिन्हा-अहलूवालिया समिति को बताया गया है 13 6 लाख गैलन है । अदालत के सामने अब यह मात्रा 11 50 लाख बताई जा रही है । आर० एल० 211, पर पानी की मात्रा, जैसाकि सिन्हा-अहलूवालिया समिति को बताया गया, लगभग 11 लाख होगी; अदालत के समक्ष अब प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुसार उक्त मात्रा 6.77 लाख गैलन बताई गई है ।

5 श्री ग्रोवर ने अपनी मुख्य जिरह में किंचित चौंका देने वाला बयान देते हुए बताया कि 19-11-75 को उन्होंने लगभग 3 बजे रात में, दुर्घटना के तुरन्त पश्चात, कुछ नक्शों के आधार पर पानी की मात्रा से संबंधित ये गणनाएं की । जिरह के दौरान उन्होंने अपने बयान की व्याख्या करते हुए उसमें यह संशोधन किया कि उनकी गणना, भूगत कार्यस्थलो में तारीख 19-11-75 को रात्रि को 3 बजे जितना पानी था उसके आधार पर की गई थी और यह गणना तो वस्तुतः दिसम्बर, 1976 में किसी समय, अर्थात् मामले की जांच शुरु होने की तारीख से लगभग छः महीने बाद की गई थी । इस प्रकार के परिकलन से कोई उपयोगी निष्कर्ष नही निकाला जा सकता और मैं इनपर आगे भी कोई ध्यान नही दूंगा ।

अध्याय 13

सर्वेक्षक का कार्यभार

1. सर्वेक्षक श्री आर० के० जोशी ने अपने बचाव का दूसरा पक्ष, जो महत्वपूर्ण भी है, यह प्रस्तुत किया है कि उनको जितना काम सौंपा गया था वह वस्तुतः बहुत ज्यादा था और वह ऐसा था कि जिसकी वजह से वे भगत कार्यस्थलों के सर्वेक्षण से सम्बद्ध अपने सामान्य साविधिक कामो को भी संतोषजनक ढंग से निष्पादित करने में असमर्थ थे । इस मुद्दे पर बहस करते हुए वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड ने सर्वप्रथम यह कबूल किया कि दो अर्हता प्राप्त सर्वेक्षकों की साविधिक व्यवस्था होने के बावजूद सिलवाड़ा में श्री जोशी ही एकमात्र अर्हता प्राप्त सर्वेक्षक थे किन्तु उन्होने यह भी कहा है कि उन्हें अपने साविधिक कामो के निष्पादन के लिए पर्याप्त सहायता दी गई थी । उनके द्वारा दी गई दलील इस प्रकार है :

"सारांश में यह कहा जा सकता है कि श्री जोशी को जो सहायता दी गई थी वह पर्याप्त थी और सभी नेमी प्रकृति के तथा छोटे-मोटे काम उनके सहायक करते थे । फलतः श्री जोशी के पास अपने साविधिक कामो को देखने के लिए पर्याप्त समय था । यदि उन्होंने अपने साविधिक उत्तरदायित्वो की अपेक्षा की है तो वे स्वयं ही इसके जिम्मेदार हैं और वस्तुतः परिस्थितियां ऐसी नहीं थीं जो उनके साविधिक उत्तरदायित्वो के पालन में बाधक बनती ।"

2. सर्वेक्षक के प्रमुख कार्य एवं उत्तरदायित्व कोयलाखान विनियमावली, 1957 के विनियम 49 में विहित किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं :

"सर्वेक्षक :

(क) सही सर्वेक्षण तथा स्तरण (लेवेलिंग) करेगा और प्रबंधक के कहने अथवा अधिनियम की अपेक्षाओ के अनुसार नक्शे तथा सेक्शन बनाएगा और उनके अक्स भी तैयार करेगा । यह नक्शो, सेक्शनो तथा अक्सों पर अपने हस्ताक्षर भी करेगा ; तथा

(ख) जिन नक्शों तथा सेक्शन या उनके अक्सों पर उसके हस्ताक्षर होंगे, वह उनकी यथार्थता के लिए भी जिम्मेदार होगा ।

(2) सर्वेक्षक अपनी सजिल्द पुस्तिका में निम्नलिखित का रिकार्ड रखेगा :—

(क) जब खान के कार्यस्थल, सीमा से अथवा काम में न आ रहे जलग्रस्त कार्यस्थलो से 75 मीटर दूर रह गए हो तो उनके बारे मे संपूर्ण तथ्य ,

(ख) उक्त विनियमो के अधीन तैयार किए गए नक्शों तथा सेक्शनों के सही होने के बारे में पैदा हुए संदेह , तथा

(ग) नक्शों और सेक्शनों के बनाने से संबंधित कोई भी अन्य मामला जिसे वह प्रबंधक के ध्यान में लाना चाहेगा। पुस्तक की प्रत्येक प्रविष्टि पर सर्वेक्षक के तारीख सहित हस्ताक्षर होंगे और प्रबंधक उस पर तारीख सहित प्रतिहस्ताक्षर करेंगे।

(परन्तु यदि किसी खान में दो या दो से अधिक सर्वेक्षक होंगे तो प्रत्येक सर्वेक्षक अपने क्षेत्राधिकार के कार्य से संबंधित या अपने प्रभार वाले नक्शों और सेक्शनों से संबंधित प्रविष्टियों को करेगा)।

(3) उपविनियम (2) में उल्लिखित किसी भी बात के कारण मालिक, एजेंट या प्रबंधक इस अधिनियम और इन विनियमों या इनके अंतर्गत दिए गए आदेशों के अधीन अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं होगा।"

3. वैस्टर्न कोलफिल्ड्स लिमिटेड के अनुसार श्री जोशी को निम्नलिखित व्यक्तियों की सहायता प्राप्त थी:—

1. श्री बी० झा
2. श्री वामन गाडलू
3. श्री विठ्ठू सालामे
4. श्री रामकृष्ण येग्रोले
5. श्री गुलाब कोटेराव
6. श्री रामभान तुकाराम
7. श्री गुलाब छेदीलाल
8. श्री रामभान नारायण
9. श्री देवमन अमाडारे

} चेनमैन

4. श्री बी० झा नक्शानवीस सर्वेक्षक है। चेनमैन श्री वामन गाडलू को 24-10-75 को सहायक सर्वेक्षक के रूप में पदोन्नति हुई थी। वे एक प्रकार से अपंग थे। वह बाहर तो कुछ काम करते थे, लेकिन खदान में कभी नहीं जाते थे। उनकी पदोन्नति के कारण चेनमैन के रिक्त स्थान को 18-11-75 तक नहीं भरा गया। श्री विठ्ठू सालामे अनुरेखक हैं और पे० बी० लि० के अनुसार श्री जोशी को पर्याप्त सहायता देता होगा। परन्तु इस बात का प्रमाण मिलता है कि उक्त कामगार को कई बार अन्य कामगारों के साथ अन्य कोयला खानों में भेज दिया जाता था और उसे ऐसा काम करना पड़ता था जो सर्वेक्षण की परिधि में वस्तुतः नहीं आता। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि यह नहीं कहा जा सकता कि श्री जोशी को अपने सहायकों से सहायता नहीं मिली। श्री जोशी ने यह कहा है कि सौंपे गए सांविधिक कर्तव्यों के अतिरिक्त उन्हें कुछ असांविधिक प्रकार के काम भी दिए गए थे। परन्तु वे० को० लि० का कहना है कि तथाकथित अधिकांश असांविधिक काम सर्वेक्षक के कर्तव्यों की क्षेत्र परिधि में आते हैं। इस संदर्भ में मुझे श्री जोशी के तर्कों को मानने में कठिनाई हो रही है। परन्तु सुस्पष्ट तथ्य यह है कि कोयला खान में सांविधिक अपेक्षा के अनुसार एक अन्य सर्वेक्षक की कमी थी।

5. सर्वेक्षण उपस्कर के पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होने की बात श्री जोशी के पक्ष में है। उसने प्रबंधक को अधिक सर्वेक्षण उपकरणों और अपेक्षाकृत अधिक सही उपकरणों के जुटाने के लिए बार-बार लिखित प्रार्थना की थी, परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला। तीन सीमों और पांच सेलों वाली खान में केवल एक थियोडोलाइट थी। पोलैंड की अन्य थियोडोलाइट भी थी परन्तु यह कमी भी चालू हालत में नहीं थी। मरम्मत के लिए इसे कलकत्ता भेजा गया था। परन्तु मरम्मत के बाद भी यह अधिक समय तक नहीं चली। इसके अतिरिक्त एक समतलन उपकरण और डायल था जो चालू हालत में नहीं था। इसके विपरीत श्री झा ने कहा है कि दुर्घटना के तुरन्त बाद कोयला खान को एक थियोडोलाइट और एक नया डायल दिया गया था। अतः सही सर्वेक्षण उपकरण के जिस अभाव को स्वीकार किया गया है उससे इस मामले में सर्वेक्षक की जिम्मेदारी अधिक प्रभावित नहीं होती, क्योंकि यदि उपयोग के लिए अधिक उपकरण उपलब्ध भी होते तो उन्हें काम में लाने वाले सक्षम व्यक्ति पदासीन नहीं थे।

6. 16-2-74 को श्री जोशी ने खान प्रबंधक को एक नोट प्रस्तुत किया था (प्रदर्शन जे-7)। इसमें पहले की बनी हुई कुछ गैलरियों को चौड़ा करने को कहा गया था और अन्य बातों के साथ-साथ इसमें कहा गया था:

"यह बात आपके ध्यान में लाई जा चुकी है कि खान की क्षमता एक खान सर्वेक्षक की क्षमता से बढ़ गई है और खान के उत्पादन के अनुरूप विनियम के अनुसार एक अन्य सर्वेक्षक की आवश्यकता है।"

7. तीन महीने बाद श्री जोशी ने सर्वेक्षण उपस्कर और सर्वेक्षण कर्मचारियों की कमी के बारे में एक लंबा नोट (प्रदर्श जे-6) प्रस्तुत किया:

"सिलवाड़ा खान में अनेक विकास कार्य चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त विकासमान बहुमुखी पक्षों वाली नई सीम सं० 2 भी विकसित की गई है। अतः कार्यभार पर्याप्त मात्रा में बढ़ गया है। उपलब्ध एक ही थियोडोलाइट और सर्वेक्षकों की वर्तमान स्वीकृत संख्या को देखते हुए एक ही सर्वेक्षक द्वारा काम का पूरा किया जाना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त खान विभाग की सांविधिक अपेक्षाओं के अनुसार सिलवाड़ा 1 और 2 खानों में एक अतिरिक्त खान सर्वेक्षक की आवश्यकता है। उपर्युक्त परिस्थितियों में सर्वेक्षण कार्यों और सर्वेक्षण से संबंधित कार्यों को करने में अनेक कठिनाइयां अनुभव कर रहा हूं।

प्रार्थना है कि उपर्युक्त मामले में अपनी सम्मति की शीघ्र सूचना दें।"

8. इन टिप्पणों पर कोई स्पष्ट कार्रवाई नहीं की गई। सिलवाड़ा खान के उप-मुख्य इंजीनियर की ओर से कंपनी के मुख्य व्यक्तिक अधिकारी को लिखे गए तारीख 8-6-1973 के पत्र से ज्ञात होता है कि अतिरिक्त सर्वेक्षण कर्मचारी लेने का पहले का (दुर्घटना के 2 वर्ष से भी अधिक समय पहले) मात्र एक प्रयत्न किया गया जिसमें सुझाव दिया गया था कि कंपनी की अन्य परियोजनाओं के उन व्यक्तियों को सिलवाड़ा खान में स्थानान्तरित करके तैनात किया जाए जिनके पास काम नहीं है। यह पता नहीं चला कि इस पत्र का क्या ठोस परिणाम निकला।

9. वे०को०लि० ने खान के सर्वेक्षण अनुभाग में योग्य सर्वेक्षण कर्मचारियों की मानी हुई कमी को दूर करने के लिए अन्य कार्रवाई क्या की? इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापनों को छपवाया लेकिन उन्होंने अनुवर्ती कार्रवाई निष्ठापूर्वक नहीं की। जिस बात को मैं उपेक्षा नहीं कर सकता वह यह है कि सिलवाड़ा में होने वाले उत्पादन की तुलना में कम मासिक उत्पादन वाले वर्ग की अन्य कोयला खानों में सिलवाड़ा की तुलना में अधिक सर्वेक्षण कर्मचारी हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि दुर्घटना के तुरन्त बाद दो सर्वेक्षकों और एक सहायक सर्वेक्षक को सिलवाड़ा में नियुक्ति की गई।

10. इस बात को मानते हुए कि संबंधित कालावधि में सिलवाड़ा में सर्वेक्षण कर्मचारी कम थे, मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि सर्वेक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों में से अधिक आवश्यक कर्तव्यों को करने में और उन्हें पूरा करने में श्री जोशी को इससे बाधा हुई। रिपोर्ट में अन्य स्थान पर मैंने इस बात पर विचार किया है और अपने निष्कर्ष निकाले हैं।

अध्याय 14

सर्वेक्षक का उत्तरदायित्व

1 अब मैं इस मामले मे सर्वेक्षक श्री आर० के० जोशी की भूमिका पर और इस दुर्घटना के सबध मे उस पर डाली जाने वाली जिम्मेवारी पर, यदि कोई हो, विचार करूगा। अध्याय 13 के पैरा 2 मे मैं पहले ही विनियम 49 को उद्धृत कर चुका हू जिसमे सर्वेक्षक के कर्तव्यो और जिम्मेदारियो का उल्लेख है। जिन अन्य विनियमो की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है वे इस प्रकार हैं: विनियम 58, 59, 60, 63 और 64। अब मैं इन विनियमो को उद्धृत करता हू

2 "58. खानो के नक्शो के बारे मे सामान्य अपेक्षाएं

(1) विनियमो के उपबंधो के अनुसार बनाये गये या प्रस्तुत किये गये प्रत्येक नक्शे और सेक्शन मे निम्नलिखित बताना आवश्यक होगा

(क) खान का तथा उसके मालिक का नाम तथा नक्शा किस प्रयोजन के लिए बनाया गया है,

(ख) भौगोलिक उत्तर या चुम्बकीय याम्योत्तर तथा उसकी तिथि,

(ग) नक्शे का पैमाना जो कम से कम 25 सेंटीमीटर का होगा और जिसका उपयुक्त रूप से उपविभाजन किया गया होगा,

(घ) अन्यथा विहित न होने पर पैमाना 1200 : 1 का निरूपक होगा,

लेकिन मुख्य निरीक्षक लिखित आदेश द्वारा और उसमे निर्दिष्ट शर्तों के अधीन अन्य उपयुक्त पैमाने के अनुसार नक्शे बनाने की अनुमति दे सकता है या वैसे नक्शे बनवा सकता है; और

(ङ) नक्शा ठीक ढग से टिकाऊ कागज पर या अच्छे कपडे पर स्याही से बनाया जाएगा और अच्छी हालत में रखा जाएगा।

(2) विनियमो के अनुसार नक्शे और सेक्शन बनाने मे द्वितीय अनुसूची में बताई गई परिपाटियो का प्रयोग किया जाएगा।

(3) विनियमो के अनुसार बनाए गए नक्शे और सेक्शन सही होगे और अद्यतन रूप मे रखे जायेंगे अर्थात् वे तीन महीने से अधिक पुराने नही होगे:

परन्तु जहा किसी खान, सीम या सेक्शन को छोड़ने या उसके काम को बंद करने या उसे अगम्य बनाने का प्रस्ताव हो तो उसे छोड़ने से पहले या काम बन्द करने के समय, यथास्थिति, नक्शे और सेक्शन को अद्यतन किया जाए। परन्तु यदि इस प्रकार से छोड़ने या काम बन्द करने की परिस्थितियां मालिक, ऐजेंट या प्रबन्धक के नियंत्रण से परे हो तो उस हालत मे नक्शे या सेक्शन के ऊपर लिखा जाएगा कि वह अद्यतन नही है।

(4) विनियमो के अधीन बनाए और रखे जाने वाले नक्शे और सेक्शन खान मे निरीक्षण के लिए रहेंगे और क्षेत्रीय निरीक्षक की लिखित स्वीकृति के बिना वहां से तब तक नही हटाए जायेंगे जब तक कि वहां उनकी एक सत्यापित प्रति न रख दी जाए।"

3. "59. नक्शो के प्रकार

(1) प्रत्येक खान का मालिक, ऐजेंट या प्रबन्धक निम्नलिखित नक्शे और सेक्शन रखेगा

(क) सीमाओ के अन्दर तल पर टेलीफोन, तार या बिजली संप्रेषण की लाइन, जल प्रणाल, ट्रामलाइन, रेल मार्ग, सड़क, नदी, जलमार्ग जलाशय, तालाब, बोर-होल, शैफ्ट और इनलाइन ढाल, खुले खनि कार्यस्थल, उतार और इमारत जैसी सतही वस्तुओ को धरातल नक्शे पर दिखाया जाएगा।

(ख) भूमिगत नक्शे मे निम्नलिखित दिखाया जाएगा:

(1) जमीन के नीचे खान में कार्यस्थलो की अवस्थिति;

(2) गहराई के साथ प्रत्येक बोर-होल और शैफ्ट, इनलाइन ढाल, क्रास माप शिफ्ट, गोफ, अग्नि अवरोध या सील जलबंध (आयामों और निर्माण के अन्य ब्यौरो के साथ) पंपन केन्द्र और कर्षण मार्ग;

(3) सीमाओ के अंतर्गत रेलवे, सड़क, नदी, सरिता, जलमार्ग, तालाब जलाशय, खुला खनि कार्यस्थल और कार्यस्थलो के किसी भाग की 200 मीटर की परिधि मे कोई भवन जैसी प्रत्येक महत्वपूर्ण सतही वस्तुओ जो अनुप्रस्थ धरातल पर मापी गई हों,

(4) स्तर के डिप की वर्तमान दिशा और गति,

(5) सीम के वे सेक्शन जिनकी मोटाई या जिनके स्वरूप के तात्विक अंतर को दिखाना अपेक्षित हो, वह सेक्शन जो कार्यकर हो और वे स्तरी सेक्शन जो खान मे डूब गए या सिरक गए हों या बोरिंग से स्पष्ट दिखाई दे रहे हो;

(6) प्रत्येक रोल, प्रक्षाल वाहिका, डाइक की अवस्थिति और प्रत्येक क्षेप की मात्रा तथा उसके पात (थ्रो) की दिशा; और

(7) किसी विशिष्ट कार्यस्थल के बारे मे लगाए गए सांविधिक प्रतिबंधो का सार तथा उनको लागू करने वाले आदेश का संदर्भ।

जब कभी इस नक्शे को अद्यतन किया जाए तब कार्यस्थलो की तत्कालीन अवस्थिति को कार्यस्थलो के समापन्न स्थलो से गुजरती बिन्दु रेखा से दिखाया जाएगा और इस बिन्दु रेखा पर विगत सर्वेक्षण की तारीख लिख दी जाएगी।

(ग) जहा सीम की औसत आनति क्षितिज से 30 अंश अधिक हो वहा क्षेत्रीय निरीक्षक के निर्देशानुसार खनि कार्यस्थल के ऊर्ध्वाधर प्रक्षेप को दिखाते हुए एक या एक से अधिक ऊर्ध्वाधर खान सेक्शन दिखाए जाएं;

(घ) सवातन नक्शा और सेक्शन जिसमे जहां आवश्यक हो खान मे वायुसचरण की विधि को और विशेष रूप से निम्नलिखित को दिखाया जाए

(1) वायुधारा की सामान्य दिशा,

(2) प्रत्येक स्थान जहा हवा की मात्रा मापी जाती है;

(3) हवादारी का प्रत्येक स्थान, इस प्रकार का कोई दरवाजा, हवा के नियमन, वितरण तथा अवरोधन का प्रत्येक मुख्य साधन,

(4) प्रत्येक अग्नि अवरोधक तथा उसकी क्रम संख्या,

(5) ज्वलनशील सामग्री रखने वाला प्रत्येक कमरा,

(6) अग्नि-शमन उपस्कर की अवस्थिति,

(7) अपने आयामो और निर्माण के अन्य विवरणो के साथ प्रत्येक जलबांध,

(8) प्रत्येक पंपन, टेलीफोन तथा एम्बुलेन्स केन्द्र,

(9) प्रत्येक कर्षण और यात्रा मार्ग।

(ङ) उपर्युक्त पैमाने पर पट्टे वाले क्षेत्र का भूवैज्ञानिक नक्शा।

(2) उपनियम (1) के (ख), (ग) और (घ) खंडों के संदर्भ में प्रत्येक सीम के कार्यस्थलों या प्रत्येक सीम के अलग-अलग सेक्शन के लिए अलग-अलग नक्शे और सेक्शन रखे जाएंगे।

लेकिन उपनियम (1) की धारा (ख) के अंतर्गत बनाए तथा रखे गए नक्शों के अतिरिक्त उन सभी सीमों के, जो नौ मीटर के क्षेत्र में एक दूसरे के आसपास हैं और खान के अंतर्गत जिनमें काम हो रहा है, शामिल नक्शे भी बनाए जाएंगे। शामिल नक्शों में विभिन्न सीमों के कार्यस्थलों के अलग-अलग रंगों से दिखाया जाएगा।

(3) (क) उपविनियम (1) की धारा (क) और (ग) के अधीन बनाए तथा रखे गए नक्शों में पांच मीटर तक के ऊर्ध्वाधार अंतरालों पर सतही समोच्च रेखाएं बनाई जाएंगी।

(ख) उपविनियम (1) की धारा (ख) के अंतर्गत बनाए गए तथा रखे गये नक्शों में खनि कार्यस्थलों के नक्शों पर स्पाट लेवलों को इस प्रकार दिखाया जाएगा ;

(1) कर्षण मार्गों पर प्रत्येक मार्ग के संधि स्थल पर। परन्तु जहां ड्रमिंग श्रमिकों द्वारा किया जाता है वे स्थल इसके अपवाद होंगे। वहां स्पाट लेवलों को 150 मीटर की दूरी तक दिखाया जाएगा, और

(2) जो समासंधियां थोड़े समय के लिए या स्थायी रूप से विच्छिन्न कर दी गई हैं वहां इन समासंधियों के अंत में स्पाट लेवलों को दिखाया जाएगा।

यदि पत्थर में दो ड्रिफ्ट और कोयले में दो गैलरियां एक दूसरे के ऊपर पड़ती हों तो नक्शे में इस बात का स्पष्ट संकेत किया जाएगा और यदि आवश्यक हुआ तो समुचित टिप्पण भी दिया जाएगा।

(ग) सतह पर एक स्थायी बेंचमार्क लगाया जाएगा और जमीन के ऊपर और नीचे निर्धारित किए गए लेवलों का एक धरातल के साथ इस बेंचमार्क के संदर्भ में उल्लेख किया जाएगा। औसत सतह समुद्र से इस बेंचमार्क की ऊंचाई तथा अन्य विवरण इन विनियमों के अधीन रखे जाने वाले नक्शों पर दिखाए जाएंगे।

(4) (क) (1) उपनियम (1) की धारा (क) और (ख) के अंतर्गत नक्शों में खान की निर्धारित सीमा को दिखाया जाएगा और जहां सीमा विवादास्पद हो वहां वे सीमाएं दिखाई जाएंगी जिनका दावा संबंधित खान के मालिक और विवादास्पद सीमा के साथ वाली खान के मालिकों ने किया है। परन्तु जहां पट्टाधृति की संपूर्ण सीमा को एक ही नक्शे पर दिखाना संभव न हो वहां किसी अन्य उपयुक्त पैमाने पर एक अतिरिक्त निर्देश नक्शा बना कर रखा जाएगा और उसमें ऐसी सीमाओं को और खनि कार्य स्थल की रूपरेखा को दिखाया जाएगा।

(2) उपविनियम (1) की धारा (ख) के अनुसार रखे जाने वाले नक्शों में कार्यस्थलों के अतिरिक्त उस खंड में उल्लिखित उन सभी चीजों—जमीन के ऊपर और नीचे दोनों को दिखाया जाएगा जो 60 मीटर की परिधि में पड़ोसी खानों में हैं। ये चीजें सीमा के उसी धरातल पर दिखाई जाएंगी जिस पर उन खानों के मालिकों ने, उनके होने का दावा किया है।

(ख) ज्यों ही खान के कार्यस्थलों का क्षेत्र साथ वाली खान के साथ निर्धारित सीमा के अन्दर 60 मीटर तक (या उस सीमा से यह विवादास्पद सीमा 60 मीटर के अंदर है जिसका पड़ोसी खान के मालिक ने दावा किया है) फैल जाए तो प्रत्येक मालिक, ऐजेंट या प्रबन्धक पड़ोसी खान के मालिक, ऐजेंट या प्रबन्धक को इस विस्तार संबंधी तथ्य की सूचना देगा और पड़ोसी खानों के सर्वेक्षकों को इस उपनियम के अंतर्गत सर्वेक्षण और तलमापन करने की समुचित सुविधाएं देगा।

(5) (क) क्षेत्रीय निरीक्षक एक लिखित आदेश द्वारा इन विनियमों के अंतर्गत रखे जाने वाले नक्शों और सेक्शनों पर अतिरिक्त ब्यौरे देने तथा ऐसे अन्य नक्शे और सेक्शनों को तैयार करने तथा रखने के लिए कह सकता है जिनमें उन ब्यौरों, पैमाने तथा अवधि का उल्लेख हो जो वह अपने आदेश में विहित करे।

(ख) क्षेत्रीय निरीक्षक लिखित आदेश द्वारा मालिक, एजेंट या प्रबन्धक को निश्चित समय में ऐसे नक्शे और सेक्शन या उनके अनुरेखण अपने पास मंगवा सकता है जिन्हें वह अपने आदेश में विहित करे।

(ग) यदि क्षेत्रीय निरीक्षक चाहे तो मालिक, ऐजेंट या प्रबंधक को किसी भी समय नक्शे या सेक्शन पर खान के कार्यस्थलों की तत्कालीन अवस्थिति दिखानी होगी।"

4. "60. नक्शों और सेक्शनों की प्रस्तुत की जाने वाली प्रतियां, मालिक, ऐजेंट या प्रबंधक प्रत्येक वर्ष 31 अक्तूबर को या उससे पहले विनियम 59(1) को खंड (ख) और (ग) के अधीन रखे जाने वाले नक्शों और सेक्शनों की अद्यतन प्रतियां मुख्य निरीक्षक के पास भेजेगा। इस विनियम के उपबंधों का अनुपालन तब माना जाएगा जब मालिक, ऐजेंट या प्रबन्धक पिछले साल प्रस्तुत की गई प्रतियों को अपने खर्च पर अद्यतन करवा देगा।

5. "63 नक्शों, सेक्शनों और उपकरणों की सूचियां और उनका रख-रखाव :

(1) खान में रखे गए सभी नक्शों और सेक्शनों और अनुरेखणों पर क्रमसंख्या डाली जाएगी।

(2) प्रत्येक खान में प्रत्येक नक्शे, सेक्शन, सभी उपकरणों और सारी सामग्री को भंडार में रखने की समुचित व्यवस्था की जाएगी। इस व्यवस्था के अनुसार विनियम 59(1) के खंड (ख) और (ग) के अंतर्गत रखे गए प्रत्येक नक्शे और सेक्शन को बिना मोड़े रखा जाएगा।

(3) नक्शों और सेक्शनों के बनाने में काम में लाई गई प्रत्येक क्षेत्र पुस्तिका और अन्य टिप्पणों का विधिवत क्रमांकन किया जाएगा और उन्हें खान के कार्यालय में रखा जाएगा।

(4) इन विनियमों या उनके अधीन दिए गए आदेशों के अनुसार बनाए गए और रखे गए सभी नक्शों और सेक्शनों और उनके अनुरेखणों या उनकी प्रतियों तथा विनियमों 62 के अंतर्गत जिन सर्वेक्षण उपकरणों की व्यवस्था की गई है

उनके प्ररूपों, विशिष्टियों तथा पहचान संख्या तथा उपविनियम (3) के अंतर्गत रखी गई सभी क्षेत्र पुस्तिकाओं तथा अन्य टिप्पणों की सूची इस प्रयोजन के लिए बनाई गई पृष्ठ संख्या वाली सजिल्द पुस्तक में रखी जाएगी और उसे आवश्यकतानुसार अद्यतन किया जाएगा। पुस्तक की प्रत्येक प्रविष्टि पर सर्वेक्षक तारीख सहित हस्ताक्षर करेगा और प्रबंधक उस पर तारीख सहित प्रतिहस्ताक्षर करेगा।

6. "64. सर्वेक्षकों द्वारा नक्शे तैयार करना :

(1) इन विनियमों के अंतर्गत तैयार किया जाने वाला प्रत्येक नक्शा तथा सेक्शन और अनुरेखण या तो सर्वेक्षक द्वारा या उसका निजी देख-रेख में तैयार किया जाएगा।

(2) सर्वेक्षक द्वारा या उसकी देख-रेख में बनाये गए प्रत्येक नक्शे, सेक्शन या उसके किसी भाग पर सर्वेक्षक का प्रमाण-पत्र होगा कि नक्शा, सेक्शन या उसका कोई भाग सही है। और प्रत्येक अवसर पर प्रबंधक उस पर इसलिए तारीख सहित हस्ताक्षर करेगा कि नक्शा या सेक्शन अद्यतन कर लिया गया है।

(3) नक्शे या सेक्शन या उसके किसी भाग के प्रत्येक अनुरेखण पर उस मूल नक्शे या सेक्शन का संदर्भ दिया जाएगा जिससे इसकी नकल की गई है तथा उसे सर्वेक्षक द्वारा प्रमाणित किया जाएगा कि यह मूल नक्शे या सेक्शन की यथार्थ प्रति है। सर्वेक्षक प्रमाणपत्र पर तारीख सहित हस्ताक्षर करेगा।

(4) यदि सर्वेक्षक नक्शे आदि में खनि कार्यस्थल के किसी भाग को नहीं दिखाता है या दिखाने में छूट जाता है या उसके नक्शे या सेक्शन सही नहीं हैं तो वह इन विनियमों के अनुपालन न करने का दोषी है। इस उपविनियम की कोई बात मालिक, एजेंट या प्रबंधक को इस उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं करेगी कि इन विनियमों या उनके अधीन दिए गए किसी आदेश के अंतर्गत तैयार किया गया, रखा गया, या प्रस्तुत किया गया प्रत्येक नक्शा या सेक्शन सही है और इन विनियमों की अपेक्षाओं के अनुसार अद्यतन रखा जाता है।"

7. श्री जोशी के तर्क का सबसे बड़ा जोर इस पर था कि उसने स्वयं 2 क्रास कट क्षेत्र का सर्वेक्षण नहीं किया था। इस क्षेत्र का सर्वेक्षण 31-3-69 को हुआ था (जब वे नहीं थे) इसलिए इन खनि कार्यस्थलों के नक्शों की किसी भी गलती के लिए उन्हें जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। अध्याय 7 में कहा गया है कि पुराने नक्शे प्रायः सही थे और त्रुटि यह रही कि 3-डिप डिस्ट्रिक्ट के खनि कार्यस्थलों का उनके बढ़ते हुए रूप को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण नहीं किया गया। इसकी मुख्य जिम्मेदारी सर्वेक्षक की है। इन खनि कार्यस्थलों की अवस्थिति को प्रबंधक के कमरे में टंगे नक्शे में 1 : 2400 पैमाने के अनुसार दिखाया गया था और वह भी गलत अनुस्थापन पर।

8. वै० को० लि० ने अपने लिखित बयान में विगत सर्वेक्षण की तिथि 31-3-69 बताई है। इसमें बाद में संशोधन किया गया और इसे 30-6-72 कर दिया गया। उक्त तारीख श्री जोशी से की गई जिरह के दौरान प्रस्तुत किए नक्शों और मानचित्रों के प्रकाश में बदली गई। यद्यपि इनके प्रस्तुत किए जाने का विरोध श्री जोशी की ओर से किया गया, फिर भी मैंने इन्हें इसलिए स्वीकार कर लिया कि इनकी स्वीकार्यता बाद में उस समय देख ली जाएगी जब वे इस जांच के विवादास्पद मुख्य विषय पर कुछ जानकारी या अन्य संकेतसूत्र देंगे अर्थात् वे उन परिस्थितियों को बताएंगे जिनमें उक्त दुर्घटना हुई। मैंने इन्हें इसी तरह स्वीकार किया जिस प्रकार मैंने श्री जोशी द्वारा प्रस्तुत किए गए उस दस्तावेज (प्रदर्श जे०-41) को उनकी जिरह के दौरान स्वीकार किया जिसकी जानकारी उन्हें उनके बयान के केवल दो दिन पहले मिली थी। वै० को० लि० द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेजों का उद्देश्य यह दिखाना था कि प्रदर्श सी-2 और सी-3 दोनों में बहुत ज्यादा फेर-बदल और पीट हुई है। यह काम केवल श्री जोशी ही कर सकते थे। अध्याय 7 के पैरा 5-1 में मैं पहले ही इन दो दस्तावेजों का उल्लेख कर चुका हूं। वै० को० लि० का दावा था कि प्रदर्श, सी-3 कोयला-खान का मास्टर नक्शा है, जबकि खा० सु० म० लि० और श्री जोशी का कथन है कि प्रदर्श सी०-2 मास्टर नक्शा है। इन दस्तावेजों में फेरबदल के स्पष्ट संकेत मिलने के कारण यह विवादास्पद प्रश्न संदेहास्पद बन गया था कि क्षेत्र का सर्वेक्षण 31-3-69 को हुआ था या 30-6-72 को (श्री जोशी खान में 1967 से अप्रैल 1969 तक सहायक सर्वेक्षक थे; कोयला खान से दो वर्ष की अनुपस्थिति के बाद वे अप्रैल 1972 में सर्वेक्षक के रूप में आए और वे नवम्बर 1975 की दुर्घटना तक इसी पद पर काम करते रहे थे)। वै० को० लि० के इस तर्क को मानना और उनके साथ यह निष्कर्ष निकालना मेरे लिए कठिन है कि श्री जोशी ने दुर्घटना के एकदम बाद कागजों में फेर-बदल और काट-पीट की। मैंने इस प्रश्न पर रिपोर्ट में अन्यत्र (अध्याय 7) में विस्तारपूर्वक चर्चा की है। मेरा विचार है कि श्री जोशी से हो रही जिरह के दौरान वै० को० लि० द्वारा प्रस्तुत किए गए उक्त दस्तावेजों से उनके द्वारा निकाले गए निष्कर्ष को संतोषप्रद आधार नहीं मिलता।

9. अब मैं इस विषय पर अपने विचार प्रकट करता हूं कि क्या श्री जोशी ने कोयला खान विनियम की अपेक्षा के अन्तर्गत कोई गलती की है। यदि हां तो क्या उनके स्पष्टीकरण का कोई पर्याप्त आधार है। अब मैं यहां श्री जोशी से की गई जिरह के दौरान वै० को० लि० द्वारा किए प्रश्नों तथा संबंधित उत्तरों को उद्धृत कर रहा हूं।

10. श्री जोशी द्वारा अपनी डायरी से ता० 20-10-75 को की गई प्रविष्टि (मैंने इसे अपर्याप्त प्रमाणिक नहीं माना है, बल्कि दुर्घटना के बाद का क्षेपक माना है) तथा विनियम 49(2), (ख) और (ग) के लागू होने के संदर्भ में ;

प्रश्न : जब आपने 20-10-75 को प्रविष्टि की थी तब आप जानते थे कि 30-9-75 को समाप्त होने वाली तिमाही के लिए उस क्षेत्र का त्रैमासिक सर्वेक्षण नहीं किया गया था। क्या विनियम 49(2) (ख) और (ग) के अन्तर्गत "पूरे तथ्य" शब्द के विनियमन के अनुसार यह एक महत्वपूर्ण तथ्य नहीं था?

उत्तर : मैं विनियम को पूरी तरह जानता था। मैं कार्यभार से अत्यधिक दबा हुआ था। इसके अतिरिक्त मैं पूरे महीने छुट्टी पर था। मुझे दूसरे काम की भी देखभाल करनी पड़ती थी। जहां तक संभव हो सका मैंने काम किया।

11. जल खतरा नक्शे के बारे में :

प्रश्न : यदि जल खतरा नक्शा अद्यतन नहीं किया गया था तो यह किस का दोष था?

उत्तर : पर्याप्त संख्या में सर्वेक्षक न देने से यह प्रबंधकों का दोष था।

12. प्रति दिन सर्वेक्षण माप लेने के विषय में :

प्रश्न : प्रति दिन माप न लेने के लिए दोषी कौन है?

उत्तर : चूंकि मैं अकेला ही सर्वेक्षक था, अतः मैं यथा संभव कार्य कर रहा था और मेरे पास काम बहुत अधिक था।

13. श्री जोशी अपनी गलती मानते हैं और उन्होंने अपने बचाव में दो तर्क दिए हैं :

एक तो यह कि उन्हें पर्याप्त स्टाफ नहीं दिया गया था और इससे कहीं अधिक खराब स्थिति वह थी कि उन्हें पर्याप्त तथा सही उपकरण नहीं दिए गए थे। दूसरे, प्रबंधक वर्ग ने उन पर बहुत ज्यादा दबाव डाला और उन्हें फंसाने की कोशिश की। मैंने पहले तर्क पर अलग से विचार किया है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस में कुछ सार है।

14. मेरे विचार में श्री जोशी ने विनियम 58 (3) का (परन्तुक की अपेक्षाओं के अनुसार उपयुक्त नोट न बनाकर), विनियम 49 (2) का (चूंकि उनका कहना है कि उन्हें बाढ़ की जानकारी थी किन्तु वे "पूरे तथ्यों" का उल्लेख न कर सके; सर्वेक्षक की डायरी में उनकी प्रविष्टि, किसी भी रूप में मौलिक नहीं है), विनियम 58 (3) के साथ पढ़े जाने पर विनियम 64 (4) (चूंकि प्रदर्श-सी-2 को, जिसे सर्वेक्षक डोयला खान का मास्टर प्लान मानते हैं, 30-9-74 के बाद प्रत्येक तिमाही के लिए अद्यतन नहीं बनाया गया) का उल्लंघन किया है। स्वयं श्री जोशी ने यह भी स्वीकार किया है कि उन्होंने 3-डिप डिस्ट्रिक्ट का सर्वेक्षण नहीं किया था; यह डिस्ट्रिक्ट जून, 1975 में शुरू किया गया था।

15. क्या किन्हीं कारणों से उक्त प्रकार के उल्लंघनों की गंभीरता को कम किया जा सकता है, इस विषय पर मैं पृथक से विचार करूंगा।

अध्याय 15

विनियम 127 का लागू होना

1. अब मैं इस बात पर विचार करूंगा कि विनियम 127 का कौन-सा उप-विनियम इस मामले में लागू होता है। खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर ने अपनी जांच-रिपोर्ट में यह माना है कि दुर्घटना प्रबंधक-वर्ग द्वारा विनियम 127 (1), (3) तथा (5) का पालन न किए जाने के कारण हुई। मैं विनियम 127 के छह उप-विनियम नीचे उद्धृत कर रहा हूं :

2. भूमिगत बाढ़ से खतरा :

(1) प्रत्येक खान में इस बात की समुचित व्यवस्था की जाएगी कि, संबद्ध खान अथवा पड़ोस वाली खान के कार्यस्थलों से पानी अथवा कोई अन्य तरल पदार्थ फूट कर न बह निकले।

(2) जहां काम :

(1) किसी अन्य सीम या सेक्शन के नीचे की किसी सीम या सेक्शन में किया जा रहा हो, या

(2) सीम या सेक्शन के किसी ऐसे स्थान पर किया जा रहा हो जो निचली सीम या सेक्शन में किसी अन्य स्थान से भी नीचे हो; या

(3) किसी ऊपरी सीम या सेक्शन के बीच वाले स्थान तक फैलने वाली किसी सीम में किया जा रहा हो और जिसमें पानी अथवा कोई अन्य तरल पदार्थ भरा हो या भर सकता हो; वहां कार्यस्थलों में पानी अथवा तरल पदार्थ को फूट निकलने से रोकने के लिए पर्याप्त पूर्वोपाय किए जाएंगे।

(3) किसी ऐसे कार्यस्थल को, जो उसी खान अथवा किसी अन्य पड़ोस वाली खान के अप्रचलित बेकार अथवा परित्यक्त कार्यस्थल से 60 किलोमीटर दूर रह गया हो (उन कार्यस्थलों को छोड़कर जिनकी जांच कर ली गई है और जिनमें किसी प्रकार का पानी या तरल पदार्थ एकत्र नहीं है), मुख्य निरीक्षक की लिखित रूप में पूर्व अनुमति प्राप्त किए बिना और आगे नहीं बढ़ाया जाएगा और उसका विस्तार भी उक्त अनुमति में मुख्य निरीक्षक द्वारा विहित शर्तों के अधीन ही किया जाएगा :

लेकिन यदि पास पहुंचने वाले कार्यस्थल में असामान्य रूप से भारी रिसन देखने में आए और वह उपरोक्त प्रकार के अप्रचलित अथवा परित्यक्त कार्यस्थल से 60 मीटर की दूरी के भीतर न हो तो उक्त कार्यस्थल में चल रहे खनिकार्य को तुरन्त रोक दिया जाएगा और उसकी सूचना प्रमुख निरीक्षक तथा क्षेत्रीय निरीक्षक को तत्काल दी जाएगी। खनिकार्य को मुख्य निरीक्षक की लिखित रूप में अनुमति प्राप्त किए बिना और आगे नहीं बढ़ाया जाएगा और उसका विस्तार उक्त अनुमति में मुख्य निरीक्षक द्वारा विहित शर्तों के अधीन किया जाएगा।

व्याख्या : इस उप-विनियम के प्रयोजन से उक्त कार्यस्थलों के बीच की दूरी का आशय, यथास्थिति उसी सीम या किन्हीं दो सीमों या सेक्शनों के बीच की न्यूनतम दूरी से होगा जो क्षैतिज, ऊर्ध्वाधर या तिर्यक-किसी भी दिशा में मापी गई हो।

(4) उप-विनियम (3) के अधीन अनुमति प्राप्त करने के प्रत्येक आवेदन के साथ उक्त अप्रचलित अथवा परित्यक्त कार्यस्थलों की, उन कार्यस्थलों को ध्यान में रखते हुए जो संबद्ध कार्यस्थलों के निकट पहुंच रहे हैं, रूपरेखा दर्शाने वाले एक नक्शे तथा सेक्शन की दो प्रतियां भी भेजी जाएंगी। साथ ही उक्त कार्यस्थलों के बारे में उपलब्ध अन्य सूचना भी आवेदन के साथ भेजी जाएगी।

(5) उक्त प्रकार का कोई भी कार्यस्थल चौड़ाई अथवा ऊंचाई में 2.4 मीटर से अधिक नहीं होगा और कार्यस्थल पलक के बीचों-बीच से कम एक बोर होल अवश्य रखा जाएगा तथा उसके प्रत्येक पलक में पर्याप्त पार्श्व छिद्र (फ्लैंक होल) रखे जाएंगे और, जहां आवश्यक होगा, कार्यस्थलों के ऊपर नीचे बोर होल भी कर लिए जाएंगे किन्तु वे एक दूसरे से 5 मीटर से अधिक दूरी पर नहीं होंगे। ऐसे सभी बोर होल कार्यस्थलों में पहले से ही काफी दूरी पर बना दिए जाएंगे और उन्हें बराबर बनाए रखा जाएगा; इनके बीच की दूरी किसी भी स्थिति में 3 मीटर से कम नहीं होगी। इन पूर्वोपायों को, उक्त प्रयोजन के लिए विशेष रूप से प्राधिकृत सक्षम व्यक्ति के सीधे पर्यवेक्षण में क्रियान्वित किया जाएगा।

(6) उपविनियम (5) में विहित किए गए पूर्वोपायों को उन अन्य कार्यस्थलों में भी लागू किया जाएगा जहां पानी भारी मात्रा में रिसता हुआ पाया जाए, भले ही वह किसी अप्रचलित या या परित्यक्त कार्यस्थल तक पहुंच रहा हो अथवा नहीं।

3. मै० को० लि० अपनी दी दलीलों में यह बताने का प्रयास किया है कि विनियम 127 के विभिन्न उपविनियमों का विकास किस प्रकार हुआ। एक ओर साधारण जलग्रस्त कार्यस्थलों, तथा दूसरी ओर अप्रचलित अथवा परित्यक्त कार्यस्थलों में अंतर करने के पश्चात् उन्होंने यह तर्क दिया है कि उपविनियम (2) तथा (6) साधारण जलग्रस्त के कार्यस्थलों के मामले में लागू होते हैं, जबकि उपविनियम (3), (4) और (5) जलग्रस्त अप्रचलित या परित्यक्त कार्यस्थलों के मामलों में लागू होते हैं। उक्त स्थिति से यह तर्क पेश किया गया है कि चूंकि 2 क्रास कट डिप के कार्यस्थल न तो अप्रचलित थे और न ही वे परित्यक्त थे, अतः उप-विनियम (2) तथा (6) इस विषय में लागू नहीं होते और साधारण जलग्रस्त कार्यस्थलों के मामले में लागू होने वाले उपविनियम (2) और (6) भी यहां लागू नहीं होंगे क्योंकि संबद्ध कार्यस्थल पूर्णतः सूखे थे और इनके मामले में जो उपविनियम लागू हो सकता है वह है केवल उपविनियम (1)। आगे की दलील इस प्रकार है :

> "निवेदन है कि उपविनियम के सभी उपबन्धों का समय पर पूरी तरह से पालन किया गया था क्योंकि कम से कम 5 मीटर मोटी रोक वहां थी, जैसा कि नक्शे में 8 वें लेवल के नीचे 2 क्रास कट टिप तथा 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के 9वें पूर्वी लेवल के बीच दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त, रिसन का पता लगने पर समुचित पूर्वोपाय भी किए गए जिनका विशद उल्लेख इस लिखित दलील में अन्यत्र किया गया है।"

4. सारांश रूप से ऊपर प्रस्तुत किए गए तर्कों को मैं काफी हद तक स्वीकार करता हूं, विशेषतः उस अंश, को जिसमें यह कहा गया है कि विनियम 127(2) पूर्णतः जलग्रस्त कार्यस्थलों के मामले में लागू होता है। इस तर्क की पुष्टि, मध्य प्रदेश के उच्च न्यायालय द्वारा जबलपुर में 1965 की दण्डिक अपील संख्या 222 में भी की गई है। अब यह जानना

आवश्यक है कि इस विनियम में प्रयुक्त अप्रचलित अथवा परित्यक्त कार्यस्थल शब्दों का प्रयोग किन अर्थों में हुआ है।

5. सर्वेक्षक श्री जोशी की ओर से यह दलील दी गई है कि विनियम 127(3) तथा (5) इस मामले में प्रत्यक्षत. लागू होते हैं, अतः विनियम 149 (2) के लागू होने का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है और ऐसी स्थिति में बाद के उपविनियम के अधीन सर्वेक्षक का जो भी दायित्व बनता, वह भी स्वतः समाप्त हो जाता है क्योंकि 3 डिप डिस्ट्रिक्ट शुरु से ही भरे गए क्षेत्र (अप्रचलित कार्यस्थलों) से 50 मीटर के अन्दर था और प्रबन्धक वर्ग द्वारा विनियम 127 (3) तथा (5) के उपबन्धों का पालन न किए जाने के कारण सर्वेक्षक, संपूर्ण उत्तदायित्व से मुक्त हो जाता है। खानों में भूमिगत कार्यस्थलों में सिरदारों द्वारा की जाने वाली जांच तथा निरीक्षण से संबंधित विनियम 113 के मूलपाठ तथा उसकी व्याख्या के आधार पर यह तर्क दिया जाता है कि विनियम 127 के उप विनियम (3) तथा (5) इस मामले में लागू नहीं होते :

> "अतः इस विनियम में प्रयुक्त कार्यस्थलों की व्याख्या की गई है। अन्य सभी कार्यस्थलों या तो अप्रयुक्त अथवा अप्रचलित कहे जाएंगे, अन्य अनेक विनियमों में 'अप्रयुक्त' शब्द का भी प्रयोग किया गया है। समान्यतः अप्रयुक्त का अर्थ होगा कि खान में संबंधित स्थान का प्रयोग किसी कारणवश कुछ समय के लिए रोक दिया गया है। फिर भी ऐसे स्थानों का निरीक्षण करना भी आवश्यक होता है। अप्रचलित उस स्थान को कहा जाएगा जहां किसी प्रकार का निरीक्षण संभव भी न हो। उदाहरणार्थ उसी स्थान को, जहां खंभों को गिरा दिया गया है या जहां पूरी या आंशिक भराई कर दी गई है, अप्रचलित कार्यस्थल कहा जाएगा। इस प्रकार छठे स्तर के नीचे 2 क्रास कटडिप को भी, जहा पहुचना छत गिर जाने के कारण संभव नहीं था और जिसका निरीक्षण नही किया गया, अप्रचलित कार्यस्थल ही माना जाएगा। प्रथम क्रास कट टिप के आगे के क्षेत्र को हर स्थिति में अप्रचलित कार्यस्थल ही माना जाएगा क्योंकि उस क्षेत्र में जाना किसी के लिए भी संभव नहीं है।"

6. श्री जोशी की ओर से अप्रचलित या परित्यक्त कार्यस्थल के अर्थ तथा उसकी परिभाषा के संबंध में दिया गया यह तर्क मेरी समझ में नही आता। कोयला खान विनियमो में कहीं भी उक्त दो पदो की कोई निश्चित परिभाषा नही की गई है। मैं अप्रचलित का सामान्य प्रचलित अर्थ लगाता हूं कि यह खान का वह भाग है, जिसे कभी काम मे लाया गया था और जो अब किसी कारणवश काम मे न आ रहा हो, किन्तु पूरी तरह उसका परित्याग भी न किया गया हो। 'परित्यक्त' शब्द का कुछ आभास विनियम 6, में मिलता है, जिसमें किसी कार्यस्थल के परित्याग अथवा उसे चालू न रखने के विषय में दिए जाने वाले नोटिसो का ब्योरा दिया गया है। इस विनियम को बारीकी से पढने तथा वैस्टर्न कोल फिल्डस् लिमिटेड की ओर से प्रस्तुत किए गए तथ्यों पर (यथा, 2 क्रास कट डिप के कार्यस्थलो को भी नही छोड़ा गया और 2 क्रास कट से पानी निकालने का काम दिसंबर, 1974 तक पूरा कर लिया गया था; इसके तुरन्त बाद संबद्ध क्षेत्र में पश्चिम की ओर स्थित कोयले के सुरक्षित भण्डार को निकालने की योजना तैयार कर ली गई और, जहा आवश्यक समझा गया, खान सुरक्षा महानिदेशालय के प्राधिकारियों की अनुमति प्राप्त करने के लिए कार्रवाई भी शुरू कर दी गई थी) समुचित विचार करने के पश्चात् मुझे इस बात में संदेह होता है कि क्या इस क्षेत्र को सही अर्थों मे परित्यक्त कार्यस्थल कहा जा सकता है। उपर्युक्त की दृष्टि से मेरा विचार है कि इसमें जो विनियम लागू होता है वह विनियम 127 का उपविनियम (1) है।

7. ऊपर बताई गई स्थिति कि यहा उप-विनियम (3), (4) और (5) को लागू न होकर केवल उप-विनियम (1) लागू होगा, अधिक संतोषजनक नही है क्योंकि मेरे विचार में उप विनियम (5) मे उल्लिखित पूर्वोपाय पूर्णतः पानी की जमाव की स्थिति में लागू होने चाहिए भले ही पानी का रिसना न देखा गया हो। यदि सरकार इस बात से सहमत है तो वह कोयला खान विनियमावली में समुचित संशोधन करना चाहेगी।

8. जहां तक उप-विनियम (1) का संबंध है मैं वैस्टर्न कोलफील्डस् लि० की इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि उसने इस उपबंध का पूरी तरह पालन किया है। यह नहीं माना जा सकता कि उसने समुचित पूर्वोपाय किए थे क्योंकि 8वें लेवल के नीचे के 2 क्रास कट पूर्व ओर 3 डीप क्षेत्र के 9वें पूर्वी लेवल के बीच कोई उपयुक्त रोक नही थी। ऐसी किसी रोक की न तो कोई योजना बनाई गई थी और न लगाई गई थी। दूसरे, पानी के रिसने को देखने के बावजूद मेरे द्वारा अध्याय 8 के पैरा 3-7 में बताए गए कारणों से समय पर समुचित पूर्वोपाय नहीं किए गए थे।

अध्याय 16

3 डिप क्षेत्र की योजना और विकास

1. कुछ पार्टियो ने प्रबंधकों के इस निर्णय के औचित्य पर संदेह प्रकट किया है कि 3 डिप क्षेत्र जिसे प्रारंभ में अक्रिय स्थल के रूप में रखने का विचार था वहां बाद में काम क्यों शुरू किया गया। इस क्षेत्र में कार्य करने की योजना संभवतः नं० 4 निम्न तल ईस्ट डिस्ट्रिक में खंभे तोड़ने के बाद जब 2 क्रास कट डिप में से पानी निकाला गया (प्रबंधको के अनुसार दिसंबर, 1974 में) तो उसके तत्काल बाद 1975 को प्रारम्भ में बनाई गई। इस क्षेत्र को तैयार करने की योजना के पीछे जो उद्देश्य थे वे महाप्रबंध श्री० बी० शाह, सब एरिया प्रबंधक श्री एस० राधाकृष्णन, एजेंट श्री बंसल और खान प्रबंधक श्री ग्रोवर के बयानों में स्पष्ट किए गए हैं। श्री शाह के शब्दों में :

> "आग लगने या समय से पहले खान ढह जाने अथवा खान संबंधी अन्य संकटों की दृष्टि से हमने कान्वेयर और सामग्री कर्षण इन्क्लाइनों के नजदीक एक अछूता खंड छोड़ देना सुरक्षित नहीं समझा और यह निश्चय किया गया कि बिना तोड़े छोड़े गए अन्य खंभों (नं० 4 निम्न तल ईस्ट क्षेत्र) के साथ-साथ इस खंड को भी विकसित करके इसके खंभे तोड़ दिए जाएं।
>
> इसका उद्देश्य यह था कि आग से बचने के लिए पूर्वी क्षेत्र को दोनो इन्क्लाइनों से अलग कर दिया जाए। हमारा यह भी इरादा था कि डिप गैलरी, कान्वेयर और कर्षण सप्लाई ड्रिफ्टों को पानी भर जाने से बचाने के लिए एक हौदी बनाई जाए तथा साधारण के पहलू को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित ढग से कोयला निकाला जाए। अंतिम रूप से हौदी केवल तभी बनाई जा सकती थी जब हम निम्न तल के सैक्टर सी में पहुंच जाते। तब तक भूमिगत जल से निपटने के लिए कोई वैकल्पिक उपाय किया जाना था और इसके लिए हौदी की सदैव आवश्यकता बनी रहती और इसी कारण से हमने इस हौदी को बनाने का निश्चय किया।"

खान प्रबंधक श्री ग्रोवर के शब्दो में :

> "3 डिप क्षेत्र को बनाने का उद्देश्य यह था कि अछूते खंड से कोयला निकाला जाए और साथ ही एक हौदी बनाई जाए जो नं० 1 इन्क्लाइन में लगाए गए बेल्ट कान्वेयर के पिछले सिरे को बारबार पानी से डूब जाने से बचाने के लिए आवश्यक था ताकि पानी के रुख को इन्क्लाइन वाले भाग से प्रस्तावित नई हौदी की ओर मोड़ा जा सके। यह हौदी सैक्टर सी के विकास की प्रारंभिक अवधि में भी काम आ सकती थी।"

2. इसका इरादा यह प्रतीत होता है कि 5वें डिप के 9वें लेवल ईस्ट के उपयुक्त स्थलों पर 3 डिप निम्न तलो से छत पर बोर होलो द्वारा शीर्ष हौदी का पानी निकाला जाए और शीर्ष सेक्शन के विकास को आसान बनाया जाए।

3 साधारण और सुरक्षा की दृष्टि से ऐसा करना बहुत आपत्तिजनक नहीं माना जा सकता परन्तु जिस ढग से इसे प्रारम्भ करके कार्यरूप दिया गया उसमे काफी गुंजाइश थी।

4. खान सुरक्षा निदेशक को खंभे तोड़ने की अनुमति का आवेदन (3-डिप क्षेत्र में सीम के निचले और शीर्ष सेक्शन में) देने के बाद जून, 1975 में निम्न तल सेक्शन में विकास कार्य शुरू किया गया। शुरू में जो प्रोजेक्शन बनाए गए थे वे प्रदर्श-डी-9 में दिखाए गए हैं, यह प्रदर्श खंभे तोड़ने के लिए आवेदन पत्र के एक भाग के रूप में निदेशालय को प्रस्तुत किया गया नक्शा है। बैं० को० लि० के अनुसार:

"वास्तविक कार्य के दौरान छतें बहुत खराब हालत में पाई गई जिसके कारण यथासंभव चौमुखे संगमों से बचना पड़ा और तिरछी लेवल गैलरियों से आना जाना पड़ा, मूल प्रोजेक्शनों का अनुसरण न करने का कारण यह था कि डिप साइड की तरफ 7वें लेवल तथा उससे आगे के क्षेत्र में छत की हालत खराब थी"

इसके पश्चात् प्रबन्धक ने सर्वेक्षक को नए सिरे से प्रोजेक्शन बनाने के लिए कहा ताकि नए खंभे विनियम 99 में उल्लिखित सबसे छोटे आकार के अनुसार बनाए जा सकें।

5. बैं० को० लि० के इन सब तर्कों से यह बात स्पष्ट नहीं होती कि कुछ लेवल और उठान गैलरियां बीच में क्यों रोक दिए गए और 7वें लेवल तथा 8वें लेवल ईस्ट को 2 क्रास कट से क्यों नहीं जोड़ा गया? खान सुरक्षा महानिदेशक के अनुसार इसका एक हो सीधा साधा कारण था और वह यह कि कोलियरी अधिकारियों को यह पता था कि 2 क्रास कट डिप में पानी भरा है और यदि इसे जोड़ने का प्रयास किया गया तो जमीन के अन्दर पानी भर जाएगा। मुझे इस बात में काफी तथ्य नजर आता है। 3-डिप क्षेत्र के भूमिगत नक्शे को देखने से पता चलता है कि हर समय काफी किनारे किनारे होकर चलने के कारण काम करना कितना कठिन हो गया था। इसके कारण 9वें ईस्ट की मध्य रेखा में नवम्बर 1975 में लेवल के उठान की और पानी का रिसन नजर आने से तत्काल पहले परिवर्तन करना पड़ा। निस्सन्देह इस क्षेत्र में हवा के आने-जाने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। बैं० को० लि० की ओर से इस बात पर काफी बल दिया गया। यद्यपि अदालत ने अपनी जांच के दौरान वास्तविकता को इसके विपरीत ही पाया कि डिस्ट्रिक्ट के कार्यस्थल में कोलियरी अधिकारियों ने छत को बहुत खराब हालत में पाया और यह इस बात से बचने का ही प्रयास था जिसके कारण उन्हें किनारे किनारे होकर चलना पड़ा। जहां तक 2 क्रास कट को जोड़ने में असफलता का प्रश्न है, इसके लिए यह दलील दी गई कि प्रबन्धक सैक्टर-सी को तैयार करने के लिए डिप साइड के विकास पर अधिक ध्यान देना चाहता था क्योंकि सैक्टर सी को ही कोलियरी का भावी आधार समझा जा रहा था। ये सब बातें मुझे बहुत विश्वसनीय नहीं लगतीं। मुझे इस बात पर संदेह नहीं है कि इस क्षेत्र में पानी जमा हो जाने की बात कोलियरी अधिकारियों के दिमाग में थी। 3-डिप निम्न तल क्षेत्र में छोटे (आकार में) खंभे तैयार करवाने से भी कुछ हद इस बात की पुष्टि होती है कि ठोस आधार पर खनन प्रक्रिया नहीं अपनाई गई थी, संभवतः अधिक उत्पादन को ध्यान में रखकर ऐसा किया गया था। मैं जिन बातों का उल्लेख कर रहा हूं, यद्यपि दुर्घटना से उनका कोई सीधा संबंध नहीं है तथापि उनका कुछ महत्व है क्योंकि यदि चालन पथ ((ड्राइवेजेज) को बनाते समय समुचित पूर्वोपाय किए जाते तो इस दुर्घटना से बचा जा सकता था।

अध्याय 17

3 बोर होल

1. 3 बोर होलों के संबंध में काफी बहस हुई जो प्रबन्धकों द्वारा 8वें लेवल पर नं० 4 शीर्ष और नं० 4 निम्न तरल सीम के बीच के स्तर में बनाए गए थे। नं० 4 शीर्ष ईस्ट साइड से पानी निकालने के लिए इन सीमों में 1972 के अन्त में सुराख बनाए जाने थे। उस समय नं० 4 निम्न तल पर एक प्रमुख हौदी थी और इन बरमा सुराखों का उद्देश्य नं० 4 शीर्ष से नं० 4 निम्न तल पर पानी ले आना था, नं० 4 शीर्ष पर केवल एक छोटा पम्प था। नं० 4 शीर्ष के पानी से निपटने के लिए केवल एक सुराख काफी था; यह स्पष्ट नहीं किया गया कि 3 सुराख (चौथा अधूरा था) क्यों बनाए गए?

2. जैसा कि ऊपर बताया गया है, कि बोर होल नं० 4 शीर्ष से नं० 4 निम्न तल पर पानी लाने के लिए बनाए गए थे, परन्तु जब नं० 4 निम्न तल ईस्ट में भरण कार्य चल रहा था तो यह पता चला कि पानी उनमें से होकर नं० 4 शीर्ष तल पर पहुंच रहा है। इस बहाव को रोकने के लिए सन् 1974 के बीचो बीच (जब श्री ग्रोवर प्रबन्धक थे) नं० 4 निम्न तल में भरण को रोक दिया गया। श्री ग्रोवर ने यह निश्चय किया कि इन सूराखों को बन्द करवा दिया जाए। कुछ दिनों के पश्चात बोर होलों के आस-पास के शीर्ष सीम कार्यस्थलों को भर दिया गया।

3. इन सूराखों का व्यास 7.5 मीटर और सीम के तल के साथ नति 34° अथवा क्षैतिज नति 21° थी। सूराखों के संगणित लघुकृत लेवल इस प्रकार थे:—

नं० 4 शीर्ष सीम तल में बोर होल के शीर्ष के लघुकृत लेवल	212.16 मीटर
नं० 4 निचली सीम छत में बोर होल के निम्न तल का लघुकृत लेवल	208.8 मीटर

4. इस प्रकार यदि शीर्ष सीम में जलस्तर 212.6 मीटर से ऊपर होता तो पानी निचली सीम में बहता। इसी प्रकार, यदि निचली सीम में जलस्तर 212.6 मीटर से अधिक होता तो पानी निचली सीम से शीर्ष सीम की ओर बहता।

5. जहां तक सन् 1974 में 3 सूराखों को बन्द करने का प्रश्न है, हमारे पास तत्कालीन सहायक प्रबन्धक श्री आर०सी० गर्ग और राजमिस्त्री श्री नारायण बलीराम के बयान मौजूद हैं जिन्होंने वास्तव में सूराख बन्द किए थे। श्री बलीराम के अनुसार, सुराख बन्द करने का यह काम न तो पूरी तरह से सफल हुआ था और न ही बाद में इन्हें करने का फिर से प्रयास किया गया था।

6. जो बयान दर्ज किए गए उनसे पता चलता है कि दुर्घटना के बाद और नं० 2 क्रास कट क्षेत्र से पानी निकालकर उसे पहुंच योग्य बनाने के बाद भी इन सूराखों के जरिए कुछ पानी नं० 4 निम्न तल 8वें लेवल में टपकता हुआ दिखाई दिया। विशेषज्ञ गवाह डा० बी० सिंह ने, जिन्होंने दुर्घटना के लगभग दो वर्ष बाद उस स्थान का निरीक्षण किया था, वहां पानी टपकते हुए देखा था। उनके अनुसार 2 क्रास कट में जल तल में वृद्धि के कारण तथा उसे परिणामस्वरूप जलस्थैतिक दाब बढ़ जाने से शैल के कुछ कमजोर संस्तरण तलों में छोटा सा छेद बन गया होगा जिसमें से पानी निकलने में आसानी हुई। मेरे विचार से, यदि दुर्घटना के बाद ऐसा हो सकता है तो दुर्घटना से पहले भी ऐसा हो सकता था क्योंकि अन्तिम पम्प को हटाने के बाद से 2 क्रास कट में काफी समय से जल का निरन्तर अन्तर्वाह रहा है।

7. कामगार गवाहों के बयानों के अनुसार 2 क्रास कट डिप में से दूसरा पम्प जून 1974 की मध्यावधि में हटाया गया जबकि बी० को० लि० तर्क है कि पम्प हटाने की सही तारीख नवम्बर, 1974 थी।

8. तारीखों की यह असंगति हमारा विचारणीय विषय नहीं है। संभवतः दुर्घटना से पहले ऐसा हुआ होगा कि निचली सीम में लघुकृत लेवल 212.6 मीटर से फालतू पानी बोर होलों (बयानों के आधार पर यह मानते हुए कि सुराख ठीक तरह से बन्द नहीं किए जा सके थे) शीर्ष सीम में प्रवेश कर रहा होगा। अतः जैसा कि मैंने ऊपर बताया है विभिन्न घटकों से इस क्षेत्र में पानी के निरन्तर रिसन के बावजूद निचली सीम का पानी, छलकना तो दूर रहा, 63 लेवल तक पहुंचा ही नहीं। जो कुछ मैंने ऊपर के पैरा 3-4 में कहा है यह उसी सन्दर्भ में है।

9. इस संबंध में सिन्हा—अहलूवालिया ने कहा है:

"यदि इन बोर होलों को कंक्रीट द्वारा बन्द कर देने के कारण पानी उनमें से होकर निचली सीम से शीर्ष सीम में न जा सका हो तो संभवतः 211 मीटर के लघुकृत लेवल या उससे कुछ नीचे के स्थान के आसपास नं० 4 शीर्ष और निचली सीम के बीच की

विभाजन पट्टी टूट गई होगी जिससे बन्द किए गए भीतरी क्षेत्र से दोनों सीमें जुड़ गई होंगी।"

यह भी संभव है कि बोर होलों के साथ-साथ उत्पन्न दरारों के जरिए अर्थात् नं० 4 शीर्ष और निचली सीम के बीच विभाजन पट्टी में से होकर पानी शीर्ष सीम में पहुंचा, यद्यपि यह मान लिया गया था कि अस्मा सुराख का ऊपरी भाग कंक्रीट से बन्द कर दिया गया है। शाफ्ट नेतन के परे बोर होलों के आस-पास के भागों में एक काफी बड़े क्षेत्रों में भी ऐसी दरारें बन गई होंगी।

अध्याय 18

बै० को० लि० का० खा० सु० म० नि० के प्रति दृष्टिकोण

1. जांच के प्रारम्भ में बै० को० लि० का खान सुरक्षा निदेशालय की ओर रुख यह प्रतीत होता था कि उक्त निदेशालय को प्रबन्धकों द्वारा लिए गए ऐसे सभी निर्णयों अथवा किए गए सभी कार्यों में शामिल किया जाए जिनकी वजह से दुर्घटना हुई थी। इसीलिए, बै० को० लि० के लिखित बयान में कुछ ऐसी बातें शामिल की गई जो यह संकेत देती है कि निदेशालय भी बै० को० लि० के प्रबन्धकों के साथ ही इस बात से संतुष्ट थे कि 2 क्रास कट क्षेत्र जलग्रस्त नहीं था। लेकिन जांच की प्रगति के साथ-साथ और विशेष रूप से बहस के समय प्रबन्धकों के उपर्युक्त रुख में कुछ परिवर्तन आ गया क्योंकि अब इस दुर्घटना का दायित्व निदेशालय पर थोपने का प्रयास किया जाने लगा और तर्क दिया गया कि निदेशालय के अधिकारियों ने अपने कर्तव्यों का ठीक पालन नहीं किया ; शायद यह "रक्षा का सर्वोत्तम रूप आक्रमण है" की कहावत पर आधारित था।

2 प्रबन्धकों के बयान के पैरा 36 में यह कहा गया है : "(3 डिप डिस्ट्रिक्ट में खंभे तोड़ने की अनुमति हेतु दिए) आवेदन में कहा गया था कि पुराने कार्यस्थलों से जलमग्न होने का कोई खतरा नहीं है।" किन्तु तथ्य यह है कि आवेदन (प्रदर्श डी-9) को देखने पर मुझे मालूम हुआ कि जलमग्न होने का जो हवाला दिया गया है वह बोर-होलों से संबंधित है, पुराने कार्यस्थलों से नहीं।

3. लिखित बयान के पैरा 46-2 में लिखा है "नं० 3 डिप डिस्ट्रिक्ट में खुदाई की अनुमति संबंधी आवेदन में कहा गया है कि पुराने कार्य स्थलों की वजह से जलमग्न होने का खतरा नहीं है। खा०सु०म०नि० ने इसे स्वीकार कर लिया और बिना शर्त अथवा इस संबंध में कोई पूर्व सावधानी बरतने की जरूरत बिना मंजूरी प्रदान कर दी।"

4 जिरह के दौरान श्री बंसल, जो एजेंट है, ने उनसे पूछे गये प्रश्नों का हां में जवाब दिया :

प्रश्न : क्या यह ठीक है कि डिस्ट्रिक्ट की खुदाई के लिए कोई आवेदन नहीं दिया गया; आवेदन केवल डिस्ट्रिक्ट के खंभे तोड़ने के लिए था और उक्त आवेदन में पुराने कार्यस्थलों का कोई जिक्र नहीं था ? बयान के पैरा 46.6 में कहा गया है .

"इन परिस्थितियों में 3 डिप डिस्ट्रिक्ट में खुदाई को प्रबंधकों तथा खा०सु०म०नि० ने पर्याप्त रूप से सुरक्षित समझा और पुराने कार्यस्थलों से आने वाले पानी में जलमग्न हो जाने के खतरे से मुक्त माना।"

प्रश्न : क्या आपके पास खा० सु०म०नि० का ऐसा कोई पत्र है जिसमें यह कहा गया हो कि 3 डिप डिस्ट्रिक्ट सुरक्षित है और उसके पुराने कार्यस्थलों से जलमग्न होने का खतरा नहीं है ?

उत्तर : नहीं।

जिरह जारी रही

प्रश्न . पृष्ठ 32 पर पैरा 79(5) में कहा गया है :

"नं० 3 डिप डिस्ट्रिक्ट की स्वीकृत प्रक्षेपण नक्शे द्वारा यह अपेक्षित है कि नए कार्यस्थल का आठवें लेवल की पहली डिप गैलरी से संयोजन होगा।" स्वीकृत प्रक्षेपण नक्शा कौन सा है ? "स्वीकृत प्रक्षेपण नक्शा" का क्या अर्थ है और उसे किसने स्वीकृति दी ?

उत्तर . मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है।

प्रश्न . उसी पैरा में कहा गया है "दूसरे शब्दों में नई नौवीं गैलरी के छोर से उठी गैलरी निकालने का प्रस्ताव है।" यह प्रस्ताव किसने किया ?

उत्तर : हमने प्रस्ताव किया।

प्रश्न उसी पैरा में यह कहा गया है कि आठवें लेवल की पहली डिप के ठीक नीचे के स्थान से नौवें लेवल की गैलरी को सामान्य ढंग से बनाया गया और उसी प्रकार से उसे अनुमत कर दिया गया। यह अनुमति किसने दी ?

उत्तर . हमने यह किया।

प्रश्न : उसी पैरे में कहा गया है "खा० सु० म० नि० के संतुष्ट हो जाने के बाद पुराने कार्यस्थलों की वजह से जलमग्न हो जाने का कोई खतरा नहीं है नए कार्यस्थल के लिए अनुमति प्रदान कर दी गई।" तो पुराने कार्यस्थल से जलमग्न हो जाने से संदर्भित नये कार्यस्थल की अनुमति कहां है ?

उत्तर : मुझे कोई अनुमति नहीं मिली।

5. इसलिए खा० सु० म० नि० का यह कथन है : "प्रबंधकों के बयान अथवा प्रत्युत्तर में खा० सु० म० नि० द्वारा दुर्घटना के समय तक किसी नक्शे गैलरी बनाने संयोजन करने अथवा 3 डिप डिस्ट्रिक्ट में कोई कार्यस्थल अथवा उस पर कोई काम अथवा उसके विकास के संबंध में किसी अनुमोदन अनुमति मंजूरी प्रमाणपत्र अनापत्ति की बात करना सही नहीं है।"

6. यह बहुत खेद की बात है कि प्रबंधकों के लिखित बयान में इस तरह की गलत तथा गुमराह करने वाली बातों का समावेश हो। मैं यह मानता हूं कि लिखित बयान को महाप्रबंधक श्री ए० सी० शाह ने और संभवतः प्रबंधनिदेशक ने भी देखा होगा और अनुमोदित किया होगा। यदि ऐसा है तब यह गलती और भी गंभीर हो जाती है। मैं इस मामले पर और अधिक टिप्पणी किए बिना यहीं समाप्त करता हूं।

अध्याय 19

निर्धारण हेतु प्रश्न

1. मैं अब "निर्धारण हेतु प्रश्नों" का उत्तर दूंगा। पहले दो प्रश्नों को एक साथ लिया जा सकता है। यह दुर्घटना 2 क्रास कट डिप को 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के नौवें पूर्व लेवल से अलग करने वाली एक पतली पट्टी के फट जाने के कारण हुई। यह पट्टी मुख्यतः इसलिए फट गई क्योंकि 2 क्रास कट क्षेत्र की कार्यस्थल में पानी भरा हुआ था और उस बड़े पानी से बचने के लिए समुचित पूर्वोपाय नहीं किए गए और इस तरह असावधानी तथा लापरवाही बरती गई। दूसरे 3 डिप डिस्ट्रिक्ट की प्रगति का कोई ठीक तथा वास्तविक भूमिगत नक्शा नहीं रखा गया। मैं बी० को० लि० द्वारा प्रतिपादित इस मत को अस्वीकार करता हूं कि दुर्घटना के दिन ऊपर के सीमों से पानी 2 क्रास कट क्षेत्र में एकदम से घुस गया। अपने इस निष्कर्ष के आधार पर मेरा मत है कि दुर्घटना को रोका जा सकता था।

2. तीसरे प्रश्न के संबंध में नौवें पूर्व लेवल को बनाते समय पानी के फट निकलने को रोकने के लिए समुचित पूर्वोपाय न अपनाकर प्रबंधकों ने विनियम 127(1) का पालन नहीं किया तथा समापन का नोटिस जारी न करके विनियम 6 का भी पालन नहीं किया। दो असैसरों, श्री एस० के० सान्याल तथा सी एस० डब्ल्यू घोष के का पृथक नोट देखें। साथ ही उन्होंने बड़ी आसानी से तथा बिना किसी समुचित सर्वेक्षण अथवा सत्यापन, के यह मानकर कि 2 क्रास कट डिप अभी भी थोड़ी दूरी पर है एक

बड़ी गंभीर गलती की है। दुर्घटना के दिन से लगभग 12 सप्ताह पहले से पानी रिसने रहने के बावजूद आगे बोर होल बनाना अथवा आवश्यक पूर्वोपाय ऊपरी लेवलों को पकड़कर पुराने कार्यस्थलों से धीरे-धीरे पानी निकालना जैसे आवश्यक पूर्वोपाय नहीं अपनाए गए। खाने का "मालिक" विनियम 64 (4) विनियम 62 (उपयुक्त सर्वेक्षण उपकरण प्रदान न करना) तथा विनियम 35 (सिलवाड़ा खान पर उपयुक्त सर्वेक्षण कर्मचारी नियुक्त न करना) के उल्लंघन का भी दोषी है।

3. प्रश्न नं० 4 के संबंध में दुर्घटना के लिए जिम्मेदार मुख्य व्यक्ति कोयलाखान मैनेजर, श्री एस० के० ग्रोवर तथा कोयलाखान सर्वेक्षक श्री आर० के० जोशी हैं। "मालिक" के रूप में प्रबंध निदेशक श्री सी० बलराम इसलिए जिम्मेवार हैं कि उन्होंने खान पर उपयुक्त सर्वेक्षक कर्मचारी नियुक्त नहीं किए और सुरक्षा अधिकारी का उत्पादन प्रयोजन के लिए दुरुपयोग किया गया। सिलवाड़ा समूह के महाप्रबंधक, श्री ए०बी० शाह, उप-क्षेत्र प्रबंधक श्री एस० राधाकृष्णन तथा एजेंट श्री बी० पी० बांसा को भी संयुक्त रूप से तथा अलग-अलग अपनी जिम्मेवारी को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि ये तीनों मिलकर ऐसे पदाधिकारी माने जा सकते हैं जो खान अधिनियम के अंतर्गत एजेंट की श्रेणी में आते हैं। ये इसलिए भी उत्तरदायी हैं कि इन्होंने प्रबंधक, सहायक प्रबंधक तथा सर्वेक्षक के डायरियां रखने के संबंध में, भूमिगत क्षेत्र का तुरंत तथा ठीक सर्वेक्षण करने के संबंध में, 3 डिप डिस्ट्रिक्ट के अनियमित विकास के संबंध में तथा उपयुक्त पूर्वोपाय अपनाए बिना 3 डिप कार्यस्थल करने के भी संबंध में जो कार्य थे उन पर उपयुक्त नियंत्रण नहीं रखा तथा सही पर्यवेक्षण नहीं किया।

4. प्रबंधक श्री एम० के० ग्रोवर इसलिए उत्तरदायी हैं कि उन्होंने पानी भरे क्षेत्र के आसपास खुदाई के दौरान उपयुक्त पूर्वोपाय नहीं अपनाए। एक लंबे समय तक डायरी न रखने की वजह से उन्होंने विनियम 41(1)(बी) का उल्लंघन किया और दुर्घटना से पहले कुछ अवधि तक जो डायरी रखी भी उन्होंने उसे बड़ी असावधानी के साथ भरा। इसके साथ ही उन्होंने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की डायरियों और रिपोर्टों को नियमित रूप से न देखकर तथा उन पर प्रतिहस्ताक्षर न करके विनियम 41(6) का भी उल्लंघन किया। उन्होंने खान के भूमिगत हिस्से का और विशेष रूप से 3 डिप डिस्ट्रिक्ट की प्रगति का वास्तविक, अद्यतन तथा ठीक नक्शे न रखकर विनियम 58(3) का भी उल्लंघन किया।

5. सहायक मैनेजर श्री आर० के० दुबे अपनी डायरी अधूरी तथा लापरवाही के साथ भरी रखते थे। उन्होंने भी नौवें पूर्व लेवल में पानी का रिसाव दिखाई देने पर भी 2 क्रास कट क्षेत्र में पानी की उपस्थिति का निरीक्षण न करके विनियम 42(3) का उल्लंघन किया है। उनकी यह दलील, कि 2 क्रास कट तथा छठे पूर्व लेवल के जंक्शन के ठीक नीचे छत गिर पड़ने के कारण 2 क्रास कट का मार्ग अवरुद्ध हो गया था, मंजूर नहीं की जाती।

6. सर्वेक्षक श्री एस० के० जोशी ने जो उल्लंघन किये हैं उनके बारे में मैंने अपनी राय अलग से (देखिए पैरा 14 अध्याय-14) लिपिबद्ध कर दी है। मैंने यह भी संकेत दिया है कि कुछ ऐसी अधिकारी परिस्थितियां अवश्य हैं जो उनके द्वारा किए गए उल्लंघनों तथा चूकों को कुछ कम कर देती है। अन्यत्र मैंने अपने इन निष्कर्षों को भी लिपिबद्ध किया है कि प्रबंधकों ने सर्वेक्षक को समुचित स्टाफ तथा सर्वेक्षण उपकरण प्रदान नहीं किए थे। उन्होंने इन कमियों की ओर प्रबंधकों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए कई आवेदन/अभिवेदन दिए परन्तु उनसे कोई वास्तविक लाभ नहीं हुआ।

7. इस सबके बावजूद मुझे कहना पड़ेगा कि श्री जोशी को इस दुर्घटना से संबंधित अपनी जिम्मेदारी को स्वीकार करना ही होगा। वे इसके प्रति असावधान नहीं हो सकते कि वे खान में एक "मुख्य" पद पर आरूढ़ हैं और कि यह उनका कानूनी दायित्व है कि वे अनिवार्य भूमिगत नक्शों तथा योजनाओं को तैयार करवाएं और उन्हें आद्यतन तथा सही बनाए रखें। यदि उन पर कार्यभार अधिक था तथा उन्हें सर्वेक्षण के अलावा अन्य कुछ कार्य सौंप दिए गए थे तो उन्हें अपने समय को इस प्रकार बांटना चाहिए था कि खान में सुरक्षा के काम को हानि न पहुंचे और भूमिगत क्षेत्र के अनिवार्य न्यूनतम सर्वेक्षण कार्यों की उपेक्षा न हो जाय अथवा वे बकाया न रह जाएं। इस सीमा तक वे सर्वेक्षक के रूप में अपने कार्यों तथा कर्तव्यों का उपयुक्त तथा समुचित पालन करने में असफल हुए प्रतीत होते हैं।

8. मैंने प्रबंध निदेशक श्री सी० बलराम के व्यवहार पर भी विचार किया है कि क्या उनके व्यवहार को किसी भी आधार पर आलोचना अथवा निंदा का विषय बनाया जा सकता है अथवा नहीं। मेरे समक्ष यह दलील प्रस्तुत की गई है कि दुर्घटना के तत्काल बाद मंत्रालय को लिखे अपने पत्र (जिसकी प्रति खा० सु० म० नि० ने प्रदर्श डी-1523 पर प्रस्तुत की है) को प्रारंभ में ही अदालत के सामने प्रस्तुत न करके और "अकस्मात पानी घुस आने" के मत को प्रतिपादित करके एक ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य की उपेक्षा करने अथवा उसे दबाने का प्रयास किया है, जो जांच के लिए सुसंगत हो सकती थी, और अदालत को गुमराह करने का प्रयास किया है तथा जांच को लंबा खींचने की कोशिश की है। यह सच है कि दुर्घटना के शीघ्र बाद उन्होंने महसूस किया कि यह दुर्घटना कोलियरी के प्रधान अधिकारियों की लापरवाही आदि के ही कारण हुई है लेकिन बाद में वे "अकस्मात पानी भर जाने" के मत को प्रस्तुत करने और उसे बी० को० लि० द्वारा पेश लिखित बयान में शामिल करने में जिम्मेवार बन गए हालांकि, तर्क के लिए यह संभव है कि दुर्घटना के उत्तरदायित्व संबंधी उनके प्रारंभिक दृष्टिकोण में तब परिवर्तन हो गया जब उन्होंने इस संबंध में अपनी ओर से जांच की तथा इस प्रश्न पर और आगे विचार किया। यहां यही कहा जा सकता है इस तरह की सार्वजनिक जांच में, जो दुर्घटना की परिस्थितियों को निश्चित करने के लिए की जा रही है, उन्हें एक ईमानदार/लोकसेवक के नाते अदालत के सामने दुर्घटना से संबंधित सभी सामग्री, जो उनके पास है, पेश कर देनी चाहिए थी और उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं छिपाना चाहिए था जो उनके लिखित बयान में उनके द्वारा लिए गए पक्ष का समर्थन अथवा परिपुष्टि नहीं करता हो। मुझे यह अभ्युक्ति भी देनी है कि पहले तो प्रबंधक उनसे एक गवाह के रूप में बयान चाहते थे परन्तु बाद में उन्होंने यह प्रस्ताव वापस ले लिया।

9. प्रश्न नं० (5) के बारे में, मेरी सिफारिशें रिपोर्ट में उपयुक्त जगहों पर देखी जा सकती हैं। संदर्भ की सुविधा हेतु मैं उन्हें समूहित रूप में यहां दे रहा हूं:

(क) पिट सुरक्षा समिति के कार्यों का क्षेत्र और व्यापक बनाया जाए और इसमें खान की भूमिगत खुदाई में विद्यमान खतरों से संबंधित मामलों पर विचार तथा चर्चा करना शामिल हो।

(ख) कोयला खान विनियमावली में यह व्यवस्था करना वांछनीय होगा कि किसी बड़ी दुर्घटना के बाद जब खा० सु० म० नि० के अधिकारीगण खान का मुआयना करने जाएं तो उनमें से एक तो दुर्घटना स्थल पर जाए और दूसरा उसी समय सभी प्रासंगिक नक्शों तथा दस्तावेजों को अपने कब्जे में ले ले।

(ग) कोयला खान विनियमावली की प्रथम अनुसूची के फार्म 4-ए (जिसमें घातक दुर्घटना की लिखित सूचना भरी जाती है) में ऐसे उपयुक्त संशोधन किए जाएं जिससे निम्नलिखित के बारे में सूचना दी हो: (1) सूचना का समय; तथा (2) उक्त सूचना के प्रेषण का समय; ऐसा करने से विनियम 9 के वास्तविक आशय को पूरा किया जा सकेगा। उक्त दुर्घटनाओं की सूचना को खा० सु० म० नि० के कार्यालयों में छुट्टी के दिन प्राप्त करने हेतु ड्यूटी आफीसरों को तैनात करने की संभावना पर सरकार को विचार करना चाहिए।

(घ) को० खा० वि० 41(2) के बारे में यह सिफारिश की जाती है कि सुरक्षा अधिकारी को कोई अतिरिक्त काम खा० सु० ग० नि० प्राधिकारियों द्वारा लिखित अनुमोदन के अधीन ही दिया जा सकता है, और उन्हें अपने तर्क लिखना जरूरी होगा।

(ङ) जब भी संगठन का कोई वरिष्ठ अधिकारी (जैसे एजेंट अथवा महाप्रबंधक) खान का निरीक्षण करे उसके लिए यह कानून न जरूरी हो कि वह प्रबंधक की डायरी का मुआयना करे और उस पर अपने प्रति हस्ताक्षर करे। यह सिफारिश अध्याय-2 में मेरे इस निष्कर्ष के कारण की जा रही है कि इस मामले में या तो डायरियां भरी ही नहीं गई या बड़े असंतोषजनक ढंग से भरी गई।

(च) यह वांछनीय है कि विनियम 127 के उप-विनियम (5) में उल्लिखित पूर्वोपाय सर्वथा पानी भरे रहने के मामला पर भी लागू हों फिर चाहे वहां पानी का रिसाव दिखाई देता हो अथवा नहीं; इस प्रयोजन हेतु सरकार को०खा० विनियमावली में उपयुक्त संशोधन करने पर विचार कर सकती है।

10. इनके अतिरिक्त, निम्नलिखित सिफारिशें की जाती है:

जांच में प्रगति के साथ-साथ यह स्पष्ट होता गया कि विभिन्न पक्ष कोयलाखान विनियमावली के कुछ उपबंधों की भिन्न-भिन्न व्याख्याएं दे रहे थे। मुझे भी ऐसा लगता है कि कुछ विनियम पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं है। उदाहरणार्थ, हमारे सामने यह तर्क प्रस्तुत किया कि विनियम 49(2) के अंतर्गत सर्वेक्षक का यह दायित्व कि वह उन खान कार्यस्थलों के बारे में "सभी तथ्यों" का पुस्तिका में इंदराज करे, जो खान की सीमा अथवा अप्रचलित या त्याग दी गई पानी से भरे कार्यस्थलों से लगभग 75 मीटर दूर से प्रारंभ की गई है, तब समाप्त हो जाता है जब यह दूरी घटाकर 60 मीटर कर दी जाए। यह वांछनीय है कि दोनों विनियमों अर्थात् 49(2) तथा 127 में उपयुक्त संशोधन किया जाए और यह स्पष्ट कर दिया जाए कि उक्त परिस्थितियों में सर्वेक्षक के उत्तरदायित्व किसी भी तरह कम नहीं हो जाते। यह भी आवश्यक प्रतीत होता है कि "अप्रचलित कार्यस्थल" "अप्रयुक्त कार्यस्थल" तथा "परित्यक्त कार्यस्थल" जैसे कुछ शब्दों की स्पष्ट परिभाषा दी जाए।

विनियम 127(3) में प्रयुक्त "Such" शब्द निरर्थक लगता है और भ्रम पैदा करता है।

11 यह भी सिफारिश की जाती है कि सुरक्षा अधिकारी के कर्तव्यों का उल्लेख करने वाले विनियम 41(क) में स्पष्ट रूप से यह निर्दिष्ट होना चाहिए कि सुरक्षा अधिकारी को खान में कोई अन्य काम न सौंपा जाए। इस सिफारिश का कारण "सुरक्षा अधिकारी का दुरुपयोग" वाले अध्याय में पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया गया है। यदि मुझे इस जांच के संकुचित विषय क्षेत्र से बाहर कुछ कहने की अनुमति दी जाए तो मैं यह सुझाव भी दूंगा कि कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के संदर्भ में यह जरूरी है कि खान अधिनियम तथा विनियमावली आदि के कुछ उपबंधों की फिर से जांच की जाए और उन्हें कोयला उद्योग के नए संगठन के अधिक अनुरूप बनाया जाए। उद्योग में सुरक्षा के संबंध में, मैं समझता हूं कुछ राष्ट्रीयकृत इकाइयों ने "विभागीय लेखापरीक्षा" के उद्देश्य से अपने सुरक्षा संगठन बना लिए हैं। सरकार संभवतः इन संगठनों के कार्य संचालन की किसी समिति अथवा अन्य किसी उपयुक्त ढंग से समीक्षा करना चाहेगी।

12 प्रश्न (6) के संबंध में मुझे कोई विशिष्ट सिफारिश नहीं करनी है।

13. खर्च संबंधी प्रश्न (7) के संबंध में, मैंने पाया है कि दुर्घटना वै० को० लि० की लापरवाही तथा असावधानी के कारण हुई थी अतः यह उचित ही होगा कि वै० को० लि० खर्च का वहन करे। खर्च में निम्नलिखित मद शामिल होंगे:

(1) सरकार द्वारा जांच अदालत पर किया गया खर्च,

(2) विभिन्न पक्षों (वै० को० लि० तथा श्री जोशी को छोड़कर) द्वारा इस जांच हेतु वकील करने, तथा दिनांक 5-6-78 से 9-6-78 तक बेंगलूर में होने वाली बैठक के लिए श्री जोशी समेत अदालत के नागपुर से बेंगलूर से नागपुर लौटने और बेंगलूर में रहने खाने पर होने वाला खर्च; (अदालत ने पहले ही आदेश दिया था कि बेंगलूर की बैठक का सारा खर्च वै० को० लि० वहन करेगा)।

(3) मजदूर संघ के पदाधिकारियों अथवा श्रमिकों, जो वै० को० लि० के कर्मचारी हैं और जो अदालत में पेश हुए हैं (गवाह के रूप में आने वालों समेत) का यात्रा व्यय तथा उक्त दिन का खाने का सामान्य खर्च वै० को० लि० को देना होगा। लेकिन यह खर्च अदालत में पेश होने वाले प्रत्येक मजदूर संघ के केवल दो कार्यकर्ताओं कर्मचारियों को ही दिया जाएगा। (यह समझा जाता है कि वै० को० लि० ने इस संबंध में कुछ भुगतान कर भी दिए है)।

14. ये खर्च मुख्य श्रम आयुक्त (मध्य) नई दिल्ली द्वारा अभिकलित तथा परिकलित किए जाएंगे और वे वै० को० लि०, नागपुर के अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक को तीन महीने के अन्दर-अन्दर इसकी सूचना भेज देंगे। वै० को० लि० इनका भुगतान रिपोर्ट की तारीख से छह महीने के अन्दर-अन्दर कर देगी।

15. किसी अन्य पार्टी को खर्चा नहीं मिलेगा।

अध्याय 20
निष्कर्ष और आभार प्रदर्शन

1 इस रिपोर्ट के अंत में, मैं सर्वप्रथम उन सभी पक्षों तथा वकीलों का धन्यवाद करूंगा जिन्होंने मेरे सामने पेश होकर जांच कार्य में पर्याप्त सहायता दी है। इसके बाद मैं चार असैसरों का सर्वश्री एस० के० सान्याल, एस० डब्लू० धार्वे, वी०एल० करखंडे तथा प्रो० जी०एस० मरवाहा, जिन्होंने जांच के सभी चरणों में मेरे साथ सौजन्यता तथा सहयोग का व्यवहार किया है, धन्यवाद करता हूं। उनकी सलाह तथा सुझाव मेरे लिए बहुत उपयोगी रहे है। विशेषरूप से मैं दो "तकनीकी" असैसरों प्रो० जी०एस० मरवाहा तथा श्री वी०एल० करखंडे का ऋणी हूं जिन्होंने जांच के बहुत कुछ जटिल तकनीकी प्रश्नों पर अपने विचार प्रकट किए। मुझे प्रसन्नता है कि दो असैसरों के एक टिप्पण को छोड़कर हम एक सर्वसम्मत रिपोर्ट भारत सरकार को पेश कर रहे है।

2 मैं महाराष्ट्र सरकार का भी धन्यवाद करूंगा कि उन्होंने नागपुर स्थित विधायक होस्टल के समिति कक्ष को जांच अदालत की बैठक हेतु प्रदान किया। अदालत की बैठक के लिए नागपुर एक सुविधाजनक स्थान था क्योंकि सिलवाड़ा कोयलाखान यहां से केवल 27 किलो मीटर ही दूर है और अदालत के लगभग सभी सत्र इसी समिति कक्ष में आयोजित हुए।

3 3-डिप डिस्ट्रिक्ट का एक माडल तथा डिस्ट्रिक्ट का एक संबंधित नक्शा तैयार करने के लिए मैं खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर का धन्यवाद करना चाहूंगा। यह नक्शा नागपुर स्थित अदालत के कमरे की दीवाल पर टंगा रहता था और उसकी वजह से जांच से संबंधित विभिन्न तथ्यों तथा परिस्थितियों को समझने में पर्याप्त सहायता मिली।

4 अंत में मैं जांच के सभी चरणों में अपनी अमूल्य सहायता देने वाले अदालत के सचिव श्री मोहन लाल के प्रति आभार व्यक्त करना हूं। उनकी साफ सुथरी तथा व्यवस्थित आदतों और उनके मेहनती तथा श्रम साध्य कार्य—ढंग की वजह से इस अपेक्षाकृत अधिक लम्बी जांच में व्यवस्थित रूप से प्रगति संभव हो सकी।

हस्ताक्षर
(पी० एम० नायक)
अध्यक्ष

बेंगलूर
दिनांक 25 सितम्बर, 1978

इस रिपोर्ट में दी गई सभी टिप्पणियों, निष्कर्षों तथा सिफारिशों से जो हमसे पूरे परामर्श के बाद तैयार हुई हैं, हम पूरी तरह सहमत है। हम अपने प्रति ही नहीं अपितु जाच में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के साथ अदालत के सतत भद्र तथा सम्मानजनक व्यवहार के प्रति अवश्य आभार व्यक्त करना चाहेंगे।

यद्यपि जांच के दौरान उनके स्वास्थ्य मे कुछ खराबी आ गई थी किन्तु फिर फिर भी जांच के प्रति उनकी वचनबद्धता में कोई कमी नही आई।

हस्ताक्षर
(पी० एल० करवंडे)
हस्ताक्षर
(जी० एस० मरवाहा)

(एक अलग नोट के साथ) हस्ताक्षर
(एस० डब्लू० क्षावे)
हस्ताक्षर

(संलग्न नोट के साथ) (एस० के० सान्याल)
असैसर

असेसरों का नोट

अध्याय-15 में अदालत के विद्वान् सदस्य ने कहा है कि कोयला खान विनियमावली के विनियम 127(3) तथा (5) इस मामले में लागू नही होगे, जबकि हमारा मत है कि विनियम 127(1) के साथ-साथ उपधारा (3) तथा (5) भी लागू होंगे। तथ्य ये है कि पर्पो को दूसरे X कट डिप से निकाल लिया गया था और अंतिम पंप नवम्बर 1974 में निकाला गया। यह एक स्वीकृत स्थिति भी है कि नवम्बर 1974 के बाद दूसरे X कट डिप में कोई काम नही किया गया। प्रबन्धकों ने दिसम्बर 1974 मे उसमे पानी निकलवाना शुरू किया क्योंकि उसमें पानी भरा हुआ था। प्रबन्धको ने 3-डीप डिस्ट्रिक्ट का विकास भी शुरू करवा दिया जो 60 मीटर की दूरी के अंदर के पानी भरे कार्यस्थल की ओर बढ़ रहा था। वास्तव में तो प्रबंधक 3-डिप डिस्ट्रिक्ट में खंभे तोड़ना चाहते थे और आवेदन खा० सु० म० नि० को भेज भी दिया गया था। इन तथ्यों को देखते हुए यह समझना कठिन है कि वह 'अप्रचलित' अथवा 'परित्यक्त' खुदाई क्यों नही थी। यदि वे इसे फिर से प्रयुक्त करना चाहते थे तब भी यह अस्थायी तौर पर परित्याग ही थी। स्पष्टतः यह कुछ-कुछ समय के लिए काम चालू न रखने का मामला है। विनियम 127(3) में कहा गया है कि यदि 60 मीटर के अन्दर-अन्दर खुदाई करनी है और यह पाया जाता है कि वहां पानी अथवा अन्य कोई द्रव पदार्थ इकट्ठा नही होगा तो खा० सु० म० नि० से पूर्व अनुमति लेना जरूरी नही है। प्रबन्धको का यह वाद कि यह पानी से मुक्त था, हम पहले ही अस्वीकार कर चुके है। वास्तव में, प्रबन्धकों को यह पता था कि यह 60 मीटर के अन्दर-अन्दर है और तब भी विनियम 127(3) के अन्तर्गत कोई आवेदन नही किया गया। इस धारा में "अप्रचलित" अथवा "परित्यक्त" शब्दो का यह अर्थ नही कि वह स्थायी रूप से हो, यह अप्रचलन अथवा परित्याग अस्थायी रूप में भी हो सकता है। इस विनियम का उद्देश्य मुख्य रूप से श्रमिको की सुरक्षा करना है और इसको मद्देनजर रखते हुए हमें इन शब्दों को व्यापक अर्थों में ग्रहण करना होगा। इस तरह के सामाजिक कानूनो/विधानो की इस रूप में व्याख्या करनी होगी जिससे इन कानूनो के उद्देश्यों की पूर्ति हो और अनिष्ट को रोका जाए। आक्सफोर्ड डिक्सनरी—द्वितीय संस्करण 1975 में 'अप्रचलित' का अर्थ है—'विच्छेद, उपयोग की कमी अथवा उपयोग बंद' और—'परित्याग' का अर्थ है 'छोड़ देना अथवा अभ्यर्पण'। इन शब्दों के अर्थ से स्पष्ट है कि ऐसा विच्छेद अथवा परित्याग अस्थायी प्रकार का भी हो सकता है। उपविनियम (3) की हमारी इस व्याख्या को देखते हुए हम महसूस करते हैं कि इस मामले में विनियम 127(1) के साथ-साथ विनियम, (3) तथा (5) भी लागू होते हैं। हमारा यह दृष्टिकोण खा० सु० म० नि० की रिपोर्ट के इस निष्कर्ष से और पक्का हो जाता है कि इस मामले में विनियम 127 के उपविनियम (3) और (5) लागू होते हैं और उनका उल्लंघन किया गया है क्योंकि कोई अनुमति मांगी नही गई। उक्त रिपोर्ट पैरा 23.8 में व्यक्त किए गए प्रासंगिक विचार इस प्रकार है :

"वे (श्री एस० के० ग्रोवर, प्रबंधक) कोयला खान विनियमावली 1957 के विनियम 127 के उपबंधों का पालन करने में असफल रहे। विनियम 127(3) के अन्तर्गत उन्होंने महानिदेशक को कोई आवेदन नही दिया। विनियम 127(1) के अन्तर्गत जलमग्न होने के खतरे से बचने की समुचित व्यवस्था की जानी लाजमी है उन्होंने उक्त व्यवस्था नही की। जल से भरे कार्यस्थल के 60 मीटर के अन्दर खुदाई के मुह के मध्य के समीप बोर होलों तथा किनारो पर प्लैक होल्स नही किए गए, जैसी कि विनियम 127(5) मे व्यवस्था है। उक्त कार्यस्थलों की चौड़ाई तथा ऊंचाई भी 2.4 मीटर से अधिक थी, जो विनियम 127(5) का उल्लंघन है। प्रबंधक की यह दलील, कि 7वें और 8वें पूर्व लेवलों को अप्रचलित कार्यस्थलों के साथ छत की गड़बड़ी के कारण नहीं जोड़ा गया, स्वीकार नही की जा सकती क्योंकि इन लेवलों की छत इतनी बुरी हालत में नही पाई गई कि उक्त को जोड़ा न जा सके" ;

इसीलिए, हमारे मतानुसार विनियम 127(1) के साथ-साथ विनियम 127(3) तथा (5) का भी उल्लंघन किया गया है। इसलिए यह भी जरूरी नही है कि विशेष डिस्ट्रिक्ट का कार्यस्थल पूर्णरूप से इसलिए छोड़ दिया जाए कि यह विनियम उस पर लागू होता है। भविष्य में कुछ समय बाद खुदाई करने की अथवा अन्य कोई मंशा होने की वजह से उक्त स्थिति को विनियम 127(3) के उपबन्धो से अलग नही किया जा सकता।

हम यह भी कहना चाहेंगे कि कोयलाखान की खुदाई अथवा अन्य किसी खतरनाक काम में सुरक्षा का ध्यान रखना सर्वोपरि कर्त्तव्य है। समय आ गया है कि इस तरह के कामों को चलाने में सुरक्षा को सर्वप्रमुख उद्देश्य बनाया जाए और वास्तव में तो इसे उक्त उपक्रम/कंपनी के लक्ष्य तथा उद्देश्यों में ही नहीं अपितु उसकी अन्तर्नियमावली में भी शामिल किया जाए। विशेष रूप से, सार्वजनिक क्षेत्रक में यह अधिक जरूरी है कि खुदाई कार्य मे सुरक्षा सुनिश्चित करने के साधन के रूप में नीचे के स्तर से लेकर उच्चस्तर तक सुरक्षा संगठन स्थापित किया जाए ऐसा करना इसलिए और भी जरूरी है क्योंकि अधिक उत्साही अधिकारियो की यह प्रवृत्ति होती जा रही है कि वे उत्पादन की खातिर सुरक्षा की बलि चढ़ा देते हैं। हम यह भी महसूस करते है कि खा० सु० म० नि० के संगठन को मजबूत बनाया जाए और यह मात्र एक प्रवर्तन प्राधिकरण न बना रहे अथवा इससे भी कम अनुमति देने की मशीन ही न बनी रहे। वास्तव में, ऐसा लगता है कि कोयला खान विनियमों के अधीन अनुमति प्रदान करने की वर्तमान पद्धति कर्मचारियों की अपर्याप्तता के कारण है। बहुतेरे मामलों में तो यह अनुमति प्रबंधकों द्वारा भेजे आंकड़ों अथवा सूचना का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया होता तो ऐसी स्थिति से बचा जा सकता था। इस संस्था (खा० सु० म० नि०) का एक महत्वपूर्ण और विशेषरूप से राष्ट्रीयकृत सार्वजनिक क्षेत्रक की सफलता का साधन बनाने के लिए यह जरूरी है कि खानों में सुरक्षा को एक पावन कर्त्तव्य माना जाए और इस संस्था को सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कहा जाए जिससे कि सार्वजनिक उपक्रम उत्पादन के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर सकें, जीवन को बेहतर सुरक्षा प्रदान कर सकें और इस प्रकार तीव्र गति से आर्थिक विकास में सहायता दे सकें। हमारी दृष्टि से, ऐसा करना बहुत जरूरी है हालांकि खानो में सुरक्षा प्रदान करना हमेशा प्रबंधकों का ही उत्तरदायित्व रहेगा।

हमारे देश के नए परिप्रेक्ष्य तथा आर्थिक आयोजना के समयबद्ध लक्ष्यों के संदर्भ में हम यह सुझाव भी देंगे कि खान अधिनियम, 1952 तथा उसके अधीन बनाए नियमों में यथोचित संशोधन किए जाएं जिससे

परिस्थितियो की नई चुनौतियो का सामना किया जा सके । हम यह भी सिफारिश करते है कि सुरक्षा संगठन के सभी स्तरों पर कामगारो के प्रतिनिधियों को सम्बद्ध किया जाए ।

उपर्युक्त कथन के अधीन हम रिपोर्ट से सहमत हैं ।

हस्ताक्षर

बेंगलूर 1. (एस० डब्लू० धावे)

24 सितम्बर, 1978 हस्ताक्षर

2. (एस० के० सान्याल)

असैसर

परिशिष्ट I

श्रम मन्त्रालय

नई दिल्ली, 9 मार्च, 1976

अधिसूचना

सां० आ०.—चूंकि 16 नवम्बर, 1975 को महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले में सिलवाड़ा कोलियरी में एक दुर्घटना हुई थी जिसमें व्यक्तियो की मृत्यु हुई थी ;

और चूंकि केन्द्र सरकार की राय है कि दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की औपचारिक जांच की जाए ;

अत. खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 24 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्र सरकार एतद्द्वारा ऐसी जांच करने के लिए भारत सरकार के सेवानिवृत्त सचिव श्री पी० एम० नायक को नियुक्त करती है और इस जांच के लिए असैसरो के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों को भी नियुक्त करती है :—

(1) श्री पी० एल० करवंडे,
महाप्रबंधक,
सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड,
पो० ओ० कोठागुडियम, आंध्र प्रदेश

(2) प्रो० जी० एम० मरवाहा,
निदेशक,
इंडियन स्कूल आफ माइन्स, धनबाद

(3) श्री एस० डब्लू० धावे, एम० पी०
सदस्य कार्यकारी समिति,
इंडियन नेशनल माइन्स वर्कर्स फेडरेशन,
सर्किल नं० 9, आयाचित रोड, नागपुर

(4) श्री एस० के० सान्याल,
सदस्य, आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस
की कार्यकारी समिति,
एडवोकेट बोर्नीला
नागपुर-13 (महाराष्ट्र)

[एफ-11015/7/75-एम० आई०]

जे० सी० सक्सेना, अवर सचिव

परिशिष्ट—4

गवाहों की सूची जिनके बयान लिए गए

क्रम संख्या	गवाहों के नाम	वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड की ओर से बयान देने वाले गवाह
1.	श्री ए० बी० शाह	
2.	श्री एस० राधाकृष्णन	—वही—
3.	श्री सी० पी० बंसल	—वही—
4.	श्री एस० के० ग्रोवर	—वही—
5.	श्री आर० के० दुबे	—वही—
6.	श्री आर० सी०गर्ग	—वही—
7.	श्री एम० एन० गुहा	—वही—
8.	श्री बी० के० सिन्हा	—वही—
9.	श्री बी० झा	—वही—
10.	डा० बी० सिंह०	—वही—
11.	श्री आर० के० जोशी	वे० को० लि० में प्रधान सर्वेक्षक—एक स्वतंत्र गवाह
12.	श्री एस० एस० कहलो	खान सुरक्षा महानिदेशालय
13.	श्री मारुति गनपत जाधव	एम० पी० राष्ट्रीय कोयला खदान कामगार संघ
14.	श्री फूलचन्द चन्नीलाल मांकडे	—वही—
15.	श्री भीमराव काचरु सैनिकर	—वही—
16.	श्री कातम लछाया	—वही—
17.	श्री गुड्डे राजेश्वर	विदर्भ कोलमाइन्स एम्प्लोईज एसोसियेशन
18.	श्री नारायण बलीराम	—वही—
19.	श्री लालन शर्मा	कोयला खदान कर्मचारी संघ

परिशिष्ट—5

अनुमत			प्रदर्श और वस्तुओं की सूची
प्रदर्श	चिह्न	'सी'	वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड
वही	वही	'जे'	श्री आर० के० जोशी, प्रधान सर्वेक्षक, वे०को०लि०—एक स्वतंत्र गवाह
वही	वही	'डी'	खान सुरक्षा महानिदेशालय
वही	वही	'एम'	एम० पी० राष्ट्रीय कोयला खदान कामगार संघ
वही	वही	'बी'	विदर्भ कोल माइन्स एम्प्लाईज एसोसिएशन
वही	वही	'के'	कोयला खदान कर्मचारी संघ

प्रदर्श सं०	संक्षिप्त विषय	पेश करने वाले पक्ष का नाम	प्रथम संदर्भ
सी-1	विभिन्न पदों को विज्ञापित करने वाले कार्यालय परिपत्र	वे० को० लि०	श्री ए० बी० शाह के साक्ष्य का पृष्ठ-7
सी-2	4 तल सीम का भूमिगत कार्यकारी नक्शा आर० एफ० 1: 1200	वही	श्री ए० बी० शाह के साक्ष्य का पृष्ठ—10
सी-3	4 तल सीम का भूमिगत नक्शा आर०एफ० 1 : 1200	वही	वही
सी-4	वोल्टाज पंपों के खरीद आदेश	वे० को० लि०	श्री ए० बी० शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 35
सी-5	वे० को० लि० का पत्र सं० सी०एम० ई० (एस एंड सी) मिन० आव डिस्क० तारीख 12-11-75 जिसके साथ खा० सु० म० नि० के अधिकारियों और कोलमाइन्स अथारिटी के बीच 27-10-75 को हुई चर्चा की टिप्पणियां संलग्न हैं	वही	वही
सी-6	पोलिस एडवांसिंग मशीन की खरीद के मांग पत्र	वही	श्री ए० बी० शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 41
सी-7	बोल्ड्रिल के लिए 17-9-73 का रिपीट आर्डर	वही	वही
सी-8	7वें लेवल से ड्रिल किए गए 3 सुराखों की अवस्थिति दिखाने वाले नक्शा 73/44 के साथ खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर को भेजा गया एन०सी०डीसी० पो० आ० सिलवाड़ा का तारीख 10-11 का पत्र	वही	वही
सी-9	अछूती या विकसित सीमों की भूमिगत खुदाई के संबंध में श्री एच०बी० घोष द्वारा श्री सी० बलराम को भेजा गया खा० सु० म० नि०, धनबाद, का अर्ध-सरकारी-पत्र तारीख 17-12-1973	वे० को० लि०	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 59
सी-10	सिलवाड़ा तथा बीना सेक्टर, काम्पटे कोलफील्ड्स में कोयला खोज से संबंधित आई० बी० एम० अंतरिम रिपोर्ट (II) के पृष्ठ 15 का उद्धरण	श्री आर० के० जोशी	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृ० 109
सी-11	4-बी और 4-टी सीमों की पूरी निकासी के लिए पूर्वी पैनल से खंभे तोड़ने की अनुमति से संबंधित खा०सु० म०नि० को भेजा गया एनसीडीसी का तारीख 13-6-75 का पत्र	एम०पी०आर० के०के०के०एस०	.श्री ए० बी० शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 199
सी-12	फार्म 4-ए में तारीख 24-11-75 का दुर्घटना नोटिस	वे० को० लि०	श्री सी० पी० बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 72
सी-13	3-डिप डिस्ट्रिक्ट के लिए पंप क्षमता, अवस्थिति आदि	खा०सु०म०नि०	श्री सी० पी० बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 72
सी-14	4-शीर्ष विस्तीमन डिस्ट्रिक्ट और 3-डिप डिस्ट्रिक्ट से अक्तूबर और नवम्बर, 1975 का टनों में उत्पादन	खा०सु०म०नि०	श्री सी० पी० बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 72
सी-15	सहायक महाप्रबंधक (एजीएम) नागपुर को भेजा गया एनसीडीसी सिलवाड़ा परियोजना पत्र तारीख 18-10-71 जो 4 बोर होलों केएम टी 54, 19, 35 और 84 से पानी टूट पड़ने और पिछले एक सप्ताह के उत्पादन से संबंधित है	वही	वही
सी-16	वाई०के० सिंह की डायरी	के०के०के०एस०	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 147
सी-17	जनरल शिफ्ट का हाजिरी रजिस्टर	वही	वही
सी-18	श्री एस०के० ग्रोवर की डायरी	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 156
सी-19	जे डी एम एस को भेजा गया एन सी डी सी सिलवाड़ा परियोजना पत्र तारीख 22-2-75 जो खंभे तोड़ने के लिए वि०नि० 101 के अधीन दिया गया नोटिस है।	वे० को० लि०	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 4
सी-20	4-बी और 4-टी की पूरी निकासी के साथ पूर्वी पार्श्व पैनल के खंभे तोड़ने के लिए अनुमति से संबंधित एजेंट सिलवाड़ा को भेजा गया जेडीएमएस, नागपुर का तारीख 20-3-75 का पत्र	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 7
सी-21	स्थानिक निरीक्षण रिपोर्ट रजिस्टर	वे० को० लि०	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 7
सी-22	डिप प्रगति रजिस्टर	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 11
सी-23	उल्लंघनों के परिशोधन के संबंध में प्रधान सर्वेक्षक को भेजा गया सिलवाड़ा कोलियरी के प्रबंधक का तारीख 29-10-75 का पत्र	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 12

1	2	3	4
सी-24	श्री एस० के० ग्रोवर द्वारा किया गया पानी का परिकलन	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य के पृष्ठ 14-17
सी-25	सिलवाड़ा खान 1 और 2 के नक्शे आर०एफ० 1 : 1200	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 18
सी-26	श्री आर०के० दुबे की डायरी	खा०सु०म०नि०	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 26
सी-27	सिरदार की दैनिक रिपोर्ट	खा० सु० म० नि०	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 60
सी-28	सीम 4-बी का भूमिगत नक्शा आर०एफ० 1 : 2400	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 75
सी-29	4-बी पूर्वी सेक्शन का दस्ती नक्शा आर०एफ० 1 : 2400	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 76
सी-30	सिक्स फील्ड तथा लेवल पुस्तकें	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 102
सी-31	सीम 2 का संवातन नक्शा आर०एफ० 1 : 1200	वही	प्रदर्श का कोई उल्लेख नहीं किया गया है
सी-32	कोयला बोर्ड माप डायरी	श्री आर० के० जोशी	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 218
सी-33	शार्टफाइरट की रिपोर्ट पुस्तक	के०के०के०एस०	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 302
सी-34	जल खतरा नक्शे पर सर्वेक्षण अधिकारी, नागपुर द्वारा किए गए प्रेक्षण तारीख 7-2-76	वही	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 151
सी-35	4-बी का दस्ती नक्शा 1 : 2400	श्री आर० के० जोशी	श्री दुबे के साक्ष्य का पृष्ठ 95
सी-36	ओवरमैन की दैनिक रिपोर्ट	खा०सु०म०नि०	श्री वी०के० सिन्हा के साक्ष्य का पृष्ठ 4
सी-37	4-बी पूर्व का आंशिक भूमिगत नक्शा	वही	श्री सिन्हा के साक्ष्य का पृष्ठ 6
सी-38	ओवरमैन की रिपोर्ट पुस्तक	श्री आर० के० जोशी	श्री सिन्हा के साक्ष्य का पृष्ठ 11
सी-39	डा०बी० सिंह द्वारा दिए गए सिलवाड़ा के प्रेक्षण	वही	डा० बी० सिंह के साक्ष्य का पृष्ठ 57
सी-40	सिलवाड़ा कोलियरी की सीम-4-बी का आंशिक नक्शा	वै० को० लि०	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 29
सी-41	सीम-2 का आंशिक नक्शा तारीख 19-11-1975	वही	वही
सी-42	4-शीर्ष सीम का आंशिक नक्शा	वही	वही
सी-43	सीम-4 बी सेक्शन के भूमिगत कार्यस्थलों का नक्शा तारीख 19-11-1975	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 31
सी-44	सर्वेक्षक की क्षेत्र पुस्तक	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 32
सी-45	सीम 4-बी के भूमिगत कार्यस्थलों का नक्शा	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 33
सी-46	नक्शा रजिस्टर	वै० को० लि०	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 34
सी-47	खा० सु० म० नि० द्वारा प्रवर्ण सी-3 के लिए गए फेरो प्रिंट	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 39
सी-48	श्री ए०के० मुखर्जी के सामने दिया बयान	वै० को० लि० लेकिन यह मुख्य जिरह के दौरान श्री जोशी के वकील द्वारा मांगा गया था ।	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 62
सी-49	पिट सुरक्षा समिति रजिस्टर	वै० को० लि०	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 115
सी-50	विनियम 109(1)/105(1)/22(1) के अधीन खंभे तोड़ने के लिए आवेदनपत्र (फार्म) 1-ए	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 116
सी-51 सी-52	दैनिक माप पुस्तकें	वही	श्री एम० एस० कहलों के साक्ष्य का पृष्ठ 27
सी-53 सी-54	निर्देशक रजिस्टर	वही	श्री कहलों के साक्ष्य का पृष्ठ 33
वस्तुएं			
सी-1-3	23-7-1977 को सिलवाड़ा कोलियरी के निरीक्षण के दौरान डा० बी० सिंह द्वारा एकत्र किये गए तीन अलग-अलग लिफाफों में मिट्टी का एक और बालू के दो नमूने	डा० बी० सिंह	डा० बी० सिंह के साक्ष्य का पृष्ठ 4
जे-1	सर्वेक्षक की डायरी	श्री आर०के० जोशी	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 67
जे-2	श्री आर० के० जोशी को दिया गया आरोपपत्र तारीख 24-11-75	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 68
जे-3	18-11-1975 को दुर्घटना स्थल के निरीक्षण का श्री ए०बी० शाह का नोट तारीख 29-11-75	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 71
जे-4	आरोपपत्र के उत्तर में (हाथ से लिखा) श्री जोशी का जवाब तारीख 24-11-75	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 72
जे-5	उल्लंघनों के परिशोधन से संबंधित एजेंट, सिलवाड़ा को भेजा गया खान सुरक्षा उपनिदेशक का 21-10-75 का रजिस्ट्रीकृत पत्र	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 91

1	2	3	4
जे-6	अपर्याप्त सर्वेक्षण स्टाफ के बारे में प्रबंधक, सिलवाड़ा को भेजा गया श्री आर० के० जोशी का तारीख 26-5-74 का नोट	श्री आर०के० जोशी	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 106
जे-7	अपर्याप्त सर्वेक्षण स्टाफ के बारे में म० को० प्र० (एसीएम) को भेजा गया श्री आर० के० जोशी का तारीख 16-2-74 का नोट	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 106
जे-8	सिलवाड़ा में सहायक सर्वेक्षक/उपसर्वेक्षक की तैनाती की बाबत मुख्य कार्मिक अधिकारी, एनसीडीसी, रांची को भेजा गया डिप्टी सीएमई, सिलवाड़ा का तारीख 8-5-73 का पत्र	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 115
जे-9	जेएमटी-36 का ड्रिफ्टिंग सरेखण बनाने के बारे में एजेंट, सिलवाड़ा परियोजना को भेजा गया खा०सु० म०नि० का तारीख 20-8-74 का पत्र	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 196
जे-10	उन खान सर्वेक्षकों का ब्यौरा जो नागपुर क्षेत्र में नियुक्त किए गए थे ।	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 197
जे-11	विभिन्न पदों के लिए दिए गए विज्ञापनों का बंडल	श्री आर०के० जोशी	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 176
जे-12	सीम-4-टी का भूमिगत नक्शा आर०एफ० 1 : 2400	वही	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 103
जे-13	सीम 4-णीर्ष के भूमिगत कार्यस्थल आर०एफ० 1 : 1200	वही	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 104
जे-14	सीम 4-बी का जल खतरा नक्शा आर०एफ० 1 : 1200	वही	वही
जे-15	सीम 4-टी का जल खतरा नक्शा आर०एफ० 1 : 1200	वही	वही
जे-16	सर्वेक्षण कर्मचारियों तथा सर्वेक्षण किए जाने वाले डिस्ट्रिक्टों की संख्या सूची	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 82
जे-17	सर्वेक्षण की अनुपस्थिति में ठेकेदारों को अदायगी न करने से संबंधित उप को०खा० ई० (डिप्टी सीएम० ई०) का तारीख 6-12-72 का नोट	वही	वही
जे-18	श्री जोशी द्वारा कन्हान में वायु शैफ्ट की मध्य लाइन निर्धारित करने के संबंध में श्री जोशी को भेजा गया श्री भसीन का नोट	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 83
जे-19	सामग्री निर्गम रजिस्टर 1971	श्री आर० के० जोशी	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 86
जे-20	सिलवाड़ा कोलियरी का 1975-76 का कार्य नक्शा जिस में प्रगति कार्य भी शामिल है	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 91
जे-21	पोलिस थियोडोलाइट की मरम्मत के संबंध में कोयला खान प्रबंधक, सिलवाडा को भेजा गया प्रधान सर्वेक्षक का तारीख 10-1-74 का नोट	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 161
जे-22	मरम्मत के लिए थियोडोलाइट कलकत्ता भेजने के लिए अनुमोदन प्राप्त करने हेतु डिप्टी एस०ओ०सी० सिलवाड़ा को लिखा गया सिलवाड़ा के कोयला खान प्रबंधक का तारीख 22-4-74 का नोट	वही	वही ।
जे-23	4-बी पूर्व का आंशिक भूमिगत नक्शा	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 175
जे-24	श्री आर० के० दुबे द्वारा निर्मित 9 पूर्व लेवल की मध्य लाइन के परिवर्तन को प्रदर्शित करने वाला दस्ती नक्शा।	श्री आर० के० दुबे	श्री दुबे के साक्ष्य का पृष्ठ 97
जे-25 से जे-40	प्रधान सर्वेक्षक श्री आर० के० जोशी को सौंपा गये कार्य के प्रदर्शित करने वाले तीन रजिस्टर और तेरह फाइलें	श्री जोशी	श्री जोशी की मुख्य जिरह का पृष्ठ 2
जे-41	महत्वपूर्ण सर्वेक्षण कार्य के लिए	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 38
डी-1	उल्लंघनों के परिशोधन से संबंधित सिलवाड़ा के एजेंट को लिखा गया संयुक्त खान सुरक्षा निदेशक का तारीख 2-9-75 का पत्र	खा० सु० म० नि०	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 15
डी-2	खान सुरक्षा महानिदेशक, नागपुर निरीक्षण रिपोर्ट तारीख 29-7-75	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 18
डी-3	27-10-1975 को सी० आई० एल० तथा खा० सु० म० नि० के अधिकारियों की बैठक की टिप्पणियों का रिकार्ड	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 19

1	2	3	4
डी-4	1972 से 1975 के दौरान घातक दुर्घटनाओं, गंभीर दुर्घटनाओं और मामूली दुर्घटनाओं का उल्लेख करने वाला अनुसूची-5 में विवरण	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 30
डी-5	4-शीर्ष का भूमिगत नक्शा आर० एफ० 1:1200	वही	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 29
डी-6	खंभे तोड़ने के लिए संदर्भ 100(1) के अधीन अनुमति से संबंधित एजेंट, सिलवाड़ा को भेजा गया खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर का तारीख 3-1-74 का पत्र	श्री जोशी	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 37
डी-7	खान अधीक्षक के कार्यात्मक उत्तरदायित्वों के संबंध में संयुक्त खान सुरक्षा निदेशक, नागपुर को भेजा गया प्रबन्धक निदेशक, सी० एम० ए० के तारीख 15/17-10-74 के पत्र की प्रति	वही	श्री राधाकृष्णन के साक्ष्य का पृष्ठ 41
डी-8	प्रबंधक, सिलवाड़ा को भेजा गया संयुक्त खान सुरक्षा निदेशक का तारीख 17-3-75 का पत्र—खंभे तोड़ने के लिए विनियम 101 के अधीन नोटिस	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 10
डी-9	खा० सु० म० नि०, धनबाद को भेजा गया एनसीडीसी का तारीख 13-6-75 का पत्र—4-बी और 4-टी सीमों के खंभे तोड़ने और निकासी की अनुमति	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 23
डी-10	4-बी और 4-टी सीमों के खंभे तोड़ने और उनकी निकासी से संबंधित एजेंट, सिलवाड़ा को भेजा गया सं० खा० सु० नि० का तारीख 23-7-75 का पत्र	श्री जोशी	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 24
डी-11	4-बी और 4-टी सीमों के खंभे तोड़ने के लिए अनुमति संबंधी सं० खा० सु० नि० को भेजा गया एजेंट, सिलवाड़ा का तारीख 30/31-7-75 का पत्र	वही	वही
डी-12	खंभे तोड़ने के लिए नक्शे भेजने से संबंधी सं० खा० सु० नि० को भेजा गया सिलवाड़ा कोयलाखान के प्रबंधक का तारीख 16-8-75 का पत्र	वही	वही
डी-13	4-टी और 4-बी सीमों के खंभे तोड़ने के लिए विनियम 100 और संदर्भ 126 के अधीन अनुमति से संबंधित एजेंट, सिलवाड़ा को भेजा गया खा० सु० म० नि०, नागपुर का तारीख 28-10-75 का पत्र	वही	वही
डी-14	सरक्षा अधिकारी, सिलवाड़ा के रूप में श्री आर० के० दुबे का तारीख 11-9-74 का नियुक्ति नोटिस	श्री जोशी	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 30
डी-15	दो अभिग्रहण शापन	एम पी आर ,,	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 117
डी-16	खंभे तोड़ने से संबंधित घोष समिति की रिपोर्ट	खा० सु० म० नि०	उल्लेख नहीं
डी-17	सिलवाड़ा को लियरी में सांविधिक कार्मिकों की सूची	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 41
डी-18	संघातन अधिकारी के रूप में श्री एम० एस० सधू का तारीख 15-10-75 का नियुक्ति नोटिस	वही	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 42
डी-19	दो अभिग्रहण शापन	वही	कोई उल्लेख नहीं किया गया है । लेकिन ये खा० सु० म० नि० द्वारा 19-2-1977 को दाखिल किए गए थे।
डी-20	सुरक्षा अधिकारी के रूप में श्री रमेश चन्द्र का तारीख 28/29-9-73 का नियुक्ति नोटिस	खा० सु०म०नि०	श्री आर० सी० गर्ग के साक्ष्य का पृष्ठ 24
डी-21	4 तल सीम का संघातन नक्शा	वही	श्री जोशी के साक्ष्य का पृष्ठ 129
डी-22	भूमिगत नक्शे का ब्लूप्रिंट पैमाना 300 फुट = 1 इंच	वही	वही
डी-23	सिलवाड़ा में बड़ी दुर्घटनाओं के संबंध में तारीख 18-11-75 के नोट को अग्रेषित करने वाला खान सुरक्षा निदेशक को भेजा गया प्रबंधक निदेशक, वै० को० लि० का तारीख 28/29-11-75 का पत्र	वही	श्री एम० एम० कहलों के साक्ष्य का पृष्ठ 7
डी-24	श्री वी० एन० गुप्ता द्वारा 2/12 और 8/12 को 4-तल सीम आदि का निरीक्षण करने से संबंधित उनका तारीख 29-12-75 का नोट	वै० को० लि०	श्री कहलों के साक्ष्य का पृष्ठ 18

1	2	3	4
डी-25	20 और 21 नवम्बर, 1975 को श्री एस० एस० प्रसाद द्वारा किए गए सिलवाड़ा कोयलाखान के निरीक्षण से संबंधित नोट	एम० पी० आर० के० के० एस०	श्री कहलों के साक्ष्य का पृष्ठ 51
एम-1	सिलवाड़ा के विस्तार पर एन सी डी सी रिपोर्ट	एम पी आर के० के० के० एस०	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 124
एम-2	सिलवाड़ा परियोजना के लिए पोलिस परियोजना रिपोर्ट	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 125
एम-3	सर्वश्री एस० के० ग्रोवर, आर० के० दुबे और आर० के० जोशी का आरोप पत्र और बहाली आदेश	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 136
एम-4	दो अधिकारियों और सर्वेक्षक के मुअत्तली आदेशों को अस्थायी रूप से रद्द करने से संबंधित प्रबंधक निदेशक वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड को लिखा गया महाप्रबंधक, नागपुर का 23-2-76 का नोट	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 138
एम-5	सिन्हा—अहलुवालिया समिति रिपोर्ट (26-10-1976)	श्री एस० डब्ल्यू० धावे असैसर	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 138
बी-1	शाट फायरर की डायरी	बी सी एम ई ए	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 160
के-1	स० म० प्र०, नागपुर कार्यालय का आदेश तारीख 12-7-73 सर्वेक्षण अधिकारी श्री एम० पी० चौपड़ा को कार्य नियतन	के० के० के० एस०	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 171
के-2	अगस्त, सितम्बर और अक्तूबर 1975 में सिलवाडा कोलियरी के उत्पादन पंजीगत जनशक्ति और खनन कर्मचारियों का उल्लेख करने वाला विवरण	के०के० के० एस०	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 172
के-3	लेखा अधिकारी, सिलवाड़ा का तारीख का पत्र ठेकेदारों को किए गए भुगतान से आयकर कटौती का प्रमाण-पत्र	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 174
के-4	आयकर कटौतियों के बारे में ठेकेदार श्री विष्णु चौधरी को भेजा गया सिलवाड़ा के लेखा अधिकारी का तारीख 9-12-75 का पत्र	वही	वही
के-5	आयकर कटौतियों के बारे में ठेकेदार श्री विष्णु चौधरी को भेजा गया सिलवाड़ा के लेखा अधिकारी तारीख 19-4-75 का पत्र	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 174
के-6	सिलवाड़ा कोलियरी के कोयले के स्टाक के विवरण की फोटोस्टेट प्रति	वही	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 175
के-7	सिलवाड़ा और पिपला खानों से संबंधित पुलिस रिपोर्ट पर टिप्पणियां	के० के० के० एस०	श्री शाह के साक्ष्य का पृष्ठ 184
के-8	डिप्टी सी एम ई, सिलवाड़ा को भेजा गया बालनी खान के प्रबंधक का 13-7-76 का पत्र—शोक संदेश श्री रामाराय नारायण, खान सिरदार	वही	श्री बंसल के साक्ष्य का पृष्ठ 140
	'जी' चिह्नित प्रदर्श —श्री एस० के० ग्रोवर		
जी 1	अदालत कक्ष में श्री एस० के० ग्रोवर द्वारा रखा गया रजिस्टर	श्री एस० के० ग्रोवर	श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 252 जिसकी व्याख्या 20-3-77 को अदालत में की गई— श्री ग्रोवर के साक्ष्य का पृष्ठ 255

परिशिष्ट 6

अदालत में पेश हुई पार्टियों और उनके वकीलों की सूची

क्रम संख्या	पार्टी का नाम	वकीलों के नाम
1.	वैस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड	श्री ए० एस० बोब्डे श्री बी० ए० बोब्डे श्री आर० वाई० सिरपुरकर
2.	श्री आर० के० जोशी	श्री एच० डी० पटेल
3.	खान सुरक्षा महानिदेशालय	—
4.	एम० पी० राष्ट्रीय कोयला खदान कामगार संघ	श्री आर बी० पेंढारकर श्री एस० एस० चावडा
5.	विदर्भ कोल माइन्स एम्प्लोईज एसोसिएशन	श्री एस० पी० देशपांडे
6.	कोयला खदान कर्मचारी संघ	आर० रंजन पिल्लई

New Delhi, the 26th July, 1979

S O 4079—In pursuance of section 27 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952), the Central Government hereby publishes the following report submitted to it under sub-section (4) of section 24 of the said Act by the Court of Inquiry appointed to hold an inquiry into the causes of and circumstances attending the accident which occurred on the 18th November, 1975, in the Silewara Colliery in District of Nagpur in the Maharashtra State

Report of the Court of Inquiry on the accident which occurred on the 18th November, 1975 at Silewara Colliery in District of Nagpur of Maharashtra State

REPORT

OF THE COURT OF INQUIRY INTO THE CAUSES AND CIRCUMSTANCES ATTENDING THE ACCIDENT WHICH OCCURRED IN THE SILEWARA COLLIERY IN DISTRICT NAGPUR OF MAHARASHTRA STATE ON THE 18TH NOVEMBER, 1975

BY

SHRI P M NAYAK

(Appointed in Government of India, Ministry of Labour Notification No N-11015/7/75-MI, dated the 9th March, 1976).

CHAPTER I

INTRODUCTORY

1 This is an Inquiry held under section 24 of the Mines Act, 1952 into an accident which occurred in the Silewara Colliery in the District of Nagpur, Maharashtra State, on 18-11 1975, resulting in the loss of 10 lives The Government of India's Notification dated the 9th March, 1976, constituting the Court requires the Court to make a formal Inquiry into the cause of and the circumstances attending the accident (Appendix I).

2 Public notices were issued calling upon persons or associations or bodies interested in the Inquiry to appear before the Court In response to this notice the following parties appeared before the Court and submitted Written Statements

(1) The Western Coalfields Limited (W C L)

(2) Directorate-General of Mines Safety (D G M S)

(3) Shri R K Joshi, Ex-Surveyor of Silewara Colliery

(4) M P. Rashtriya Koyala Khadan Kamgar Sangh (M P R K.K.K.S)

(5) Koyala Khadan Karamchari Sangh (K K K S)

(6) Vidarbha Coal Mines Employees Association (V C M E.A).

3 As many as 18 sittings of the Court were held, the first one on 26-5-1976 and the final one on 9-6-1978 mostly at Nagpur (which is about 27 kms from the Silewara Colliery) to record evidence and to hear arguments The W C L examined 8 witnesses, D G M S and Shri R K Joshi one each Four witnesses were examined on behalf of M P R K K K S, two on behalf of V C M E A, and one on behalf of K K K S

4 With a view to securing the assistance of the parties, the Court settled, at a very early stage of the Inquiry, the following points for determination

(1) What were the causes of and circumstances leading to the accident ?

(2) Could the accident have been prevented ?

(3) Were there any breaches of any statutory Rules or Regulations, and if so, what are they ?

(4) Which person or persons or party or parties, if any, were responsible for the accident and how can the responsibility be apportioned between them ?

(5) What recommendations for the amendment of laws, Rules and Regulations including Safety Regulations, and for changes in Practices could be made to prevent such accdents in future ?

(6) Similarly, what recommendations for institutional changes towards the same and could be made ?

(7) Any other relevant matters, including costs

5 Most of the parties submitted written arguments and all the parties were heard orally in Court Along with some of the Assessors, I visited the Colliery on two occasions (on 26-5-1976 and 26 7 1976) and inspected the site of the accident and the surrounding workings

6 Before this Court was constituted four separate inquiries or investigations into the accidents had already taken place The first one was by Shri S S Prasad of the Directorate-General of Mines Safety This was a few days after the accident and his conclusions are contained in the note recorded by him (Exhibit C-25) The next one was by Shri A K Mukherjee, Additional Chief Mining Engineer (C M E) of W C L The third was by a Committee set up by W C L consisting of two senior officers of the Coal India Limited, namely, Shri R J Sinha, General Manager (Co-ordination), Eastern Coal Fields Limited, and Shri P C Aluwahlia, General Manager (Co-ordination) Western Coalfields Limited, and the fourth and last one by the Director of Mines Safety, Nagpur The last three enquiries were almost contemporaneous, having been held in the last week of November, 1975 or the first week of December, 1975 The Report of the Director of Mines Safety Nagpur, has been filed as part of the Written Statement of the Directorate-General of Mines Safety The Report of the Sinha Aluwahlia Committee has also been submitted to the Court by W C L Apart from the conclusions and findings, both these Reports contain the statements recorded from various persons who were examined The statements recorded by Shri A K Mukherjee, C M E of W C L have also been submitted to the Court, although he was not examined Shri Mukherjee's conclusions are not available to the Court, but it has been stated that it was pursuant to his oral inquiry which he is reported to have held earlier before he recorded the statements of some persons, disciplinary action against three officers of Silewara Colliery was initiated on the 25th November, 1975, and they were placed under suspension, the officers being Shri S K Grover, Colliery Manager, Shri R K Dubey, Assistant Colliery Manager and Shri R K Joshi, Mine Surveyor Subsequently, the orders of suspension were cancelled early in March, 1976 and the three officers were assigned to other suitable posts in W C L outside Silewara Colliery It has been stated that the disciplinary action against these three officials has been kept in abeyance pending the conclusion of this Inquiry

CHAPTER II

THE MINE

1 Silewara Colliery which is under the control of the Western Coalfields Ltd, (a subsidiary of the holding Company, M/s Coal India Ltd), is situated in the Nagpur District of Maharashtra State at a distance of about 27 kms to the North of Nagpur The Colliery is connected with Nagpuru city by a metal road 19 kms long along the Nagpur Chindwara road, 5 km along the feeder road to Khaperkheda Power Station and a 3 km long branch road upto the mine The mine property is situated within latitudes 21°—15' and 21°—20 and longitudes 79°—05' E and 79°—10' E The Mine has its own Post Office, and is within the jurisdiction of the Police Station at Khaperkheda The location plan of the mine is at Appendix II

2 Silewara Colliery and other adjoining mines (Walni, Pipla and Patansongi) were designed to supply coal to the Koradih and Khaperkheda Thermal Power Stations (of the Maharashtra State Electricity Board) which are located at distances of 7 km and 6 km respectively from the Silewara mine Silewara mine is now supplying coal to the Koradih Thermal Station only

3 The Colliery area lies at an altitude of 283 m to 300 m above MSL The Kanhan River which flows from North to South in the area, joins the Pench River downstream at an approximate distance of about 6 km from the mine Kanhan

river lies to the East of the Colliery and controls the main drainage of the area.

4. As mentioned above, Silewara Colliery is linked to the Koradih Thermal Station and is supplying the grades of coal required by the latter. The mine property contains five seems; the thickness of each seam and the parting between them as per records of Bore Hole No. KMT 19, are given below :—

Seam/Parting	Thickness (m)
No. V Seam	6.53
Parting	29.57
No. IV Top Seam	4.18
Parting	6.57
No. IV Bottom Seam	2.02
Parting	36.06
No. III Seam	1.63
Parting	22.27
No. II Seam	4.72
Parting	2.43
No. I Seam	3.36 (Not touched)

5. The general dip of the strata is about 1 in 4 due S 41°W.

6. To exploit the reserves of IV Top and IV Bottom Seams of the Mine, two Inclines—one for the Conveyor Belt and the other for Men and Materials—were started in 1964. The Inclines were driven due S 74½°W (in which direction the apparent dip of the seams is about 1 in 4.8) at a gradient of 1 in 4, for reaching the IV Bottom Seam. Development in IV Bottom Seam commenced in 1969 and the Seam was developed on either side of the Incline on the conventional Bord and Pillar System. Development work in IV Bottom Seam was continued till 1972. The accident occurred due to the brusting of a coal barrier in IV Bottom Seam workings.

7. In April, 1970, the Management had applied for permission from the Directorate-General of Mines Safety to extract pillar from the IV Bottom Seam, in the II Cross Cut District. Permission was sought for splitting the pillars in four parts (as a final operation) and filling the voids with sand by means of hydraulic stowing. The permission asked for was granted by D.G.M.S., and splitting of IV Bottom Seam pillars in the district, in conjunction with stowing, was completed in April, 1974. The 8th Level East was used as a drainage level and was not stowed—as also the inter-connecting galleries between the 7th and 8th Levels.

8. IV Top Seam was developed on either side of the Inclines by driving several cross-measure drifts in different areas from IV Bottom Seam. Development in Top Seam had started in January, 1970 and permission was obtained from D.G.M.S. for depillaring the Seam in the area which overly the II Cross Cut Dip in the Bottom Seam. The approved method of depillaring was to split the pillar by a level split; the half-pillars so formed were to be extracted by dip slices and the void was to be stowed. Depillaring in this district was started in December 1974, and a considerable area had been extracted by the time the accident took place in November, 1975.

9. Development work in II Seam was started in March, 1973. Entry into the Seam was obtained by driving a cross-measure drift from IV Bottom Seam and another from IV Top Seam. The drift from IV Bottom Seam served as the intake airway and the haulage road and that from IV Top Seam as the return airway for the II Seam workings.

10. Two cross-measure drifts were also driven from IV Bottom Seams across a 40 m. upthrow fault on the dip side to work the area to the dip side—called Sector C. The area to the rise of the fault (where IV Top and Bottom Seams have been worked, as mentioned above) is known as Sector B.

11. One of these drifts is for coal supply and the other for material supply. A shaft is also being sunk in this area—to be utilised for winding, ventilation and stowing.

THE ACCIDENT

12. Having completed the development and extraction in IV Bottom Seam in the area East of Main Inclines and also the entire development and, to a large extent, depillaring, in IV Top Seam overlying the said area in IV Bottom Seam, it was decided to work a virgin patch of coal left between the Conveyor Dip Incline on the west, the II Cross Dip on the East and the 40 m. throw fault on the south. Development work in this District which became known as the 3-Dip District (Annexure III) was commenced in July, 1975 and, by about the first week of October 1975, had reached 9th Level East; the direction in which this Level was being driven was such that it would come in close proximity to the Dip Driven below 8th Level in the II Cross Cut.

13. On the 5th November, 1975, seepage of water was noticed on the rise side of 9th Level gallery (in 3-Dip District) over a patch of about 2.5 m. length and about 1.5—2.0 m. height. On observing this seepage, further drive of the Level was stopped, and a dip gallery (No. 5-Dip) was opened near the end of the Level. The Dip gallery was worked for a couple of days or so before it was stopped due to accumulation of water; during this period the Dip had advanced about 4-5 metres. Meantime, the seepage of water observed earlier in the 9th Level had continued.

14. On 18-11-1975, normal work commenced in the 1st shift (starting at 8.00 A.M.), when 46 workers as below were employed in the 3-Dip District :—

Loaders	...	21
Timbermen	...	9
Line-Gang	...	3
Trammers	...	6
Haulage Khalasi	..	1
Line Cleaning and Packing Mazdoors	.	4
Drillers	...	2

15. Five of the Timbermen were allotted the work of supporting the roof (at the junction of 9th East Level and 3-Dip) with cross-bars. The timbermen made the cross-bar holes ready and carried the cross-bar to the site. At about 2.45 P.M., when they were lifting the cross-bar, they heard a loud cracking sound from the rise side of the level gallery. Suddenly, about 2.1 m. out-bye from the end of the level gallery, a column of water, about 20 m. wide burst out from the side. The timbermen, who were working only a couple of meters away immediately rushed out from the Level; three of them escaped to safety but the remaining two were prevented by the rushing water. While these timbermen were rushing out for safety, they also shouted to the other workmen to escape. The size of the opening through which water came out subsequently increased to 1.9 m. in height and 0.90 m. in width.

16. Two workmen, Shamlal and Nandlal, who were present in the 3rd Haulage Dip, felt a gush of air on their bodies and then saw water rushing from 9th East Level. They shouted a warning to the other workers to escape and ran up the Haulage Dip themselves. On hearing their shouts, the workers in the District, including loaders and Mining Sirdar, ran for safety by the Haulage Road and the West Companion Rise. Unfortunately, one loader and one Cleaning Mazdoor standing between 9th and 10th Levels could not escape. All other workers in the 3-Dip District were able to come out in good time before the rushing waters filled up the Dip. side workings.

17. The water coming out from the 9th Level East filled the Dip side workings in 3-Dip District and then over-flowed from the 8th Level West into the Conveyor Dip where a belt conveyor was operating. A total of eight workers were engaged on various jobs in this Dip, out of which two had gone up earlier apparently on some work. Of the remaining six, who were engaged at the Loading Point below No. 2 Trippler Chute and Sector C Trippler Chute, only one person managed to escape; the other five were unfortunately drowned. The lone survivor (Shri Dharma Baliram) escaped by holding on to the electric cable for support.

18. Since the Belt Incline had a dead-end, the water rose through the Staple Pit below the Tippling Point for Sector 'C' into IV Top Seam Workings, flowed along to 15 West Level and entered the 16 and 17 West Levels. It filled the 17th Level completely and the 16th Level partially. From the 17th Level the water flowed towards the Material Supply Drift (driven across the 40 m. upthrow fault to Sector C), filled up the 'trough' formed at the junction of No. 2 Incline Dip and the drift connecting TV Bottom to IV Top and then into the Material Supply Drift, which was already waterlogged, thus completely cutting off one of the two entries to Sector C workings. However, all workers of Sector C came safely through the other entry.

19. Water also rose upto II Seam Tippler opening and, flowing down the Drift, filled up part of the workings of this Seam. Two linemen, who were travelling up the drift, were hit by the water coming down. One of them managed to escape, but the other one was carried away to the foot of the drift and was later on found partially buried upto his chest in the debris. He was found by a rescue party in this condition at about 3.30 P.M. Even though frantic attempts were made to dig him out, he could not be extracted from the place where he was partially buried and he finally expired at 6.30 P.M.

20. The following is the list of the workers who lost their lives :

Location	Category of Person(s)	Number	Name of deceased
3 Dip Dist. 10 L 2 Dip 3 Dip Dist.	Timbermen	2	Kantu Nathu & Balram Domeji
10L 2 Dip	Loader	1	Sadu Mangli
3-Dip Dist. 10 L 2 Dip	Cleaning Mazdoor	1	Namadeo Atmaram
Belt Incline	Electric Helper	1	Balchand Kanhaya
-do-	General Mazdoors	4	Mithailal Inru (Misc. Mazdoor) Haridas Pandurang (Chatman) Chunna Bharma (Belt Cleaning Mazdoor) Shiva Laxman (Misc. Mazdoor)
2 Seam Drift	Line Mistry	1	Shivdayal Radhelal

CHAPTER-III

OWNER

1. A point has been raised that the 'Owner' of the Silewara Mine, as defined in the Mines Act, has not appeared before the Court, nor filed any Written Statement. The Written Statement filed on behalf of the Western Coalfields, Limited, is signed by Shri A. B. Shah, General Manager, Nagpur and General Manager (Co-ordination), Nagpur of the Western Coalfields, Limited. The position and the status of the Company itself has been explained in the Statement in the following terms :

> "The Western Coalfields hereinafter referred to as the 'Company', is a subsidiary of the holding Government Company, Coal (India) Limited. The Silewara Colliery is under the administrative control of the General Manager, Western Coalfields, Limited, stationed at Nagpur. The Colliery was previously owned by the National Coal Development Corporation Limited, which was renamed the Central Coalfields Limited, another subsidiary Company of Coal (India) Limited. The position, therefore, is that the Colliery continues to be owned by Central Coalfields, Limited though under the control of western Coalfields Limited, which is therefore competent to file this Statement on behalf of the mine owner."

2. The position of Coal (India) Limited which, with the nationalisation of the coal industry in 1973, took over Western Coalfields, Limited, has been described in the Written Statement as follows :—

> "On the coming into force of the Coal Mines (Taking Over of the Management) Act, 1973, the Silewara Colliery came to be managed by the Coal Mines Authority of the Central Government. Thereafter, on the passing of the Coal Mines (Nationalisation) Act, 1973, the Central Government directed the vesting of nationalised mines in a Government Company, called the Coal Mines Authority, Limited. The National Coal Development Corporation Limited owned the mine though the Coal Mines Authority, Limited was managing the mine. Subsequently, the Coal Mines Authority, Limited, was converted into Coal (India), Limited, a holding company having the following subsidiaries :
>
> (i) Central Mines Planning & Design Institute, Limited with headquarters at Ranchi.
>
> (ii) Bharat Coking Coal Limited comprising B.C.C. together with Sudamdih and Monidih Mines of National Coal Development Corporation, with headquarters at Dhanbad.
>
> (iii) Eastern Coalfields, Limited, comprising the present Eastern Division of C.M.A., with headquarters at Sanctoria, Burdwan.
>
> (iv) Central Coalfields, Limited, comprising the Central Division of C.M.A./N.C.D.C., excluding Sudamdih and Monidih Mines, with headquarters at Ranchi.
>
> (v) Western Coalfields, Limited, comprising Western Division of C.M.A. with headquarters at Nagpur."

3. The term 'Owner' has been defined in Section 2 of the Mines Act. I extract below the relevant portion of the definition :

> "Owner, when used in relation to a mine, means any person who is the immediate proprietor or lessee or occupier of the mine or of any part thereof..... and in the case of a mine owned by a Company, the business whereof is being carried on by managing agent, such managing agent....."

Where there is no managing agent, as there is none here, it would be legitimate to presume that the Managing Director of the Company would be the owner. In the present case, such owner is Shri C. Balram, Managing Director of Western Coalfields, Limited. At one stage of the Inquiry, W.C.L. stated that they were going to examine Shri Balram as a witness, but later on, they did not act upon the offer. It is, however, not obligatory for the Company to have its Managing Director examined as a witness. Shri A. B. Shah, who is the General Manager of the Nagpur Division of Western Coalfields, Limited, whose authority to represent W.C.L. has not been successfully challenged before us and who signed and filed the Written Statement was examined as a witness, as also Shri S. Radhakrishnan, Sub-Area Manager of the Silewara sub-area, and Shri O. P. Bansal, Agent of the Silewara Group. As stated above, the Silewara Colliery has been described as being under the administrative control of the General Manager, Nagpur. This has not been disputed; neither has it been disputed that Shri A. B. Shah is the General Manager of the Nagpur Division. Three senior officers of the Nagpur Division mentioned above have been examined as witnesses and at no stage of the Inquiry have the Western Coalfields, Limited, Management failed to submit to the Court any document or paper required of them by the Court. I consider that there has been full and effective participation by the Western Coalfields, Limited in the Inquiry. In my opinion, therefore, it is not necessary to go further into this objection, that the 'Owner' has not been represented at the Inquiry.

CHAPTER IV

WAS II CROSS-CUT DIP DRY ?

1. In considering the terms of reference one of the principal questions to be answered first of all is whether the II Cross Cut Dip contained long-standing accumulation of water or whether it was free of water before the accident. W.C.L. have vehemently argued that the Dip was totally dry, while the

D.G.M.S. and other parties to the Inquiry have equally strenuously urged that the Dip was full of water. As stated in the Written Statement of W.C.L., the cause of the accident was:—

"The direct and immediate cause of the accidental inundation by water was the sudden rupture of the thin parting between the end of 1st dip of 8th level and the rise side of the 9th level gallery. The rupture appears to have occurred due to the pressure of water which had entered into and accumulated above the end of the 1st dip of the 8th level in the old workings. The rupture was sudden and unexpected and could not have been foreseen. The crucial factor which prevented the raising of apprehension of inundation by water was the inaccurate survey plan and the workings in Seam No. IV bottom Eastern Section (Appendix IIIA) which discloses a serious omission. The error resulted in the belief that the parting was about 5 meters thick; in fact, it was only 0.6 meters thick at the time of rupture.

The unusually large amount of water which caused the rupture and the inundation does not appear to have originated in the old workings and was not the accumulation of stowing water or any other water normally expected in old workings. The circumstances show that the large accumulation of water was a very recent and rapid development. Otherwise, since the stowed out area in Seam IV bottom could hold only about 12 lakh gallons of water at the most, if 18 lakh gallons of water had accumulated, there would have been a substantial and clearly noticeable overflow of water from the 6th level gallery into the new workings of No. 3 dip district. The only reasonable inference from this is that the quantity of about 18 lakh gallons of water came from the strata above the workings in Seam No. IV top, entered the top seam through fractures in the roof and came into the bottom via the small fault of 1 2 m. to 1.5 m. throw and slip planes in the thin parting between the seams."

W.C.L. further proceed to explain:

"As regards the immediate cause which resulted in the inrush, it is due to some strata movement that took place in the above stated water-bearing rocks resulting in the sudden release of the water into IV top seam workings, or into IV bottom workings where there is no development in IV top or near fault plane. IV bottom seam workings at places in this area had got connected to IV top seam workings owing to roof falls or cracks in the parting between IV top and IV bottom. Much of the water that entered IV top seam old workings must have found its way through this route into IV bottom workings. The 8th level gallery in the old workings being the dip most gallery, water naturally found immediate access to it."

2. The initial stand of W.C.L. (in their Written Statement) was that accumulation might have started, if at all, only after the 4th November, 1975 on which date seepage in the 9th Level East was first discovered. In the light of evidence recorded, this stand was somewhat modified and in the course of arguments it was stated that the last inspection made by Manager was at the end of September, 1975 when he found the area completely dry and that accumulation, if at all, could have started thereafter, i.e. a period of roughly six weeks before the accident on the 18th November, 1975.

3. I shall first deal with the evidence on this point and the arguments based thereon.

4. As a prelude to their theory of how water suddenly rushed into the II Cross Cut and ruptured the barrier thereby causing the accident, W.C.L. have urged that earlier there was no water accumulation in the Cross Cut Dip. It is further argued that the large bulk of the evidence recorded at this inquiry and at earlier inquiry held by the Director of Mines Safety makes no mention at all of waterlogging in the area. The Pit Safety Committee used to meet regularly and its minutes make no reference to any apprehensions of waterlogging entertained by the members, in particular by the subordinate staff of the Colliery working in this district ; it is inconceivable that such staff as well as senior colliery staff would have knowingly extended the workings in 3-Dip District towards the II Cross Cut knowing that the later was full of water. In Particular, it has been urged that the Colliery Manager Shri Grover, had on three different occasions himself visited the II Cross Cut Dip ; in December, 1974, in May, 1975 and at the end of September, 1975 respectively and on each occasion had found it completely dry. I have carefully considered the evidence on both sides on this point and have come to the conclusion that it is most difficult to accept that the II Cross Cut Dip was not waterlogged. In the first place, it is conceded on all sides that Silewara is a watery mine. Natural percolation of water due to rain fall and the flowing of a big river, Kanhan, on the Eastern side must have led to a good deal of accumulation of water in the area. This must have been supplemented by the sand-stowing water. The point is reinforced in the evidence of more than one W.C.L. witnesses. Shri S. Radhakrishnan, the Sub-Area Manager, after referring to three possibilities of sources of water, weep holes, rain water, percolation through drifts, has estimated that the quantity may be about 30 to 40 gallons per minute.

5. It must be stated that after completion of depillaring in the IV Bottom Eastern District in April, 1974, two pumps were working in the II Cross Cut Dip. These were withdrawn, one after the other, some time later, and by November, 1974 there was no pump at all in the area. Thus, for a period of nearly 12 months, i.e. until the accident took place in November, 1975, the possibilities as well as the probabilities strongly point to accumulation of water having taken place.

6. W.C.L. laid great store by the testimony of the Manager, Shri Grover, who claims to have personally inspected the II Cross Cut Dip at least three times as mentioned above. My finding is that this portion of Shri Grover's testimony does not deserve to be credited. These three inspections are stated to have been made by Shri Grover himself unaccompanied by any other member of the Colliery staff and there is no written record of the inspections, either immediately after they were made, or at any time thereafter. It is true that as soon as the May, 1975 inspection was made, Shri Grover claims to have telephonically reported the result to the General Manager, Shri A. B. Shah. What is stated is that Shri Shah, telephoned Shri Grover in his office on the 26th May, 1975, which incidentally was a Sunday, and asked him if he had personally satisfied himself that there was no water in II Cross Cut Dip. Shri Grover immediately did the inspection by himself and reported back that very day on the telephone to Shri Shah at the latter's office. Shri Shah as well as Shri Radhakrisnan, Shri Bansal and the subordinate staff like Shri Dubey, Assistant Manager, have all relied upon these inspections of Shri Grover for holding that the II Cross Cut was totally dry. None of them have any personal knowledge on this point. I have to reject this testimony under the conditions and in the terms in which it has been tendered in the Court. It does not have the ring of truth or the flavour of credibility. Shri Dubey made a half-hearted attempt to inspect the area soon after he assumed charge of the District but was deterred by the roof fall just below the junction of 6th Level East with the cross-cut. There is evidence that the roof could have been easily dressed and supported and made safe for the inspection, if that was really the intention.

7. There are certain other points which confirm me in my conclusion that large accumulation of water in the area had taken place. I shall deal with these one by one.

8. W.C.L. have argued that, inferentially also, the II Cross Cut area must be deemed to have contained no water. The line of argument is that if there was a constant inflow of water into this area the area would have got filled up in about 30 days and thereafter there would have been an overflow through the 6th level. In as much as no such overflow was ever noticed or took place, it is urged that the possibility of accumulation of water of longstanding duration is ruled out. I shall deal with this point in greater detail when I consider the subject of the three bore-holes connecting IV Top and IV Bottom through the 6th Level East. If I may anticipate a little, I have there come to the conclusion that W.C.L.'s argument is unacceptable.

9. Another point urged concerns the 0.6 meter rib which collapsed on the 18th November, 1975 causing the accident. It is urged that a rib so thin as this should have collapsed much earlier, if it was indeed under pressure over a long

duration, from a column of water, especially in the context of the blasting in the 9th Level East on the 4th November, 1975 and the 5th November, 1975. Here I have taken note of the contention of Shri M. S. Kahlon, D.M.S., about the puncturing of the rib:

> "It appears that the puncturing of the rib had occurred after the cleavage and the bedding planes in coal and rock had been lubricated by water seepage and the thin rib had also been 'fatigued' due to the time factor to such a degree or extent that part of the rib in question could not withstand the hydraulic pressure any more. The failure of the rib had been somewhat advanced or accentuated by vibrations of blasting in nearby 5-Dip which were gradually setting up additional strain in the rib."

It should be noted that sand had collected behind the Rib of coal and the extent of sand was reported to be about 12 to 15 metres from the 7th Level Junction. As the Rib was fully packed by sand, it seems reasonable to conclude that the failure of the Rib would not have taken place immediately after blasting was done in the 9th Level East or 5-Dip of this Level.

10. W.C.L. have referred to the Pit Safety Committee register and meetings I understand that the normal function of the Committee is to promote the safety education of workers. I have perused the register and gone through the minutes. The meetings were usually held once a month; some were cancelled for want of quorum or other unstated reasons. The minutes show that the Committee functioned mostly as a forum for educating workers with regard to mine safety. It is difficult to say that the subordinate staff took the Committee and its meetings very seriously. They might have done, so if there were a separate Safety Officer functioning at Secretary of the Committee, unburdened with other responsibilities; this unfortunately was not the case. Under the stimulus of positive initiative by such a Secretary the subordinate staff might have felt themselves encouraged to talk about aspects of the mine workings which posed threats of danger. Apart from the education of workers, these meetings seem to have been largely taken up with requests for various kinds of facilities to workers working underground. The minutes show that matters relating to serious dangers in the underground were not at all raised or discussed. I would suggest that the scope of the functions of the Committee be enlarged to include such matters also.

11. I see such force in the testimony of Shri M. S. Kahlon, Director of Mines Safety:

> "The major sources of water in Silewara Mine are the natural percolation i.e. the rain fall and presence of a big river. The natural percolation i.e. rain-fall, is charging the detrital mantle. It has been determined by hydrogeological survey conducted by the management and also it is known by experience of the Mining Engineers belonging to the management, including the Managing Director, that the detrital mantle is highly water charged. IVth bottom and IVth top seams which are incropping under the detrital mantle strata are being constantly charged with water from the detrital mantle. The H.F.L. of the major river on this side lies over the area in question and it is a constant source of water percolation due to gravity, flowing down to IV bottom and IV top seams. A contention has been made by the management that there were shale beds which will not permit the gravity of water flowing through these seams. Of course, this contention was only against the charging from the vertical plane and is not against the charging along the bedding planes from the detrital mantle where the coal seams come in contact with detrital mantle. Regarding shale, it is my submission that they are not impervious, though they are comparatively less previous than sandstone. Therefore, the shale beds present above IV top seam cannot totally prevent percolation of water from top strata to the seam. Moreover, nobody can rule out the pinching of the shale beds i.e. they can thin out or be totally absent in certain places. Such 'pinching' has been noticed by hydrogeologists in the coalfields of Maharashtra. In Silewara there are only a few bore-holes in the big area in question and no one can say after studying the section of 3 holes that 'pinching' has not occurred. Before the accident, sandstowing had become another source of water to the II Cross Cut area. The said stowing was being carried out in the top seam and the water of sand could find its way down to the bottom seam by seepage or by percolation etc. IInd Cross Cut area is also being subject to waterlogging due to overflow of water while clearing jams in the stowing pipes. IInd Cross Cut being the Dip most part of a very big area and there being several sources of water as explained above, no mining engineer can say that this area can remain free of water."

12. The same point was put by Shri M. S. Kahlon to Dr. B. Singh, the expert witness, in cross-examination:—

Q: Can you say that the shale bands between the parting and also above IV top seam have not 'pinched' on certain planes?

A: I cannot say.

Q: If 'pinching' has occurred and if there are planes of weakness in the shale bed of the big area of 1000 ft. × 500 ft. which you have not been able to inspect. can you permit us to assume that there may be as little percolation as only 5 gallons per minute in a place overlain by a big river, highly water charged rocks and several other sources of natural percolation?

A: I do not rule out this possibility under the circumstances stated above. This may happen.

Q: All the percolation water, whatever little may be there, finally passes to 8th level in bottom seam; do you agree

A. Yes.

Q: The pump was finally removed in the month of November, 1974 from IInd Cross Cut dip as claimed by the management. At the rate of 5 gallons per minute which is a very very low figure, 18 lakh gallons of water accumulated upto the date of accident in the IInd Cross Cut area. Kindly do the calculation and confirm?

A: I agree. It is 18 lakh gallons.

13. There is another fact that the Management have not been able to explain satisfactorily—that of 7th and 8th Level East galleries of 3-Dip District not having been connected to II Cross Cut workings. These galleries were stopped only 4-5 meters away from II Cross Cut workings The Management's stand that this was done because of bad roof conditions is unacceptable; despite there being little artificial support in the area, the galleries were found to be quite 'normal' several months after the accident. It is only logical to draw the conclusion that round about the time of the accident, II Cross Cut Dip workings were full of water upto above the 7th level and the management must have been aware of this and that it was because of this knowledge that the 7th and the 8th Level East galleries of 3-Dip District were not connected with II Cross Cut District workings.

14. I shall next deal with another piece of evidence on which the D.G.M.S. have relied to prove the accumulation of water in the II Cross Cut Dip. This relates to rusting of steel girders and the presence of fungus on timber in the II Cross Cut. It has been argued that these constitute evidence of longstanding water in the area. A parallel item of evidence is the Hydrogen Sulphide smell encountered in the district after the accident. A good deal of evidence on these points has been adduced on both sides. In my view, these items of evidence do not by themselves demonstrate the existence of waterlogging. However, this does not affect the conclusion I have reached on other grounds that there was extensive waterlogging.

CHAPTER V

CHARGES AND EXPLANATIONS

1. It would perhaps be appropriate if at this stage I make some reference to the charges framed by the W.C.L. management against Shri Grover, Manager, Shri Dubey, Assistant Manager and Shri Joshi, Surveyor, soon after the accident and of the explanations that each of them gave in reply :

2. Shri S. K. Grover : Charge Sheet dated 25-11-1975 : A preliminary inquiry indicates that the mishap occurred as adequate precautions under Regulation 127 against sudden inrush of water underground had not been taken while driving galleries in 5 dip district. It appears there have been acts of ommission on your part in the performance of your statutory duties which amount to gross negligence.

3. Explanation dated 9-12-1975 (Gist): As there was no water in the disused workings pumps were withdrawn in November, 1974. The place was inspected again after a month and found to be dry. Subusequently also, I inspected the disused workings and found them free of water. My last inspection was in the end of September 1975. In my view the source of this water must be of recent phenomena. I have reached this conclusion for the following reasons:

(1) The thin parting would have given way during blasting had there been pressure of water on it.

(2) The total voids can hold only 9 lakh gallons of water. About 18 lakh gallons of water could not have accumulated there without causing an overflow through 6th level. No such overflow had taken place. During recent inspection with D.M.S. the maximum water mark was not beyond five to 20 feet above the junction of 7 level. If water level is drawn from this point it cannot contain more than 11 lakh gallons.

(3) The rate of flow of water was about 1200 G.P.M. after two hours of the mishap and 200 G.P.M. after about six hours, 45 G.P.M. on the 30th November and 30 G.P.M. on the 2nd December.

(4) After the mishap stowing operations in 4 top were suspended and the two pumps which were previously able to deal with the dewatering operations of stowing were just able to cope with the strata water only and just maintain the water level. For dewatering, another pump of 500 G.P.M. had to be installed. An inference can be drawn that there had been inrush of water in the stowed out area

(5) This area contains acquiferous rocks notorious for water, and from borehole log shown on the enclosed plan, it can be seen 'that sand-stone which is just above IV top seam is 20 m. in thickness and is just below detrital mantle. Both these contain huge quanity of water. As indicated in the enclosed plan it can be seen that portion of workings marked between X 'AA' and 'BB' are having no impervious rocks above except weak shale bands just above IV top seam. Any small crack for any reason whatsoever is enough to cause this type of mishap. The water from IV top seam might have found its way through slip planes and cracks between IV top and IV bottom. And mining operations in this area are definitely more risky in spite of all precautions. Even while development is in progress, the galleries have been known to touch the feeders of water not necessarily associated with faults. Such is the danger area and in the cases of partial or full extraction of pillars with stowing such an inrush cannot be ruled out.

The mishap was beyond my control and an act of Nature.

4. Shri R. K. Dubey: Charge Sheet dated 25-11-1975: Preliminary inquiry indicates that the mishap has occurred as adequate precautions under Regulation 127 and 41A against sudden inrush of water undergound were not taken while drilling galleries in 3 dip. It appears that there have been acts of omission on your Part.

5. Explanation dated 8-12-1975 (Gist): Shri Grover had told me that 3 dip was dry. 9 level was advanced as per instructions for tapping water from the top seam sump. 9 level was stopped as the bottom seam sump was not ready and this was to be joined with the top seam sump after installation of pumps. On 5-11-1975 seepage was noticed and 9 level was not further advanced. The 5 dip opened on 5-11-1975 was also stopped on 7-11-1975. I could not inspect the old workings as there was a big fall in the only entries availables. My hand plan and the plan in Manager's office showed that there was a minimum parting of 7 meters. A close watch was kept on the seepage. There was no increase in the seepage till 18-11-1975.

Violation of Regulation 41A does not apply to me.

6. Shri R. K. Joshi : Charge Sheet dated 24-11-1975 : Preliminary inquiry indicates that the above mishap occurred as you failed to carry out statutory duties as per Regulation 49. Had you taken proper care under the Regulation the mishap could not have occurred.

7. Explanation dated 9-12-1975 : I am overburdened with statutory and non-statutory duties. The drivages in the district were done according to plan except that the size of pillars were reduced according to the depth of cover of the workings from the surface as required under Regulation, as per the directions of the Manager.

I was on leave from 22/8 to 26/9. I again was on leave from 1/11 to 6/11 and on return from leave I was engaged till the 9th on Air Shaft work. On 10th when I enquired about 3 dip I was told that 9 EL is not being driven further and that a note was written by Draftsman Surveyor in the D.P.R. on 4/11 stating that 9 EL is approaching Cross Cut Dip, for taking necessary precaution.

The charges and the explanations these officers gave soon after the accident will be of some help in arriving at conclusions and findings in this Inquiry.

CHAPTER VI

SUDDEN INRUSH THEORY CAUSE OF THE ACCIDENT

1. The top management of W.C.L. initially took the view that the II Cross Cut area was waterlogged and that Regulation 127 of the Coal Mines Regulations, 1957 was clearly attracted. This much is clear from the charges they framed against Shri Grover and Shri Dubey on 25-11-1975. (So far as the Surveyor, Shri Joshi, is concerned, they also took the view that Regulation 49 was attracted). This also borne out by the Managing Directors letter to the Ministry (Exhibit D-23) from which I extract the following:

> "In the month of November, 1974 having observed that the drivage from the stowed area had stopped virtually, the pump was removed. It has been observed that thereafter, for a long time, no inspection by the local management was made to ensure that the drivage gallery was free from water. Development work in 3 dip district was progressing since July, 1975 and hoping that the drivage gallery was dry, the 9th level east gallery was driven within 60 metres without observing necessary formalities or without inspecting the drivage gallery thoroughly.

The preliminary enquiry indicates lack of appreciation of the possible dangers involved in the drivage of the gallery (9th level east) on the part Colliery Manager, Assistant Manager/Safety Officer and Surveyor and hence they have been charge-sheeted and suspended from duty."

2. A gradual shift in the management's stand thereafter appears to have taken place. The germs of this change can be seen in the explanation of Shri Grover dated 9-12-1975 and the statement of Shri S. Radhakrishnan, Sub-Area Manager, dated 9-12-1975, in his evidence before the Sinha-Aluwahlia Committee.

Q : What is your opinion in the case of this accident ?

A : There had been sudden inrush of water. The source of inrush could have been from some fall.

3. The evidence of Shri C. P. Bansal, Agent, before the same Committee on 9-12-1975 :

"The sudden building of water there can only be, in my opinion, due to rupture of the roof somewhere in the old area, thereby allowing inrush of water from some overlying acquiferous strata in the workings. Had this not been the case water would have definitely overflowed from 6th level. Even today the water is overflowing at the rate of 35 G.P.M.

4. Shri Grover, in his own evidence before the same Committee, dated 7-12-1975 :

"I am unable to say as to how such a large quantity of water accumulated and caused serious accident. May be that from some unknown source water started coming after my last inspection. To my mind, looking at the outskirts of IV top and No. V seams, there is a thick detrital acquiferous sand stone overlying IV top seam about 20.25 metres thick. These are known to contain a very large quantity of water. It may be that weak shale above IV top seam and below the acquiferous sand stone gave way for some reasons and brought large quantity of water to IV top seam and from there through slip planes/cracks to IV Bottom seam."

5. The next development relates to the decision of the W.C.L. management to depute Shri Grover himself (the choice of this officer, heavily involved in the mishap, is rather interesting) to the Central Mining Research Station (C.M.R.S.) at Dhanbad, soon after he was reinstated early in March, 1976. The object of this mission appears to have been to meet Dr. B. Singh of the C.M.R.S. and get his opinion on how the accident might have taken place. The approach of Shri Grover to the mission appears to have been very casual. He paid a visit to Dhanbad without finding out in advance whether Dr. B. Singh was in station and he found him out of station. About a month later he paid a second visit to Dhanbad and was able to meet Dr. B. Singh and have with him what appears to have been no more than a casual talk about the accident. No written material or plans were taken by Shri Grover for being shown to Dr. B. Singh, neither did the latter give any written opinion himself. According to Dr. B. Singh, the stage for giving such written opinion would have arisen, if at all, much later, that is, after W.C.L. had made a written reference to the C.M.R.S. and necessary investigation or experiments had been carried out at the C.M.R.S. However, Shri Grover came back to Nagpur with the opinion of Dr. B. Singh, such as it was, reported it at a meeting of the senior officers of the Colliery including the Managing Director, and it was thereafter, in the light of the discussions held (there were more than one) that the "sudden inrush" theory seems to have been evolved. This theory presupposes a totally dry II Cross Cut Dip which got suddenly flooded with water rushing into it, starting from the detrital mantle, then the sand stone layer, then the IV Top and thereafter through the barrier between IV Top and IV Bottom to IV Bottom. According to Dr. B. Singh, who visited the mine on 23-7-1977 and deposed before the Court two days later as an expert witness cited by W.C.L. the following factors could be considered to account for the flow of water from above the puncture point :

(1) Seepage from above, following fractures of parting between IV Top and IV Bottom.

(2) Through boreholes in the area.

(3) Through slip plane or fault as shown in Exhibit D-5.

(4) Through the gap between the immediate roof and the stowed portion of the seam.

6. Dr. B. Singh himself discounts the possibilities involved in the second and fourth factors, but is of the opinion that the first and third factors might have come into play. In particular, he thinks that the slip plane or the fault must have acted as a channel of water. From his own analysis of the factors noticed during his personal inspection and the possibilities involved Dr. Singh does not support the theory of "sudden inrush" of water from overlying rocks, whether the II Cross Cut area already contained accumulation of water or was dry. He eleborated the point in his evidence the very next day :

"I took 'sudden inrush of water' to mean passage of water from the waterbearing rocks above IV top seam to IV bottom seam within a period of a few hours. This, as I said, was not possible. However, I would like to make it clear that in my opinion the phenomenon of passage of water through the slip or fault plane, as described yesterday, is independent of the presence or absence of water in the II Cross Cut Dip. According to analysis, under the conditions present in the workings, the slip or fault plane might have permitted passage of water as discussed yesterday."

7. My own conclusions are :

Water must have flowed from several sources into the II Cross Cut Dip area and must have accumulated therein ever since the second pump was withdrawn in December, 1974 i.e. for a period of over ten months. I do not wish to exclude the possibility of normal flow from the detrital mantle, fully charged with water, which formed the cover to the coal bearing rocks, through the underlying Barakar sandstone, thereafter through the parting between IV Top and IV Bottom Seams. The fully-waterlogged II Cross Cut Dip would have led to the functure of the rib after some time, in any case.

8. W.C.L. have contended that if water had flown from II Cross Cut area, the quantity of water which inundated the workings would be only about 12 lakhs gallons. As 18 lakh gallons of water have flowed into the workings, they have argued that the cause of inundation could only be due to sudden inrush of water from the super-incumbent strata above IV Top Seam.

9. To start with, it may be mentioned that all these calculations are very approximate and are not based on exact measurement of either the gallery size or the water level. The workings in the mine were inundated within a period of one hour from the time the accident took place. On this basis, W.C.L. have presumed that, as there was no accumulated water in the II Cross Cut area, a quantity of 30,000 gallons per minute rushed from the strata above IV Top Seam. The actual quantity of water that was flowing in IV Bottom Seam about six hours after the inundation was reported to be 200 gallons per minute. There is no record in the history of the Silewara mine that there was a sudden inrush of water to the extent of 30,000 gallons of water per minute for a period of one hour and this inrush reduced itself, somewhat miraculously, to a meagre flow of 200 gallons per minute after a period of about six hours.

10. W.C.L. have also contended that there was increased flow of water in IV Top Seam after the accident. The Sinha-Aluwahlia Committee has stated that the level of water in the Top Seam sump was specially verified after the accident and there was no change in the water level in IV Top Seam. The Committee has, therefore, ruled out the possibility of Top Seam water flowing into the Bottom Seam.

11. To support the theory of increased quantity of water in Top Seam after the accident, another argument put forth by the W.C.L. is that in spite of putting an additional pump in IV Top Seam, the sump level had decreased by 18 meters along the slope in 11 days. While hectic pumping operations were in progress in IV Bottom Seam to recover the bodies of the drowned workers, it is possible that pumping in IV Top Seam could not be properly attended to. Cross-examination in the Court of Shri S. N Guha, Engineer of the mine, by the D.M.S., went as follows :—

Q. Do you agree that attention to Top Seam pumping was kept deferred till all the bodies were recovered ?

A Yes, I agree."

12 Immediately after the accident, all stowing work in the mine was stopped. Though there was no inflow of water in IV Top Seam due to suspension of stowing operations, seepage of stowing water continued from the stowed area in IV Top Seam.

13. On the instructions of D.G.M.S., an additional pump was installed in IV Top Seam on 25-11-1975 to reduce the quantity of dead water in the sump. It is, therefore, not surprising that the water level in Top Seam had decreased by only 18 meters along the slope in 11 days.

14. No reliance can, therefore, be placed on the contention of W.C.L. that due to inrush of water from the strata above the Top Seam, the workings got inundated. The accident was thus caused primarily by the failure to take adequate precautions against waterlogged old workings and secondarily, by the incorrect survey maps which showed a barrier of 5 to 7 meters, when it was actually no thicker than about 0.6 metres—this no doubt led to a sense of complacency; I am unable to subscribe to the theory of a sudden release of water and its equally sudden inrush into the II Cross Cut area on the 18th November, 1975. A steady inflow of water into the area from the waterbearing rocks overlying IV Top Seam was all the time taking place.

CHAPTER VII

THE BARRIER

1. As their second line of defence, W.C.L. have taken the stand that even if, for the sake of argument, it is conceded that the II Cross Cut area was waterlogged, there was a sufficient Berrior between the end of the dip of II Class Cut from the 8th level and the alignment of the 9th East level, to act as a safguard against inundation of the district. The W.C.L. have relied on a number of underground plans to show that the barrier was about 5 meters thick; among the plans are Exhibits J-14, C-2, C-3, D-21 and C-25.

2. Exhibit J-14 is the Water Danger Plan of IV Seam Bottom and has been drawn on a R. F. of 1 : 1200. It has been certified as up-to-date and correct by Shri R. K. Joshi for every quarter from 30-6-1972 to 30-9-1975 and has been countersigned by Shri Grover as Manager every quarter upto 31-3-1975.

3. On this Plan three other entries have been made by the Surveyor, Shri Singh, which are countersigned by the Manager, Shri K. M. P. Verma. These entries refer to the quarterly surveys for the quarter commencing 30-9-1972. Apparently, the entry made by Shri Singh is an error, as the Plan was first made in 1971 and the entries of Shri Singh should read as 30-9-1971, 31-12-1971 and 31-3-1972 respectively.

4. The II Cross Cut Dip from 8th Level is shown as 'Open' and the broken quarterly survey line for the period ending 31-3-1969 is shown to terminate at the ends of the open gallery. On closer examination of the broken lines (31-3-1969) on this plan, it is observed that the quarterly survey line 30-9-1972 was passing near the rise side of 9th level. This survey line (30-9-1972) has been subsequently erased. Similarly, the II Cross Cut, which was originally shown extending upto 9th Level is also erased. No. 6, 7 and 8 Levels West of II Cross Cut have been drawn on the Plan properly with set-squares, but the workings of III Dip District have been drawn by free hand to bring the plan up-to-date. Reduced levels of some of the Junctions are marked by circles in pencil and the readings of the reduced levels are also recorded in pencil.

5. Exhibit C-2 is the underground Plan of IV Bottom Seam workings on mounted paper with a R. F. of 1 : 1200 as required under the Coal Mines Regulations. Mounted paper is normally used for statutory underground plans. This plan has been certified as correct and up-to-date by Shri R. K. Joshi from 30-6-1972 to 30-9-1974. The quarterly surveys are countersigned by the Colliery Manager, Shri Grover from 30-6-1973 to 30-9-1974. For the earlier period, the surveys are countersigned by Shri K. M. P. Verma, the previous Manager.

6. On examination of the Dip of II Cross Cut on this Plan, it is found that the Dip is shown to have progressed to a distance of only 8 meters below the junction of 8th Level. The portion beyond 8 meters has been erased. The end of the Dip Gallery is open. Eraser has also been used upto pencil line of the progress of 9th Level East and V Dip of 9th Level. It would, therefore, be surmised that the Cross Cut Dip was originally shown to have progressed beyond 8 meters upto 9th Level and that the line showing progress of II Cross Cut Dip has been erased. The Plan also shows that the two lines of II Cross Cut Dip have been re-inked by free hand, as also part of 8th Level West off II Cross Cut. Some of the development of 3-Dip District has been inked in free hand and the rest of the portion is drawn in pencil. Some of the Scalling Stations in the Levels are also marked in pencil on the Plan.

7. In this connection the evidence tendered by the Surveyor before the Court in respect of workings of 3-Dip District is reproduced below :—

> "No quarterly survey was done for this District. No other type of survey was carried out for 3-Dip District. The plottings of 3-Dip District based on the chainage measurement as per the Report of the Survey Worker was shown in pencil and no other plan of plottings of 3-Dip District were shown before the occurrence of the accident; it was after the accident. The tracing of other plans was after the accident."

8. I have also examined Exhibit C-3, which is considered by W.C.L., as the statutory underground plan. This plan is on a tracing cloth with a R. F. of 1 : 1200. It has been certified as correct and up-to-date by the Surveyor upto 30-9-1975 and has been countersigned by the Manager upto 31-3-1975. It is not understood why the Manager has not signed for the surveys made for the quarters ending 30-6-1975 and 30-9-1975.

9. On this plan, II Cross Cut Dip is shown in ink to have progressed to a length of 7 meters from the 8th Level Junction. The quarterly survey line for 31-3-1969 passes through the ends of II Cross Cut Dip. The quarterly survey line on the rise side of II Cross Cut Dip does not show clearly the date of survey on the West side or the East side, as the dates have been erased. The Date however appears to be 30-9-1972 on the East Side. The Dip off 7th Level East has been deliberately re-inked so that the date of survey of IV Bottom East Distric is shown as 30-9-1972. If the dotted quarterly survey line dated 31-9-1969 is carefully examined on the plan , it would appear that this survey line , was almost touching the rise side of 9th Level East opposite II Cross Cut Dip.

10. The progress of II Cross Cut Dip upto top of the 9th Level appears to have been erased and the progress of the Dip is re-drawn in ink by free hand to show a progress of 7 meters only, instead of 12 meters before erasor.

11. It may be mentioned here that according to D.G.M.S. who carried out survey of II Cross Cut after the accident, the distance between 9th Level Centre, upto the punctured point in the 9th Level East is found to be 18.7 meters.

12. Exhibit D-12 is the Ventilation Plan of IV Bottom Seam workings drawn on a R. F. of 1 : 1200. This plan is certified as up-to-date and correct upto the quarter ending 30-9-1975 by the Surveyor, Shri R. K. Joshi and the Manager has countersigned the Plan upto the quarter ending 31-3-1975.

13. On this Plan also, the 3-Dip workings are drawn in free hand and II Cross Cut was originally shown to have progressed upto rise side of 9th Level East. However, II Cross Cut Dip upto 9th Level has been erased and a progress of only 8.5 meters from the 8th Level Junction is shown. There is (as seen even by the naked eye) unmistakable sign of erasure, as shown in portion marked Circle E of the lower portion of II Cross Cut Dip upto rise side of 9th Level on this Plan. No quarterly survey lines are shown.

14. Exhibt C-25 is a Joint Plan of the Top and Bottom Seam workings (superimposed) of the III Dip District; Bottom seam workings are shown in pencil and the progress of II Cross Cut Dip seems to have been erased. The black line indicating the progress of II Cross Cut Dip is erased and only the red line showing the position of the Top Seam is seen. It is possible to see the faint black ink line towards the end of Cross Cut Dip, as the blackline has not been completely erased. On this Plan the progress of II Cross Cut is seen upto the Junction of 9th Level East and not upto the

rise side of 9th Level as seen in Plans J-14, C-2, C-3 and D-21.

15. As regards some of the other non-statutory plans, the position is :

16. Exhibit C-43 is the Monthly Progress Plan of underground workings of IV Bottom Seam upto 19-9-1972. There is only one dotted quarterly survey line for the II Cross Cut District and this dotted survey line is dated 1-7-1972.

17. On this date the progress of 8th Level West was 10 meters from the 8th Level Junction and the progress of the 8th Level East was 65 meters from I Cross Cut Junction. The progress of II Cross Cut Dip was about 8 metres from 8th Level Junction and the end of the Dip is not closed. In the Plans Exhibits C-2, C-3, D-21 and J-14, the progress of 8th Level West from II Cross Cut is 29 meters and the progress of 8th Level East from I Cross Cut is 21 meters.

18. The distance of II Cross Cut Dip (on Plans Exhibits J-14, C-2, C-3 and D-21) from 8th Level Junction to the top of 9th Level East is 12 meters (as shown by the W.C.L.) as against a distance of 18.7 metres upto puncture point as ascertained by D.G.M.S. surveyors and against a distance of 19 meters as shown by the W.C.L. on Exhibit C-28.

19. D-9 and D-12 are blue prints of II Bottom Section on a R. F. of 1 : 1200 showing the progress of II Cross Cut Dip as 7|8 meters from 8th Level Junction. These plans were submitted to D.G.M.S., for granting depillaring permission for IV Bottom Seam III Cross Cut area.

20. Exhibit C-28 (reported to be a plan similar to the one in Manager's office) is on a tracing cloth with R. F. 1 : 1200 and it shows the underground plan of IV Bottom Seam. It clearly indicates that the progress of II Cross Cut was 19 meters from the 8th Level Junction—practically the same distance as determined by the D.G.M.S. survey made after the accident. The plan, however, shows a distance of about 4 meters between 9th Level East and the II Cross Cut Dip. This is because the orientation of the workings of 3-Dip District appears to have been incorrectly drawn—partly in ink and partly in pencil. The Surveyor, Shri Joshi, as stated that 3-Dip Cross Cut workings were brought up-to-date by scaling on only the mounted Plan (Exhibit C-2). This perhaps explains the mis-orientation of these workings in Exhibit C-28. Evidently, therefore, no reliance can be placed on the barrier as measured from the Plan in the Manager's office.

21. As per Coal Mines Regulations, the statutory plans to be maintained at a mine are :

(1) Surface Plan.

(2) Plan showing underground workings of each seam. (Exhibits C-2 and C-3).

(3) Ventilation Plan (Exhibit D-21).

(4) Water Danger Plan (Exhibit J-14).

22. From an examination of these plans, which are to be maintained up-to-date and accurate, it can be concluded that even though II Cross Cut Dip was earlier shown to have progressed upto the Top of 9th Level East, there have been extensive erasures, re-inkink of the II Cross Cut Dip and also erasures of the quarterly survey lines.

23. The W.C.L. has contended that after they noticed the percolation of water from 9th Level East rise side, they assured themselves, as a measure of abundant precaution, from a study of the mine plans (Hand Plan and plan hung in Manager's office similar to Plan Exhibit C-28) that at least 5 meters of coal barrier was available against II Cross Cut Dip.

24. They have also mentioned in their Written Statement that the Surveyor had confirmed the thickness of the barrier; this, as I have stated, elsewhere, was denied by the Surveyor in Court.

25. From what has been stated above, it is difficult to give any credence to the statement that there was a barrier of 5 meters thickness against II Cross Cut Dip; all I can say is that the statutory plans have been extensively tampered with, to show a barrier of such thickness. If the extensive erasures had not been made, the II Cross Cut Dip would be touching the rise side of 9th Level East and there would not be any barrier.

26. Having regard to all the facts mentioned earlier, I feel that there is overwhelming evidence to enable me to arrive at the conclusion that the pleadings of W.C.L. about the 5 meter barrier should be rejected. Indeed, I have to go further and say that the Plans produced before me show, after discounting all the erasures and tampering, that there was no barrier whatsoever.

27. I have given a good deal of thought to questions relating to the authorship of the various erasures and acts of tampering in the Maps and Plans and whether and how the responsibility on this matter may be shared by Shri R. K. Joshi, the Surveyor, on the one side and the rest of the W.C.L. management on the other. Both the authorship as well as the apportionment of the responsibility has proved to be very difficult and I am unable to give any firm finding. Most of the erasures etc., are clearly designed to support the Management case as put forward before this Court and were most probably effected in a hurry by Shri Joshi and/or some other senior member of the Management. In this sense, the responsibility should be placed squarely on the shoulders of the Management. (I am reliably informed that all the work of tampering, erasure, etc., on the Plans could have been done in a matter of only a few hours). I can only surmise that till the 25th November, 1975 when Shri Joshi was placed under suspension, his version and that of the rest of the management coincided on most material points touching the accident and that probably they fell out thereafter and Shri Joshi was left to present his own case and defend himself independently. The pencil plottings in Exhibit C-2 were admittedly made by Shri Jha, Draughtsman-Surveyor, after the accident.

28. One unsatisfactory feature regarding the seizure of documents which I have noticed in this case is that some of the Plans were seized in the early hours of 19-11-1975 (which itself represents a long time-lag from 2.30 P.M. on 18-11-1975 when the accident took place) while certain other plans and documents were seized ten days later. I think it is desirable to lay down in the C.M.R. itself that when any D.G.M.S. authorities visit a mine after a major accident they should, simultaneously with one of the officers going to the site of the accident, effect the immediate seizure of all relevant Plans and documents through another of their officers. I would also suggest that Form IV-A of the First Schedule of the C.M.R. (which is the form of written intimation of a fatal accident) should be suitably amended in order to provide for information on (1) time of intimation; and (2) time of despatch of such intimation also, in addition to the time of accident (which is now provided for); this would be only in fulfilment of the real intention behind Regulation 9. The possibility of posting Duty Officers at all D.G.M.S. offices on holidays to receive intimation of such accidents may also be considered by the Government.

CHAPTER—VIII

SEEPAGE

1. I will now deal with questions relating to the discovery of seepage in the 9th Level East, its implications and its aftermath right upto the time of the accident. W.C.L. contended that the seepage was no more than normal; it shown itself on the rise side of the 9th Level East gallery at a point about 1.5 meters from the face and about 1.5 meters from the floor. It appears to have been first brought to the notice of Shri R.K. Dubey on the morning of 5-11-1975 by the night shift sirdar. Shri Dubey inspected the seepage in the first shift of 5-11-1975 and found that seepage was in the form of drops. He immediately ordered the stoppage of the face and prohibited further blasting. Shri Dubey also attempted to inspect the II Cross Cut area to see if there was any accumulation of water. But the roof fall just below the 6th Level Junction of the II Cross Cut did not permit him to inspect the lower levels of the Cross Cut. He thereupon consulted his hand plan (Exhibit C-35) and the plan hung in the Manager's office room, and concluded that there

was a coal barrier of at least about 7 to 8 meters. At this time the Colliery Manager, Shri Grover, was on leave. As soon as he returned on 10-11-1975 he was informed of the seepage by Shri Dubey. He inspected the seepage on 12-11-1975; came to know of the precautions taken by Shri Dubey and, as a further measure of precaution, directed that the face be continued to be kept under observation. The point of this precaution was that, if the seepage continued to be in the same condition, it could be considered as normal; on the other hand, if the quantum and volume increased it would be more than normal and something would have to be done about it. As the seepage continued to be normal by this test and as there was no overflow through 6th Level and, in any case, there was a barrier of at least 5 meters, W.C.L. have argued that all possible precautions had been taken by them, especially as they were sure that there was no waterlogging in the II Cross Cut Dip.

2. D.G.M.S. have argued that seepage was the result of natural percolation getting supplemented with water from II Cross Cut area. In their opinion the seepage was definitely abnormal and they rely on the following factors (I quote from the written arguments) :

"(a) Centre line had been changed on 1-11-1975 because of seepage.

(b) Valuable faces stopped because of seepage.

(c) Shri Dubey rushed to office after seeing seepage.

(d) Worker's evidence showing seepage water was in the form of flow.

(e) Entries about seepage have been made.

(f) Manager estimated seepage at the rate of 5 G.P.M. For normal seepage the above steps are never taken."

3. There appears to be considerable strength in the D.G.M.S. arguments. Indisputedly, the mine is a wet one, and all wet mines have water normally seeping from sides and roof etc. Any seepage which attracted the attention of mine officials, must have been abnormal, and that was why the face was stopped. It would appear that when the issue was discussed with the Manager on his return from leave five days later, the fact that the seepage had not increased by then lulled the management into a feeling of complacency. They should have realised that seepages of this nature tend to diminish with passage of time due to the interstices in coal getting clogged with the suspended matters in pit-water. The fact that the seepage continued undiminished should have been taken as the warning sign that it was, and steps taken to get 3 Dip District workings plotted and/or to ascertain the thickness of intervening barrier through boreholes. Unfortunately, this was not done—with disastrous results.

4 It is true that under Shri Dubey's instructions the centre line of 9th. East Level was changed further towards the Dip on 1-11-1975. Shri Dubey has been closely questioned about this, but the precise reason why he did so is still not clear. However, it would appear, in view of what has been stated earlier, that the centre line was diverted in an effort to avoid workings in close proximity which were known to have been waterlogged.

5 I cannot go along with the arguments of the D.G.M.S that the fact of Shri Dubey rushing to the office to check up the barrier on the plan necessarily indicates abnormality of the seepage. In my view, Shri Dubey took a reasonable precaution and his conduct was no more than natural It does not by itself indicate that the seepage was abnormal—although in the light of my examination I have reached that conclusion now.

6 My view is that even the discovery of more-than-normal seepage, should have acted as a warning finger to the management of dangers ahead. The Manager should have viewed it with due gravity, reported it to the higher staff (i.e. the Agent, the Sub-Area Manager and the General Manager), sought their advice and taken obvious precautions and measures for putting advance boreholes. He was blinded by his own illusion, that waterlogged workings were still further away.

7. It is in the evidence that the fall at the Junction of 6th East Level and II Cross Cut Dip could have been crossed if a real attempt had been made before the accident. That neither the Manager nor the Assistant Manager nor any other Colliery official made such an attempt is significant, this can be explained only on the assumption that they knew that the II Cross Cut workings were full of water.

CHAPTER IX

INTERPOLATIONS

1 I now come to certain entries in the Surveyor's diary (Exhibit J-1) and in the Dip Progress Register (Exhibit C-22) which have been described as interpolations. The note by Shri Joshi in the Surveyor's diary is dated 20-11-1975 and read as under :—

"9—I/E of IV east section is approaching within 60 mts of waterlogged area of same seam IVth bottom east It is for your information and n/action & 13th L bottom west is also near fault plane n/a may be taken.

Submitted to Manager."

This entry has not been seen by the Manager (not by Shri Y. K Singh, who was acting as Manager at the time the entry purports to have been made, nor by Shri Grover who returned from leave on 10-11-1975).

2 A perusal of the diary shows that since Shri Joshi joined as Surveyor at the Colliery in 1972 he has made several entries in the diary and every such entry submitted to the Manager has been seen by the latter and suitable instructions recorded by him. The only entry which was not seen by the Manager is the one dated 5-3-1974 to the effect that :—

"Surveyor (K&P) was asked for instrument as per your instructions, but he has shown inability to spare the same. This is for your kind information.

Submitted to C.M."

Thereafter, there is an entry dated 5-8-1975 made by Shri B Jha (Draftsman Surveyor and presumably acting as Surveyor) about stopping 22nd Level West of 59 rise, not driving 22nd Level and driving 20 Level East upto 41 rise, all these steps being designed to safeguard against running into borehole KMT 55 or borehole KMT 19. After this comes the entry of Shri Joshi purporting to have been made on 20-10-1975 which was not seen by the Manager.

3. The disputed entry by Shri Joshi in the Dip Progress Register DPR (Exhibit C-22) reads as follows :—

"The 9th level east approaching waterlogged area. Precautions are necessary."

This is signed by Shri Joshi but not dated; it occurs against the date 20-10-1975 as noted in the first column of the register. The entries made by Shri Joshi against this date towards the left hand side of the page are in green ink. The disputed entry towards the extreme right of the page appears to be in blue ball point pencil and is written in the column meant for the Manager. Immediately below this and towards the left are entries made by the Surveyor from 21/10 to 22/10, these, bracketed together, have been seen and signed by Shri R. K. Dubey, Assistant Manager, on 25/10

4. There have been lengthy arguments on both sides about these entries of Shri Joshi W.C.L. have urged that the entry in the Surveyor's Diary was actually made soon after the accident on 18-11-1975 and not on 20-10-1975 and was really intended to shield him from his failure to comply with Coal Mines Regulation 49 in good time before the accident took place. My own view, after fully considering the arguments on both sides, is that this entry is an interpolation made after the accident If it is Shri Joshi's contention that the entry was in fact made on 20-10-1975 and, therefore, he should be deemed to have

complied with C.M.R. 49 (which was the specific charge framed against him soon after the accident) I do not understand why he made no reference at all to this entry in his explanation to the charge nor in his statement before the Sinha-Alumahlia Committee. If this was the main plank in his defence, is not significant that it never occurred to him to mention it soon after the accident ? On the other hand, he seems to have relied at that time solely on an entry made by the Draftsman Surveyor, Shri B. Jha, in the Dip Progress Register. Secondly, Shri Joshi seems to have made no attempt at all to get his entry dated 20-10-1975 seen and countersigned by the Manager. He cannot get away with it by merely saying that he forgot to get the entry countersigned by the Manager. On behalf of Shri Joshi, it has been argued that his duty was limited to making the entry in his diary and that it was no part of his concern to see whether the entry was seen by the Manager. This argument be speaks an inadequate sense of responsibility on the part of the Surveyor and leads me to question the weight to be attached generally to his evidence as a whole Indeed, I would expect him not only to make sure that his entry was seen by the Manager but also go to the Manager, explain to him personally the apprehensions which he entertained and ask the Manager what he proposes to do to meet the threat.

5. At this point I will deal with the note of Shri B. Jha in the Dip Progress Register. This purports to have been made on 4-11-1975 and reads as follows :—

> "We should take precautions in driving 9th L/E because it has reached in the proximity of the water-logged area. The 2nd Cross Cut Dip is full of water. There is likelihood that the Level will go and join with the 2nd Cross Cut Dip. It has already been informed to C.M. by Surveyor Shri Joshi."

6. This entry, the last sentence of which is written in ink different from the ink of the main body of the entry, appears in the remarks column of the register.

7. In his cross-examination, this is what Shri Jha had to say about this entry :

> "In the D.P.R. I made an entry, beginning with 'We should take precautions' and ending with 'Join with the 2nd Cross Cut Dip', on the 4th November, 1975"; later, on 6th or 7th after Shri Joshi came back from leave, I made the following addition to the note :
>
> 'It has already been informed to Colliery Manager by the Surveyor Shri Joshi.'

Then I sigend below this addition and dated the entry 4-11-1975.

I came to the conclusion on 4/11 that 9 East Level is approaching water-logged area because I found seepage. I suspect that some water might have accumulated in the Cross Cut Dip just above 9th Level. My remark that the 2nd Cross Cut Dip is full of water is correct. I came to know that there was waterlogged area near 9th East Level because any dip is liable to contain water in the normal course."

8. Notwithstanding all that has been said on Shri Joshi's behalf that this entry of Shri Jha in the Dip Progress Register and the two entries of Shri Joshi himself, one in the Dip Progress Register and the other in the Surveyor's Diary, are genuine entries, I have no hesitation in holding that they were later interpolations. Shri Joshi's entries were certainly made soon after the accident; Jha's entry is equally "suspect".

CHAPTER X

MISUSE OF SAFETY OFFICER

1. One of the noteworthy facts revealed by the Inquiry relates to the misuse of the post of Safety Officer of the Colliery to serve purely production purposes. The duties and responsibilities of the Safety Officer as described in detail under Regulation 41A of the Coal Mines Regulations, 1957 are :—

(a) (i) to visit surface and underground parts of the mine with a view to meeting the workers on the spot to talk to them on matters of safety inviting suggestions thereon;

(ii) to take charge of the newly recruited staff and show them around the mine, pointing out the safe and unsafe acts during the course of their work in the mine.

(b) (i) to investigate all types of accidents and incidents in the mine including minor accidents; to analyse the same with a view to pinpointing the nature and common causes of accidents in the mine;

(ii) to maintain detailed statistics about mine accidents and to analyse same with a view to pinpointing the nature and common causes of the accidents in the mine;

(iii) to study and apprise the manager of all possible sources of danger such as inundation, fire, coal dust and others.

(c) (i) to hold safety classes and give safety talks and lectures to the members of the supervisory staff;

(ii) to organise safety weeks and other safety education and propaganda in mines;

(d) to see that all concerned mine employees are fully conversant with various standing orders (such as those relating to stoppage of mine mechanical ventilators and to the occurrence of fire or other emergency in the mine) and Systematic Timbering Rules;

(e) to provide assistance in the formulation of programme for training at the mine level; including vocational training, training in gas-testing and training in First Aid;

(f) to report to the manager as a result of his visits to the various parts of the mine, as to whether the provisions of the Mines Act, Regulations and Rules made thereunder are being complied with in the mine;

(g) to promote safety practices generally and to lead active support to all measures intended for furthering the cause of safety in the mine; and

(h) to assist the manager in any other matter relating to safty in the mine.

(2) If any duties other than those specified above are assigned to the Safety Officer by the Manager, a written notice thereof shall be sent to the Regional Inspector within three days of such assignment.

(3) The Safety Officer shall maintain in a bound paged book detailed record of the work performed by him every day.

2. Shri R. K. Dubey was notified as the Safety Officer of the Colliery in September, 1974, from July, 1975 onwards he looked after the work of Sector 'C'. From 30-9-1975 he was assigned the charge of the 3-Dip District i.e. as Assistant Manager incharge of production in the district although no written order was issued He remained in dual charge till the date of the accident, although it is clear that the Colliery had enough Management staff to permit the continuance of a full-time Safety Officer. Beyond conducting the monthly meetings of the Pit Safety Committee, he discharged very few of the functions of the Safety Officer enumerated in Regulation 41A quoted above. That there was serious neglect of the duties of the Safety Officer in the mine is clearly brought out in the admissions made by Shri Dubey in the course of his cross-examination :

Q : Is it not a fact that if you were the full time Safety Officer you could have visited different districts regularly and much more frequently under Regulation 41A ?

A : I agree with you I was not able to attend to many of the statutory duties of Safety Officer. I don't remember the number of serious accidents during 1974 or 1975.

Q : Do you feel you were doing justice to the performance of duties towards the requirements of law as a Safety Officer ?

A : No. I was performing only some of the duties of Safety Officer and I was asked to perform only those duties.

Q : You could have performed the full functions of a Safety Officer; if you were not given the duties of Assistant Manager, is it not a fact ?

A : Yes. It is a fact.

3. On various grounds the senior officers of the Colliery have tried to justify the entrustment of production duties to Shri Dubey, such as that the 3-Dip District was a simple, straight-forward District without any complications and that even after attending to production duties he had sufficient time left for the work of Safety Officer. These attempts carry no conviction. The lapse becomes graver when it is remembered that the Director-General of Mines Safety had pointedly brought to the notice of the Managing Director the undesirability of entrusting production duties to Safety Officers. If any officer had been allowed to function purely as a Safety Officer unburdened by any other responsibilities, he might have been able to do something positive about the waterlogged in the II Cross Cut area and perhaps made his own contribution to averting the accidents which is the subject of the Inquiry.

4. The practice of misusing Safety Officers and ventilation Officers for production purposes had come to the notice of the Directorate-General of Mines Safety authorities at Nagpur and was in fact one of the subjects discussed at a meeting held on 27-19-1975 between the representatives of W.C.L. headed by the Managing Director, and officers of the Directorate-General of Mines Safety, headed by the Director of Mines Safety, Nagpur. The following are extracts from the record note of the meeting prepared and circulated by the Director of Mines Safety, Nagpur :—

> "It was impressed upon C.M.A. (i.e. W.C.L.) officers that there was a general tendency amongst Assistant Managers, Safety Officers, Ventilation Officers etc. to show laxity vis-a-vis their accountability under the Mines Act. Apathy of the Safety Officers and Ventilation Officers towards their work was also highlighted in view of the fact that these jobs were considered inferior to production jobs. It was also impressed that in several cases, the V.Os. and S.Os. were being used for production work also. It was suggested that the C.M.A. may consider job-rotation between production and non-production officers to remove the anamolous position. It appeared that C.M.A. was conscious of this aspect and they agreed that job rotation was necessary in principle and further thought would be given to solve this issue.
>
> The Managing Director, C.M.A. pointed out that there was a general shortage of mining engineers in the country and therefore proposals for authorising one person to act in more than one capacity may be approved. He was informed that such authorisations were being issued on the merits of each case. C.M.A. may write for relaxation in future when it will be considered on its merits."

5. As regards relaxation referred to above, I see from a perusal of C.M.R. 41(2) read with 31(A) that there is no provision for relaxation in this sense; on the other hand Regulation 41(2) merely requires a notice to be sent to the D.G.M.S. authorities if any duties other than those specified for the Safety Officer are assigned to him. I would recommend that if any such additional duties are given to the Safety Officer, such action should be made subject to approval in writing by the D.G.M.S. authorities who will be required to record their reasons.

CHAPTER XI

MAINTENANCE OF DIARIES

1. Another important fact revealed by the Inquiry relates to the total failure to comply with important provisions of Regulation 41, entitled "Duties and responsibilities of Manager" which are reproduced below :—

"Regulation 41 : Duties and Responsibilities of Managers :

(1)(a) In every mine daily personal supervision shall be exercised by the Manager and in case of workings below grounds, he shall visit and examine the workings below ground on at least four days in every week to see that safety in every respect is ensured. Of these inspections, one at least in every fortnight shall be made during the night shift.

Provided that when owing to any unavoidable cause, he is unable to carry out the aforesaid duties or inspections he shall record the reason for the same in the book under clause (b).

(b) The Manager, the Under Manager and the Assistant Manager if any, shall maintain in a bound paged book kept for the purpose a diary and shall record therein the result of each of his inspections and also the action taken by him to rectify the defects noticed if any.

(2) The Manager shall make arrangements for all Overmen and other officials to meet him or Under Manager or Assistant Manager once in every working day for the purpose of conferring on matters connected with their duties.

(3) The Manager shall examine all reports, registers and other records required to be made or kept in pursuance of the Act or of the Regulations, or orders made thereunder and shall countersign the same and date his signature. He may, however, by an order in writing, delegate this duty to a Under Manager or Assistant Manager except in cases where a specific provision is made requiring the Manager to countersign a report or register."

2. It is easy enough to understand why these sub-regulations were prescribed. The main objective, no doubt, was to ensure the regularity of underground inspections, to provide written records of such inspections for the benefit of successors in office and higher officials of the organisation and lastly, to ensure that all appropriate action, where necessary, called for by the results of the inspection, is expeditiously taken. The Manager is required to write his diary on every day that he inspects mine workings and affix the date and signature. He is also required to see and countersign the diaries of the Assistant Manager and other subordinate officers. The Assistant Manager and other subordinate officers are required to write and sign their diaries (although there is no requirement to date the entries) on every day of inspection. These requirements have been totally ignored by the Manager, Shri Grover, as well as the Assistant Manager, Shri Dubey. Exhibit C-16 is the diary of Acting Manager, Shri Y. K. Singh, during the time he acted as Manager in place of Shri Grover's absence on leave. Exhibit C-18 is Shri Grover's diary as Manager and Exhibit C-26 is the diary of Shri R. K. Dubey, Assistant Manager. The form of the diary, which is printed, contains the following vertical columns :

Date	Area Inspected	Result of Inspection	Action taken	Remarks

Shri Y. K. Singh's diary shows a fair degree of conformity with the requirement of Regulation 41, but the daily entries are written continuosly in one paragraph and not in the various columns provided for. Shri Grover's diary starts only on 1-9-1975 although upto 9-9-1975 the only entries relate to the date of inspection. Thereafter, upto 23-9-1975, mention is made of the area inspected also but nothing more. On 25-9-1975 the other columns are filled in. Thereafter, upto 4-10-1975 there is a reversion to the earlier practice of writing only the first two columns. From 5-10-1975 there is some attempt at fillig the remainiug columns also. The only reference to the seepage which showed itself in the 9th East Level is contained in the entry for 12-11-1975. The remark on the results of inspection column reads as under :—

> "In 9th level water was oozing out from rise side. S. O informed me that face has been stopped a week back."

The 'action taken' column reads as under :

> "Instructed him to make sure that no one runs this face."

3. A visual inspection of the entries in the diary from 6-10-1975 is enough to raise doubts in one's mind as to whether the entries upto 17-11-1975 were at all written daily

on all at the same time In any case none of the signatures are dated

4 Shri Grover admits that although he joined as Manager in 1974, he did not maintain a diary till September, 1975 He decided to maintain one on the 1st of September, 1975 Actually, as mentioned above apart from mentioning the date and area inspected, the diary came to be written only from 23 9-1975

5 The diary of the Assistant Manager, Shri R K Dubey, purports to have entries for each day But he has been content to mention only three features of underground workings, support, ventilation and gases, in evidence he has been honest enough to acknowledge that he should have also dealt with various other aspects of working etc but that none of the senior officers instructed him accordingly The entries are highly stereotyped in character and mostly run as follows —

"Roof —Adequate, Ventilation— Adequate Gases—Nil"

Only in a few cases is there a remark that the ventilation was poor Here again, I have doubts as to whether the entries were made daily or all together on one day Shri Grover, the Manager, had seen and countersigned Shri Dubey's diary from 14-7-1975 But perhaps I will not be wrong in concluding that his countersignature (which is invariably without any date) was made at one go There is no mention in Shri Dubey's diary of the discovery of seepage on 5 10 1975 Actually, there is no entry at all against this date nor is there any entry subsequently of the action taken consequent on the discovery of the seepage

6 It is clear that both Shri Grover and Shri Dubey have been very negligent and remiss in this matter Admittedly Shri Grover did not maintain the diary for a long time He also failed to check Shri Dubey's diary over a long period In the ex post-facto investigation of accidents like this contemporary records are most useful these are not available to me

7 It would also appear that none of the senior officers of the organisation like the General Manager, Sub-Area Manager and the Agent, ever looked at these diaries when they visited the Colliery They may not be statutorily required to do so, nevertheless, the failure he speaks of certain laxity in supervision and administration I would recommend that when a senior officer of the organisation (like Agent or General Manager) visits a Colliery he should be statutorily required to see and countersign the Manager's diary

CHAPTER XII

CALCULATIONS OF WATER IN II CROSS CUT AREA

1 Based on their calculations of the amount of water which inundated the various parts of the 3-Dip District and other neighbouring areas and the amount of water which could have been possibly stored between the roof and the top of sand accumulation in 7th or 8th galleries as well as the voids, if any, in the stowed and unstowed galleries, W C L have attempted to draw support for their 'sudden inrush' theory The argument in the Written Statement runs as under —

> "The circumstances show that the large accumulation of water was a very recent and rapid development; otherwise, since the 'stowed out' area in IV bottom could hold only 12 lakh gallons at the most, if 18 lakh gallons had accumulated there, there would have been a substantial and clearly noticeable overflow of water in 6th level gallery into the new workings of 3-dip district"

2 I am very scepical of these figures which are in any case very, very, 'rough and ready' As regards the quantity which inundated and flowed past the punctured point, in the words of Shri A B Shah ·

> "I think from 30/11 the record of water coming from particular puncture had been maintained Prior to the 30th it is all a guess that can be judged only from the pumping records which are lying at the colliery"

3 These pumping records incidentally were not produced before the Court, though asked for

4 Shri Grover, the Colliery Manager, was also questioned about the calculations in Annexure VIII of the Sinha—Aluwahlia Committee Report (which calculations were based wholly on figures given by W C L management) ·

Q Are the calculations in Annexure VIII of S/A Committee Report correct ?

A No I see they contain a number of mistakes

Q · Taking the figure from D G M S report as 212 5 metres at RL, what is the total quantity of water these workings would contain ?

A On the basis of RL 212 7 the quantity of water upto that mark should be about 8 96 lakh gallons

At RL 215 6 the quantity of water as submitted to S/A Committee is 13 6 lakhs As now submitted to the Court it is 11 50 lakhs At RL 211, as submitted to the S/A Committee, the quantity would be approximately 11 lakhs, the quantity as per the figures now submitted to the Court is approximately 6 77 lakhs

5 In his examination-in chief Shri Grover made a somewhat startling statement that it was at 3 00 A M on 19-11-1975, i e very soon after the accident, that he had made these water calculations with reference to some plan he had He corrected himself in cross-examination and explained that it was the quantity of water in the underground workings as at 3 00 A M on 19-11-1975 that was taken into consideration in making the calculations and that the calculations themselves were made sometime in December, 1976, i e over six months after this Inquiry had started No worthwhile conclusions can be based on such calculations and I do not propose taking any further notice of them

CHAPTER XIII

SURVEYOR'S WORK-LOAD

1 The second line of defence, and an important one, adopted by Shri R K Joshi, the Surveyor, is that the workload imposed on him was unreasonably heavy and was such that he could not attend satisfactorily to his normal statutory duties relating to survey of the underground workings In contesting this, W C L have first admitted that as against a statutory requirement of two qualified surveyors, Shri Joshi was the only qualified surveyor at Silewara, but they have argued that sufficient assistance had been given to him to carry out all his statutory duties The argument runs :

> "To sum up, the assistance made available to Shri Joshi was adequate and was of such nature that all routine jobs and the jobs of sundry nature were being done by his assistants This had left enough time at Shri Joshi's disposal to attend to statutory duties If he neglected the statutory duties he alone was responsible and there was no circumstance which prevented him from carrying out the statutory duties"

2 The main duties and responsibilities of Surveyor are laid down in Regulation 49 of the Coal Mines Regulations, 1957, which runs as follows

'The Surveyor shall ·

(a) make such accurate surveys and levellings, and prepare such plans and sections and tracings thereof as the manager may direct or as may be required by the Act or by the regulations or orders made thereunder, and shall sign the plans, sections and tracings and date his signature, and

(b) be responsible for the accuracy of any plan and section, or tracing thereof that has been prepared and signed by him

(2) The Surveyor shall record in a bound-paged book kept for the purpose ·

(a) the full facts when workings of the mine have approached to about 75 metres from the boundary or from disused waterlogged workings;

(b) any doubts which may exist concerning the accuracy of plans and sections prepared under these regulations; and

(c) any other matter relating to the preparation of the plans and sections that he may like to bring to the notice of the manager.

Every entry in the book shall be signed and dated by the Surveyor and countersigned and dated by the Manager. (Provided that where in any mine two or more surveyors are employed, each of the surveyors shall make the entries aforesaid in respect of the workings in his jurisdiction or of the plans and sections in his charge).

(3) Nothing in sub-regulation (2) shall absolve the owners, agent or manager of his responsibility under the Act and under these regulations or orders made thereunder."

3. According to W.C.L., Shri Joshi had the assistance of :

(1) Shri B. Jha
(2) Shri Waman Gadlu
(3) Shri Vithal Salame
(4) Shri Ram Krishan Yeole
(5) Shri Rambhan Tukaram
(6) Shri Gulab Koterao — Chairman
(7) Shri Gulab Chedilal
(8) Shri Rambhan Narayan
(9) Shri Deoman Amadare

4. Shri B. Jha, is the Draftsman Surveyor, Shri Waman Gadlu, who was a chairman was promoted as Assistant Surveyor on 24-10-1975. He suffered from a physical disability, attended to some work at the surface and never went underground. The vacancy of Chairman created by his promotion was not filled till 18-11-1975. Shri Vithal Salame is the tracer and according to W.C.L., must have provided a great deal of relief to Shri Joshi, but there is evidence to suggest that this worker was sometimes deputed to other collieries in the group and made to do work which did not properly fall within the sphere of survey. My conclusion is that it would be impermissible to say that Shri Joshi did not derive any help from his assistants. Shri Joshi has urged that apart from attending to the statutory duties he was entrusted with a number of jobs of non-statutory nature, but W.C.L. have contended that most of these so called non-statutory jobs fall within the legitimate sphere of duties of a surveyor. On this point I find it difficult to go along with Shri Joshi's pleadings, but the undeniable fact remains that the Colliery was short of a second qualified surveyor, as statutorily required.

5. On the subject of adequacy of survey equipment Shri Joshi has a point in his favour. He repeatedly asked the Manager in writing but without much effect, for more survey instruments and for more accurate instruments. There was only one theodolite instrument in a mine which was working 3 seams and contained 5 districts. There was another theodolite, a Polish one, but it was seldom in working conditions. It was sent to Calcutta for repairs but did not work for long after the repairs. In addition, there was one levelling instrument and dial which was out of order. As against this, Shri B. Jha, has stated that one theodolite and a new dial were supplied to the Colliery immediately after the accident The admitted shortage of accurate survey equipment does not, however, have much bearing on the responsibility of the Surveyor in this case inasmuch as even if more instruments were available for use, there were not enough competent persons in position to use them.

6. As early as 16-2-1974 Shri Joshi had submitted a note (Exhibit J-7) to the Colliery Manager. This dealt with widening of some of the original galleries and said, inter alia :

"It has been brought to your notice that the capacity of the mine had exceeded the capacity of one mine surveyor and also as per the production of the mine one more surveyor is required as per regulation."

7. Three months later, Shri Joshi submitted a longer note (Exhibit J-6) dealing with the shortage of survey equipment, as well as of survey staff :

"Number of development works are going on in Silewara Mine, besides this, new Seam No. II has also been developed fully having a number of faces under development; as such the workload has increased considerably; and with the availability of one theodolite and the present strength of surveyors, it is not possible for one surveyor, to cope up with the work. Further, as per Department of Mines statutory requirement, one more mine surveyor is needed in Silewara 1 & 2 Mine. In the above circumstances I am facing lot of difficulties to complete the survey works and allied works pertaining to survey.

It is requested that an early view may please be communicated on the above matter."

8. No tangible action on these notes was taken. The only attempt made to get additional survey staff was made earlier, as evidenced by letter dated 8-6-1973 (i.e. more than 2-1/2 years before the accident) from the Deputy Chief Mining Engineer, Silewara Mine, addressed to the Chief Personal Officer of the Company, suggesting that survey personnel who are surplus in other projects of the Company, be transferred and posted at Silewara Mine; whether this letter led to anything concrete being done has not been disclosed.

9. What other action did W.C.L. take against the admitted shortage of qualified survey staff in the survey section of the Colliery ? They no doubt inserted advertisements in newspapers and journals but they did not seem to have followed them up with any measure of earnestness. A point which I cannot ignore is that in some of the other Collieries in the Group with a monthly output less than that at Silewara more survey staff than at Silewara appeared to be in position. It is also significant that two surveyors and one assistant surveyor were posted at Silewara soon after the accident.

10. In conceding that the survey staff at Silewara during the relevant period was inadequate, I am not necessarily conceding that Shri Joshi was thereby prevented from performing and completing the more essential part of his duties as surveyor. Elsewhere, in this Report I have considered this matter and come to my conclusions.

CHAPTER XIV

SURVEYOR'S RESPONSIBILITY

1. I must now consider the role of the Surveyor, Shri R. K. Joshi, in this matter and the responsibility, if any, to be attached to him for the disaster. In paragraph 2, Chapter XIII I have already reproduced Regulation 49 dealing with the duties and responsibilities of the surveyor. The other Regulations which are attracted are Regulations 58, 59, 60, 63 and 64. I proceed to reproduce these Regulations :—

2. "58. General requirements about mine plans.—(1) Every plan or section prepared or submitted in accordance with the provisions of the Regulations shall :

(a) show the name of the mine and of the owner and the purpose for which the plan is prepared;

(b) show the true north, or the magnetic meridian and the date of the latter;

(c) show a scale of the plan at least 25 centimetres long, and suitably sub-divided;

(d) unless otherwise provided, be on a scale having a representative factor of 1200 : 1;

Provided that the Chief Inspector, may, by an order in writing, and, subject to such conditions as he may specify therein, permit or require the plans to be prepared on any other suitable scale; and

(e) be properly inked in on durable paper or on tracing cloth, and be kept in good condition.

(2) The conventions shown in the Second Schedule shall be used in preparing all plans and sections required by the regulations

(3) The plans and sections required by the regulations shall be accurate and maintained corrected upto-date which is not earlier than three months;

Provided that where any mine or seam or section is proposed to be abandoned or the working thereof to be discontinued or rendered inaccessible, the plan and section shall be brought up-to-date before such abandonment or at the time of discontinuance as the case may be, unless such abandonment or discontinuance has been caused by circumstances beyond the control of owner, agent or manager, in which case the fact that the plan or section is not up-to-date shall be recorded on it.

(4) Plans and sections required to be maintained under the regulations shall be kept available for inspection in the office at the mine, and shall not be removed therefrom, except by or with the approval in writing of the Regional Inspector, unless, a true copy thereof has been kept therein.

3. "59. Type of Plans : (1) The owner, agent or manager of every mine shall keep the following plans and sections :

(a) A surface plan showing every surface feature within the boundaries, such as telephone, telegraph or power transmission line, watermain, tram-line, railway, road, river, watercourse reservoir, tank, borehole, shaft and incline opening, opencast working, subsidence and building on the surface.

(b) An underground plan showing :

(i) the position of the workings of the mine below-ground ;

(ii) every bore-hole and shaft with depth, include opening, cross measure drift, goaf, fire-stopping, or seal water-dam (with dimensions and other particulars of construction), pumping station and haulage roadway ;

(iii) every important surface feature within the boundaries, such as railway, road, river, stream, watercourse, tank, reservoir, opencast working and building which is within 200 metres of any part of the workings measured on the horizontal plane ;

(iv) the present direction and rate of dip of the strata ;

(v) such sections of the seam as may be necessary to show any subtantial variation in the thickness or character thereof and showing the working section, and such sections of the strata sunk or driven through in the mine or proved by boring, as may be available ;

(vi) the position of every roll, washout, dyke and every fault with the amount and direction of its throw ; and

(vii) an abstract of all statutory restrictions in respect of any specified working with a reference to the order imposing the same.

Whenever this plan is brought up-to-date, the then position of the workings shall be shown by a dotted line drawn through the ends of the workings and such dotted line shall be marked with the date of the last survey.

(c) Where a seam has an average inclination of more than 30 degree from the horizontal, one or more vertical mine section or sections, as may be required by the Regional Inspector, showing a vertical projection of the mine working ;

(d) A ventilation plan and section where necessary, showing the system of ventilation in the mine, and in particular :

(i) the general direction of air-current ;

(ii) every point where the quantity of air is measured ;

(iii) every air-crossing, ventilation door, stopping and every other principal device for the regulation and distribution of air ;

(iv) every fire-stopping and its serial number ;

(v) every room used for storing inflammable materials;

(vi) the position of fire-fighting equipment ;

(vii) every water-dam with dimentions and other particulars of construction ;

(viii) every pumping, telephone and ambulance station ; and

(ix) every haulage and travelling roadway.

(e) A geological plan of the area of lease-hold, on a suitable scale.

(2) Separate plans and sections for the workings of every seam or of every separate section of every seam shall be kept in respect of clauses (b), (c) and (d) of sub-regulation (1) ;

Provided that in respect of plans maintained under clause (b) of sub-regulation (1), combined plans of all seams which are lying within nine meters of each other and which are worked at the mine shall also be kept ; and in the combined plans, workings in different seams or sections shall be shown in different colours.

(3)(a) The plans maintained under clause (a) and (c) of sub-regulation (1) shall also show surface contour lines drawn at vertical intervals not exceeding five metres.

(b) the plans maintained under clause (b) of sub-regulation (1) shall also show spot levels on the floor of the workings ;

(i) along haulage roadways, at every roadway junction except in roadways where tramming is done by manual means, where the spot levels may be shown at points not more than 150 metres apart ; and

(ii) in the case of headings which have been discontinued either temporarily or permanently, also at the end of such headings.

Where two drifts in stone or two galleries in coal pass over one another, this shall be clearly indicated on the plans, with appropriate noting, if necessary.

(c) A permanent bench-mark shall be established on the surface and all levels taken above and below ground shall be referred to a plane in relation to such bench-mark. Particulars of the bench-mark, together with its height above Mean Sea Level, shall be shown on the plans required to be maintained under these regulations.

(4) (a) (i) The plans kept under clauses (a) and (b) of sub-regulation (1) shall also shown the settled boundary of the mine, or where the boundary is in dispute, the boundaries claimed by the owner of the mine and by the owners of the mine adjacent to the disputed boundary :

Provided that where it is not possible to show the complete boundary of leasehold on the same plan, an additional key plan on any other suitable scale showing such boundaries and the outline of the working shall also be maintained.

(ii) The plans required to be kept under clause (b) of sub-regulation (1) shall also show the workings, and all features as prescribed in that clause, both above and belowground, of all adjacent mines as are situated within 60 metres, measured on any plane of the boundary claimed by owners of the mines.

(b) The owner, agent and manager of every mine shall, as soon as its workings extend to within 60 metres of the settled boundary within adjacent mine (or whether the boundary is in dispute within 60 metres of the boundary claimed by the owner of the adjacent mine) inform the owner, agent or manager of such mine of the fact of such extension and shall also give all reasonable facilities to the surveyors of its adjacent mines to carry out the surveys and levellings required to be made under this sub-regulation.

(5) (a) The Regional Inspector, may, by an order in writing, require such additional details to be shown on the plans and sections required to be kept under these regulations or the preparation and maintenance of such other plans and sections showing such details and on such scale and within such time as he may specify in the order.

(b) The Regional Inspector may, by an order in writing required the owner, agent or manager to submit to him, within such time such plans and sections, or tracings thereof, as he may specify in the order.

(c) The owner, agent or manager, shall, at any time, if required by the Regional Inspector, show on any plan or section the then position of the workings of the mine.

4. "60 Copies of plans and sections to be submitted.—The owner, agent or manager shall, on or before the 31st October of every year, submit to the Chief Inspector two up-to-date copies of the plans and sections maintained under clause (b) and (c) of regulation 59(1). The provisions of this regulation shall be deemed to have been complied with if the owner, agent or manager gets the copies of plans and sections submitted hereunder during the previous year brought up-to-date at his own expense.

5. "63. Lists of plans, sections and instruments and their storage.—(1) All plans and sections, and tracings or copies thereof kept at the mine shall be serially numbered.

(2) Suitable arrangements shall be made at every mine for the proper storage and maintenance of every plan and section and of all instruments and materials. Such arrangements shall provide for flat storage of every plan and section maintained under clauses (b) and (c) of regulation 59(1).

(3) Every field book and other notes used in the preparation of plans and sections required under these regulations shall be duly indexed and kept in the office of the mine.

(4) A list of all plans and sections maintained under these regulations or any orders made thereunder, and tracings or copies thereof, of all survey instruments provided under regulation 62 with their respective types, specifications and identification numbers; and of all field books and other notes kept under sub-regulation (3) shall be kept in a bound-paged book kept for the purpose, and shall be brought up-to-date whenever necessary. Every entry in the book shall be signed and dated by the surveyor and countersigned and dated by the manager.

6 64. Preparation of plans by surveyors.—(1) Every plan and section and tracing theerof, prepared under these regulations shall be prepared by or under the personal supervision of the surveyor.

(2) Every plan or section, or any part thereof, prepared by or under the supervision of a surveyor shall carry thereon a certificate by him to the effect that the plan or section or part thereof is correct; and shall be signed and dated by the manager on every occasion that the plan or section is brought up-to-date.

(3) Every tracing of a plan or section or of any part thereof shall bear a reference to the original plan or section from which it was copied and shall be certified thereon by the surveyor to be a true copy of the original plan or section. The certificate shall be signed and dated by him.

(4) If the surveyor fails or omits to show any part of the workings or allows the plans or sections to be inaccurate, he shall be guilty of a breach of these regulations. Nothing in this sub-regulation shall however exempt the owner, agent and manager of their responsibility to ensure that every plan or section prepared, kept or submitted under these regulations or by any order made thereunder is correct and maintained up-to-date as required thereunder."

7. The main thrust of Shri Joshi's argument has been that he had not himself carried out any survey of the II Cross Cut Area which was last surveyed on 31-3-1969 (when he was not the Surveyor) and that therefore he cannot be held answerable for any inaccuracies in the plans of these workings. It has been brought out in Chapter VII that the old plans were by and large correct and the deficiency lay in not surveying the workings of 3-Dip District as they progressed. The main responsibility for this is that of the Surveyor. The position of these workings was shown on only the 1 : 2400 plan in the Manager's Office, and that too with an incorrect orientation.

8. W.C.L.'s stand in their Written Statement that the last survey of the area was made on 31-3-1969 has been modified later and the date changed to 30-6-1972. They did so in the light of certain plans and maps which they introduced in the cross-examination of Shri Joshi. Although such introduction was opposed on Shri Joshi's behalf, I admitted these documents subject to their admissibility being judged later on in the light of any information or clues that they may furnish on the central point at issue in this Inquiry i.e., the circumstances in which the accident was caused just as I admitted a document (Exhibit J-41) produced by Shri Joshi in his own cross-examination, which document he said had come to his knowledge only two days before his deposition. The documents introduced by W.C.L. were designed to show that both Exhibits C-2 and C-3 contained extensive tempering and erasures which could have been made only by Shri Joshi. In paragraphs 5-11, Chapter VII above I have already referred to these two documents. W.C.L. claimed Exhibit C-3 as the master plan of the colliery whereas both D.G.M.S. and Shri Joshi assert that Exhibit C-2 is the master plan. The obvious marks of tempering which these two documents bear throw a haze of doubt over the point at issue i.e., whether the survey of the area was done on 31-3-1969 or on 30-6-1972 (Shri Joshi was Assistant Surveyor at the colliery from 1967 to April 1969; after two years' absence from the colliery he came back in April, 1972 as surveyor and remained in that capacity till the accident in November, 1975). It is very difficult for me to accept the W.C.L. contention and conclude with them that the tempering and erasures were effected by Shri Joshi soon after the accident. I have dealt with this point in some detail elsewhere in the Report (Chapter VII). In my view, the documents introduced by W.C.L. in Shri Joshi's cross-examination can provide no satisfactory basis for the inference drawn by them.

9. I come to the consideration of whether Shri Joshi committed any default of the requirement under any of the Coal Mines Regulation and if so, whether there are sufficient grounds in explanation thereof. Let me reproduce some of the questions and answers in Shri Joshi's cross-examination by W.C.L.

10 About the entry made by Shri Joshi in his diary on 20-10-1975 (which I have separately held to be not genuine but an interpolation after the accident) and the applicability of Regulation 49(2), (b) & (c) :

Q : You knew on 20-10-1975 when you made an entry that the quarterly survey in respect of that area for quarter ending 30-9-1975 was not made. Was it not an important fact, as per regulation of the term 'full facts' under Regulation 49(2), (b) & (c) ?

A : I knew the regulation fully. I was over-burdened with the work. Moreover, I was for a whole month on leave. I have to look after other work also. As far as it was possible for me I did the work.

11. About water danger plan :

Q : Whose fault was it if water danger plan was not made up-to-date ?

A : It was the fault of the management by not having provided adequate number of surveyors.

12. About taking survey measurements daily :

Q : Who is to be blamed for not taking measurement every day ?

A : I being the only surveyor, I was doing work as far as possible, as I was over-burdened.

13. Shri Joshi admits the faults on his part and his defence is two-fold; that he was not provided with adequate staff and, even more so, with adequate and accurate instruments. Secondly, the management subjected him to a lot of 'pressure' and wanted to 'trap' him. I have separately considered the first line of defence and come to the conclusion that it is not lacking in substance.

14. In my opinion, Shri Joshi has violated Regulation 58(3) (by failing to make an appropriate note as required by the proviso), Regulation 49(2) (it is his case that he was aware of the waterloging but he failed to state the "full facts"; his entry in the Surveyors' Diary is, in any case, not a genuine one), Regulation 64(4) read with Regulation 58(3) (Exhibit C-2 which the Surveyor claims as the master plan of the Colliery, was not brought up-to-date every quarter beyond 30-9-1974). In any case, on Shri Joshi's own admission, the 3-Dip District was not surveyed by him; the District was started in June 1975.

15. Whether there are extenuating factors which mitigate the gravity of the violations is a point which I will separately consider.

CHAPTER XV

APPLICABILITY OF REGULATION 127

1. I now address myself to the question as to which sub-regulation, if any, of the Regulation 127 would apply to this case. In his report of enquiry the Director of Mines Safety, Nagpur, has held that the accident was caused by the failure of the management to comply with Regulation 127(1), (3) and (5). I extract below the six sub-regulations of Regulation 127 :

2. "Danger from Underground Inundations :

(1) Proper provision shall be made in every mine to prevent irruption of water or other liquid matter from the workings of the same mine or of an adjoining mine.

(2) Where work is being done in :

(i) any seam or section below another seam or section ; or

(ii) any place in a seam or section, which is at a lower level than any other place in lower seam or section ; or

(iii) any place in a seam approaching a fault passing through an upper seam or section, which contains or may contain an accumulation of water or other liquid matter ;

adequate precautions shall be taken against an irruption of water or other liquid matter into the workings.

(3) No working which has approached within a distance of 60 metres of any such disused or abandoned working (not being workings which have been examined and found to be free from accumulation of water or other liquid matters) whether in the same mine or in an adjoining mine, shall be extended further except with the prior permission in writing of the Chief Inspector and subject to such conditions as he may specify therein :

Provided that if any heavy seepage of water which is not normal to the seam is noticed in any working approaching, but not within 60 metres of any such disused or abandoned working, such working shall be immediately stopped, and the Chief Inspector and the Regional Inspector shall forthwith be informed about the occurrence. The working shall not be extended further except with the prior permission in writing of the Chief Inspector and subject to such conditions as he may specify therein.

Explanation —For the purpose of this sub-regulation the distance between the said workings, shall mean the shortest distance between the workings of the same seam or between any two seams or sections, as the case may be, measured in any direction, whether horizontal, vertical, or inclined.

(4) Every application for permission under sub-regulation (3) shall be accompanied by two copies of a plan and section showing the outline of such disused or abandoned workings in relation to the workings which are approaching the said workings, and such other information as may be available in respect of the said workings.

(5) No such working shall exceed 2.4 metres in width or height and there shall be maintained at least one bore-hole near the centre of the working face, and sufficient flank holes on each side and, where necessary, bore-holes above and below the workings, at intervals of not more than five metres. All such bore-holes shall be, and shall be constantly maintained, at sufficient distance in advance of the workings and such distance shall in no case be less than three metres. These precautions shall be carried out under the direct supervision of a competent person specially authorised for the purpose.

(6) The precautions laid down in sub-regulation (5) shall also be observed in any other working where any heavy seepage of water is noticed whether approaching disused or abandoned workings or not."

3. In their arguments W.C.L. have dealt in some detail with the evolution of the various sub-regulations of Regulation 127. After distinguishing between simple water-logged workings on the one side and disused or abandoned water-logged workings on the other, they have urged that sub-regulations (2) and (6) apply to cases of simple waterlogged workings, while sub-regulations (3), (4) and (5) deal with water-logged disused or abandoned workings. Deriving from this position, it has been contended, on the ground that the II Cross Cut Dip workings are neither disused nor abandoned workings, that sub-regulations (3), (4) and (5) do not apply here, that sub-regulations (2) and (6) which apply to simple water-logged workings would not also apply for the reason that the workings were totally dry and that the only sub-regulation which may be attracted is sub-regulation (1). The argument proceeds :

"It is submitted that the provisions of the sub-regulation had been complied with completely at the relevant time, inasmuch as a barrier of at least 5 meters in thickness was in existance, as seen on the plan between 2nd Cross Cut dip below 8th level and the 9th level east of 3 dip district. In addition, on observance of seepage, due precautions had been taken as explained at length in this written argument elsewhere."

4. I accept a good deal of the argument summarised above, especially the part which says that Regulation 127(2) applies only to waterlogged workings simpliciter, a view which has been confirmed by the Judgment of the High Court of Madhya Pradesh at Jabalpur, Criminal Appeal No. 222 of 1965. It is, however, necessary to find out what is a disused or abandoned working as used in this Regulation.

5. On behalf of Shri Joshi, the Surveyor, it has been argued that Regulation 127(3) and (5) are directly attracted, that therefore, Regulation 49(2) is ousted and in such circumstances the responsibility of the surveyor under the later regulation gets extinguished altoghether, in as much as the III Dip District was within 60 metres of the stowed area (disused workings) from the very beginning and that non-compliance with the provisions of Regulation 127(3) and (5) by the management absolves the surveyor of all responsibility. The argument that sub-regulations (3) and

(5) of Regulation 127 are attracted derives from a reading and interpretation of Regulation 113 relating to inspection and examination of underground workings in mines by sirdars

> 'This Regulation therefore, specifies what is used working Any other workings will be either unused or disused The word 'unused' is also used in several other regulations Normally, meaning of unused would be that temporarily use of that place in a mine is suspended for some reason or the other However, inspection at such a place is also required to be carried out Disused will be a place where no inspection can be carried on at all As for instance a place which is depillared or stowed fully or partly would be a disused working So also IInd Cross Cut dip below 6th level, which was unapproachable on account of roof fall and not being inspected, would be a disused workings In any circumstances the area beyond the first cross cut dip is bound to be a disused working as it is not possible for anyone to approach any of the places in that area"

6 I am unable to appreciate this argument urged on behalf of Shri Joshi in regard to the meaning and definition of 'disused' working and 'abandoned' working Nowhere do the Coal Mines Regulations contain a precise definition of these two terms For 'disused' I propose adopting the ordinary commonsense meaning that it is a part of a mine which has been worked and which, for one reason or another is not being worked now, but it is not given up altogether Some idea of the word 'abandoned' is contained in Regulation 6, dealing with notices of abandonment or discontinuance A close reading of this Regulation, together with a consideration of the facts enumerated on behalf of W C L (namely that working in the II Cross Cut District was never given up and that dewatering in the II Cross Cut having been completed by December, 1974 the next stage of exploitation of the coal reserves in the area immediately to the west was planned and action to obtain the permission of the D G M S authorities, wherever it was necessary had been initiated) leads me to doubt whether this area can be reasonably described as an abandoned working In this view I am of the opinion that the Regulation which is attracted is sub-regulation (1) of Regulation 127

7 The above position that sub-regulations (3) (4) and (5) would not apply here and that only sub-regulation (1) applies, is not very satisfactory, it is, in my opinion, desirable that the precautions laid down in sub regulation (5) should apply to a case of waterlogging simpliciter even though heavy seepage of water may not be noticed If the Government agrees with this interpretation they would probably like to promote suitable amendments to the Coal Mining Regulations

8 As regards sub regulation (1), I have to reject the stand of W C L that they have fully complied with this provision They cannot be deemed to have taken due precautions there was no adequate barrier between the II Cross Cut East below 8th Level and the 9th East Level of 3 Dip District No such barrier had, in any case, been planned and established Secondly, on observance of seepage, due and adequate precautions had not been taken for the reasons explained by me in paragraphs 3 7, Chapter VIII

CHAPTER XVI

PLANNING AND DEVELOPMENT OF 3-DIP DISTRICT

1 The wisdom of the Management's decision to work the 3 Dip District in an area which was originally intended to remain unworked has been questioned by some parties The proposal to plan and work this District appears to have originated some time in early 1975, soon after the II Cross Cut Dip had been dewatered (about December 1974 according to the Management) following the completion of depillaring in the IV Bottom East District The thinking underlying the proposal and the objectives for which the District was planned have been explained in the evidence of Shri A B Shah, General Manager, Shri S Radhakrishnan the Sub area Manager Shri Bansal, Agent and Shri Grover the Mine Manager In the words of Shri Shah

> "We found it not very safe, from the point of view of fire or premature collapse or any other hazards of the mine, to leave a patch adjoining the conveyor and material haulage inclined and decided to develop and pillar this patch along with other pillars (in the IV Bottom East district) that had been left unextracted
>
> The object was to isolate the east district from the two inclines against fire hazards It was also our intention to form a sump to prevent the accumulation of water in the dip gallery conveyor as well as haulage supply drifts, and also to safely extract coal as available keeping the conservation aspect in view The ultimate sump can be formed only when we reach in Sector 'C' to the underground side Till then, some alternative arrangement to deal with the underground water that will be met had to be made and a sump was always needed and we thought of having this sump"

In the words of Shri Grover, the Mine Manager 'The objectives of working 3 dip district were the extraction of coal in the virgin patch as well as formation of sump which was required for avoiding frequent drowning of the tailend of the belt Conveyor installed in No 1 incline, by diverting the water from the incline portion towards the proposed new sump This sump also would have been required in the initial period of development of Section 'C'"

2 It also seems to have been the intention, for facilitating the development of the top section, to dewater the Top sump, by means of bore-holes in the roof, from 3-Dip Bottom at a convenient place in the 9th Level East 5th Dip

3 From the conservation as well as the safety angles, the proposal conceived in the above terms may not be open to serious objection, but its actual implementation and execution left a good deal to be desired

4 After making an application to the Director of Mines Safety for depillaring permission (in the bottom as well as top section of the seam in the 3 Dip District) the development in the bottom section was started sometime in June 1975 The projections initially followed were those shown in Exhibit D 9 the plan submitted to the Directorate as part of the depillaring application According to W C L

> "In the course of actual working, bad roof conditions were encountered which warranted avoidance of 4-way junctions wherever possible by resorting to the staggering of level galleries The compelling need for departing from the original projections was the bad roof condition encountered about 7th level onwards towards the dip side"

Thereupon the Manager asked the Surveyor to redraw the projection, so that the resultant pillars would conform to the minimum size laid down in Regulation 99

5 All these points urged by the W C L do not explain why some of the level and rise galleries were stopped at a certain stage and why 7th Level and 8th Level East were not joined to the II Cross Cut D G M S have argued that there was only one reason for this, and that a very simple one namely, that it was within the awareness of the colliery officers that the II Cross Cut Dip was waterlogged and any connection attempted with it would have led to flooding of the underground I see much force in this thesis A look at the underground plan of 3 Dip District shows how chaotic the working had become with a good deal of 'skirting' going on all the time Culminating in the change of the centre line of the 9th East early in November 1975 just before the appearance of the seepage on the rise side of the level Admittedly there were no arrangements in the District for coursing air It has been strenuously urged on behalf of W C L —despite actual observation to the contrary by the Court during its inspection—that in the working of the District the colliery officers encountered bad roof conditions and that it was the attempt made to steer clear of such roof that looks like skirting As regards the failure to effect connection with the II Cross Cut the plea taken

is that the manager was wanting to concentrate on development on Dip side in order to prepare for Sector 'C' which was considered as the future life of the colliery. All this does not sound very convincing to me. I have no doubt that the presence of waterlogging in the area was in the minds of Colliery officers. The formation of sub-standard (in size) pillars in the 3-Dip Bottom District also bespeaks a certain measure of unsound mining practice, possibly actuated by the desire for higher production. I am mentioning these points although they have no direct casual connection with the accident which occurred; in spite of them, the accident could have been averted if the drivages had been made with proper precautions.

CHAPTER XVII

3 BORE-HOLES

1. A good deal of argument has centered on the 3 Bore-holes which were bored by the management in the strata between IV Top and IV Bottom Seam at the 8th Level. These seem to have been drilled at the end of 1972 for dewatering IV Top East side. At that time there was a main sump in IV Bottom and the object of the bore holes was to take down water from IV Top to IV Bottom; in IV Top there was only a small pump. One hole was enough to deal with the water in IV Top; it has not been explained why 3 holes (and a fourth uncompleted one) were drilled.

2. As stated above, the boreholes were designed to bring down water from IV Top to IV Bottom, but while stowing in IV Bottom East was in progress, it was found that water was finding its way through them to IV Top. To stop this flow, stowing in IV Bottom was restricted towards the middle of 1974, when Shri Grover was the Manager. He then decided to have the holes plugged. The Top Seam workings around the bore-holes were stowed somewhat later.

3. The holes were of the diameter of 7·4 m. and had an inclination of 34° to the floor of the Seam or 21° to the horizontal. The computed reduced levels of the holes were as follows :—

Reduced level of top of the bore holes in the IV Top Seam floor. ...212.6 m.

Reduced level of the bottom of the bore-hole in IV Bottom Seam roof. ...208.8m.

4. Thus when the water level in the Top Seam goes above 212.6 m. water would flow to the bottom seam. Similarly, if the level in the Bottom Seam goes above 212.6 m. the water from the Bottom Seam would flow to the Top Seam.

5. About the plugging of the 3 holes in 1974 we have the evidence of Shri R. C. Garg, the then Assistant Manager and Shri Narayan Baliram, Mason, who did the actual plugging operation. According to the latter, the operation was not entirely successful; neither was it attempted again subsequently.

6. The evidence recorded shows that after the accident and after the II Cross Cut area had been dewatered and made approachable, some water was found trickling through the holes into IV Bottom 8 Level. The expert witness, Dr. B. Singh, who inspected the site nearly two years after the accident also noticed this trickling. According to him, due to the increase in the level of water in the II Cross Cut and the consequential increase in the hydrostatic pressure, some of the weak bedding planes of shale might have opened out slightly, thus facilitating the passage of water. In my view if this could take place after the accident, it could have happened before also, as there was a constant inflow of water in the II Cross Cut for a long period, ever since the last pump had been removed.

7. According to the evidence of worker witnesses, the second pump in the II Cross Cut dip was withdrawn about mid-June 1974, while W.C.L. have contended that the more correct date was November, 1974.

8 This discrepancy in the date is not, however material for our purpose. What could have happened before the accident is that excess water beyond R.L. 212.6 m. in the Bottom Seam was finding its way to the Top Seam through the bore-holes (assuming, on the asis of evidence adduced, that the plugging was not very effective) Thus, in spite of continuous percolation in the area due to the various factors which I have already referred to, the water in the Bottom Seam did not reach, much less overflow, the 6th Level. This is with reference to what I have said in paragraphs 3-4 above.

9. In this context, Sinha-Aluwahlia Committee has stated: "If these bore-holes could not communicate water from bottom to top seam owing to plugging by concrete, it is likely that the parting between 4 top and bottom seams near about RL of 211 mtrs. or at a slightly lower point, might have given way and both seams got connected inside the sealed area". It is also possible that water could have entered the Top Seam through the induced cracks along the bore-holes, i.e in the parting between IV Top and Bottom Seam, even though it is assumed that the top portion of the bore-hole was concreted. Induced cracks could have also covered a large area in the Top Level beyond the concreted portion adjoining the bore-holes.

CHAPTER XVIII

W.C.L.'S APPROACH TO D.G.M.S.

1. In the initial stage of the Inquiry, the approach of W.C.L. towards the Directorate of Mines Safety appeared to be involve the Directorate in some manner in the decisions and actions taken by the Management which led to the accident. Thus, the Written Statement of W.C.L. contains many averments designed to suggest that the Directorate was equally satisfied with the W.C.L. Management that the II Cross Cut area was not waterlogged. As the Inquiry proceeded and particularly, at the time of arguments, the approach changed somewhat in the sense that an attempt was made to fix the responsibility for the accident on the Directorate by arguing that the Directorate officials were remiss in the discharge of their duties; presumably, this was on the maxim "attack is the best form of defence".

2. In para 36 of the Management's Statement it is stated "In the application (for permission to depillar in 3 dip district) it was stated that there was no danger for inundation from the old workings." As a matter of fact, I find from a perusal of the application (Exhibit D-9) that the reference about inundation is only with respect to inundation through bore-holes and not from old workings.

3. Paragraph 46.2 of the Written Statement reads:

> "The application for permission to work No. 3 dip district, stated that there was no danger of inundation from the old workings. This was accepted by the D.G.M.S. and permission was granted without any qualification or requirement of any precautions in this behalf."

4. Shri Bansal, the Agent, answered affirmatively to the following questions put to him in cross-examination:

Q : Is it a fact that no application was made to work the district; the only application was to depillar the district and in this application there was no mention of old workings?

Paragraph 46.6 of the State reads:

> "In the circumstances the working of 3 dip district was considered by the management and D.G.M.S. to be safe enough and not vulnerable to inundation by water from old workings."

Q : Do you have any communication from D.G.M.S. stating that working of 3 dip district was safe and not vulnerable to inundation from old workings?

A : No.

The cross-examination continued.

Q : Page 32 para 79(5) reads : "The approved projection plan of No. 3 dip district contemplated connection of new workings with the first dip gallery of 8th level." Which is that approved projection plan? What is meant by "approved projection plan" and who approved it?

A : I have no knowledge about this.

Q : The same para says "in other words the rise gallery was proposed to be driven from the end of the new 9th gallery". Who proposed this?

A : We proposed.

Q : In the same para it is mentioned that drivage of 9th level gallery to a point immediately below the first dip of 8th level was done in the normal course and was permitted as such. Who permitted this?

A : We did it.

Q : The same para says "the permission for the new workings has been granted after D.G.M.S. was satisfied that there was no danger of inundation by water from the old workings." Now, where is that permission from the new workings which refers to inundation from old workings ?

A : I have not received any permission.

5. No wonder that the D M.S. was led to observe :

"any reference in management's statement or rejoinder about approval, permission, sanction, certificate, clearance, etc., by D.G.M.S., any plan, driving of galleries, making connections, workings or work or development in 3 dip district till the time of the accident is not correct."

6. It is very regrettable that such inaccurate, and misleadingly inaccurate at that, statements should have found place in the Management's Written Statement. I presume that the Written Statement's would have been seen and approved by the General Manager, Shri A. B. Shah, and also, perhaps by the Managing Director. If that is so, the lapse is all the greater. I pass this matter without further comment.

CHAPTER XIX

POINTS FOR DETERMINATION

1. I will now answer the "Points for Determination". The first two could be dealt with together. The accident was caused by the future of the thin rib separating the II Cross Cut Dip from the 9 Fast Level of the 3-Dip District. The rupture of the rib itself was primarily caused by the failure to take adequate precautions against waterlogged workings in the II Cross Cut area, the result of carelessness and negligence, and secondly, by the failure to keep a correct and true underground map of the progress of the 3-Dip District. I reject the theory propounded by the W.C L. of a sudden inrush of water from the over-lying rocks into the II Cross Cut area on the day of the accident. On this finding of mine, I hold that the accident could have been prevented.

2. As regards the third point, the Management failed to comply with Regulation 127(1) by not taking proper precautions to prevent the erruption of water while driving the 9 East Level, and also with Regulation 6, by failing to issue notice of discontinuance.** They also committed a grevious error in assuming in a very facile manner and without proper survey or verification, that the II Cross Cut Dip was still at some distance. The required precautions, like driving advance bore-holes or gradual dewatering of old workings by holding at the Upper levels, were not taken even after the appearance of seepage more than a fortnight before the accident. The "owner" is also guilty of violation of Regulation 64(4), of Regulation 62 (by not supplying adequate survey instruments) and of Regulation 35 (by not posting adequate survey staff at the Silewara Mine).

3. As regards point No. 4, the main persons responsible for the accident are the Colliery Manager, Shri S. K. Grover and the Colliery Surveyor, Shri R. K. Joshi. The "owner" in the shape of the Managing Director, Shri C. Balram, is responsible in the sense that adequate survey staff was not provided at the Mine and the Safety Officer was misused for production purposes. Shri A. B. Shah, General Manager, Shri S. Radhakrishnan, Sub-Area Manager and Shri C. P. Bansal, Agent of the Silewara group, should also accept jointly and severally their share of similar responsibility, as the three of them together can be considered as occupying the position of Agent as defined in the Mines Act. They are also responsible for not exercising adequate control and supervision over the work of the Manager, the Assistant Manager and the Surveyor in regard to the maintenance of diaries, in regard to the prompt and accurate survey of the underground, in regard to the irregular development of the 3 Dip District, and also in regard to 3-Dip workings being made without proper precautions.

4. The Manager, Shri S. K. Grover, was responsible for not taking adequate precautions while working in close proximity of a waterlogged area. He violated Regulation 41(1)(b) by not maintaining a diary for a long time and when he did maintain one for a short period before the accident, he did so in a very perfunctory manner. He further violated Regulation 41(6) by not regularly inspecting and countersigning the diaries and reports of his subordinate staff. He also violated Regulation 58(3) by not maintaining true, up-to-date and accurate underground maps of the mine, in particular the progress of the 3-Dip District.

5. Shri R. K. Dubey, Assistant Manager, maintained his diary in a very incomplete and perfunctory fashion. He also violated Regulation 42(3) by not inspecting the II Cross Cut area for presence of water, even after seepage in the 9th East Level had been discovered. His plea that II Cross Cut was not travelable because of a roof fall just below the junction of the II Cross Cut with the 6th Level East, has to be rejected.

6. As regards the Surveyor, Shri S. K. Joshi, I have separately (vide paragraph 14 Chapter XIV) recorded my opinion about the violations made by him. I have also indicated that there are some extenuating circumstances which mitigate the lapses and violations committed by him. Elsewhere I have recorded my finding that he was not provided by the management with adequate staff and with adequate survey instruments. He made several representations and requests to the management about these deficiencies but got no tangible relief.

7. Having said all this, I must still hold that Shri Joshi has to accept his share of the responsibility for the mishap. He could not have been unaware of the "key" position he held in the mine and of the legal obligation placed on him to ensure the preparation of essential underground maps and plans and maintain them both up-to-date and correct. If his work-load was too heavy and he was assigned some non-survey duties he should have parcelled out his time in such a way that safety in the mine was not compromised and the essential minimum survey work of the underground was not neglected or kept in arrears. To this extent he must be deemed to have failed in the proper and due discharge of his functions and duties as Surveyor.

8. I have considered whether the conduct of Shri C. Balram, the Managing Director, can be held to criticism or blame on any ground. It has been contended before me that in not "suo moto" producing before the Court the letter which he had written to the Ministry soon after the accident (a copy of which has been filed by D.M.S. as Exhibit D-23) and by putting forward the 'sudden inrush' theory, he has ignored and supressed important material which was very germane to the Inquiry and tried to mislead the Court and prolonged the Inquiry. It is true that soon after the accident he felt that the accident was caused by neglect etc., of the principal officials of the Colliery but later made himself responsible for introducing the 'sudden inrush' theory and including it in the Written Statement of W.C.L. It is, however, possible to argue that his initial view about responsibility for the accident got modified in the light of the investigation carried out by him and the further consideration he had given to the question. All that can be said is that in a public Inquiry like this, designed to ascertain the circumstances leading to the accident, he should, as an honest public servant, have placed before the Court all the material in his possession relevant to the accident and not kept back anything which did not support or corroborate the stand taken by him in his Written Statement. I must also remark that the Management having offered to examine him as a witness, later withdrew the offer.

9. As regards Point (5), the Report contains at appropriate places some of the recommendations which I have made. For facility of reference, I bring them all together now :

(a) The scope of the functions of the Pit Safety Committee be enlarged to include consideration and discussion of matters relating to existing dangers in the underground workings of the mine.

(b) It is desirable to lay down in the Coal Mines Regulations that when any D.G.M.S. authorities visit a mine after a major accident they should, simultaneously with one officer going to the site of the accident, effect the immediate seizure of all relevant plans and documents through another of their officers.

**Please see, however, separate Note by the two Assessors, Shri S. K. Sanyal and Shri S W. Dhabe.

(c) Form IV-A of the First Schedule of the Coal Mines Regulations (which is the form of written intimation of a fatal accident) be suitably amended to provide for information on (i) time of intimation; and (ii) time of despatch of such intimation: this would be in fulfilment of the real intention behind Regulation 9. The possibility of posting Duty Officers at all D.G.M.S. offices on holidays to receive intimation of such accidents be considered by the Government.

(d) As regards C.M.R. 41(2), it is recommended that if any additional duties are given to the safety officer, such action should be made subject to approval in writing by the D.G.M.S. authorities who will be required to record their reasons.

(e) Whenever a senior officer of the organisation (like Agent or General Manager) visits a mine, he should be statutorily required to see and countersign the Manager's diary. This arises from my finding in Chapter XI that in this case diaries are either not maintained at all or maintained in a very unsatisfactory manner.

(f) It is desirable that the precautions laid down in sub-regulation (3) of Regulation 127 should apply to cases of waterlogging simpliciter also even where heavy seepage of water may not be noticed; Government may consider promoting suitable amendments to the C.M.R.s for this purpose.

10. In addition, following recommendations are made :

As the Inquiry progressed, it became clear that the parties were giving different interpretations to some of the provisions in the Coal Mines Regulations. I also find that some of these Regulations are not clear-cut enough; for example, it was argreed before us that under Regulation 49, sub-clause (2), the obligation of the surveyor to make an entry in the book about "full facts" of the mine workings, when they have approached about 75 meters from the mine boundary or from disused or abandoned waterlogged workings gets extinguished once the distance gets reduced to 60 meters. It is desirable that the two Regulations, 49(2) and 127 are suitably amended to clarify that the Surveyor's responsibility is in no case reduced under such circumstances. It also appears to be necessary to define precisely some of the terms like 'disused workings', 'unused workings' and 'abandoned workings'. In any case, the word 'such' in Regulation 127(3) appears to be superfluous and productive of only confusion.

11. It is also recommended that Regulation 41(a) laying down the duties of the Safety Officer should clearly specify that the Safety Officer should not be assigned any other duties in the mine. The reason for this recommendation is fully explained in the Chapter on "Misuse of Safety Officer". If I may be allowed to go a little beyond the somewhat narrow limits of the terms of this Inquiry, I would also suggest that in the context of nationalisation of the coal industry, some of the provisions in the Mines Act as well as in the Regulations etc., require to be re-examined so as to make them more consonant with the new set-up of the coal industry. So far as safety in the industry is concerned, I understand that some of the nationalised units have set up their own safety set-up for purposes of "internal audit". The Government may perhaps like to review the operation of the set-up either through a Committee or through such other suitable ways as the Government may decide.

12. As regards Point (6), I have no particular recommendations to make.

13. On Point (7) regarding costs, as I have found that the accident was the result of negligence and carelessness on the part of W.C.L., it is but appropriate that W.C.L. be asked to bear the costs. Costs would comprise the following items :—

(1) Expenditure incurred by the Government on the Court of Enquiry.

(2) Expenditure incurred by the various parties, (excluding W.C.L. and Shri Joshi) on engagement of Counsels in the Inquiry, on travel from Nagpur to Bangalore and back and boarding and lodging expenses at Bangalore, for the meeting of the Court held at Bangalore from 5-6-78 to 9-6-78, including Shri Joshi. (Court has already ordered W.C.L. to bear these expenses for Bangalore Sittings).

(3) As regards Trade Union officials or workers who are employees of W.C.L. and who have attended Court (including those who deposed as witnesses) their travel expenses and normal boarding expenses for the day shall be borne by W.C.L. Not more than two worker-employees per Trade Union who attended the Court shall be so paid. (It is understood that W.C.L. have already made some payments in this connection).

14. These costs shall be computed and calculated by the Chief Labour Commissioner (Central), New Delhi and intimated to the Chairman and Managing Director of W.C.L. at Nagpur, within a period of three months. They shall be paid by W.C.L. within a period of six months from the date of this Report.

15. No costs are allowed to any other party.

CHAPTER XX

CONCLUSIONS AND ACKNOWLEDGEMENTS

1. In concluding this Report, I would like first of all to thank all the parties and Counsels who appeared before me and materially assisted in the Inquiry. Secondly, I wish to thank the four Assessors, Sarvashri S. K. Sanyal, S. W. Dhabe, V. L. Karwande and Prof. G. S. Marwaha, for the courtesy and the cooperation which they extended to me at all stages of the Inquiry. Their advice and suggestions have been most useful to me. In particular, I am indebted to the two "Technical" Assessors, Prof. G. S. Marwaha and Shri V. L. Karwande, for the light they shed on many of the somewhat intricate technical issues involved in the Inquiry. I am happy that but for a Note by two of the Assessors, we are above to submit a unanimous Report to the Government of India.

2. I would like to convey my thanks to the Government of Maharashtra for facilitating the holding of the Court of Inquiry in one of the Committee Rooms in the M.L.A.s' Hostel at Nagpur. Nagpur was a convenient location for holding the Court, the Silewara Colliery being at a distance of only 27 K.M. from the city practically all the sessions of the Court were held in this Committee Room.

3. I would also like to thank the Director of Mines Safety, Nagpur for preparing a model of the 3-Dip District as well as an enlarged plan of the District, which was hung on the wall of the Court Room at Nagpur and which materially added to the understanding of the various facts and circumstances connected with the Inquiry.

4. Finally, I am happy to acknowledge the invaluable assistance I received from Shri Sohan Lall, Secretary of the Court, at all stages of the Inquiry. His tidy, systematic habits and his industrious and painstaking ways made a material contribution to the orderly progress of what turned out to be prolonged Inquiry.

Sd/-

P. M. NAYAK, Chairman

Bangalore

Dated : September 25, 1978.

We full agree with all the observations, conclusions and recommendations made in the Report which has been prepared in full consultation with us. We would like to place on record our deep appreciation of the unfailing courtesy and consideration extended at all times by the Court not only to the Assessors but to one and all who participated in the Inquiry. This was all the more remarkable in view of the

fact that though midway during the Inquiry he developed a health problem, this did not in any way effect his commitment to the Inquiry.

Sd/-

(V. L. KARWANDE)

Sd/-

(Prof. G. S. MARWAHA)

Sd/-

(Subject to a note) (S. W. DHABE)

Sd/-

(Subject to note appended) (S. K. SANYAL)

ASSESSORS

NOTE BY THE ASSESSORS

In Capter XV, the learned Member of the Court has observed that Coal Mines Regulation 127(3) and (5) will not supply to this case. In our opinion the Regulation—Sub-clause (3) and sub-clause (5) also apply to this case in addition to 127(1). The facts are that the pumps were withdrawn from 2nd X-cut dip, the last pump being withdrawn in November 1974. It is also an admitted position that no work was done in 2nd X-cut dip after November 1974. The management started dewatering it in December, 1974. It was filled with water. The management also started development of III dip District which was approaching water logged work within 60 meters. In fact, the management wanted to depillar III dip District and application was sent to DGMS. In view of these facts, it is difficult to understand why it was not discussed or abandoned working. If the intention was to use it again, even then it will be abandonment temporarily. This is clearly, a case of discontinuance of work for a temporary period. The Regulation 127(3) itself says that if the work is done within 60 metres and if it is found to be free from accumulation of water or other liquid matters, then prior permission of the DGMS is not necessary. This case of the management that it was free from water, has been already rejected by us. In fact, management knew that it was within 60 metres and even then no application was made under Regulation 127(3). The words 'dis-used' or 'abondonment' do not mean in the clause that such thing must be of a permanent nature. This disuse or abandonment can also be of temporary type. Wider interpretation will have to be given to these words in view of the objective of the regulation being mainly safety of the workers. The social statute or legislation of this type will have to be given interpretation to advance the objective of the legislation and to prevent the mischief. In the Oxford Dictionary—2nd Edition 1975, the meaning of the words —'disuse' is 'discontinuance, want of use or cease to use' and the meaning of 'abandonment' is 'to give up or surrender'. It is obvious from the meaning of these words that such discontinuance or abandonment can be of a temporary nature. In view of our interpretation of sub-regulation (3), we feel that in this case in addition to Regulation 127(1) Regulation (3) and (5) will also apply. We are also strengthened in our view by the finding of the DGMS in its report that Sub-Regulation (3) and (5) of the Regulation 127, applied to this case and there is breach as no permission was asked for. The relevant observation in para 23.8 of that Report are as follows :

> "He (Shri S. K. Grover, Manager) had failed to observe the provisions of Regulation of Regulation 127 of Coal Mines regulations 1957. No application had been made to the Director-General under Regulation 127(3). Under Regulation 127(1) proper provisions had to be made to guard against danger of inundation. Such provisions had not been made by him. Bore-holes near the centre of the working faces and flank holes on sides in the workings within 60 metres of the waterlogged workings as provided in Regulation 127(5) had not been provided. Such workings were also more than 2.4 metres in width and height which was a contravention of Regulation 127(5). Manager's contention that 7th and 8th east levels had not been joined with the disused workings because of roof trouble is not tenable as the roof of these levels had been found to be not so bad as to prevent making of such connections";

In our opinion, therefore, in addition to Regulation 127(1) there are also breaches of Regulatin 127 sub-clause (3) and (5). It is therefore also not necessary that the working in the particular district should be given up completely for the attraction of this regulation. Intention to work in future after lag of time or otherwise, does not necessarily exclude such categories from the provisions of Regulation 127(3).

We would also like to observe that safety should be the primary concern of working in coal mines or any other hazardous undertaking. Time has come to make safety a principal objective of the running of such undertaking and in fact, should be included in the aims and objects and in the articles of association of such undertaking/company. Specially, in the public sector, it is more necessary that safety organisation is built right from the lower level to the top level as an instrument of ensuring safety in working such more so when the tendency by the over zealous officers is to sacrifice safety for the sake of production. We also feel that the organisation of DGMS should be strengthened and it should not merely remain as an enforcing authority or much less a mere machinery for granting permissions. In fact, it seems that the present practice of granting permission under Coal Mines Regulations is probably due to the inadequacy of staff. Many times they are granted without even physical verification of the data or information supplied by the management, seeking for permission. In the instant case had the physical verification been made, it was possible to avoid such a situation. In order to make this institution (DGMS) as an important limb, particularly for making a success of nationalised public sector, it is necessary that the safety in mines should be considered scared and this institution must be asked to ensure safety so that public undertakings reach commanding height of production, give better security and safety for life and then help in rapid economic development. In our view, this is very essential though safety in mines will always remain the responsibility of the management.

In the new perspective before our country and time-bound targets to be achieved in the economic planning, we suggest also that suitable changes be made in Mines Act, 1952 and the rules made thereunder, in order to meet the new challenges of the situation. We also recommend that workers representatives should be associated at all levels of safety organisations.

Subject to the above observations, we agree with the Report.

BANGALORE :

Sept. 24, 1978

Sd/-

(1) (S. W. DHABE)

Sd/

(2) (S. K. SANYAL)
Assessor

APPENDIX-I
MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 9th March, 1976

NOTIFICATION

S.O. .—Whereas an accident occurred in the Silewara Colliery in District Nagpur of Maharashtra State, on the 18th November, 1975, causing loss of lives;

And whereas the Central Government is of opinion that a formal Inquiry into the causes of and circumstances attending the accident ought to be held;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 24 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952), the Central Government hereby appoints Shri P. M. Nayak, retired Secretary to the Government of India, to

hold such Inquiry and also appoints the following persons as assessors in holding the Inquiry namely :—

(1) Shri V. L. Karwande,
General Manager,
Singareni Collieries Company Ltd.,
P.O. Kothagudium, Andhra Pradesh.

(2) Prof. G. S. Marwaha,
Director,
Indian School of Mines, Dhanbad

(3) Shri S. W. Dhabe, M.P.,
Member, Working Committee,
Indian National Mines Workers' Federation,
Circle No. 9, Ayachit Road, Nagpur.

(4) Shri S. K. Sanyal,
Member, Working Committee of
All India Trade Union Congress,
Advocate, Bornala,
Nagpur-13 (Maharashtra).

[N-11015/7/75-MI]
J. C. Saxena, Under Secy.

APPENDIX IV

LIST OF WITNESSES EXAMINED

Sl. No.	Name of Witness	Examined on behalf of
1	2	3
(1)	Shri A.B. Shah	Western Coalfields Ltd.
(2)	,, S. Radhakrishnan	-do-
(3)	Shri C.P. Bansal	Western Coalfields Ltd.
(4)	,, S.K. Grover	-do-
(5)	,, R.K. Dubey	-do-
(6)	,, R.C. Garg	-do-
(7)	,, S.N. Guha	-do-
(8)	,, V.K. Sinha	-do-
(9)	,, B. Jha	-do-
(10)	Dr. B. Singh	-do-
(11)	Shri R.K. Joshi	Head Surveyor in W.C.L.——an independent witness
(12)	,, M.S. Kahlon	Directorate General of Mines Safety.
(13)	,, Maruti Ganpat Jadhav	M.P. Rashtriya Koyala Khadan Kamgar Sangh.
(14)	,, Phool Chand Chabbilal Mankade	-do-
(15)	,, Bhimrao Kachru Sonekar	-do-
(16)	,, Kantam Lachhaya	-do-
(17)	,, Gudde Rajeshwar	Vidarbha Coal Mines Employees' Association
(18)	,, Narayan Baliram	-do-
(19)	,, Lallan Sharma	Koyala Khadan Karamchari Sangh.

APPENDIX V

LIST OF EXHIBITS AND MATERIAL OBJECTS ADMITTED

Exhibits Marked 'C' — Western Coalfields Limited.
,, ,, 'J' —Shri R.K. Joshi, Head Surveyor, W.C.L.— an independent witness.
,, ,, 'D' —Directorate General of Mines Safety.
,, ,, 'M' —M.P. Rashtriya Koyala Khadan Kamgar Sangh
,, ,, 'V' —Vidarbha Coal Mines Employees' Association.
,, ,, 'K' —Koyala Khadan Karamchari Sangh.

Exhibit Number	Brief subject	Introduced by	First reference
1	2	3	4
C-1	Office Circulars advertiseing different posts.	W.C.L.	Page 7 of Shri A.B Shah's evidence.
C-2	U/G working Plan of Seam IV Bottom—R.F. 1 : 1200	-do-	Page 10 of Shri A.B.Shah's evidence.
C-3	U/G Plan of Seam IV Bottom-R.F. 1 : 1200	-do-	-do-
C-4	Purchase orders for Voltas pumps	-do-	Page 35 of Shri A.B. Shah's evidence.
C-5	WCL Letter No. CME(S&C) Mtn of Disc/dl 12-11-75 enclosing record notes of discussions between officials of DGMS and Coal Mines Authority held on 27-10-75.	-do-	-do-
C-6	Indents for purchase of Polish Advance Boring Machine.	-do-	Page 41 of Shri A.B. Shah's evidence.
C-7	Repeat order dated 17-9-73 for Voldrill.	-do-	-do-
C-8	NCDC P.O. Silewara, letter dt. 10-11- to Director of Mines Safety, Nagpur with Plan 73/44 showing position of 3 holes drilled in 7th Level.	-do-	-do-
C-9	DGMS, Dhanbad, D.O. letter dt. 27-12-73 from Shri H.B. Ghose to Shri C. Balram regarding under working of virgin or developed seams.	W.C.L.	Page 59 of Shri S. Radhakrishnan's evidence
C-10	Extract of page XV of I.B.M. Interim Report (II) on the exploration of coal in Silewara and Bina Sectors, Kamptee Coalfields.	Shri R.K. Joshi.	Page 109 of S. Radhakrishnan's evidence
C-11	NCDC letter dated 13-6-75 to DGMS regarding permission for depillaring eastern side panel with complete extraction of IV-B and IV-T seams.	M.P.R. K.K.K.S.	Page 199 of Shri A.B. Shah's evidence

1	2	3	4
C-12	Notice of Accident dated 24-11-75 in Form IV-A.	W.C.L.	Page 7 of Shri C.P. Bansal's evidence.
C-13	Pump capacity, location, etc., for 3-Dip District.	DGMS	Page 72 of Shri C.P. Bansal's evidence.
C-14	Production in tonnes from IV-Top Depillaring Distt. and 3-Dip District for Oct. and Nov. 1975.	-do-	Page 72 of Shri C.P. Bansal's evidence.
C-15	NCDC Silewara Pruoject letter dt. 18-10-71 to AGM, Nagpur regarding 4 Boreholies KMT-54, 19, 35 and 84 in rush of water from these bore-holes. and production for the last one week.	-do-	-do-
C-16	Diary of Shri Y.K. Singh.	K.K.K.S	Page 147 of Shri Bansal's evidence.
C-17	Attendance Register of General Shift.	-do-	Page 147 of Shri Bansal's evidence.
C-18	Diary of Shri S.K. Grover.	-do-	Page 156 of Shri Bansal's evidence.
C-19	NCDC Silewara Project letter dt. 22-2-75 to JDMS– Notice under Reg. 101 for splitting of pillars.	W.C.L.	Page 4 of Shri Grover's evidence.
C-20	JDMS, Nagpur's letter dated 20-3-75 to the Agent, Silewara, regarding permission for depillaring eastern side panel with complete extraction of IV-B & IV-T.	-do-	Page 7 of Shri Grover's evidence.
C-21	Spot Inspection Report Register.	-do-	Page 7 of Shri Grover's evidence.
C-22	Dip Progress Register	-do-	Page 11 of Shri Gorver's evidence.
C-23	Letter dt.29-10-75 from the Manager, Silewara Colliery to the Head Surveyor regarding rectification of violations.	-do-	Page 12 of Shri Grover's evidence.
C-24	Water calculations by Shri S.K. Grover.	-do-	Pages 14-17 of Shri Grover's evidence.
C-25	Plans showing Silewara 1 & 2 Mine, R.F. 1 : 1200	-do-	Page 18 of Shri Grover's evidence.
C-26	Shri R.K. Dubey's Diary.	DGMS	Page 26 of Shri Grover's evidence.
C-27	Daily Sirdar's Report	-do-	Page 60 of Shri Grover's evidence.
C-28	U/G Plan of Seam IV-B R.F. 1 : 2400	-do-	Page 75 of Shri Grover's evidence.
C-29	Hand Plan of IV-B East Section.R.F. 1 : 2400	-do-	Page 76 of Shri Grover's evidence.
C-30	Six Field and Level Books	-do-	Page 102 of Shri Grover's evidence.
C-31	Ventilation Plan of Seam II R.F.1. : 1200	-do-	No mention of Exhibit.
C-32	Coal Board Measurement Diary.	Shri R.K. Joshi	Page 218 of Shri Grover's evidence.
C-33	Shortfirer's Report Book	K.K.K.S.	Page 302 of Shri Grover's evidence.
C-34	Observations of Survey Officer, Nagpur dt.7-2-76 on Water Danger Plan.	-do-	Page 151 Shri Radhakrishnan's evidence.
C-35	Hand Plan of IV-B-R.F. 1 : 2400	Shri R.K. Joshi	Page 95 of Shri Dubey's evidence.
C-36	Overman's Daily Report	D.G.M.S.	Page 4 of Shri V.K. Sinha's evidence.
C-37	Part U/G Plan of IV.B East-R.F.1 : 2400	-do-	Page 6 of Shri Sinha's evidence.
C-38	Overman's Report Book	Sh. R.K. Joshi	Page 11 of Shri Sinha's evidence.
C-39	Observations at Silewara by Dr. B. Singh.	-do-	Page 57 of Dr. B. Singh's evidence.
C-40	Part Plan of Seam IV-B of Silewara Colliery dt. 19-11-75	W.C.L.	Page 29 of Shri Joshi's evidence.
C-41	Part Plan of Seam II dt. 19-11-1975	-do-	-do-
C-42	Part Plan of IV-Top Seam dt. 19-11-1975	-do-	-do-
C-43	Plan showing U/G workings in Seam IV-B Section, dt. 19-11-1975.	-do-	Page 31 of Shri Joshi's evidence.
C-44	Surveyor's Field Book.	-do-	Page 32 of Shri Joshi's evidence.
C-45	U/G Working Plan of Seam IV-B.	-do-	Page 33 of Shri Joshi's evidence.
C-46	Register of Plans.	-do-	Page 34 of Shri Joshi's evidence.
C-47	Ferro-print taken by DGMS of Ex. C-3.	-do-	Page 39 of Shri Joshi's evidence.
C-48	Statement made before Shri A.K. Mukherjee.	W.C.L. but asked by the Counsel of Shri Joshi during his Ex.-in-chief	Page 62 of Shri Joshi's evidence.
C-49	Pit Safety Committee Register	W.C.L.	Page 115 of Shri Joshi's evidence.
C-50	Application for depillaring under Reg. 109(1)/105(1)/122(1) (Form 1A)	-do-	Page 116 of Shri Joshi's evidence.
C-51 } C-52 }	Daily Measurement Books	-do-	Page 27 of Shri M S Kahlon's evidence.
C-53 } C-54 }	Co-ordinate Registers	-do-	Page 33 of Shri Kahlon's evidence.
Material Objects C-1-3	One sample of caly and two samples of sand in three separate envelops collected by Dr. B. Singh during his visit to Saile[illegible] Colliery on 23-7-1977.	Dr. B. Singh.	Page 4 of Dr. B. Singh's evidence.

1	2	3	4
J-1	Surveyor's Diary	Shri R.K. Joshi.	Page 67 of Shri Shah's evidence.
J-2	Charge sheet dt. 24-11-75 served on Shri R.K. Joshi.	-do-	Page 68 of Shri Shah's evidence.
J-3	Note of Shri A.B. Shah dt. 29-11-75 about his visit to the place of the accident on 18-11-1975.	-do-	Page 71 of Shri Shah's evidence.
J-4	Shri Joshi's reply dt. 24-11-75 to the charge sheet (in his handwriting).	-do-	Page 72 of Shri Shah's evidence.
J-5	Regd. letter dt. 21-10-75 from Dy. Director of Mines Safety to the Agent, Silewara reg. rectification of violations.	-do-	Page 91 of Shri Shah's evidence.
J-6	Shri R.K. Joshi's note dt. 26-5-74 to the Manager Silewara re-insufficient surveying staff.	-do-	Page 106 of Shri Shah's evidence.
J-7	Shri R.K. Joshi's note dt. 16-2-74 to A.C M. reg. inadequancy of survey staff.	-do-	Page 105 of Shri Shah's evidence.
J-8	Letter dt. 8-5-73 from Dy. CME, Silewara to the Chief Personnel Officer, NCDC, Ranchi reg. posting of Asstt. Surveyor/Dy. Surveyor at Silewara.	-do-	Page 113 of Shri Shah's evidence.
J-9	Letter dt. 20-8-74 from DGMS to the Agent, Silewara Project regarding permission to drive a drifting alignment of KMT-36	-do-	Page 195 of Shri Shah's evidence.
J-10	Statement showing details of mine surveyors who had been offered appointment in Nagpur Region.	-do-	Page 197 of Shri Shah's evidence.
J-11	A bunch of advertisements for different posts.	-do-	Page 176 of Shri Shah's evidence.
J-12	U/G Plan of Seam IV-T-R.F. 1 . 2400	-do-	Page 103 of Shri' S' Radhakrishnan's evidence.
J-13	U/G workings Seam IV-Top R F. 1 : 1200	-do-	Page 104 of Shri Radhakrishnan's evidence.
J-14	Water Danger Plan of Seam IV-B-R.F. 1 : 1200	-do-	-do-
J-15	Water Danger Plan of Seam IV-T-R.F. 1 : 1200	-do-	-do-
J-16	List showing the survey staff and number of districts to be looked after.	-do-	Page 82 of Shri Bansal's evidence.
J-17	Dy. C.M.E., Silewara's note dt. 6-12-72 regarding non-payment to contractors in the absence of Surveyor.	-do-	Page 82 of Shri Bansal's evidence.
J-18	Note of Shri Bhasin to Shri Joshi regarding fixing of center line of Air Shaft at Kanhan by Shri Joshi.	-do-	Page 83 of Shri Bansal's evidence.
J-19	Material Issue Register, 1971	-do-	Page 86 of Shri Bansal's evidence
J-20	Action Plan of Silewara Colliery including development activities for 1975-76.	-do-	Page 91 of Shri Bansal's evidence
J-21	Head Surveyor's note dated 10-1-74 to C.M. Silewara regarding repair of Polish Theodolite.	-do-	Page 161 of Shri Grover's evidence
J-22	Colliery Manager, Silewara's note dt. 22-4-74 to Dy. SOC, Silewara seeking his approval to send Theodolite to Calcutta to get it repaired.	-do-	-do-J
J-23	Part U/G Plan of IV-B East	-do-	Page 175 of Shri Grover's evidence.
J-24	Hand Plan showing change of centre line in 9 East Level drawn by Shri R.K. Dubey.	Shri R.K. Dubey	Page 97 of Shri Dubey's evidence.
J-25 to J-40	Three registers and thirteen files showing the work entrusted to Shri R.K. Joshi, Head surveyor.	Shri Joshi	Page 2 of Shri Joshi's Examination-in-chief.
J-41	Notes regarding instruments and not getting co-ordination from the management, for survey of important work.	-do-	Page 38 of Shri Joshi's evidence.
D-1	JDMS, Nagpur letter dated 2-9-75 to the Agent, Silewara regarding rectification of violations.	D.G.M.S.	Page 15 of Shri Shah's evidence.
D-2	Inspection Report of Director of Mines Safety, Nagpur dated 29-7-75.	-do-	Page 18 of Shri Shah's evidence.
D-3	Record of notes of the meeting between the Officers of C.I.L. and D.G.M.S. held on 27-10-1975.	-do-	Page 19 of Shri Shah's evidence.
D-4	Statement in Schedule V showing fatal accidents, serious accidents, minor accidents during the years 1972 to 1975.	-do-	Page 30 of Shri Shah's evidence.

1	2	3	4
D-5	U/G Plan of IV-Top-R.F. 1 : 1200	D.G.M.S.	Page 29 of Shri Radhakrishnan's evidence.
D-6	Letter dt. 3-1-74 from the Director of Mines Safety, Nagpur to the Agent, Silewara regarding permission under Ref. 100(1) to extract pillars.	-do-	Page 37 of Shri Radhakrishnan's evidence.
D-7	Copy of letter dt. 15/17-10-74 from M.D., C.M.A. to J.D.M.S., Nagpur regarding functional responsibility of Superintendent of Mines.	-do-	Page 41 of Shri Radhakrishnan's evidence.
D-8	Letter dt. 17-3-75 from J.D.M.S., Nagpur to the Manager, Silewara Notice under Reg. 101 for splitting of pillars.	-do-	Page 10 of Shri Bansal's evidence.
D-9	N.C.D.C., letter dt. 13-6-75 to D.G.M.S., Dhanbad Depillaring permission and extraction of IV-B and IV-T Seams.	-do-	Page 23 of Shri Bansal's evidence.
D-10	J.D.M.S., letter dt. 23-7-75 to the Agent, Silewara, regarding depillaring permission and extraction of IV-B and IV-T Seams.	-do-	Page 24 of Shri Bansal's evidence.
D-11	Agent, Silewara's letter dt. 30/31-7-75 to J.D.M.S., Nagpur reg. permission for depillaring of IV-B and IV-T Seams.	-do-	-do-
D-12	Silewara Colliery Manager's letter dt. 16-8-75 to J.D.M.S., Nagpur regarding submission of plans for depillaring.	-do-	-do-
D-13	D.G.M.S., Nagpur letter dt. 28-10-75 to the Agent, Silewara Permission under Reg. 100 and Ref. 126 for extraction of pillars in IV-T and IV-B Seams.	-do-	-do-
D-14	Notice of appointment dt. 11-9-74 of Shri R.K. Dubey as Safety Officer, Silewara.	-do-	Page 30 of Shri Bansal's evidence.
D-15	Two Seizure Memo	MPRKKKS	Page 117 of Shri Bansal's evidence.
D-16	Ghose Committee Report on Splitting of Pillars (31-1-1977).	D.G.M.S.	No mention.
D-17	List of statutory personnel in Silewara Colliery	-do-	Page 41 of Shri Grover's evidence.
D-18	Notice of appointment dt. 15-10-1975 of Shri M.S. Sandhu As Ventilation Officer.	-do-	Page 42 of Shri Grover's evidence.
D-19	Two Seizure Memos	-do-	No mention, but these were filed by D.G.M.S. on 19-2-1977.
D-20	Notice of appointment dt. 28/29-9-73 of Shri Ramesh Chandra as Safety Officer.	-do-	Page 24 of Shri R.C. Garg's evidence.
D-21	Ventilation Plan of IV Bottom Seam.	-do-	Page 129 of Shri Joshi's evidence
D-22	Blue Print of U/G Plan Scale 300′ to 1″	-do-	-do-
D-23	Letter dt. 28/29-11-75 from M.D., W.C.L. to the Director of Mines Safety forwarding a Note dt. 18-11-1975 regarding major accidents at Silewara.	-do-	Page 7 of Shri M.S. Kahlon's evidence.
D-24	Shri V.N. Gupta's note dt. 29-12-75 regarding inspection made by him of IV-Bottom Seam etc. on 2/12 and 8/12.	W.C.L.	Page 18 of Shri Kahlon's evidence.
D-25	Note on an inspection made by Shri S.S. Prasad of Silewara Colliery on the 20th and 21st Nov., 1975.	MPRKKKS	Page 51 of Shri Kahlon's evidence.
M-1	N.C.D.C. Report on Silewara Expansion	-do-	Page 124 of Shri Shah's evidence.
M-2	Polish Project Report for Silewara Project—Two volumes.	-do-	Page 125 of Shri Shah's evidence.
M-3	Charge sheet and reinstatement orders of S/Shri S.K. Grover, R.K. Dubey and R.K. Joshi.	-do-	Page 136 of Shri Shah's evidence.
M-4	Note from G.M., Nagpur dt. 23-2-76 addressed to M.D., W.C.L. regarding temporary revocation of suspension orders of two officers and Surveyor.	-do-	Page 138 of Shri Shah's evidence.
M-5	Sinha-Aluwaliah Committee Report (26-10-1976).	Shri S. W. Dhabe, Assessor	Page 138 of Shri Shah's evidence.
V-1	Shotfirer's Diary	V.C.M.E.A.	Page 160 of Shri Shah's evidence.
K-1	A.G.M., Nagpur Office Order dt. 12-7-73 Job allotment to Shri M.P. Chopra, Survey Officer.	K.K.K.S.	Page 171 of Shri Shah's evidence.

1	2	3	4
K–2	Statement showing production, Manpower on roll and mining staff in Silewara Colliery in August, September and October, 1975.	K.K.K.S.	Page 172 of Shri Shah's evidence.
K–3	Account Officer, Silewara's letter dt. nil Certificate of deduction of tax from payments made to contractors.	-do-	Page 174 of Shri Shah's evidence.
K–4	Account Officer, Silewara's letter dt. 9-12-75 to Shri Vishnu Choudhary, Contractor, regarding income-tax deductions.	-do-	-do-
K–5	Letter dt. 19-4-75 from Accounts Officer, Silewara to Shri Vishnu Chaudhary, Contractor, regarding income-tax deductions.	-do-	Page 174 of Shri Shah's evidene.
K–6	Photostat copy of statement of coal stock of Silewara Colliery dt. 17-12-1975.	-do-	Page 175 of Shri Shah's evidence
K–7	Comment on Polish Report on Silewara and Pipla Mines.	-do-	Page 184 of Shri Shah's evidence.
K–8	Letter dated 13-7-76 from the Manager, Walni Mines to Dy. C.M.E., Silewara—Condolence message—Shri Ramarao Narayan, Mining Sirdar.	-do-	Page 140 of Shri Bansal's evidence.
		Exhibit marked 'G'—Shri S.K. Grover	
G–1	Register maintained by Shri S.K. Grover in the Court Room.	Shri S.K. Grover	Page 252 of Shri Grover's evidence. Explained in the Court on 20-3-77—Page 255 of Shri Grover's evidence.

APPENDIX VI

List of parties who appeared and their Counsels

Sl. No.	Name of Party	Name(s) of Counsel
(1)	Western Coalfields Ltd.	Shri A.S. Bobde Shri V.A. Bobde Shri R.Y. Sirpurkar
(2)	Shri R.K. Joshi	Shri H.D. Patel
(3)	Directorate-General of Mines Safety	—
(4)	M.P. Rashtriya Koyala Khadan Kamgar Sangh	Shri R.B. Pendharkar Shri S.S. Chawda
(5)	Vidarbha Coal Mines Employee's Association	Shri S.P. Deshpande
(6)	Koyala Khadan Karamchari Sangh	Shri R. Ranjan Pillai

960 GI/79—15.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1979